अवधी लोक-गीत

सम्पादक

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय

एम० ए०, पी० एच० डी०

संस्थापक-संचालक,

भारतीय लोक-संस्कृति शोध-संस्थान;

वाराणसी

भूमिका—लेखक

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

साहित्य भवन (प्रा.) लिमिटेड

AVADHI LOK GEET

Collection of Avadhi Folklore

by

Krishna Dev Upadhaya

मूल्य : पच्चीस रुपये

प्रथम संस्करण : १९७८

गिरीश टंडन द्वारा साहित्य भवन प्रा० लि०, ९३, के० पी० कक्कड़ रोड, के लिए प्रकाशित तथा [illegible]पी० प्रिंटिंग प्रेस ४२, मार्ग इलाहाबाद द्वारा मुद्रित

समर्पणम्

प्रातः स्मरणीया, पुत्र वत्सला,
प्रेममूर्ति, ममतामयी, माँ

श्रीमती मूर्ति देवी जी
के चरण कमलों मे

तथा

परम महाभागवत, भागवती कथा के वाचक,
परम वैष्णव, पूजनीय पिता जी,

पं० राम सुचित उपाध्याय
के चरण कमलो मे यह कृति
सादर, सप्रेम, सर्मपित।

———o———

सम्वर्धितमिदं देहं, स्नेहेन पालितं यथा।
नमामि मूर्तिदेवी तां, जननीं पुत्रवत्सलाम् ॥
नमामि श्रद्धया, भक्त्या, पितरं रामसूचितम्।
कथा-भागवतो - कारं, वैष्णवं, भक्तवत्सलम् ॥
"पितरि प्रीतिमापन्ने, प्रीयन्तां सर्वदेवताः ॥"

चरणावनत.—
कृष्णदेव

भूमिका

डा० कृष्णदेव उपाध्याय जी ने लोक-गीतों का बहुत विस्तृत और गम्भीर अध्ययन किया है। उन्होंने अपना जीवन ही लोक वार्ता (संस्कृति) के अध्ययन को समर्पित कर दिया है। इस दिशा मे उनके कार्यों की सराहना देश में और विदेश मे भी हुई है। उनका प्रधान कार्यक्षेत्र भोजपुरी लोक गीत और लोक वार्ता का साहित्य रहा है। इस बार उन्होंने अवधी लोक-गीतों के विशाल भाण्डार से मार्मिक और सरस गीतों के संग्रह मे मन दिया है। परिणाम यह पुस्तक है।

अवधी के लोक-गीतों का भाण्डार बहुत बड़ा है। इस दिशा मे कुछ काम भी हुआ है। सर्वप्रथम स्वर्गीय प० राम नरेश त्रिपाठी ने बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया। अनेक विद्वानों ने अवध प्रान्त मे प्रचलित लोकगीतो का संग्रह, विश्लेषण और मूल्याकन का कार्य किया है। परन्तु अभी भी इस विशाल भाण्डार का अशमात्र ही प्रकाशित हो पाया है।

उपाध्याय जी ने जिन लोक-गीतो को चुना है उनमें ग्रामीण जनता की आशा-आकांक्षा, प्रेम-विरह-हास-परिहास, उत्सव-आनन्द का जीवन्त रूप प्रकट हुआ है। ये गीत सही अर्थों में जन-जीवन के वास्तविक स्वरूप को अभिव्यक्त करते हैं। सहज जन-भाषा में गीतों की रचयितियों ने अपना हृदय निचोड़ कर रख दिया है। इनमे रसाभिव्यंजना का कोई परिपाटी-विहित आडंबर नहीं है फिर भी ये रस की व्यंजना मे पूर्ण समर्थ हैं और सहृदयों को भावाभिभूत कर देते है।

डा० कृष्णदेव उपाध्याय ने इन लोक-गीतों को एक स्थान पर प्रकाशित करके साहित्य-रसिको के लिये बहुत सरस उपहार प्रस्तुत किया है। उनका यह प्रयत्न प्रशंसनीय है।

मैं इस सुन्दर संग्रह का हार्दिक स्वागत करता हूँ। मुझे आशा है कि लोक साहित्य के प्रेमी—जन भी इसका स्वागत करेगें।

डा० उपाध्याय वृद्ध तो नहीं कहे जा सकते पर युवक या प्रौढ़ भी नहीं कहे जा सकते। इस अवस्था में लोग प्राय: विश्राम की बात सोचते हैं पर वे लगातार परिश्रम करते रहते हैं और अपने प्रिय विषय—लोक साहित्य—के प्रति अपनी निष्ठा

सम्पादकीय वक्तव्य

लोक साहित्य के प्रति मेरा आकर्षण किस प्रकार हुआ इसकी चर्चा मैने सक्षिप्त रूप से 'भोजपुरी लोक-गीत भाग २' की भूमिका में की है। अपने साहित्यिक जीवन के प्रभात में मुझे लोक गीतो के संग्रह के लिए इस कांचन काया को जेठ की भीषण लू मे जलाना पड़ेगा, कीच और कर्दम से भरी गॉव की पगडण्डी पर भादों की अँधेरी रात मे चलना पडेगा, इसकी स्वप्न में भी कभी कल्पना नहीं की थी। परन्तु जब एक बार — अनायास ही सही—लोक साहित्य से नाता जुड गया तो उसे तोडना ठीक नही समझा। जिस प्रकार सती एवं आदर्श हिन्दू नारी एक व्यक्ति से प्रेम कर जीवन भर उस प्रेम का निर्वाह करती है, उसी प्रकार लोक साहित्य से परिचय प्राप्त कर, उसके आनन्द का आस्वादन कर मैंने भी अपने जीवन को इसी की सेवा में अर्पित करने का व्रत ले लिया। कालान्तर में यह प्रेम उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त करता हुआ मेरे जीवन का बल और सम्बल बन गया और आज तो यह एक मात्र जीवन का आधार है।

लोक साहित्य का एक विनम्र शोधकर्ता होने के अतिरिक्त मैं अपने को लोक संस्कृति और लोक साहित्य का मिशनरी भी समझता हूँ। जिस प्रकार धर्म-प्रचारक के लिए अपने धर्म का प्रचार करना परम पुनीत एवं आवश्यक कर्म है, उसी प्रकार लोक संस्कृति तथा साहित्य का सग्रह, सम्पादन एव प्रकाशन कर उसका प्रसार, प्रचार और रक्षा करना मै अपना परम पवित्र कर्तव्य ही नहीं धर्म भी मानता हूँ। इसलिए इस महान् देश के किसी भी प्रदेश के लोक-साहित्य का प्रकाशन मेरे लिए आनन्द और उत्सव का अवसर होता है। उत्तर प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग में कार्य करते हुए मुझे इस प्रदेश के विभिन्न भागो में रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। कभी व्रज प्रदेश में नौकरी करनी पड़ी तो कभी अवधी क्षेत्र मे। कभी कमायूँ और गढ़वाल के पहाड़ो पर विचरण करनेका अवसर मिला है तो कभी बुन्देलखण्ड के मैदानो मे। अनेक वर्षो तक इस प्रदेश की राजधानी लखनऊ मे भी प्रवास का सुयोग मिला है। इस सरकारी नौकरी मे स्थानान्तरण से अनेक कष्टो का अनुभव करना पड़ा परन्तु कुछ लाभ भी हुए। इनमें सबसे बड़ा लाभ था स्थानीय लोक साहित्य तथा संस्कृति से परिचय। अपनी नौकरी के सिलसिले में इस प्रदेश के जिस किसी भाग में भी मुझे रहना पड़ा है वहाँ मेरा एक ही उद्देश्य रहा है स्थानीय लोक साहित्य

का संकलन। इस कार्य को मैं स्वयं तो करता ही था अपने व्युत्पन्न छात्रों को भी इसके लिए प्रेरित तथा प्रोत्साहित करता रहता था।

सन् १९५० ई० की बात है। उन दिनो मै लखनऊ के गवर्नमेन्ट ट्रेनिंग कालेज मे हिन्दी का प्राध्यापक था। मैंने अपने कालेज के छात्राध्यापकों के समक्ष अवधी लोक-साहित्य के महत्व का प्रतिपादन करते हुए, इसके संग्रह की आवश्यकता पर बल दिया। मैं जानता था कि इस कार्य को सभी छात्र नही कर पायेगें परन्तु यह विश्वास था कि संभवतः इन विद्यार्थियों मे से एक के हृदय में भी यदि अवधी लोक-गीतो के संकलन के प्रति अनुराग जग गया तो मेरा परिश्रम तथा उद्देश्य सफल हो जायेगा। जायसी के परिवर्तित शब्दो मे कहना चाहता हूँ कि—

"गुरु गियान—चिनगी जो मेला।
जो सुनुगाइ लेइ सो चेला॥"

अर्थात् वास्तविक चेला वही है जो गुरु के द्वारा प्रदत्त ज्ञान रूपी चिनगारी को जलाकर अपने हृदय को प्रकाशित कर ले। श्री सत्यनारायण मिश्र एम० ए० के रूप में मुझे भी ऐसे ही एक योग्य शिष्य मिल गये जिनके हृदय पर मेरे इस उपदेश का बहुत प्रभाव पड़ा। उन्होने मेरे आदेश से सुल्तानपुर, प्रतापगढ आदि जिलों के गाँव-गाँव मे घूम-घूम कर अवधी लोक-गीतो का बड़े प्रेम से संग्रह किया। इस प्रकार इस संकलन का अधिकांश श्रेय मिश्र जी को प्राप्त है। सच तो यह है कि यदि मिश्र जी का सतत, सक्रिय सहयोग मुझे प्राप्त न होता तो सभवत प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन संभावना की परिधि के भीतर आना कठिन ही नही असभव भी था।

अवधी प्रदेश मे लोक-साहित्य का अक्षय तथा अनन्त भाण्डार पडा हुआ है। इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि शोधी विद्वान् इस विशाल लोक साहित्य की राशि का सग्रह तथा सम्पादन करें। प्रस्तुत पुस्तक में सस्कार गीतो, ऋतु गीतो, जाति, गीतों, श्रम गीतों तथा धार्मिक गीतो (भजन आदि) का ही सकलन किया गया है। विभिन्न संस्कारो के अवसर पर, भिन्न-भिन्न ऋतुओ तथा धार्मिक पर्वों पर, गाये जाने वाले गीतो का संक्षिप्त विवरण "प्रस्तावना" के अगले पृष्ठों में दिया गया है। प्रत्येक गीत किस अवसर पर, किस व्यक्ति के द्वारा, किसे संबोधित किया गया हैं इसका उल्लेख सन्दर्भ मे वर्णित है। अवधी गीतों के अर्थ को अन्य क्षेत्र के पाठक भी भली-भाँति समझ सकें, इसके लिए गीत की प्रत्येक पंक्ति का अर्थ खड़ी बोली हिन्दी में दिया गया है। अवधी शब्दों के अभिप्राय को ठीक-ठीक समझाने के लिए कठिन शब्दो का अर्थ फुटनोट (पाद टिप्पणी) में प्रस्तुत है। इस प्रकार प्रत्येक गीत के सम्पादन मे सर्वप्रथम उसे गीत का सन्दर्भ, इसके बाद गीत का पाठ (टेक्स्ट) और उसका हिन्दी में अनुवाद तथा अन्त में कठिन सब्दो का अर्थ देकर इसे सुन्दर बनाने का प्रयास किया गया है

भोजपुरी लोक गीत भाग १ तथा २ के सम्पादन में जिस वैज्ञानिक पद्धति का अनुसरण हुआ है, उसी के अनुसार प्रस्तुत संकलन का भी सम्पादन समझना चाहिए।

भोजपुरी लोक गीतों के दो भागों में सम्पादन के पश्चात् "अवधी लोक गीतों" का प्रस्तुत संग्रह पाठकों के सामने उपस्थित करते हुए मुझे बडी प्रसन्नता हो रही है। यदि हिन्दी जगत् के लोक साहित्य के प्रेमियो ने इस सग्रह का स्वागत किया तो आशा है कि निकट भविष्य में "हिमालय के लोक-गीतों" का संकलन भी प्रस्तुत किया जा सके। बहुत सभव है कि अवधी लोक-गीतों के पश्चात् अवधी की पहेलियों तथा लोकोक्तियों का संग्रह भी प्रकाश में आवे जो हजारों की संख्या मे मेरे पास संग्रहीत है।

जिन लोगों ने इस पुस्तक के निर्माण में सहायता प्रदान की है उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाशित करना मै अपना परम कर्तव्य समझता हूँ। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस ग्रन्थ की भूमिका लिखने की जो कृपा की है इसके लिए मै आचार्यपाद का अत्यन्त आभारी हूँ। मेरे सुयोग्य शिष्य श्री सत्यनारायण मिश्र एम० ए० ने अवधी प्रदेश मे घूम-घूमकर इन गीतों का बड़े परिश्रम से सग्रह किया है। अत: वे मेरे हार्दिक, शुभ आशीर्वाद के भाजन हैं। मेरी पुत्री डाक्टर वीना कुमारी उपाध्याय एम० ए०, पी० एच० डी० ने इस पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करने मे मेरी बड़ी सहायता की। मेरे प्रिय कनिष्ठ पुत्र, चिरंजीव रविशकर उपाध्याय एम० ए० ने विविध प्रकार की सहायता कर मेरे कार्य को सरल बना दिया। अत: मैं इन दोनों को अपना कोटिश: आशीर्वाद देता हूँ तथा इनके उज्ज्वल, मंगलमय और सुखद भविष्य की कामना करता हूँ। धर्मपत्नी श्रीमती राजेश्वरी देवी ने गीतों के पाठ निर्णय में बहुत सहयोग दिया है परन्तु उनको धन्यवाद प्रदान करना कोरी विडम्बना ही होगी।

'प्रस्तावना' वाले भाग को लिखने में मुझे म० प० राहुल साकृत्यायन तथा डा० कृष्णदेव उपाध्याय द्वारा सम्पादित 'हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास भाग १६' मे प्रकाशित 'अवधी लोक साहित्य' शीर्षक निवन्ध से बहुत सहायता मिली है। अत: मै लेखक का अत्यन्त आभारी हूँ।

अन्त मे मैं भूतभावन भगवान् विश्वनाथ तथा भगवती दुर्गा से यही प्रार्थना करता हूँ कि—

"देहि सौभाग्यमारोग्यं, देहि मे परमं सुखम्।
वयं देहि, बलं देहि, यशो देहि, मदं जहि॥"

श्री कृष्ण जन्माष्टमी सं० २०३४ वि०
सन् ५-९-१९७७ ई०। भारतीय लोक-संस्कृति
शोध सस्थान दुर्गा कुण्ड रोड वाराणसी

कृष्णदेव उपाध्याय

विषय-सूची

प्रस्तावना

(क) अवधी भाषा

(१) **नामकरण का कारण**—अवध प्रदेश मे बोली जाने के कारण इस भाषा का नाम 'अवधी' पड़ गया है। इसे 'पूर्वी हिन्दी' के नाम से भी अभिहित किया जाता है, क्योंकि यह हिन्दी प्रदेश के पूर्वी भाग में बोली जाने वाली भाषा है। इसके ठीक विपरीत ब्रज को 'पश्चिमी हिन्दी' की संज्ञा दी जाती है क्योंकि यह पश्चिमी भाग मे प्रचलित है। अवधी को 'कोसली' भी कहते हैं।

(२) **अवधी भाषा की सीमा**—अवधी भाषी क्षेत्र के उत्तर में नेपाल, पूर्व मे भोजपुरी भाषी प्रदेश, दक्षिण में बघेली और पश्चिम मे बुन्देली तथा कन्नौजी के क्षेत्र है। इस क्षेत्र के बाहर भी कही कही अवधी बोली जाती है।

(३) **भाषा-भाषियों की संख्या**—अवधी बोलने वालो की संख्या सन् १९५१ ई० की गणना के अनुसार दो करोड़ चालीस लाख थी। जनसंख्या की वृद्धि को ध्यान में रखकर आज छब्बीस वर्षो के पश्चात् इस संख्या को तीन करोड मानना उचित प्रतीत होता है।

(४) **क्षेत्र फल**—अवधी भाषा-भाषी प्रदेश लगभग पैंतीस हजार वर्गमील में फैला हुआ है। उत्तर प्रदेश के कुल जिलों के एक चौथाई से अधिक जनपदों में अवधी का विस्तार पाया जाता है। अतः भौगोलिक दृष्टि से भी इसका महत्व कुछ कम नही है।

(५) **अवधी की बोलियाँ**—अवधी समुदाय में दो भाषायें है जिन्हें इसकी बोलियाँ कहा जा सकता है। (१) बघेली (२) छत्तीस गढ़ी। बघेली बघेलखण्ड मे बोली जाती है जिसका प्रधान केन्द्र रीवाँ हैं। भाषा की दृष्टि से अवधी और बघेली में नाम मात्र का ही अन्तर है। छत्तीसगढ़ी छत्तीसगढ प्रदेश मे मातृभाषा के रूप में व्यवहृत की जाती है। मध्य प्रदेश का रायपुर तथा विलासपुर जिला इसका केन्द्र हैं।

(६) **अवधी की विभाषायें अथवा उपबोलियाँ**—डा० बाबूराम सक्सेना के अनुसार अवधी की तीन विभाषायें है।[1] (१) पश्चिमी अवधी (२) केन्द्रीय अवधी और (३) पूर्वी अवधी। पश्चिमी अवधी के अन्तर्गत निम्नलिखित जिले हैं।

1 डा० तिवारी भोजपुरी भाषा और साहित्य पृ० १४८

(१) खीरी (लखीमपुर) (२) सीतापुर (३) लखनऊ (४) उन्नाव तथा (५) फतेहपुर। केन्द्रीय अवधी में (६) बहराइच (७) बाराबंकी तथा (८) रायबरेली की गणना की जाती है। इसी प्रकार पूर्वी अवधी मे (९) गोंडा (१०) फैजाबाद (११) सुल्तानपुर (१२) प्रतापगढ (१३) इलाहाबाद (१४) जौनपुर और (१५) मिर्जापुर के जिले आते है। इसके अतिरिक्त नेपाल की तराई के कुछ भागो मे भी अवधी बोली जाती है।

अवधी की एक अन्य उपबोली बैसवाड़ी के नाम से प्रसिद्ध है जो बैसवाड़ा मे बोली जाती है। बैसवाड़ा का केन्द्र उन्नाव जिला तथा उसके आस-पास का प्रदेश समझना चाहिए।

(७) **अवधी भाषा का महत्व**—अवधी वस्तुत: जिस क्षेत्र की भाषा है, भारतीय इतिहास में उसका अत्यधिक महत्त्व है। प्राचीन काल मे यह प्रदेश 'कोशल' के नाम से प्रसिद्ध था और साकेत—वर्तमान अयोध्या—इसकी राजधानी थी। भगवान् बुद्ध के काल में प्रचलित षोड़श महाजनपदो में मगध और काशी के साथ-साथ कोशल की भी गणना की जाती थी। अत: यह एक सुप्रसिद्ध महाजनपद था। बुद्ध ने अपना अधिकाश समय श्रावस्ती (गोंडा जिला) तथा कोशल राज्य में व्यतीत किया। प्रयाग —जो अवधी क्षेत्र के ही अन्तर्गत है—गुप्त, मुगल तथा ब्रिटिश काल मे एक महत्वपूर्ण स्थान था। मुगलों के अन्तिम काल मे लखनऊ मे नवाबो का राज्य था। यह राजनैतिक महत्व उसे आज भी प्राप्त है।

अवध के इस राजनैतिक महत्त्व के अतिरिक्त अवधी का साहित्यिक महत्त्व भी अत्यधिक है। सच तो यह है कि व्रज को छोड़कर हिन्दी की विभिन्न बोलियो मे अवधी का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। इसका कारण यह है कि हिन्दी के दो महान् कवियो ने इसे अपनी काव्यमयी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। हिन्दी की प्रेममार्गी शाखा के सर्व प्रधान कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने 'पदमावत' की रचना कर तथा हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' का निर्माण कर अवधी को अमर बना दिया है। जिस भाषा में 'मानस' की रचना की गई हो उसका मूल्यांकन करना अत्यन्त कठिन है। 'तुलसी' के स्पर्श से इस भाषा ने अमरता को प्राप्त कर लिया है।

(ख) अवधी लोक-साहित्य

अवधी लोक-साहित्य का वर्गीकरण

अवधी के लोक-साहित्य का वर्गीकरण निम्नाकित पाँच भागों मे किया जा सकता है:—

(१) लोक गीत (फोक लिरिक्स)

२ लोक गाथा (फोक बैलेड्स)

(३) लोक कथा (फोक टेल्स)

(४) लोक नाट्य (फोक ड्रामा)

(५) लोक सुभाषित (फोक सेइङ्ग्स)

लोक गीत वे गीत हैं जिनका प्रधान तत्व गेयता है। इनका कथानक अत्यन्त स्वल्प अथवा नहीं के बराबर होता है। लोक गाथाओं मे कथानक अथवा कथा-वस्तु की ही प्रधानता होती है। गेयता उनका आनुषंगिक गुण होता है। आकार की दृष्टि से भी दोनो मे भेद पाया जाता है। लोक-गीत छोटे होते हैं परन्तु लोक गाथा अपने कथानक के कारण बहुत बड़ी होती है। कोई-कोई लोक गाथा तो आकार में प्रबन्ध काव्य को भी चुनौती देती है। यदि काव्य शास्त्र की भाषा मे कहना चाहें तो लोक-गीत को हम गीति-काव्य कह सकते है और लोक-गाथा को महाकाव्य अथवा प्रबन्ध काव्य की उपाधि से विभूषित कर सकते हैं। अवधी मे लोक-गाथाओं की प्रचुरता पायी जाती हैं जिन्हे 'पवाड़ा' कहा जाता है। कुसुमा देवी और चन्द्रावली की लोक गाथायें प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त श्रवण कुमार, भरथरी और गोपीचन्द के 'पवाड़ा' भी प्रचलित है। सन् १८५७ ई० के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मे ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती देने वाले राणा वेणी माधव की लोक गाथा गाँवों में आज भी गायी जाती है।

लोक कथा के अन्तर्गत उन सभी कहानियो का समावेश होता है जो ग्रामीण लोगों के द्वारा कही और सुनी जाती हैं। इन लोक-कथाओं को प्रधान-रूप से आठ वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है जिनमें प्रधानतया निम्नलिखित हैं:—(१) सृष्टि की कथा (२) जाति विषयक कथा (३) पशु-पक्षी की कथा (४) व्रत तथा त्यौहार संबधी कथा (५) देवी-देवताओं की कथा (६) साहस तथा रोमाच कथा।

ग्रामीण जनता जिस प्रकार लोक-कथाओ को सुनकर अपना मनोरंजन करती है उसी प्रकार लोक-नाट्य को देखकर अपना मन बहलाती है। अवधी प्रदेश में प्रचलित इन लोक-नाट्यों में समधिक प्रचलित तथा प्रसिद्ध ये हैं :—(१) राम लीला (२) रास लीला (३) नौटंकी (४) स्वाँग या साँग। अवधी प्रदेश में राम लीला के साथ ही नौटंकी का अधिक प्रचार है। कहार, धोबी और चमार आदि जातियाँ स्वाँग क आयोजन विशेष रूप से करती है।

लोक सुभाषित के अन्तर्गत कहावतें, मुहावरे पहेलियाँ, ऋतु सबधी उक्तियों आदि का समावेश चाहिए लोक साहित्य की इन विधाओं का भी विशेष

अवधी लोक-गीतों का वर्गीकरण

अवधी लोक-गीतों को प्रधानतया निम्नांकित छ. वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।

लोक-गीत

- (१) संस्कार संबंधी गीत
- (२) ऋतु सबंधी गीत
- (३) व्रत तथा देवता संबधी गीत
- (४) जाति सबंधी गीत
- (५) श्रम संबंधी गीत
- (६)

(१) संस्कार संबंधी गीत

- (१) पुत्र जन्म
- (२) मुण्डन
- (३) यज्ञोपवीत
- (४) विवाह
- (५) गवना
- (६) मृत्यु

(२) ऋतु संबंधी गीत

- (१) कजली
- (२) सावन
- (३) होली (फाग)
- (४) बारह मासा

(३) व्रत तथा देवता संबंधी गीत

- (१) देवी के गीत
- (२) शीतला माता के गीत
- (३) निर्गुन
- (४) भजन
- (५) जव

(४) जाति संबंधी गीत

- (१) अहीरों के गीत (बिरहा)
- (२) कहारों के गीत (कहरवा)
- (३) चमारों के गीत (चमरऊ)
- (४) धोबियों के गीत
- (५) दु. के (प

५. श्रम संबंधी गीत

- १. जँतसार
- २. सोहनी या निरवाही के गीत
- ३. कोल्हू के गीत
- (४) रोपनी गीत

६: विविध गीत

- (१) मेला के गीत
- (२) बाल गीत
- ३) खेल गीत
- ४ पार्टी
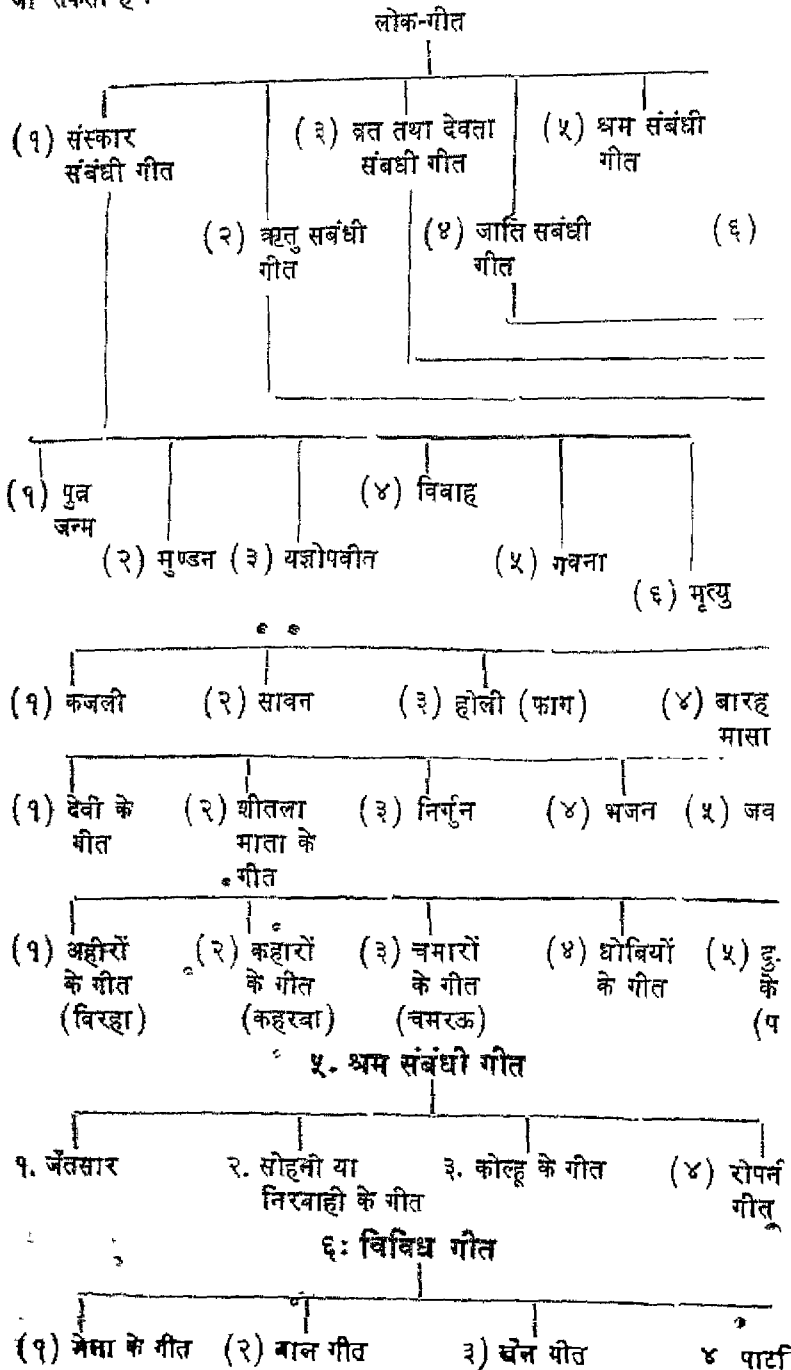
इन लोक-गीतो में प्रधान रूप से उन्ही गीतो का संक्षिप्त वर्णन अगले पृष्ठों मे किया जायेगा जिनका संकलन वर्तमान ग्रन्थ मे प्रस्तुत किया गया है।

सोहर

पुत्र जन्म के शुभ अवसर पर गाये जाने वाले गीतों को 'सोहर' कहते हैं। इसे कही-कही 'सोहिलो' भी कहा जाता है। किसी-किसी गीत मे 'सोहर' शब्द का उल्लेख प्राप्त होता है :—

"बाजेला आनद बधाव महल उठे सोहर हो।"

इसे 'मंगल गीत' के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है।

"गावहु ए सखि गावहु, गाइ के सुनावहु हो।
सब सखि मिलि जुलि गावहु, आजु 'मगल गीत' हो।"

गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में रामचन्द्र के जन्म के अवसर पर स्त्रियो द्वारा 'मगल' गीत गाने का उल्लेख किया है :—

"गावहि मंगल' मंजुलबानी।
सुनि कलरव कलकंठ लजानी" ॥

सोहर शब्द की व्युत्पत्ति—सोहर शब्द की व्युत्पत्ति "शोभन" शब्द से ज्ञात होती है। संभवत यही शोभन शब्द शोभिलो—सोहिलो—सोहल—सोहर के रूप मे परिवर्तित होता हुआ इस रूप में प्रयुक्त होने लगा। भोजपुरी में 'सोहल' का अर्थ सुहावना या अच्छा लगना होता है जो संस्कृत के शोभन से मिलता जुलता है। सोहर की उत्पत्ति 'सुघर' शब्द से भी मानी जा सकती है जिसका अर्थ सुन्दर होता है।

सोहरों का वर्ण्य विषय—पुत्र जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले इन गीतो मे आनन्द और उल्लास का विशद वर्णन होना स्वाभाविक है। इनमे नव प्रसूता स्त्री के हृदय मे गुद-गुदी पैदा करने वाले गीतों की बाँकी झाकी भी देखने को मिलती है। कही वन्ध्या स्त्रियों की करुण दशा का चित्रण सहृदयों के हृदय में बरबस विशद सहानुभूति की उत्पत्ति करता है तो कहीं देवी-देवताओं की मनौती के फलस्वरूप पुत्र-रत्न प्राप्ति उनके जीवन में अमृत की वर्षा करती हुई दिखाई पडती है।

सोहरों का प्रधान वर्ण्य विषय सभोग-शृङ्गार का वर्णन है। इनमे स्त्री-पुरुष की रति-क्रीडा, गर्भाधान, गर्भिणी की शरीर-यष्टि, प्रसव-पीडा, दोहद, धाय का बुलाना, पुत्र की प्राप्ति होने पर माता और पिता द्वारा ब्राह्मणों तथा निर्धनों को दान देना एवं उछाह और उत्सव का मर्मस्पर्शी वर्णन उपलब्ध होता है।

सोहर के वर्ण्य विषय को मुख्यत: दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। (१) पूर्व पीठिका और (२) उत्तर पीठिका। पुत्र-प्राप्ति की लालसा रखने वाली स्त्री, गर्भ की वेदना से व्याकुल तरुणी; बधू की मंगल-साधना में निरत सास; धाय को दौड़कर बुलाने वाला पति, बालक के उत्पन्न होने पर धन और धान्य को माँगने वाली धाय—यह सब पूर्व पीठिका के प्रतिपाद्य विषय हैं। परन्तु सद्य: जात शिशु का रुदन, माता का आनन्द सास की - अपने कुलाकुर के उत्पन्न होने के हेतु अपना सवस्व लुटा देने वाला पिता उत्तर पीठिका के विषय कहे जा सकते हैं

वाले अनेक लोक-गीत उपलब्ध होते हैं जिनका 'सोहर' मे ही अन्तर्भाव किया जा सकता है। इनमे प्रधान निम्नांकित है :—

(१) साध—किसी स्त्री द्वारा गर्भ धारण के पश्चात् उसके मन मे भोजन तथा आच्छादन सबंधी अनेक प्रकार की इच्छाएँ उत्पन्न हुआ करती है जिनकी पूर्ति करना पति अथवा परिवार के अन्य लोगों का परम कर्त्तव्य है। इसी इच्छा को अवधी मे 'साध' कहते हैं। संस्कृत में इसे 'दोहृद' कहा जाता है।

प्रथम बार जब कोई स्त्री गर्भ धारण करती है तब उसके संबधी 'सिधौरी' भेजते हैं जिनमें अनेक प्रकार के पक्वान्न, मिष्ठान्न तथा वस्त्र और आभूषण रहते हैं। गर्भ धारण के पाँचवे महीने मे 'पचमासा' और सातवें महीने मे 'सतमासा' मनाने की प्रथा है। इस अवसर पर और कभी-कभी बच्चो की वर्ष गाँठ पर ये 'साध' के गीत गाये जाते है। इन गीतों में अश्लीलता की भी कुछ मात्रा पायी जाती है। इनमें स्त्री की इच्छा-पूर्ति के वर्णन के साथ ही पति और पत्नी का हास-परिहास भी चित्रित किया जाता है।

(२) सरिया—इन गीतों का अन्तर्भाव भी सोहर के ही अन्तर्गत समझना चाहिये। सोहर और सरिया इन दोनो गीतो का सम्बन्ध पुत्र-जन्म के संस्कार से हैं इन्हे सोहर की पूर्व पीठिका कहा जा सकता है। सरिया का वर्ण्य विषय है :—

पुत्र जन्म के पूर्व जच्चा की पीड़ा, पति का दाई को लिवाने जाना, दाई के द्वारा नखरा करना तथा अनुनय-विनय के पश्चात् पालकी पर चढ़कर आना, नेग न मिलने पर झगड़ा करना, जच्चा द्वारा दाई को धमकियाँ देना तथा भूयसी दक्षिणा मिलने पर आशीर्वाद देते हुए दाई का जाना आदि। सरिया गाने की प्रथा अब प्राय: लुप्त हो रही है फिर भी ये गीत आज भी उपलब्ध हो जाते हैं।

(३) रोचना—यह शब्द भोजपुरी के 'लोचन' या 'लोचना' से सम्बन्धित ज्ञात होता है जिसका अर्थ सूचना या खबर है। प्राचीन काल मे जब यातायात की सुविधाओं का नितान्त अभाव था तब पुत्र जन्म की सूचना पिता-माता अथवा मामा या नाना के घर भिजवाना एक आवश्यक कार्य समझा जाता था। यह रोचना (लोचना) या सूचना नाई अथवा ब्राह्मण ले जाया करता था। इस अवसर पर जो गीत गाये जाते हैं उसे 'रोचना' कहा जाता है। इन गीतों में नाई के द्वारा रोचना (खबर) लेकर जाना और नेग पाकर, पुरस्कृत होकर लौटने का वर्णन पाया जाता है।

(४) बधाई—जब पुत्र उत्पन्न होता है तब उसकी बुआ 'बधाई' लेकर आती है जिसमें बच्चे के लिए वस्त्र, आभूषण तथा खिलौने आदि होते हैं। इस 'बधाई' के उपलक्ष में नव जात शिशु की माता की ओर से बुआ को अपनी आर्थिक क्षमता के अनुसार 'नेग' दिया जाता है। इस अवसर पर जो गीत गाये जाते हैं वे 'बधाई' के नाम से प्रसिद्ध है। 'बधाई' के रूप में जो सामान आता है उसे 'बधावा' कहते हैं। इन गीतों में 'बधावा' के साथ ही भाई बहन के प्रगाढ़ प्रेम का भी चित्रण पाया जाता है।

(५) छठें—पुत्र जन्म के छठवें दिन 'छठी' नामक संस्कार को सम्पादित किया जाता है। यह उत्सव बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस दिन समस्त कुटुम्बियों को निमंत्रण देकर उन्हें कच्चा भोजन अर्थात् भात दाल और रोटी खिलायी जाती है

इस अवसर पर 'छठी' का चित्र प्रस्तुत किया जाता है। इसमें अनेक देवी-देवताओं—जैसे सूर्य, चन्द्रमा, गंगा, यमुना तथा ग्राम देवता—के चित्र अंकित किये जाते हैं। इस समय 'छठी' नामक गीत गाये जाते हैं।

(६) **बरही**—पुत्र जन्म के बारहवें दिन जो संस्कार किया जाता है उसे 'बरही' कहते हैं। इस दिन गृह की स्त्रियाँ सूर्य की पूजा करती हैं और नवजात शिशु की दीर्घ आयु, तेज, बल, विद्या की कामना करती हैं। इस दिन समस्त परिवार को भोज दिया जाता है। कहीं-कही इस दिन शिशु का नामकरण भी सम्पन्न होता है। इस प्रकार पुत्र जन्म के प्रथम दिन से प्रारम्भ होकर यह संस्कार बारहवें दिन समाप्त होता है।

विवाह

विवाह मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण संस्कार है। सभ्य अथवा असभ्य कही जाने वाली ससार की सभी जातियों मे यह संस्कार किसी-न-किसी रूप मे प्रचलित है। भारत मे इस सस्कार का सबसे अधिक महत्व है क्योंकि इसके अभाव मे पुरुष पूर्ण नहीं समझा जाता।

अवधी प्रदेश मे विवाह बड़े ही धूम-धाम से मनाया जाता है। वैवाहिक क्रिया-कलाप का प्रारम्भ तिलक से समझना चाहिए और इसकी समाप्ति गवना अथवा द्विरागमन संस्कार से मानी जाती है। इस प्रदेश में कान्यकुब्ज (कनौजिया) ब्राह्मणो की प्रधानता पायी जाती है। इनके यहाँ जाति, कुल तथा वश परम्परा की उच्चता के आधार पर तिलक-दहेज की परम्परा प्रचलित थी और आज भी कुछ अशों में विद्यमान है। अतएव अवधी लोक-गीतों में इस कुत्सित प्रथा का उल्लेख स्थान-स्थान पर उपलब्ध होता है। कही लड़की का पिता धन के अभाव के कारण समुचित मात्रा में तिलक देने में अपने को असमर्थ पाता है, तो कहीं वह नीच कुल या वंश में उत्पन्न होने के कारण कुलीन तथा योग्य वर की प्राप्ति में कठिनाई का अनुभव करके अश्रुपात करता हुआ दिखाई पड़ता है। किसी दुःखी पिता की करुण रस से सराबोर यह उक्ति सुनिये जिसमें उसकी विवशता परिलक्षित होती है।

> "ओ बर माँगे बेटी नव लाख दायज,
> हथिनी दुअरि कइ चार।
> सोने के कलसा मँड़ये गड़बावइ,
> तब करइ धरम विआह ॥"[1]

वर्ण्य विषय—अन्य लोक-गीतों की भाँति अवधी लोक-गीतों मे भी उल्लास, उछाह तथा आनन्द का वर्णन समधिक मात्रा में पाया जाता है। वर के माता और पिता अपने पुत्र के विवाह के कारण फूले नहीं समाते। उल्लास के कारण उनके पैर जमीन पर नही पड़ते। कहीं घर मे गाजा-बाजा के कारण प्रसन्नता का वातावरण दिखाई पड़ता है तो कहीं बारात को सजाने की तैयारी हो रही है। कही बारातियो को बारात मे चलने का निमंत्रण दिया जा रहा है तो कही वर की माता अपने पुत्र का 'परीछावन' करती हुई दिखाई पड़ती है।

इधर कन्या के घर में विवाह के लिए मण्डप तैयार किया जा रहा है

कन्या के पिता, भाई तथा अन्य कुटुम्बी बारातियों के ठहराने के लिए 'जनवासा' का प्रबन्ध करने मे व्यस्त है। कही बारातियो के स्वागत-सत्कार के लिए पक्वान्न तथा मिष्ठान्न बनाया जा रहा है। तो कही अपनी प्राणप्यारी पुत्री के भावी वियोग की आशका से उसकी माता विसूरती हुई दिखाई पड़ती है।

गीतों के भेद—अवधी विवाह सम्बन्धी लोक-गीतो को प्रधानतया दो भागो मे विभक्त किया जा सकता है :—(१) वर पक्ष के गीत (२) कन्या पक्ष के गीत। परन्तु इन दोनों प्रकार के गीतों में महान् अन्तर पाया जाता है। वर पक्ष के गीतो मे जहाँ उल्लास, उछाह, प्रसन्नता तथा आनन्द की समधिक मात्रा दृष्टिगोचर होती है वहाँ कन्या पक्ष के गीतो मे विषाद, दु:ख तथा परेशानी की अभिव्यक्ति पायी जाती हैं। वर का पिता जहाँ कन्या के पिता से तिलक के रूप में 'मोटी रकम' लेकर अपनी मूछों पर (यदि वह सेफ्टी रेजर कल्ट का अनुगामी न हो) ताव देता हुआ, बारात की तैयारी के लिए दिल खोल कर खर्च करता हुआ दिखाई पड़ता है, वहाँ मुसीबत का मारा कन्या का पिता तिलक के रूप मे अधिक द्रव्य राशि देने मे अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए अपने भाग्य को कोस रहा है। इस प्रकार वर पक्ष के गीतो मे हर्षोल्लास की प्रधानता है तो कन्या पक्ष के गीतों में विषाद की प्रमुखता।

विवाह के अवसर पर वर तथा कन्या दोनो के यहाँ अनेक विधि-विधान सम्पन्न किये जाते हैं। इन सभी अवसरो पर गीत गाने की परम्परा पायी जाती है। इस प्रकार कन्या तथा वर के घर मे गाये जाने वाले गीतो को निम्नांकित रूप से विभक्त कर सकते है।

(क) कन्या पक्ष के गीत	(ख) वर पक्ष के गीत
(१) तिलक	(१) तिलक
(२) कलस धराई	(२) सगुन
(३) हरदी	(३) मौर
(४) लावा भुजाई	(४) वस्त्र धारण
(५) मातृ-पूजा	(५) हरदी
(६) द्वार पूजा	(६) मातृ-पूजा
(७) विवाह	(७) परीछन आदि
(८) भाँवर	
(९) सोहाग	
(१०) द्वार रोकना	
(११) कोहबर	
(१२) भात	
(१३) वर-उबटन	
(१४) विदाई	
(१५) कंगन	

अवधी क्षेत्र में विवाह के अवसर पर अनेक शास्त्रीय तथा लौकिक विधि-विधान किये जाते हैं। इन विभिन्न क्रिया-कलापों के अवसर पर गीत गाने की प्रथा है। इनमें से प्रधान विधि-विधान निम्नांकित है जिनका संक्षेप मे यहाँ वर्णन प्रस्तुत किया जाता है

(१) पेरी तथा भात—प्रत्येक मांगलिक संस्कार के अवसर पर भाई के द्वारा 'पियरी' लाना नितान्त आवश्यक समझा जाता है। पीली धोती को लोक भाषा मे 'पियरी' कहते हैं। 'पियरी' को कहीं-कहीं पर 'भात' भी कहा जाता है। मंडप स्थापन के दिन भाई अपनी बहिन को पियरी लाकर देता है। इस समय 'पेरी' तथा 'भात' नामक गीत गाये जाते है।

(२) नाखर—नाखर का अर्थ नाखून है। इसे 'नहछू' भी कहते हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामलला नहछू' लिखकर इसी विधान की ओर संकेत किया है। नाखूर मे महावर लगाने के पहिले पैर के नाखून काटे जाते हैं। विवाह में मातृ-पूजन के दिन वर का 'नाखुर' होता है, तब महावर लगाया जाता है। इस अवसर पर 'नाखुर' और 'निकासी' के गीत गाये जाते है।

(३) तेलु—वर और कन्या को तेल चढाने के समय 'तेलु' नामक गीत गाने की प्रथा है।

(४) सुहाग—कन्या के विवाह के दिन टोले मुहल्ले की स्त्रियाँ उस कन्या को लेकर अन्य घरों को जाती है जहाँ उस घर की कोई सुहागिन स्त्री अपने माँग से सिन्दूर लेकर उसे अशीर्वाद देती है।

(५) द्वारचार—बारात की अगवानी हो जाने के पश्चात् जब वह कन्या के द्वार पर आ जाती है उस समय द्वारचार के गीत गाये जाते हैं। भोजपुरी प्रदेश में इस विधान को 'द्वार पूजा' कहा जाता है।

(६) भाँवर—भाँवर का अर्थ होता है परिभ्रमण या परिक्रमा करना। चूँकि इस अवसर पर वर तथा कन्या अपने विवाह के साक्षी अग्नि देवता की सात बार परिक्रमा करते है इसीलिए इसे 'भाँवर' कहा जाता है। संस्कृत में यह 'सप्तपदी' के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रकार छ. बार भाँवर पड़ने तक तो कन्या पिता के कुल मे रहती है परन्तु सातवीं बार भाँवर पड़ने पर वह पराई हो जाती है।

"सतई भँवरिया के पैठत,
दादुलि भइलि पराई (परारि)"।

(७) बाती—सप्तपदी के पश्चात् वर और कन्या को कोहबर में ले जाते हैं। वहाँ एक दीपक जलाया जाता है जिसमे पृथक्-पृथक् दो बत्तियाँ होती हैं। कन्या की भावजे वर से इन दोनो बत्तियों को एक साथ मिलाने की प्रार्थना करती हैं जो वर-कन्या के हार्दिक मिलन का प्रतीक समझा जाता है।

(८) ज्योनार—बारात के भोजन करते समय जो गीत गाये जाते है वे 'ज्योनार' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन गीतों मे सुरुचिपूर्ण स्वादिष्ट भोजनों के नाम गिनाये जाते हैं। एक अवधी-लोक-गीत मे छप्पन प्रकार के भोज्य पदार्थों का उल्लेख पाया जाता है।[1]

---

१. इन्दु प्रकाश पाण्डेय, अवधी लोक गीत और परम्परा (भूमिका) पृ० ६३-६४

(९) गाली—बारात के भोजन करते समय गाली गाने की प्रथा प्रचलित है इन गालियों को कोई बुरा नहीं मानता। बल्कि सच तो यह है इन गालियों को सुनने के लिये समधी (वर का पिता) लालायित रहता है। इन गालियों मे अश्लीलता का अभाव होता है। ये राग द्वेष से रहित प्रेम की प्रतीक मानी जाती हैं।

(१०) परिछन—विवाह के पश्चात् बहू जब अपने ससुर के द्वार पर जाती है तब उसकी सास उसका परिछन करके उसे गृह में प्रवेश कराती है। भोजपुरी मे इस कृत्य को 'परिछावन' कहते हैं। विवाह के लिए जाते हुए वर का भी 'परीछावन' किया जाता है।

(११) बनरा तथा बनरी—बनरा शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के वर से मानी जाती है। 'बनरा' को 'बन्ना' भी कहा जाता है जिसका स्त्रीलिंग बनरी होता है जो 'बन्नी' का समानार्थक है।

(१२) नकटा—यह शब्द संस्कृत के 'नाटक' का अपभ्रंश रूप है। विवाह के लिए बारात के चले जाने पर, वर पक्ष के घर में, रात्रि के समय, बड़ा उल्लास मनाया जाता है। घर तथा टोलें मुहल्ले की स्त्रियाँ एकत्रित होकर नाटक, स्वाँग तथा प्रहसन का आयोजन करती हैं। ये स्वाँग अधिकतर गीत मय होते हैं। इन गीतों में हास्य और मनोरंजन का पुट प्रधान होता है। इन गीतो को 'नकटा' और पूरे कार्य-क्रम को 'नकटौरा' या 'खोड़िया' कहा जाता है। भोजपुरी प्रदेश में इस कृत्य को 'डोमकछ' के नाम से अभिहित किया जाता है, जिसमे स्त्रियाँ पुरुषो का वेश धारण कर रात मे देहाती मर्दों को चकमा दे देती है। 'नकटा' के गीतों मे हास-परिहास की मात्रा अधिक पायी जाती है। कोई नायिका अपने प्रेमी से कहती है कि:—[1]

> "छोड़ दे राजा! डगरिया हमरी—टेक
>
> जब सुनय पाइहैं ससुर हमारे,
> डाकल देइहैं डेहरिया अपनी॥
> जब सुनय पाइहै जेठ हमारे,
> छुअइ न देइहैं गगरिया अपनी॥

इन गीतों मे पति-पत्नी का प्रेम, परिहास तथा मान-मनौवल, पत्नी का कुपित होना, आदि मार्मिक प्रसंगों का वर्णन पाया जाता है। एक उदाहरण लीजिए—

> "पिया माँगे गौना मैं नादान।
> सइयाँ के बोलाये से मैं न बोलूँ;
> यार के बोलाये से बोलूँ जैसे मैना।
> सइयाँ के इशारे से मैं ना देखूँ;
> यार के इशारे से डोले दोनों नैना॥

दाम्पत्य प्रेम तथा काम-क्रीड़ा का यह वर्णन कितना मर्मस्पर्शी तथा मन-मोहक है। कोई स्त्री कहती है कि—[2]

---

१. अवधी लोक-गीत पृ० ६१ गीत संख्या ३४

२. वही पृ० ६९ गीत संख्या ४४

"नजर हमरे लागि गई अरे मोरी गोइयाँ—टेक
जउ हमरे बलमू दुअरवा पर आये,
ओसरवा में भाग गइउँ, अरे मोरी गोइयाँ ॥१॥
जउ मोरे राजा कोठरिया मां आये,
सेजरिया में भाग गइउँ, अरे मोरी गोइयाँ ॥२॥
जउ मोरे राजा सेजरिया पर आये;
गोदिया में लोटि गइउँ, अरे मोरी गोइयाँ ॥३॥

कितना सुन्दर तथा हृदयहारी यह दृश्य है।

(१३) **घोड़ी**—घोडी नामक गीत विवाह संस्कार के समाप्त होने पर गाये जाते हैं जो प्राय विनोद पूर्ण होते है। इसमें घोडी की प्रशंसा की जाती है जो प्राय' साकेतिक होती है। किसी सन्दर्भ में इसका संकेत समधिन की ओर होता है और कहीं नयी विवाहिता बधू से।

(१४) **सेहरा**—सेहरा एक प्रकार की फूल की झालर है जिसे वर विवाह के अवसर पर अपने माथे से बाँधे रहता है। भोजपुरी प्रदेश में प्रचलित इसे 'मौर' का प्रतीक समझना चाहिए। इस प्रथा से संबधित सेहरा के गीत बहुत ही प्रिय है। "सिर पर सेहरा बाँधना" आजकल मुहावरे के रूप में प्रसिद्ध हो गया है।

(१५) **गवना**—विवाह के पश्चात् कन्या अपने पति के घर-जाती है। पिता के घर से उसकी बिदाई हो जाती है। अत: इन्हें बिदी-गीत भी कहा जाता है। इन गीतो का प्रमुख रस करुण है। गवना के गीतों में विषाद की अमिट रेखा दिखाई पडती है। इनमें करुण रस की तरंगिणी तरंगित होती दृष्टिगोचर होती है। पुत्री की बिदाई के अवसर पर कहीं माता के सतत रूदन से गंगा और यमुना में बाढ आ जाती है तो कही पिता के अश्रुपात से समस्त संसार में अंधेरा छा जाता है। करुण रस का ऐसा मर्मस्पर्शी वर्णन अन्यत्र उपलब्ध नही होता। ये 'बिदा के गीत' क्या हैं करुणा और विषाद की स्रोतस्विनी है जिसमे जन-मन अपनी सुध-बुध खो देता है।

(१६) **झूमर**—झूमर उन गीतो को कहते है जो विभिन्न अवसरों पर बड़े प्रेम से गाये जाते हैं। कभी ये यज्ञोपवीत के अवसर पर सुनाई पड़ते हैं तो कभी विवाह के समय। स्त्रियाँ समूह में झूम-झूम कर बड़ी तन्मयता से इन्हे गाती है इसीलिए इन गीतों का नाम 'झूमर' पड़ गया है।

इन गीतों का वर्ण्य विषय शृङ्गार रस है। इनमे संयोग और वियोग दोनो प्रकार के शृङ्गार का बड़ा सुन्दर वर्णन उपलब्ध होता है। कही पर पति के साथ भोग-विलास करने का चित्रण पाया जाता है तो कही वियोग के कारण विरह-विधुरा विरहिणी का प्रलाप पाषाण-हृदय को भी पिघला देता है। संभोग शृङ्गार का यह वर्णन देखिये—[1]

"एक्कइ खटोलवा पर दुई सुतबइया;
करवटिया का तरसई दुहनउ जने॥

[1] अवधी लोक गीत पृ० ८० गीत सख्या ५५

एकइ बिरवना माँ दुइ दुइ कुचवइया;
कूचइ का तरसइ दुइनउ जने ।।"

किसी प्रेमिका का अपने प्रेमी से यह निवेदन कितना हृदयहारी है—[1]

'हमइँ धानी रंग चुनरी रँगाइ दे पिआ । टेक
बागा लगाइ दे, बगइचा पिआ ।।
उसमे छोटा सा निबुला लगाइ दे पिआ ।
बिना तोरे न मानइ हमारा जिआ ।।"

झूमर के गीत द्रुत गति से गाये जाते है। इन्हे शृङ्गार रस का सागर कहे तो कुछ अत्युक्ति नही होगी। अवधी लोक-गीतों मे अपनी सरसता के कारण झूमरो का प्रधान स्थान है।

ऋतु गीत

वर्ष में आने वाली विभिन्न ऋतुओं में जो गीत गाये जाते हैं उन्हें 'ऋतु गीत' कहा जाता है। अवधी प्रदेश में ये गीत चार प्रकार के होते हैं जो निम्नांकित है।

(१) सावन (२) कजली (३) होली और (४) बारह मासा। भोजपुरी प्रदेश मे भी चार प्रकार के ही ऋतु गीत उपलब्ध होते हैं जिनके नाम निम्न है—

(१) कजली (२) होली (३) चैता और (४) बारहमासा। अवधी के ऋतु गीतों का संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जाता है।

(१) **सावन**—सावन के मन-भावन मास मे झूला झूलते समय जो गीत गाये जाते हैं उन्हे 'सावन' कहते हैं। इसका नामकरण सावन मास के नाम पर हुआ है। इन गीतो मे कही उल्लास तथा उछाह पाया जाता है और कही करुणा की अभिव्यक्ति मिलती है। इन गीतो का वर्ण्य विषय मानव जीवन का सुख-दुःख है जिनका चित्रण बडी ही सुन्दर रीति से किया गया है। कुछ गीतो मे इस गीत के नाम का भी उल्लेख पाया जाता है। जैसे—

"बरिन बूरिन जल चुए, खोरिन काँदव कीच।
कवने निरमोहिया के धियवा, ससुरे में सावन होय,
लागो रे महीना सावन का।"

इन गीतो का विषय प्रधानतया शृङ्गार रस होने के कारण इनमे कही विरहिणी की वेदना सुनाई पड़ती है तो कहीं प्रेमी और प्रेमिका का वार्तालाप कर्ण-कुहरों मे अमृत उड़ेलता है।

संभोग शृङ्गार की एक बानगी देखिए—[2]

"हमका ढूढ़े कहाँ पउबा साँवलिया। टेक
जउ मैं होतिउँ बन कइ कोइलिया;
लासा फँदाय तुहैं लउ अउबइ जनिया ।।"

---

१ अवधी लोक गीत पृ० ८७ गीत संख्या ६०

२ वही पृ० ११० गीत सख्या ८६

सावन के एक दूसरे गीत मे कोयल की मीठी बोली सुनकर किसी विरहणी की नीद हराम होने का उल्लेख पाया जाता है।[1]

"मोरवा बोलै सारी रात, रात पिया नीद न आवै।
बागा भी बोले, बगइचा भी बोलै,
आरे बोले निबुलवा की डारि ॥१॥
रात पिया नीद न आवै।"

२. कजली—सावन के मन-मोहक महीने मे जो गीत गाये जाते है उन्हे 'कजली' कहते हैं। अवधी प्रदेश में इस मास मे एक दूसरा भी गीत गाया जाता है जो 'सावन' के नाम से प्रसिद्ध है। वर्ण्य विषय की दृष्टि से इन दोनों प्रकार के गीतो मे कुछ विशेष अन्तर नहीं है। क्योंकि दोनो मे शृङ्गार रस—संभोग तथा वियोग शृङ्गार—की प्रधानता पाई जाती है। सावन के कुछ गीत लोक गाथा (पवाड़ा) शैली में भी पाये जाते है परन्तु कजली मे कथा-तत्व का नितान्त अभाव होता हैं। गेयता, मनोरमता, सरसता तथा मधुरता मे ये उपर्युक्त दोनों ही गीत समान कोटि मे रखे जा सकते है।

सावन का महीना सचमुच ही बडा सुहावना होता है। इस मास मे पर्वतीय प्रदेश की रमणीयता का तो कुछ कहना ही नही, ग्रामीण प्रकृति भी बड़ी सुन्दर तथा मनोरम दिखाई पडती है। प्रत्येक गाँव मे किसी बाग में या तालाब के किनारे झूले लगाये जाते हैं जिनमे बैठ कर गाँव की तरुणियाँ झूला झूलती है। इस झूला का आनन्द लेती हुई वे अपने कोकिल कण्ठ से कजली के गीत गाती जाती हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश मे झूला झूलने की प्रथा अत्यधिक प्रचलित है। विशेषकर मिर्जापुर शहर मे इसका अधिक प्रचलन है।

'कजली' नामक गीतों का वर्ण्य विषय संभोग शृङ्गार है। इन गीतो मे शृङ्गार रस लबालब भरा रहता है जिसे कितना भी पान किया जाय तृप्ति नही होती। किसी-किसी गीत में 'हे हरी' या 'रे हरी' की अन्त मे पुनरावृत्ति पायी जाती है। जैसे—[2]

"हरे रामा, बाबा के सागरवा मोरवा बोलइ रे हरी—टेक
हरे रामा; मोरवा के सबदिया सुनके जियरा घबड़ाने रामा;
हरे रामा; बपइ पंछी देइ दे मोर गवनवा रे हरी ॥१॥
हरे रामा, एसउँ के सावनवा बेटी, खेल्उ न कजरिया रामा;
हरे रामा, आगे अगहन माँ देबइ तोर गवनवाँ हे हरी ॥२॥"

कृष्ण के प्रति किसी गोपी की उक्ति कितनी मार्मिक है। श्याम का रसियापन देखिए—[3]

---

१. अवधी लोक गीत, पृ० ११२ गीत संख्या ८६
२. वही, पृ० १५२ गीत संख्या १३५
३. वही, पृ० १४२ गीत सख्या १२१

"मै पानी भरइ जाँउँ, स्याम मारइ नजरिया—टेक
अपुनी तउ पहिरइ स्याम धोती, अँगउछा,
मैं पानी भरन जाँउ मोर चमकइ चुनरिया।"

इसी प्रकार कजली के गीतो मे श्रृङ्गार रस छलका पड़ता है। सच तो यह है कि सरसता की दृष्टि से यह अपना सानी नही रखता।

३. **बारहमासा**—बारहमासा उन गीतो को कहते है जिनमे विरहिणी नायिका के वर्ष भर के बारह महीनो में अनुभूत कष्टो का वर्णन होता है। जिनमें केवल छ· मास के कष्टों का वर्णन होता उन्हे 'छः मासा' और जिनमें केवल चार महीनो के कष्टो का उल्लेख उपलब्ध होता है उन्हे 'चौमासा' कहा जाता है। बारहमासा की परम्परा अत्यन्त प्राचीन ज्ञात होती है। जायसी ने पद्मावत में नागमती के वियोग का 'बारहमासा' मे वर्णन किया है। ऐसा ज्ञात होता है कि लोक मे प्रचलित बारहमासा की शैली को लेकर जायसी ने अपनी रचना की होगी।

'बारहमासा' का वर्ण्य विषय प्रधानतया विप्रलम्भ श्रृङ्गार है। परन्तु इनमे कही-कही सभोग श्रृङ्गार की भी झाँकी देखने को मिलती है। प्रियतम के परदेश चले जाने पर उसकी प्रियतमा वर्षा, शिशिर, हेमन्त, वसन्त, ग्रीष्म, आदि ऋतुओ में तथा वर्ष के प्रत्येक मास मे जिन कष्टों का अनुभव करती है, उन्ही का वर्णन बारहमासा मे किया जाता है।

बारहमासा का प्रारम्भ प्राय आषाढ मास से पाया जाता है, परन्तु कुछ गीतों में यह वर्णन पूस मास से उपलब्ध होता है। जैसे—

"लागे हइ पूस, जिअरा भइले दुइ टूक,
जरइ नइहर के रहनवाँ, अरे साँवलिया॥"

जैसा कि पहिले कहा जा चुका है, बारहमासा का प्रारम्भ आषाढ मास से होता है। फिर इसके पश्चात् सावन, भादो, कुवार, कार्तिक आदि महीनो मे विरहिणी के द्वारा स्वयं अनुभूत कष्टों का मार्मिक चित्रण पाया जाता है। केवल एक उदारहण ही पर्याप्त होगा—[1]

"लागे मासवा आसाढ, बाढै नदिया औ नार।
कइगे राति दिना गाढ़, ननदी के बिरना॥१॥

लागे सावन महीना; गोरी करथी सिंगार।
गुँहइ मोती बार बार, सब पहिरि गहना॥२॥

लागे मासवा कुँआर; घर भावे ना दुआर।
छल कइलन बड़ा भारी; ननदी के बिरना॥३॥

लागे कातिक का महीना; अब ना चुवई पसीना।
हमरी महल अँधियारी, के लेसाबइ दियना॥४॥"

---

१. अवधी लोक गीत- पृ० १७४, गीत संख्या १५९

इसी प्रकार से जाड़े में अत्यधिक शीत से कष्ट तथा ग्रीष्म ऋतु में प्रचण्ड गर्मी से पीड़ित होने का वर्णन पाया जाता है। बारहमासा गीतों की विशेषता यह है कि वियोगिनी स्त्री के वर्ष भर के बारहो महीनों में अनुभूत कष्टों का चित्रण एकत्र पाया जाता है जिससे पाठकों के हृदय में विरहिणी के प्रति स्वाभाविक सहानुभूति उत्पन्न हो जाती है।

जिस प्रकार 'झूमर' संभोग शृंगार से सराबोर तथा परिपूर्ण होता है उसी प्रकार से बारहमासा विप्रलम्भ शृंगार का महाकाव्य माना जाता है। लोक-गीत की विभिन्न विधाओं में बारहमासा का अपना विशिष्ट स्थान है।

भजन

अवधी लोक-गीतों में संभोग शृंगार तथा विप्रलम्भ शृंगार एवं करुण रस प्रचुर परिमाण में पाया जाता है। परन्तु इसके अतिरिक्त शान्त रस का आस्वादन भी कुछ गीतों में उपलब्ध होता है। जिन गीतों में मानव हृदय की भक्ति का उद्रेक हुआ है, जिनमें मनुष्य की भावना अपने आराध्य देव के चरणों में समर्पित है, ऐसे गीत भजन के नाम से अभिहित किये जाते है। 'भजन' नामक गीतों में कहीं राम और कृष्ण की स्तुति की गई है तो कहीं गंगा मइया, शीतला माता अथवा किसी अन्य कुल देवता या देवी की महिमा गायी गई है। कहीं पापी मन को भजन करने का उपदेश दिया गया है तो कहीं राम-नाम की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है।

इन भजन के गीतों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय भक्ति है। सामान्य जनता के उपास्य देव राम, कृष्ण और शिव है। अतः इनकी पूजा-आराधना करने के लिए इनमे विशेष आग्रह दिखलाया गया है। स्त्रियाँ जब गंगा-स्नान के लिए जाती हैं अथवा किसी देवता के दर्शन के लिए प्रस्थान करती हैं तब सम्मिलित होकर समवेत स्वर में गंगा मइया के गीत गाती हैं। ऐसे ही भक्ति-भावना से समन्वित विषयों का वर्णन भजन के गीतों में पाया जाता है।

(ग) **अवधी का आधुनिक साहित्य**—आजकल अवधी भाषा मे लोककवियों के द्वारा साहित्य का निर्माण बड़ी तीव्र गति से हो रहा है। अवधी के आधुनिक कवियों में पं० बलभद्र दीक्षित 'पढ़ीस', पं० बंशीधर शुक्ल तथा श्री चन्द्र भूषण मिश्र 'रमई काका' का नाम सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। जन-कवियों की इस त्रयी ने अवधी साहित्य के निर्माण में समधिक योगदान दिया है।

'पढ़ीस' जी की भाषा सीतापुर की विशुद्ध अवधी है जिसमें हास्य और व्यङ्ग के साथ ही साथ गंभीर भावों को भी स्थान मिला है। पं० बंशीधर शुक्ल का जन्म लखीमपुर जिले में हुआ था। आप लोक-भाषा के प्रख्यात कवि हैं। व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, वर्तमान शासन तथा धर्म के ये कटु आलोचक है। आपकी 'म्युजिक कान्फरेन्स' शीर्षक कविता बहुत प्रसिद्ध है जिसमें आपने आधुनिक काल के 'संगीत सम्मेलनों' की खिल्ली उड़ाई हैं।

इस 'त्रयी' के तीसरे कवि श्री चन्द्रभूषण मिश्र हैं जो अपने उपनाम 'रमई काका' के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। आप अनेक वर्षों तक लखनऊ की 'आकाशवाणी' से संबद्ध रहे हैं। ये एक अच्छे 'रेडियो आर्टिस्ट' होने के अतिरिक्त सफल कवि

भी है। आपकी कविताओ मे हास-परिहास, व्यंग और आलोचना की प्रधानता रहती है। संभवत. इनकी कविताओ का एक सग्रह 'बौछार' नाम से प्रकाशित भी हो चुका है। कवि-सम्मेलनो में आपकी सरस तथा हास्य रस प्रधान कविता को सुनकर श्रोता-गण लोट-पोट हो जाते हैं। अवधी के आधुनिक कवियो मे 'रमई काका' का प्रधान स्थान है।

इन कवियों के अतिरिक्त श्री दया शंकर दीक्षित 'देहाती', श्रीमृगेश जी, लक्ष्मण प्रसाद मिश्र और 'लिखीस जी' का भी नाम लिया जा सकता है। पं० बल-भद्र दीक्षित के सुपुत्र पं० युक्ति भी दीक्षित—जो अनेक वर्षो से आकाश वाणी, प्रयाग से सबद्ध हैं—भी सुन्दर तथा सरस कविता करते है। परन्तु इनकी कविताओं का संग्रह अभी तक प्रकाश मे नही आया है।

इधर कुछ वर्षों से अवधी प्रदेश के विद्वानो मे अपने साहित्य और संस्कृति को सुरक्षित करने की नयी चेतना जाग्रत दिखाई पड़ती है। अवधी लोक साहित्य के सम्बन्ध मे श्री इन्दु प्रकाश पाण्डेय की 'अवधी लोक-गीत और परम्परा', डा० त्रिलोकी नारायण दीक्षित का 'अवधी और उसका साहित्य' तथा डा० सरोजिनी रोहतगी का विद्वत्तापूर्ण शोध प्रबन्ध "अवधी-लोक साहित्य" नामक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है। प्रिन्सिपल रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर' ने 'अवधी-शब्द कोष' का निर्माण कर एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है। डा० गौरी शकर मिश्र ने 'अवधी पहेलियो पर, डा० छोटे लाल द्विवेदी ने "अवधी लोकोक्तियों" पर तथा डा० चक्रपाणि पाण्डेय ने 'अवधी लोक-गीतो' पर, डा० कृष्णदेव उपाध्याय के निर्देशन मे शोध-पूर्ण कार्य किया है। इन्हें पी० एच०-डी० की उपाधि भी प्राप्त हो चुकी है। अवधी भाषा तथा साहित्य के सम्यक् विकास के लिए 'अवधी लोक-साहित्य सम्मेलन' की स्थापना की गई है। कुछ वर्षो से 'अवध-भारती' पत्रिका का प्रकाशन भी हो रहा है। इस प्रकार अवधी के लोक साहित्य का भविष्य अत्यन्त समुज्वल है।

[खण्ड : एक]

संस्कार-संबंधी-गीत

- सोहर
- विवाह
  - कन्यापक्ष के गीत
  - वरपक्ष के गीत
- नकटा
- झूमर

सोहर

१. सन्दर्भ—पुत्र प्राप्ति के लिए कौशिल्या की काशी में स्नान करने की इच्छा।

मचिअइ[1] बइठी कउसिल्या रानी सिंगारइ[2] राजा दसरथ।
राजा कासी माँ लागे नहावन[3] चलबया नहाइत हो ॥१॥
का तू कउसिल्या देबू सुरुज कुण्ड, का हो भरत कुण्ड।
काहे का देबू गुपुतदान[4] कवन फल पइबू हो ॥२॥
सोनवा त देवइ[5] सुरुज कुण्ड रूपवा भरत कुण्ड।
गउआ क देबइ गुपुतदान पूत फल पाउब हो ॥३॥

रानी कौशिल्या मचिया पर बैठी हुई हैं और राजा दशरथ उनका शृङ्गार कर रहे है। कौशिल्या उनसे प्रार्थना करती है कि काशी में स्नान लग रहा है। वहाँ नहाने के लिए चलिए ॥१॥

इस पर राजा दशरथ पूछते हे कि ए रानी कौशिल्या ! तुम सूर्यकुण्ड और भरतकुण्ड मे कौन सा गुप्त दान करोगी। तुम्हे किस फल को पाने की अभिलाषा है ॥२॥

कौशिल्या जी उत्तर देती है कि मै सूर्यकुण्ड पर सोना और भरतकुण्ड पर चाँदी का दान में दूँगी। गुप्त रूप से गायो को दान मे दूँगी और इस प्रकार पुत्र-रत्न रूपी फल को पाऊँगी ॥३॥

इस गीत मे पुत्र प्राप्ति के लिए माता की चिन्ता की ओर सकेत किया गया है। पुत्र को पाने के लिए मातायें कौन सा तीर्थ, व्रत और दान नही करती ? गीत की कौशिल्या एक साधारण अवधी माता का प्रतीक है। भोजपुरी लोक-गीतो में भी इस प्रकार के भाव प्रचुरता से पाये जाते हैं।

२. सन्दर्भ—रामचन्द्र के जन्म होने पर कौशिल्या की प्रसन्नता तथा राजा दसरथ के दुःख का वर्णन।

जेहि दिन राम जनम भये धरती अनन्द भई;
होइ गये सुरपुर सोर अवधपुर सोहर हो ॥१॥

---

१ मचिआ। २ शृङ्गार करत है ३ स्नान पर्व ४ गुप्त ५ दूँगी।

मन का उछाही कउसिल्या रानी पटना[1] लुटावइ;
मन का दुखित राजा दसरथ पोथिया[2] बचावइँ हो ॥२॥

भल बउरानिउ[3] कउसिल्या रानी,
केइ बउराबा[4] हो।
रानी बरहा वरिस कइ राम होइहै;
तउ बन का सिधवइ[5] हो ॥३॥

भल बउरान्या राजा दशरथ;
के बुधि हरि लीन्हा हो ॥४॥

छूट जेठनिया कै ताना;
छूट देउरनिया कइ मेहना।
छूट बझिनियाँ कै नाँव;
कतहु राम रहसु हो ॥५॥

जउने घाटे रामा नहैहीं,
धोतिया पछारेहि[6] हो।
बुन्द एक पनिया बहैहै;
हमहू तरि जावइ[7] हो ॥६॥

जिस दिन रामचन्द्र का जन्म हुआ उस दिन पृथ्वी आनन्दित हो गई। देवताओं के लोक में (राम जन्म के कारण) शोर मच गया और अयोध्या में सोहर के गीत गाये जाने लगे ॥१॥

कौशिल्या रानी मन में प्रसन्न होकर गरीबों को वस्त्र लुटा रही है परन्तु राजा दशरथ दुःखी होकर ज्योतिषियों से इसका फल पूछ रहे है ॥२॥

राजा दशरथ कहते है कि ए कौशिल्या! तुम कितनी बावली हो, तुमको किसने पागल बना दिया है। ए रानी! बारह वर्ष की अवस्था होने पर राम बन को चले जायेंगे ॥३॥

राजा दशरथ! आपकी बुद्धि को किसने छीन लिया है। राम के जन्म होने से मेरी जेठानी जो ताना मारती थी उससे मेरा पिण्ड छूट गया और देवरानी की निन्दा से भी छूट गयी। राम कहीं भी रहें परन्तु उनके पैदा होने से मेरा वन्ध्या का नाम छूट गया ॥४-५॥

कौशिल्या कहती हैं कि राम जिस घाट पर स्नान करेगें और अपनी धोती

---

१. पट या वस्त्र। २. पुस्तक, ज्योतिष का ग्रन्थ। ३. पागल। ४. पागल कर दिया। ५. सिधारना जायेंगे। ६. निचोड़ना। ७. तर जाऊँगी।

को निचोड़ेंगे, उस जल के एक बूंद को भी प्राप्त कर लेने पर मैं तर जाऊँगी अर्थात् मेरा जीवन सफल हो जायेगा ॥६॥

३ सन्दर्भ—पुत्र जन्म के उपलक्ष में भावज के द्वारा ननद को कँगना देने का उल्लेख।

माँगइ ननद रानी कँगना हो, लालन के भये ॥टेक॥

डेहरी[1] के ठाढ़े ससुर समुझावइं,
दइदेआ[2] पतोहु रानी कगना हो लालन के भये ॥१॥

डेहरी के ठाढ़े जेठ समुझावइ,
देइदेआ भहेहु रानी कंगना हो लालन के भये ॥२॥

डेहरी के ठाढे देवर समुझावइं,
देइदेआ भउजि रानी कंगना हो लालन के भये ॥३॥

डेहरी के ठाढ़ बलम समझावइं,
देइदेआ मोरी रानी कगना हो लालन के भये ॥४॥

भितरा से कंगना अंगनवाँ माँ फेकैन,
लइजा[3] सवति रानी कगना हो, लालन के भये ॥५॥

भावज को पुत्र उत्पन्न होने पर उसकी ननद इसके उपलक्ष में कँगना माँग रही है। ड्यौढ़ी के पास खड़े होकर ससुर जी समझा रहे है कि ए पुत्र-वधू ! पुत्र होने की खुशी मे ननद को कँगना दे दो ॥१॥

वही पर खड़े होकर जेठ और देवर क्रमश. समझा रहे है कि ए बहू रानी ! ए भावज ! आज पुत्र-जन्म के उत्सव के उपलक्ष मे ननद को अपना कँगना दे दो ॥२—३॥

उसी ड्यौढ़ी के पास खड़ा होकर उसका पति भी समझाता हुआ कहता है कि ए मेरी रानी ! तुम अपना कँगना दे दो ॥४॥

इस पर क्रोधित होकर उस स्त्री ने घर के भीतर से कँगने को बाहर फेंक दिया और कहने लगी कि ए मेरी सौत ! तू इस कँगने को ले जा ॥५॥

४. सन्दर्भ—पुत्र जन्म के उपलक्ष में ननद द्वारा भावज से अपना नेग माँगना।

लेइब तोहार गुलवदना[4] हे भउजी ॥ टेक ॥
गइआ न लेबइ भँइसिआ न लेबइ,

---

१ देहली ड्यौढ़ी। २ दे दो ३ ले जावो ४ गहना-विशेष

लेबइ अगिल[1] हर[2] बरदा हे भउजी ॥१॥
टाठी[3] न लेबइ, लोटा न लेबइ,
लेबइ गड़ारदार[4] गगरा हे भउजी ॥२॥
कोठे चढ़ि आपन स्वामी समझांवइं,
मागइ अगिल हर बरदा हे स्वामी ॥३॥
मागइ गड़ारदार गगरा हे स्वामी ॥४॥
अतना बचन ननदी सुनइ पाइन,
लइ गई उठाइ दुधपिअना[5] हे भउजी ॥५॥
जिनि[6] दे आ बरदा, जिनि दे आ गगरा;
जिनि दे आ कगना हे भउजी ॥६॥
लेइब तोहार दुधपिअना हे भउजी ॥७॥

ननद भावज से कहती है कि ए भावज ! मै पुत्र-जन्म के उपलक्ष मे गुलवदना नामक गहना लूँगी । मै गाय या भैंस नहीं लूँगी । मैं हल मे सदा आगे चलने वाले तेज बैल को लूँगी ॥१॥

मै थाली या लोटा नहीं लूँगी । मै सुन्दर पीतल का घड़ा लूँगी ॥२॥

वह स्त्री अटारी पर चढकर अपने पति से कहती है कि ननद तेज बैल तथा सुन्दर घड़ा नेग के रूप में मांग रही है ॥३—४॥

इतनी बात को ननद अभी सुन भी नही पाई थी कि वह बच्चे की दूध पिल्ली को उठा कर लेकर चली गई ॥५॥

उसने क्रोध में आकर कहा कि मुझे बैल भी मत दो; घड़ा भी मत दो, ए भावज ! मुझे कँगना भी मत दो ॥६॥

मै तो तुम्हारे दूध पीने के बर्तन को ही लूँगी ॥७॥

५ सन्दर्भ—रात में सीता के द्वारा स्वप्न देखना तथा कौशिल्या से उस स्वप्न का विचार करने की प्रार्थना ।

सोवति रहेयुँ अटरिआ,[7] सपन एक देखेयुँ हो,
सासु सपने क करहु विचार, सपन बड़ा सुन्दर हो ॥१॥
सपने माँ देखेउ सासु ! ससुरु राजा दसरथ हो,
हाथे लिहे अम्मा घवदिया[8] सिंगासन चढ़ि बइठे हो ॥२॥
सपने माँ देखेयुँ सासु ! सासु कौसिल्या रानी हो ।
हाथे लिहीं मानिक[9] दिअनो[10] त उ अरती उतारइ हो ॥३॥

---

१. तेज । २. हल का बैल । ३. थाली । ४. सुन्दर । ५. दूध का पात्र । ६. मत । ७. अटारी, महल । ८. एक ही डण्ठल में लगे हुए कच्चे आमों का समूह । ९ माणिक्य । १० दीपक

सपने माँ देखेउँ देवरा, देवरा लछुमन हो।
हाथ लिहीं धनुस बान, डेवढ़िआ[1] चढ़ि बइठइ हो ॥४॥
सपने माँ देखेउ राजा रामचन्द्र हो।
हाथ लिहें कमल, कमल कर फूल चउक[2] चढ़ि बइठइ हो ॥५॥

सीता जी अपनी सासु से कह रही है कि मैं अटारी पर सो रही थी। इतने ही मे रात को मैंने एक स्वप्न देखा। हे सासु इस स्वप्न का विचार करो। यह बड़ा सुन्दर सपना है ॥१॥

हे सासु। मैने सपने मे देखा कि राजा दशरथ आम के कच्चे फलो को हाथ मे लेकर सिंहासन पर विराजमान है ॥२॥

हे सासु ! सपने में मैंने यह भी देखा कि मेरी सासु कौशिल्या अपने हाथ मणि का दीपक लेकर आरती उतार रही है ॥३॥

सपने मे मैंने देखा कि मेरा देवर लक्ष्मण हाथ मे धनुष-वाण को लेकर ड्योढ़ी पर बैठा हुआ है ॥४॥

राजा रामचन्द्र हाथ मे कमल का फूल लेकर पूजा के निमित्त आसन पर बैठे हुए हैं ॥५॥

६ **सन्दर्भ—किसी बन्ध्या स्त्री का पुत्र प्राप्ति के लिए देवी की पूजा।**

पाँचइ पान कइ बिरवा, त दोहरी[3] सुपरिआ लागइ हो।
निकली सहस रनिवास[4] भगउती क पूजन हो ॥१॥
गलेवा चढाई गजरा,[5] मुखे क पनवा हो;
अउ चुनरी चढाये अनमोल, जटाधरि[6] नरिअर हो ॥२॥
अतना चढ़ावा[7] देवी देखिन, हँसि मुसुकानी।
तेवई[8] कवन संकठ तोहइं लागे त अतना चढाथउ हो ॥३॥
सोनवाँ त हमरे बहुत बाटइ रुपवा के कमी नाहीं हो;
देवी ! एक संतति कुलहीन त जनम अकारथ[9] हो ॥४॥
जाहु तेवई घर आपन अब जिनि आयउ हो,
तेवई आजु के नवयें महीनवा होरिल[10] तोहरे होइहे हो ॥५॥
आजु के नवये महीनवा देवी ! होरिल हमरे होइहें हो।
सोने क छत्र[11] गढ़उबइ[12] त तोहका[13] चढ़उबइ हो ॥६॥

---

१. ड्योढ़ी। २. पूजा के लिए पवित्र स्थान। ३. दुगुनी। ४. रंगमहल। ५. फूलो की माला। ६. छिलके वाला। ७. देवता पर चढ़ाने की वस्तु। ८. स्त्री। ९ व्यर्थ। १० पुत्र ११ छाता १२ बनाऊँगी १३ तुमको

कोई स्त्री देवी की पूजा के लिए अपने रनिवास से निकली। उसने पूजा के निमित्त पाँच बीड़ा पान तथा दस सुपारी लिया था ॥१॥

उसने देवी के गले में फूलों की माला पहिनाई, उनको पान खाने को दिया, बहुमूल्य साडी भेंट की तथा नारियल चढ़ाकर उनकी पूजा की ॥२॥

देवी ने जब इतना चढावा देखा तब वह अपने मन में मुसकराने लगी और उससे पूछा कि ए भक्त स्त्री ! तुम्हारे ऊपर ऐसा कौन-सा सकट आ गया जिसके लिए तुम इतना चढावा चढा रही हो ॥३॥

स्त्री ने उत्तर दिया कि हमारे पास सोना बहुत है, रुपया की कमी नही है हे देवी ! एक सतान के बिना सारा जनम बेकार है ॥४॥

देवी ने उसकी प्रार्थना सुनकर उससे कहा, अब तुम अपने घर जाओ, अब मत आना। आज से नवे महीने तुम्हारे पुत्र होगा ॥५॥

देवी का आशीर्वाद सुन उस स्त्री ने कहा, नवे महीने मेरे पुत्र होगा, मै सोने का छत्र गढवा कर आपको चढाऊँगी ॥६॥

७. सन्दर्भ—पुत्र-प्राप्ति के लिए किसी स्त्री का देवी-पूजन की तैयारी।

रामइ राम गुन गायउँ गाइ सुनायउँ,
अब अउरउ[1] बिसरि सब जाइ, राम नाही बिसरइ ॥१॥
हँथवा कि लिहिन चनन[2] कपुरन बाती[3]।
रानी चढ़ि गईं अपनी अटरिया थराथर काँपइं ॥२॥
का देखि चढलिउ अटरिया, त का देखि कापिउ।
रानी काहे क मुखवा मलीन काहेक मन धूमिल[4] ॥३॥
अब तोहि देखि चढ़ली अटरिया, सेजिआ देखि काँपेउ,[5]
राजा तु तउ तिनिउ लोक क ठाकुर मथवा चनन सोहइ ॥४॥

कोई स्त्री कहती है कि मैं राम का गुन गाती हूँ और उसी को गाकर लोगों को सुनाती हूँ। अन्य किसी को मैं भले ही भूल जाँउ परन्तु राम के नाम को मैं कभी नहीं भूल सकती ॥१॥

हाथ में चन्दन तथा कपूर की बाती (आरती करने की टिकिया) को लेकर रानी अपनी अटारी पर चढ गई और थर-थर कांपने लगी ॥२॥

तब उसके पति ने पूछा कि हे रानी ! तुम किसको देखकर अटारी पर चढ गई और किसको देख कर काँप रही हो। रानी ! आज तुम्हारा मुख मलीन क्यों है और तुम्हारा मन उदासीन क्यों दिखाई पड़ता है ॥३॥

१. अन्य। २. चन्दन। ३. वर्तिका। ४ उदासीन। ५ काँप रही हूँ।

रानी ने उत्तर दिया कि ए राजा ! मै तुम्हे देखकर अटारी पर चढ आई
को देखकर मेरा मन थर-थर कॉप रहा है। हे राजा तुम तीनों लोक के
तुम्हारे माथे पर पवित्र चन्दन सुशोभित हो रहा है ॥४॥

**८. सन्दर्भ—किसी वन्ध्या स्त्री की मार्मिक वेदना। पुत्र के अ
में उसे घर से निकाल देना।**

सासु मोरी कहेली बझिनियाँ[1] ननद ब्रजवासिन हो।
रामा जिनकी मै बारी रे बिआही,[2] उइ घर से निकारेन हो ॥१॥
घर में से निकली बझिनियाँ, जगल बीच ठाढ़ी हो।
रामा बन से निकरी वघिनिया, त दुःख-सुख पूछइ हो ॥२॥
तिरिया ! कौनी बिपति की मारी जंगल महं[3] ठाढ़ी[4] हो ॥३॥
सासु मोरी कहेली बझिनियाँ ननद ब्रजवासिन हो।
बाघिनि ! जिनकी मइ बारी बिआही, उइ घर से निकारेन हो ॥४॥
बाघिनि ! हमका जो तुम खाइ लेतिउँ बिपतिया से छूटित हो।
जहवाँ से आइउ उलटि उहाँ जाउ, तुमहि नाहीं खावइ हो ॥५॥
बाझिन ! तोहका जो हम खाइ लेवइ हमहुँ बाझिन होवइ हो।
उहाँ से चलली बझिनियाँ बिवउरी[5] नगीचे ठाढ़ी हो ॥६॥
रामा बिवउरी से निकरी नागिनिया तो दुःख-सुख पूछइ हो।
तिरिया ! कउने बिपती की मारी बिवउरी लागे ठाढ़ी हो ॥७॥
सासु मोरी कहेली बझिनियाँ ननद ब्रजवासिन हो।
नागिन ! जिनकी मइ बारी रे विआही, उइ घर से निकारेन हो ॥८॥
नागिन ! हमका जो तुम डसि लेतिउ विपति से हम छूटित हो।
जहवाँ से तुम आइउ उलटि तहाँ जाओ,
हम तुमहि नाहि डसवइ हो ॥९॥
बाझिन ! तुमका जो हम डसि लेवइ,
हमहूँ बाँझिन होवइ हो।
उहवाँ से चलली बझिनियाँ मइया[6] द्वारे ठाढ़ी हो ॥१०॥
भीतरा से निकरी जो माई तो दुःख-सुख पूछइ हो।
बहिनी कउनी बिपति तुमरे ऊपर उहाँ से चली आइउ हो ॥
सासु मोरी कहेली बझिनियाँ ननद ब्रजवासिन हो।
मइया जिनकी मइ बारी रे बिआही उइ घर से निकारेन हो ॥

१. वन्ध्या। २. व्याहता स्त्री। ३. मध्य, में। ४. खड़ी। ५. बिल (साँ
माता।

मइया हमका जो तुम राखि लेतिउ।
बिपति से हम छूटित हो।
जहवाँ से तुम आइउ उलटि उहाँ जाओ;
तुमहि नाही रखबइ[1] हो ॥१३॥

बहिनी तुमका जो हम राखि लेबइ,
हमहूँ बाँझिन होइबइ हो।
उहवाँ से चलली बझिनियाँ,
जगल बीच ठाढ़ी हो ॥१४॥

धरती तुम ही सरन अब देहु,
बाझिन नाम छूटइ हो ॥१५॥

जहवाँ से तुम आइउ उलटि उहाँ जाओ;
तुमहि नाही राखइ हो।
बाझिन तोहका जो हम राखि लेब,
हमहूँ होइब ऊसर[2] हो ॥१६॥

कोई बन्ध्या स्त्री पुत्र के अभाव के कारण अपने मार्मिक दुखो का वर्णन करती हुई कहती है कि मेरी सास मुझे बाझिन (बन्ध्या) कहती हैं और ननद मुझे ब्रजवासिन (साधुनी) के नाम से पुकारती है। मै जिनकी ब्याहता पत्नी हूँ (अर्थात् मेरा पति) उसने भी मुझे घर से बाहर निकाल दिया है ॥१॥

दु खी होकर वह बन्ध्या स्त्री घर से निकल जाती है और जगल के बीच जाकर खड़ी हो जाती है। इतने मे बन में से बाघिन निकलती है और उस बन्ध्या से उसका दु ख-सुख पूछने लगती है ॥२॥

बाघिन पूछती है कि ए स्त्री ! तुम किस विपत्ति से दु.खी हो कि तुम जंगल मे आकर यहाँ खड़ी हो ॥३॥

दु.खिया स्त्री उत्तर देती है—मेरी सास मुझे बन्ध्या और ननद ब्रजवासिन कहती है तथा मेरे पति ने भी मुझे घर से निकाल दिया है ॥४॥

ए बाघिन ! यदि तुम मुझे खा लेती तो मैं बिपत्ति से छूट जाती अर्थात् बन्ध्या के नाम से मुझे मुक्ति मिल जाती। इस पर बाघिन ने कहा—ए स्त्री ! जहाँ से तुम आई हो वही लौट कर चली जावो। मैं तुम को नहीं खाऊँगी ॥५॥

ए बाझिन ! यदि मैं तुमको खा लूँगी तो मै भी तुम्हारे ही समान बन्ध्या बन जाऊँगी।

वहाँ से वह बन्ध्या स्त्री चली और एक सर्प के बिल के पास खड़ी हो गई ॥६॥

---

१ रखूँगी। २ बंजर भूमि जिस पर अन्न नहीं पैदा हो सकता

इतने मे बिल मे से एक नागिन (नाग---सर्प की मॉदा) निकली और उससे सुख-दु ख पूछने लगी। नागिन ने कहा---ए तिरिया ! (स्त्री) तुम किस बिपत्ति की मारी हुई हो ? और इस बिल के पास क्यो खडी हो ॥७॥

इस पर दु.खिया बन्ध्या ने उत्तर दिया---मेरी सास मुझे बाँझिन कहती है और ननद ब्रजवासिन के नाम से पुकारती है। ए नागिन ! जिनकी मैं व्याहृता पत्नी हूँ उसने भी मुझे घर से निकाल दिया है। इसलिए यदि तुम मुझे डॅस (काट) लेती तो मै इस विपत्ति से छूट जाती ॥८॥

नागिन ने उत्तर दिया---जहाँ से तुम आइ हो, वही तुम लौट कर चली जावो। मै तुम्हे नहीं काटूँगी ॥९॥

ए बाझिन। यदि मै तुनको काट लूंगी तो मैं भी बन्ध्या बन जाऊँगी ॥१०॥

वहाँ से वह बाझिन चली और देवी के मन्दिर के द्वार पर खडी हो गई। इतने मे देवी मन्दिर के भीतर से निकली और उससे दु ख-सुख पूछने लगी। ए बहिन ! तुम पर कौन सी विपत्ति पड़ी है जिससे तुम यहाँ चली आई हो ॥११॥

स्त्री ने उत्तर दिया---मेरी सास मुझे बॉझिन और ननद ब्रजवासिन कहती है। मेरे पति ने भी मुझे घर से निकाल दिया है ॥१२॥

बन्ध्या प्रार्थना करती है---ए माता ! यदि आप मुझे अपनी शरण ले लेती तो मैं इस विपत्ति से छूट जाती। देवी ने उत्तर दिया---ए बहिन ! यदि मै तुमको अपने यहाँ शरण दे दूँगी तब मै भी बाझिन हो जाऊँगी ॥१३॥

वहाँ से चलकर वह स्त्री जंगल में चली गई और कहने लगी ए धरती माता ! अब तुम्हीं मुझे शरण दो जिससे मेरा बन्ध्या होने का कलंक दूर हो जाय ॥१४-१५॥

इस पर धरती ने उत्तर दिया कि जहा से तुम आई हो वही लौट कर तुम चली जावो। ए बॉझिन ! यदि मैं तुमको अपने यहाँ शरण दूँगी तो मैं भी बन्ध्या अर्थात् ऊसर हो जाऊँगी ॥१६॥

विशेष---इस लोक गीत मे किसी बन्ध्या स्त्री की दुर्दशा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया गया है। वह सास, ननद और अपने पति के दुर्व्यवहार से इतना ऊब जाती है कि जंगल में भग जाती है। वहाँ वह बाघिन, साँपिन, देवी माता और धरती से प्रार्थना करती है परन्तु न तो उसे खाने के लिए कोई तैयार है और न शरण देने के लिए। क्योकि उन्हे इस बात का भय है कि कही बन्ध्यापन की छूत उन्हें भी न लग जॉय और वे भी बॉझ न हो जाय।

हिन्दू समाज मे किसी स्त्री का बन्ध्या और विधवा होना एक महान् अभिशाप है। भोजपुरी में भी इसी समान भाव वाला एक गीत पाया जाता है। उस गीत मे भी बन्ध्या की दुर्दशा इसी प्रकार से वर्णित है

९. सन्दर्भ—आदर्श सतीत्व का वर्णन। पशुओं की स्त्रियों में भी सतीत्व की भावना।

छोटइ पेड़ छिउलि[1] करि पनवन[2] झापक[3],
नेहि तर ठाढ़ि हरिनिया हरिन बाट[4] जोहत[5] हो ॥१॥
चरत चरत हरिन आयेन, छिउलिया तरा ठाढ़ भयेन।
हरिन काहे के तोरा मुखवा मलीन काहे मन धूमिल हो ॥२॥
कि तोर चरवा[6] झुराय[7] गयेन कि पनिया उड़ाय गयेन।
हरिन काहे क मुखवा मलीन, काहे मन धूमिल हो ॥३॥
नाहिं मोरा चरवा झुराय, नाहिं पनिया उड़ाय गयेन।
राजा के भयेन नन्दलाल, तोहइ[8] मरवइहइं[9] हो ॥४॥
के कइ बगिया लगाई के हुढ़वइ हइ हो।
के कइ बहुआ गरभ से जे हमहि मरवइहइ हो ॥५॥
राजा दसरथ बगिया लगाविइँ, कउसिल्या हुढ़वइहइ हो।
राम के भये नन्दलाल तुहइँ मरवइहइ हो ॥६॥
मचिअइ बइठी कउसिल्या रानी हरिनी अरज करइ हो।
रानी मांसु के सिझैया[10] रसोइया, खलरि[11] हमइ देतिउ हो ॥७॥
रानी खलरि के टाँगव छेउलिया, तउ फिरि फिरि अउबइ हो।
खलरिया देखि जाबइ[12] जानुक[13] हरिन जीइतइ हो ॥८॥
जाहु हरिन घर आपन खलरि नाहिं देबइ हो।
हरिन खलरी के खँजड़ी मढ़उबइ,[14]
ललन हमरे खेलिअइ हो ॥९॥

छोटा ढाक का पेड़ है और वह पत्तों से ढका हुआ है। उसके नीचे खड़ी हुई दुखित हरिणी हिरन का रास्ता देख रही है—उसके आने की प्रतीक्षा कर रही है ॥१॥

चरते चरते हिरण आया और वह ढाक के पेड़ के नीचे खड़ा हो गया। उसने हरिणी से पूछा कि आज तुम्हारा मुख मलीन क्यों है और क्यो तेरा मन दुःखी है ॥२॥

क्या तेरा चरागाह सूख गया है अथवा तालाब में पीने का पानी सूख गया? इसलिए ए हिरणी! तुम्हारा मन क्यो दुखी है ॥३॥

---

१. ढाक का पेड़। २. पत्ता। ३ ढका हुआ। ४. रास्ता। ५. प्रतीक्षा करना। ६. चरागाह ७. सूख गया। ८. तुमको। ९. मरवा डालेंगे। १०. पकता है। ११. खाल, चमड़ा। १२. देख जाऊँगी। १३. जानों। १४. मढ़ाऊँगी।

इस पर हरिणी ने उत्तर दिया कि न तो मेरा चरागाह सूखा है और न पानी ही कम हुआ है। आज राजा दशरथ को पुत्र पैदा हुआ है। उसी की प्रसन्नता मे वे आज तुम्हे मार कर तुम्हारा मास खायेगे ॥४॥

हिरन ने पूछा कि किसने बगीचा लगाया है और कौन खोजेगा ? किसकी स्त्री गर्भवती है जो दोहद के कारण मुझे मार डालेगा ॥५॥

हरिणी ने उत्तर दिया—राजा दशरथ ने बगीचा लगाया है। कौशिल्या तुम्हे खोजवायेंगी। आज रामचन्द्र पैदा हुए है अतः (खाने के लिए) तुम्हारा बध किया जायेगा ॥६॥

कौशिल्या रानी मचिया पर बैठी हुई है। हरिणी उनसे प्रार्थना करती हुई कहती है कि हिरन का मास रसोई घर में पकाया जा रहा है परन्तु उसका खाल मुझे दे दीजियेगा ॥७॥

रानी ! मै इस खाल को पेड़ पर टाँग दूँगी और वहाँ बार बार आऊँगी। मै खाल को देखकर यह समझूँगी कि मानो हिरन जी रहा हो ॥८॥

इस पर रानी कौशिल्या ने उत्तर दिया कि ए हरिणी ! तुम अपने घर जावो, मै तुम्हे खाल नहीं दूँगी। मैं इस खाल से खँजड़ी मढ़ाऊँगी जिससे मेरा बच्चा खेलेगा ॥९॥

विशेष टिप्पणी—यह गीत अनेक दृष्टियों से बहुत ही महत्वपूर्ण है। भारतीय स्त्रियो का सतीत्व एक आदर्श तथा अनुकरणीय वस्तु है। इस गीत मे सतीत्व की यह भावना पशु-जगत मे भी दृष्टिगोचर होती है। हिरन के प्रति हरिणी का प्रेम अद्वितीय तथा असामान्य है। दूसरे इसमें सामन्तशाही युग की झलक भी दिखलाई पड़ती है जब गरीबों को सता कर राजा-महाराजा आनन्द किया करते थे। अवधी मे एक अन्य लोक गीत भी इसी प्रकार का प्रचलित है जिसमे इस गीत की अपेक्षा दो पंक्तियाँ अधिक है। इन पत्तियों का भाव यह है कि जब जब वह खजडी बजती है तब खडी होकर हरिणी उस आवाज को सुनकर विसूरती है। हृदय की द्रावकता और उत्कट दाम्पत्य प्रेम की दृष्टि से यह गीत अपना सानी नही रखता। यह गीत क्या है करुण रस का महाकाव्य है।

१०. सन्दर्भ—**ननद और भावज का शाश्वतिक विरोध। पुत्र उत्पन्न होने पर भी ननद को ससुराल से न बुलाने का भावज का दुराग्रह।**

दुअरा से सँइआँ[1] आयेन,[2] हँसत बोलत आयेन;
धना[3] से पूछत आयेन, धना तोहरउ दिना[4] निचकाने
बहिनिआ आनइ जाबइ हो ॥१॥

१ पति। २ आये ३ धनिया, स्त्री। ४ पुत्र के पैदा होने का समय।

हमरे देवरानो बाटीं[1], हमरे जेठानी बाटो;
अवइ[2] बूढ़ा सासु बाटी,
पिया ! बहिनिया आनइ जिनि जाया हो ।।२।।

मोर घरवा, बनवा लूटि लेइही हो ।।३।।

ईंधन, लकड़ी डाइदिहा, चूल्हा आगि बारिदिहा
बटुइ चढ़ाइ दिहा, दाल चाउर डाइ दिहा ।।४।।

खुदुर[3] बुदुर चुरइ[4] लागी, धीरे से चलाइ दिहा ।
मजे माँ उतारि लिहा, टाठी[5] मा फइलाइ दिहा ।।५।।

तनी घिअना डाइ दिहा, डेहरी[6] डकाइ[7] दिहा ।
सुपुर सुपुर खाइ लिहा ।।६।।

पिआ बहिनिआ आपन जिनि जाआ,
मोर घर, बनवा, लूटि लेइही हो ।।७।।

तोहरे नइहरवा जाबइ, अपने ससुररिया जाबइ;
लड़िकन के ननिअउरे[8] जाबइ हो ।।८।।

धना ! बहिनि आनन[9] ना जावइ हो ।
मोर घरवा, बनवा लूटि लेइहि हो ।।९।।

एक वन गये, दूसर बन, तीसरे बहिनि बाटी हो ।
बहिनि चल तू न अपने नइहरवा,
त तोहरे भतीज भये हो ।।१०।।

दुअरा ते ननदो आई, झुलनी झमकावति[10] आई,
ननदी भइ है डेहरिआ के ठाढ,[11] त भउजी से बात करइ हो ।।११।।

आइउ तउ आइउ ननदी, डेहरी न डांकइ[12] देबइ,
कूँड़ा मां पिसान[13] बाटइ,[14] हाथे न लगावइ देबइ ।।१२।।

खाबउ करबू, पीबउ करबू, चलत कि ढरकाइ[15] देबू
ननदी कुँइना जगतिआ[16] प जाबू;
हमार दुःखवा रोइ अइबू हो ।।१३।।

किसी स्त्री का पति द्वार पर से हँसते बोलते अर्थात् प्रसन्न चित्त आया और

---

१. है । २. अभी । ३. भात के भद भद करने की आवाज । ४. रसोई पकने लगेगी । ५. थाली । ६. द्वार, दरवाजा । ७. बाहर कर देना । ८. नाना के घर । ९. लाने के लिए । १०. चमकाती हुई । ११. खड़ी । १२. पार करना । १३. आटा । १४ है । १५ गिरा देना । १६ कुँये के पास ऊँचा, पक्का स्थान ।

अपनी स्त्री से पूछने लगा कि अब तो तुम्हारा दिन नजदीक आ गया है अर्थात् पुत्र पैदा होने का दिन समीप है। अत मै अपनी बहिन को उसकी ससुराल से लिवा लाने के लिए जाऊगा ॥१॥

इस पर उसकी स्त्री कहती है कि मेरे घर में देवरानी मौजूद है, जेठानी है, अभी मेरी बूढ़ी सासु भी जीवित है। इसलिए हे प्रियतम ! तुम अपनी बहिन को लिवा लाने के लिए मत जाना। यदि तुम्हारी बहिन आयेगी तब मेरा घर, द्वार सभी कुछ लूट कर लेकर चली जायेगी ॥ २–३ ॥

तुम लकड़ी को चूल्हे मे डालकर उसमे आग जला देना। फिर चूल्हे के ऊपर बटुली (पतीली) चढ़ा देना, फिर उसमे चावल और दाल डाल देना। जब वह खिचड़ी खुदुर बुदुर आवाज करती हुई पकने लगेगी तब धीरे से उसे चला देना। फिर उसे चूल्हे पर से उतार लेना। फिर उस खिचड़ी को थाली में फैलाकर उसमे थोडा घी डाल देना और सूतिका गृह के द्वार को पार कर उसे मुझे दे देना। मैं उसे सुपुर सुपुर करके खा लूँगी ॥ ४–५–६ ॥

ए प्रियतम ! तुम अपनी बहिन को लाने के लिए मत जाना क्योकि वह मेरा घर, द्वार सब लूट ले जायेगी ॥ ७ ॥

पति कहता है—मैं तुम्हारे मायके जाऊँगा, अपनी ससुराल जाऊँगा, अपने बच्चो के ननिहाल जाऊँगा ॥ ८ ॥

ए धनिया ! तुम निश्चिन्त रहो मै अपनी बहिन को लिवा लाने के लिए नही जाऊँगा क्योकि वह मेरा, घर-बन लूट लेगी ॥९॥

वह व्यक्ति एक बन मे गया, दूसरे बन मे गया, तीसरे बन में उसकी बहिन रहती थी। उसने कहा—ए बहिन ! तुम अपने मायके (अर्थात् मेरे घर) चलो क्योकि तेरा भतीजा पैदा हुआ है।

अपने भाई के साथ ननद द्वार पर से अपनी झूलनी को चमकाती हुई आई और दरवाजे पर आकर खड़ी हो गई तथा भावज से बाते करने लगी ॥११॥

भावज ने उससे बडी रुखाई के साथ कहा कि ए ननद ! आने को तो तुम अपनी ससुराल से आ गई। परन्तु मै तुम्हे अपने घर के भीतर न आने दूँगी। बडे घडे में आटा रखा हुआ है परन्तु मैं तुम्हे उसमे हाथ नही लगाने दूँगी ॥१२॥

तुम मेरे घर मे रहते हुए खाओगी, पीओगी और चलते समय उस आटे को घडे में से गिरा दोगी और ए ननद ! तुम गाँव के कुँओ की जगत पर जाकर मेरा दुःख रो रोकर सब को सुनाओगी ॥१३॥

टिप्पणी—इस गीत में दुष्टा भावज का बडा ही सजीव चित्रण किया गया है। पुत्र जन्म के अवसर पर भावज ननद को आभूषण, रुपया-पैसा आदि नेग के

रूप मे दिया करती है। परन्तु उपर्युक्त गीत में ननद को नग देने की बा रही भावज उसे ससुराल में बुलाना भी नही चाहती और अनिमंत्रित । अनायास चले आने पर उसे घर के भीतर भी घुसने नही देती। संस्कृत स ननद को दुष्टा के रूप मे चित्रित किया गया है और उसे "मर्मच्छेदपटुः" की से विभूषित किया गया है। परन्तु दुष्टा भावज का यह विकृत रूप जो इस गीत मे चित्रित है अन्यत्र उपलब्ध नही होता।

११. सन्दर्भ—यशोदा के द्वारा कृष्ण को खोजना।

कमर मे सोहे करधनिया,[1] पाँव में पैजनियाँ[2]।
ललन दूरि खेलन जनि जाओ ढूढ़न हम न अउबै ॥१॥

सात बिरन[3] की बहिनियाँ बाप धिया एके।
हरि जी के परम पियारी ढूँढन कइसे अउबै ॥२॥

भोर भये भिनसरवा[4] कलेवना[5] की जुनिया[6]।
होइगे कलेवना की बेर ललन नहिं आये ॥३॥

अँगिया तो फाटै बँदै बंद अँचरा करै कर।
छतिया उठी हहराय ढूँढ़न हम जावइ ॥४॥

रनिया सिर के उतारे चुनरिया पियरिया सिर ओढ़ेनि[7]।
रनिया धरेनि जोगिनिया के भेस कुँजन बन चलि गई ॥५॥

ओहि कुँजन बीच कन्हैया पाँसा खेलत रहे।
सोरह सौ सखियन बीच कन्हैया पाँसा खेलत रहे ॥६॥

कान्हा पाछे उलटि जब चितवै जसोदा मइया ठाढ़ी रहे।
सात बिरन की बहिनियाँ बाप धिया एकै।
मइया बाबू की परम पियारी ढूढ़न कइसे आइउ ॥७॥

छोड़ेउँ मइ सातो बिरनवा बाप क नइहर।
छोड़ दिन्हौं हरि की सेजरिया ढूँढ़न हम आइउँ ॥८॥

जइसे कुँमार[9] क अउवाँ[10] त भभकि[11] भभकि रहे।
बेटा वइसइ[12] माई क करेजवा[13] धधकि धधकि रहे ॥९॥

---

१. करधनी-कमर में पहिनने का आभूषण। २. पैजनी-पैर में पहिन गहना, पायल। ३. भाई। ४. प्रातःकाल। ५. कलेवा, जलपान। ६. जून, स ७. सिर पर ओढ़ने का वस्त्र। ८. पुत्री। ९. कुम्भकार। १०. आँवा। ११. [illegible] निकलना। १२ वैसे ही। १३ कलेजा हृदय

कृष्ण के कमर मे करधनी और पैरों में पैंजनी सुशोभित है। यशोदा जी कहती है कि ए बच्चे! तुम दूर खेलने के लिए मत जाना क्योंकि मै ढूंढ़ने के लिए नही जाऊँगी ॥१॥

मै सात भाइयो की बहिन हूँ अपने पिता की अकेली पुत्री हूँ और अपने पति की परम प्यारी पत्नी हूँ। मैं तुम्हे ढूढ़ने के लिए कैसे जाऊँगी ॥२॥

परन्तु जब प्रात काल हुआ और कलेवा (जलपान) करने का समय आ गया तब भी प्रिय कृष्ण लौट कर नही आये ॥३॥

कृष्ण के वियोग के कारण यशोदा की अंगिया के बन्द टूटने लगे, उनका आँचल फटने लगा और उनकी छाती धड़कने लगी। उन्होंने कहा—मै कृष्ण को ढूँढने के लिए जाऊँगी ॥४॥

रानी (यशोदा) ने अपने सिर से चूनरी हटा कर रख दिया और सिर पर पीली ओढ़नी ओढ ली। और जोगिनी का वेश धारण कर कुंज बन मे चली गई ॥५॥

उसी कुंज के बीच सोलह सौ गोपियो के साथ कृष्ण पाशा (जुआ) खेल रहे थे।

कृष्ण ने पीछे उलट कर देखा तो यशोदा खड़ी थी। उन्होंने कहा कि तुम सात भाइयों की बहिन हो, पिता की एक ही पुत्री है और 'बाबू' की परम प्यारी हो। तुम ढूंढने के लिए कैसे चली आई। यशोदा ने उत्तर दिया—मैंने सातो भाइयो को छोड दिया, अपने मायके (पितृगृह) का भी परित्याग कर दिया। अपने पति की शय्या को तिलांजलि दे दी। तब मै तुम्हे ढूंढने के लिए आई ॥८॥

जिस प्रकार से कोहार के आँवा से आग भभकी पड़ती है उसी प्रकार से माता का हृदय पुत्र के लिए तड़पता रहता है ॥९॥

विशेष—इस गीत मे पुत्र के प्रति माता की ममता का सजीव चित्रण किया गया है। माता के हृदय की उपमा धधकते हुए आँवा से दी गई है जो कितनी सुन्दर है। कृष्ण को बन-बन में जाकर खोजना यशोदा के पुत्र के प्रति उत्कट अनुराग को प्रकट करता है।

१२. सन्दर्भ—अयोध्या में सीता को कष्ट। राम का अज्ञात बन में चला जाना। सीता का लक्ष्मण के चरित्र पर अनुचित सन्देह।

अब तक रहेउँ राजा जनक घर, राजा जनक घर।
सोने के सुपलिया[1] पछोरा[2] मोतिया हलोरा[3] ॥१॥

---

१ सुपुली। २ पछोरना या फटकना। ३ हिलोरना।

जब से आए दसरथ घर, राजा दसरथ घर,
सखि जरि मरि भयेउँ कोइलिया, जरि भसम भयेउँ ॥२॥

सभवा माँ बइठ राजा दसरथ राम से अरज करइ हो।
बेटा! कौन सीता का दु:ख दीना, सखिया सँग रोवइँ हो ॥३॥

हँसि के राम महल गयेन, बिहँसि गुलेलिया[1] लिहेन[2] हो।
सीता अब सुख सोबा, महलिया से गुपुत होइ जाबइ हो ॥४॥

अरे अरे लछुमन देवरा बिपतिया के नायक,[3] हो।
देवरा जाइ ढूढ़ा आपन भइया, गुपुत होइ जइहे हो ॥५॥

हेरेउँ[4] कासी, परयाग, अवरु पुरपाटन[5] हो।
भउजी एक नाहीं हेरेउँ गुपुत बन,[6] जहाँ राम गुपुत भयेन हो ॥६॥

केकरी सेजिया लगाइब, फूल छितराइब[7] हो।
देवरा केकरी टहल उठि लागब रामइ बिसराउब[8] हो ॥७॥
हमरी सेजिया लगाइउ, फूल छितराइउ हो।
भउजी हमरी टहलिया उठि लागउ, रामा का बिसराबइ हो ॥८॥

जउने मुँहे आमा[9] न खाबा, अमिलिया[10] न चाखा हो।
जउने मुँहे लछमन गोहराबा[11] पुरुष कइसे भाखइ[12] हो ॥९॥

अरे अरे पापिनि भऊजी[13] पाप जिनि लावा हो।
भऊजी जइसेन माता कउसिल्या, वइसेन तुम्हइ जानव हो ॥१०॥

सीता जी कहती हैं कि जब मैं अपने पिता राजा जनक के घर में थी तब मैं सोने की सुपुली मे मोती पछोरा करती थी ॥१॥

परन्तु जब से राजा दशरथ के घर आई हूँ तब से मैं जल कर कोयल के समान काली और जल कर भस्म हो गई हूँ ॥२॥

सभा मे बैठे हुए राजा दशरथ ने राम से पूछा कि बेटा! सीता को किसने दु:ख दिया है कि वह अपनी सखियो से दु:ख कह रही है ॥३॥

इतना सुनते ही राम हँसते हुए महल मे गये और अपने हाथ मे गुलेल ले लिया और सीता से कहा कि तुम अब सुखपूर्वक महल मे सोवो। मै इस महल से अब अज्ञात स्थान को चला जाऊँगा ॥४॥

---

१. गुलेल, मिट्टी की बनी गोली जिससे चिड़िया मारते हैं। २. लेना, लियह। ३. साथी, मित्र। ४. खोजा। ५. पटना। ६. गुप्त या अज्ञात वन। ७. बिखेरना। ८. विस्मृत या भुला दूँगी। ९. आम। १०. इमली। ११. बुलाना। १२. कहना। १३. भावज, बड़े भाई की स्त्री।

तब सीता जी ने दुखी होकर कहा कि—ए मेरे देवर लक्ष्मण ! तुम मेरे विपत्ति के साथी हो। तुम जाकर अपने भाई को ढूंढ़ो अन्यथा वे कहीं गुप्त या लुप्त हो जायेंगे ॥५॥

इस पर लक्ष्मण ने उत्तर दिया—मैंने उन्हें (राम को) काशी, प्रयाग, और पटना में खोजा। ए भावज ! मैंने उन्हें केवल एक गुप्त बन में नहीं खोजा जहाँ संभवत: राम गुप्त हो गये हैं ॥६॥

इस पर सीता जी व्यथित हृदय में कहती हैं कि अब मैं किसकी सेज बिछाऊँगी, किसकी सेज पर फूल बिखेरूंगी और अब किसकी सेवा करूँगी तथा किस प्रकार से राम को भूलूंगी ॥७॥

इस पर लक्ष्मण उत्तर देते हैं कि—ए भावज ! तुम मेरी सेज बिछाना और उस पर फूल बिखेरना। तुम मेरी ही सेवा करना और इस प्रकार राम को भूल जाना ॥८॥

लक्ष्मण के इतना कहने पर सीता का सतीत्व जाग उठता है और वे किंचित रोष से कहती हैं कि जिस मुँह से मैंने आम नहीं खाया और इमली को नहीं चखा, जिस मुँह से मैंने अपने देवर को लक्ष्मण कहकर पुकारा उसी मुँह से मैं उनको अपना पति कैसे कह सकती हूँ ? ॥९॥

लक्ष्मण अपनी सफाई देते हुए इस पर कहते हैं कि ए पापिन भावज ! कि मेरे ऊपर दुश्चरित्र होने का दोष मत लगाओ। ए भावज ! जिस प्रकार से मैं कौशिल्या को अपनी माता समझता हूँ उसी प्रकार से तुम्हें भी मैं माता के समान ही जानूंगा अर्थात् तुम्हारा माता के ही तुल्य आदर एवं सम्मान करूँगा।

टिप्पणी—लोक गीतों में सीता और लक्ष्मण का संबंध बड़ा ही सुन्दर और आदर्श रूप में चित्रित किया गया है। परन्तु इस गीत में सीता लक्ष्मण के चरित्र पर शंका करती हैं। यद्यपि लक्ष्मण अन्त में अपने चरित्र की सफाई देते पाये जाते हैं।

१३. सन्दर्भ—बालकों के मनोरंजन के लिए गाये जाने वाला गीत।

मोर भइया, मोर भइया सबही क जीउ;
खाँइ घिउ खिचरी जुड़ाइ[1] मोर जीउ[2] ॥१॥
हथवा जिनि चुम्मेआ हूँथ साकरि[3] होइहीं,
गोडवा जिनि चुम्मेआ बिदेसिआ होइ जइहीं ॥२॥
चुम्मा लिलार घर टिकँइत[4] होइहीं ॥३॥
मोर भइया मोर भइया काहे क रोवइँ।

---

१. संतुष्ट होता है। २. जीव, हृदय। ३. बद्धमुष्ठि, कंजूस। ४. टिकैत, जिसका राज्याभिषक होने वाला हो।

लाली गुलाली[1] छडिअवा क रोवइँ ॥४॥
मन झनिआँ क फूल वहिनिआँ क रोवइँ ॥५॥
मोर भइया मोर भइया हीरा कली ;
जाइ ससुररिअइ निहारइ[2] गली ॥६॥
भइया कइ दुलहिनि भइले खड़ी ,
अस मन होथ कि मारइ छडी ॥७॥
जे मोरे भइया क बोलइ तुकारि[3] ;
ओकरी[4] जिभिआ धरउँ अँगारि ॥८॥
भइया आवइँ आगरे से ;
पनियाँ पीवइँ सगरे से ॥९॥
भइया आवइँ दिल्ली से ;
गुड़, घिउ खाय कुठुल्ली[5] से ॥१०॥

मेरा भाई, मेरा भाई सब का प्राण है। मैं घी और खिचड़ी खाता हूँ और इस प्रकार मेरा हृदय सतुष्ट होता है ॥१॥

हाथ को नही चूमना चाहिए क्योकि इससे मनुष्य बद्ध मुष्ठि अर्थात् कजूस हो जाता है। पैरा के चूमने से मनुष्य विदेस जाने वाला होता है ॥२॥

ललाट को चूमने से बालक राजा होता है ॥३॥

मेरे भाई, मेरे भाई तुम क्यों रो रहे हो ? मै सुन्दर तथा लाल छड़ी के लिए रो रहा हूँ ॥४॥

मैं एक पुष्प विशेष की प्राप्ति के लिए तथा अपनी बहिन के लिए रो रहा हूँ ॥५॥

मेरा भाई हीरा की कली के समान सुन्दर है। वह अपनी ससुराल जाकर गलियों मे झाकता या घूमता फिरता है ॥६॥

मेरे भाई की स्त्री उनके पास खड़ी है मेरे मन मे ऐसा विचार आता है कि इसको छड़ी से मारूँ ॥७॥

जो मेरे भाई को तू तू करके बोलता है अर्थात अपमान करता है उसकी जीभ पर मैं आग रख दूँगा ॥८॥

मेरा भाई आगरे से आयेगा और सागर—बड़े लोटे से पानी पियेगा ॥९॥

मेरा भाई दिल्ली से आयेगा और कोठिला से निकाल कर गुड़ और घी खायेगा ॥१०॥

---

१. सुन्दर। २. देखता है। ३. तू तू करके, अपमानजनक। ४. उसके। ५. मिट्टी का बनाया हुआ विशाल भाण्ड जिसमे अन्न, घी तथा गुड़ आदि रखा जाता है।

विवाह

[कन्यापक्ष के गीत]

१४. सन्दर्भ—किसी पुत्री का अपना विवाह कर देने के लिये पिता से प्रार्थना।

नीर[1] चुअइ बाबा नीर चुअतु है,
नीर चुअइ आधी राति ॥१॥
ओहि रे पिता कइ नींद कइसे लागइ,
जेहि घर कन्या कुँआरि ॥२॥
कुँइआँ क पानी सुखाइ गये बेटी,
पुरइनि गई कुम्हिलाइ ॥३॥
गंगा जमुना बिच वालू परत हइ,
अब नाहीं रचब बिआह ॥४॥
जरेइ बपइआ[2] तोर अन धन सोनवा,
मरइ लुकेसरि[3] गाइ ॥५॥
मरइ बपइआ तोर राज दुलरुआ[4],
जेहि घर कन्या कुँआरि ॥६॥
कुँइआँ क पानी भभकि आये बेटी,
पुरइनि हालरि[5] देइ ॥७॥
गंगा जमुन बिच नइया, चलउवइ,
अब तोर रचबइ बिआह ॥८॥
बाढ़इ बपइआ तोरा अन, धन, सोनवा,
जिअइ लकेसरि गाइ ॥९॥
जिअइ बपइआ तोर राज दुलरुआ,
अब मोर होइ बिआह ॥१०॥

पुत्री कहती है कि ए पिताजी! आपकी आँखों से आधी रात से अश्रुपात हो रहा है। जिसके घर में कुँआरी कन्या पड़ी हुई है उस पिता को भला नींद कैसे आ सकती है? वह कैसे सो सकता है ॥१—२॥

इस पर पिता उत्तर देता है कि—ए बेटी! कुँआ का पानी सूख गया। पुरैन का पत्ता कुम्हिला गया ॥३॥

---

१. जल आँसू। २. पिता ३. दूध देने वाली कपिला गाय। ४. प्यारा पुत्र। ५. लहलहाना।

पानी सूख जाने के कारण गंगा और जमुना के बीच रेत पड गया है। सर्वत्र सूखा पड़ने के कारण इस समय मै तुम्हारा विवाह नही करूँगा ॥४॥

इस पर क्रोधित होकर वह लडकी कहती है कि ए पिताजी! आपका अन्न, धन और सोना सब जलकर खाक हो जाय। और दूध देने वाली गाय मर जाय ॥५॥

ए मेरे बाप! तेरा प्यारा पुत्र भी मर जाय जिसके घर कन्या कुँवारी पड़ी है ॥६॥

इस पर पिता उत्तर देता है कि ए बेटी! अब कुँये मे पानी भर आया। पुरैन का पत्ता हरा होकर लहराने लगा है। अब मै तुम्हारे विवाह की तैयारी करूँगा ॥७॥

गंगा और जमुना के बीच मे पानी अधिक होने के कारण अब नाव चलने लगी है। अतः तुम्हारा विवाह कर दूँगा ॥८॥

इस पर प्रसन्न होकर पुत्री कहती है कि ए पिताजी! आपके अन्न, धन और सोना की वृद्धि हो और दूध देने वाली गाय जीती रहे ॥९॥

आपका पुत्र जीवित रहे। अब मेरा विवाह होगा ॥१०॥

कहने की आवश्यकता नही कि ऐसी दुष्टा पुत्री का वर्णन किसी अन्य लोक गीत मे उपलब्ध नही होता जो विवाह मे विलम्ब होने के कारण अपने पिता की अशुभ कामना करती है।

१५. सन्दर्भ—अपने विवाह के लिए बेटी का पिता से निवेदन।

ऊँच ऊँच बखरी[1] उठाओ मोरे बाबा;
ऊँच ऊँच राखो मोहार[2]।
चाँद सुरुज दुनो किरनी बसत है;
निहुरै[3] न कन्त हमार ॥१॥
अम्मर से धुरा मँगाओ मोरे बाबा,
पिया से भराओ मोरी माँग।
सूघर[4] बभना से गँठिया[5] जोरावहु,
जनम जनम अहिवात ॥२॥
अम्मर ड़ड़िया फनाओ मोरे बाबा;
बिदवा कराओ हमार।
सात परग[6] संग चलि कै हो बाबा;
अब मैं भइउँ पराई[7] ॥३॥

---

१ बखार, अन्नराशि। २. मिहराव। ३. झुककर। ४. सुन्दर, विद्वान्। ५. ग्रन्थि, बन्धन ६. पद। ७. पराया, दूसरे की।

कोई पुत्री अपने पिता से निवेदन करती है कि ए पिताजी! खलिहान में अन्न की ऊँची-ऊँची राशि लगाइये और घर का दरवाजा ऊँचा बनवाइये जिससे चन्द्रमा तथा सूर्य के समान प्रकाशमान मेरे पति को विवाह करने के लिए घर के भीतर आते समय, दरवाजा छोटा होने के कारण झुकना न पड़े ॥१॥

ए पिता जी! अम्मर से मेरे लिए छुरा मँगवाइये और पति से मेरी माँग भरवाइये। विद्वान् ब्राह्मण के पति से मेरा ग्रन्थि बन्धन करवाइये जिससे अनेक जन्मों में मेरा अहिवात (सधवापन) बना रहे ॥२॥

ए पिता जी! मुझे सुन्दर पालकी मे बैठाकर ससुराल भेज दीजिये। पिताजी! मैं पति के साथ सात पग चलकर अर्थात् सप्तपदी के पश्चात् दूसरे की हो गई ॥३॥

१६. सन्दर्भ—किसी पुत्री के द्वारा सुयोग्य तथा धनी वर मिलने पर पिता से अपने विवाह की प्रार्थना।

सोअति रहेंउ मायाजि के कोरवा[1],
सपना देखेयुँ अनभाति[2] ॥१॥
केकरे दुआरे माया बाजन बाजे,
केकर होइ विआह ॥२॥
तू बेटी एगलि तू बेटी गेगली,
तू बेटी चतुर सयान ॥३॥
हमरे दुआरे बेटी बाजन बाजइ,
तोहरइ होइ विआह ॥४॥
ढोलिया[3] मने करु, ढोलिया मने करु;
सहनइआ[4] कइ सबद नेवारु[5] ॥५॥
पण्डित, बराह्मन[6] तू बेद मने करु,
अब नहिं होइ विआह ॥६॥
बिनितिन[7] बइठे दुलहे कवन रामा,
सुनु धन बिनती हमार ॥७॥
कजवा[8] विकट जिनि ड़ावा मोरि धनिया,
नइआ मइ[9] खेउबइ[10] तोहार ॥८॥
काहेन कइ लेर नाव नेवरिआ,[11]
काहेन लागी पतवार ॥९॥

---

१. गोदी। २. बुरा। ३. ढोल। ४. शहनाई। ५. निषेध करना, मना करो। ६. ब्राह्मण ७. विनय, प्रार्थना करने के लिए। ८. काम। ९. मैं। १०. खेऊँगा। ११. नाव का दीर्घ रूप।

कउने देवनवा कइ सखिया भरउबेया,
तू नइया खेउबेया, हमार ।।१०।।
सोनवइ कइ तोरि नाव नेवरिआ,
रूपवइ लागी पतवार ।।११।।
सुरुजु देवतवा क सखिया भरउबइ,
नइया हम खेउबइ तोहार ।।१२।।
ढोलिआ बजाऊ बाबा, ढोलिआ बजाऊ;
सहनइआ कइ सबद सुनाउ ।।१३।।
पडित, विप्र[1] तू वेद पढ़ाऊ;
अब मोर होइ बिआह ।।१४।।

कोई लडकी कहती है कि मै अपनी माता के गोद में सो रही थी। मैंने उस समय एक अजीब सपना देखा ।।१।।

ए माता! किसके द्वार पर बाजा बज रहा है और किसका विवाह हो रहा है ।।२।।

इस पर माता ने उत्तर दिया कि ए बेटी! तुम बहुत चतुर और कुशल हो। हमारे द्वार पर आज बाजा बज रहा है और तुम्हारा विवाह होगा ।।३–४।।

लड़की अपनी माता से कहती है कि ढोल का बजाना बन्द करो और शहनाई बाजा का बजाना बन्द करो। ए माता! तुम ब्राह्मण और पडितों को वेदोच्चारण करने से मना करो। अब मेरा विवाह नही होगा ।।५–६।।

वर प्रार्थना करता हुआ कहता है कि ए धनिया! मेरी विनती सुनो ।।७।।

तुम इस कार्य मे विकट बाधा मत डालो। मैं तुम्हारी जीवन-नौका को खेकर पार लगाऊँगा ।।८।।

लडकी ने पूछा कि तेरी नाव किस वस्तु की बनी है और पतवार किस चीज की लगी है? ।।९–१०।।

वर ने उत्तर दिया—मेरी नाव सोना की बनी है और चाँदी की पतवार लगी है। मैं सूर्य देवता की पूजा करूँगा और तेरी जीवन-नौका को पार लगाऊँगा ।।११–१२।।

इस पर प्रसन्न होकर लड़की कहती है कि ए बाबा! ढोल और शहनाई को बजावो ब्राह्मण और पण्डित अब वेदोच्चारण करें अब मेरा विवाह होगा ।।१३–१४।।

---

1. ब्राह्मण।

१७. सन्दर्भ—पुत्री के विवाह के लिये पिता के द्वारा वर खोजना। अधिक दहेज माँगने के कारण वर मिलने में कठिनता।

हेरेंउ[1] कासी हेरेउ बनारस, हेरेउ देस सरुवार[2];
तोहइ जोगे बेटी सुघर[3] वर नाहीँ,
अब बेटी रहउँ कुआँरि ॥१॥
चारि परग[4] बाबा नगर अजोधिया,
दुइ वर राजकुँआर ॥२॥
ओनही[5] तिलक चढ़ायो मोर बाबा,
तब मोर रचेआ विआह ॥३॥
ओ वर मांगइ बेटी नउ लख दायज[6],
हथिनी दुअरि कइ चार ॥४॥
सोने क कलसा मँड़ये गड़वावइ,
तब करइ धरम विआह ॥५॥
जेकरे बपइआ के अतना दयज नाहीँ,
बर हेरइ अहिर गँवार ॥६॥
गउआ चरावइ मुख मुरली बजावइ,
उगाहि[7] बिआरी[8] खाँइ ॥७॥

पिता अपनी पुत्री से कहता है कि ए बेटी! तुम्हारे लिए योग्य वर मैंने काशी में खोजा, बनारस मे खोजा, और सरुआर—सरयूपार—प्रदेश मे खोजा। परन्तु तुम्हारे लायक योग्य और सुन्दर वर मुझे कही नही मिला। अत. ए बेटी! अब तुम्हें कुँवार रहना पड़ेगा ॥१॥

इस पर पुत्री उत्तर देती है कि ए पिताजी! अयोध्या नगर यहाँ से चार पग हैं अर्थात् बहुत ही कम दूर है। वहाँ राम और लक्ष्मण नामक दो राजकुमार हैं ॥२॥

ए मेरे पिता! उन्ही मे से किसी एक का तिलक चढाओ। तब मेरे विवाह की तैयारी करना ॥३॥

पिता कहता है—वह वर नौ लाख रुपया दहेज में माँग रहा है। और चार हाथी माँग रहा है। विवाह के मण्डप मे सोने का कलश स्थापित करना पड़ेगा। तब कहीं उस वर से धार्मिक विवाह सम्पन्न हो सकता है ॥४–५॥

इस पर पुत्री दु खित होकर कहती है कि जिसके पिता के पास इतना रुपया

---

१. खोजा। २. सरयूपार (गोरखपुर तथा बस्ती जिला)। ३. सुन्दर। ४. पग, दूरी ५. उनको ही। ६. दहेज। ७. माँग कर। ८. भिक्षा।

दहेज न होगा, वह अहीर (नीच जातिका) और मूर्ख वर को ही अपनी लड़की के लिए खोजेगा ॥६॥

ऐसा व्यक्ति मुँह मे मुरली बजाता हुआ (अहीर होने के कारण) गाय चरायेगा और भिक्षा माँग कर अपनी जीविका चलावेगा ॥७॥

टिप्पणी—इस गीत मे तिलक तथा दहेज प्रथा की बुराइयो को दिखलाया गया है। आज भी दहेज की प्रथा अपनी पराकाष्टा पर पहुँची हुई है और कितनी शिक्षित, सुन्दर तथा सुयोग्य लड़कियो का विवाह योग्य वर से इसलिए नही हो पाता क्योंकि उनका पिता धनाभाव के कारण लम्बी रकम को दहेज मे देने मे नितान्त असमर्थ है।

१८. सन्दर्भ—सीता के द्वारा पति प्राप्ति के लिये शिव की पूजा करना।

यहि पार गंगा वहि पार जमुना, बिचवा कदम का पेड़।
सेहि[1] तरा सीता खेलई झाकाझूमरि[2], रामा खेलई पसासार[3] ॥१॥
कँहवाँ गवाइउ सीता अतनी कि जुन्निआँ[4],
कँहवाँ गवाइउ सारी रात ॥२॥
कँहवाँ गँवाइउ सीता खड़ी[5] दुपहरिआ[6],
होइ गइ अतनी कि जून ॥३॥
काहु कहौ माथा[7] सरम कइ बतिया,
हमसे कहिया ना जाइ ॥४॥
भये राजा दसरथ घर राम दुलरुआ,
सोइ तो खेलइ पसासार ॥५॥
हँथवा के लेउ बेटी तिल अउ चाउर,
अउ बेल[8] कर पात ॥६॥
जाइ के बेटी सिउ क मनावा,
सिउ[9] वर देई असीस ॥७॥
हँथवा कि लिहा सीता तिल अउ चाउर,
अउ बेलवा कइ पात ॥८॥
जाइ के सीता सिउ क मनावइ,
सिउ बर देइ असीस ॥९॥

---

१. उसके नीचे। २. दो लड़कियाँ द्वारा दोनों हाथ पकड़ कर गोलाकार घूमने का खेल। ३. चौपड़। ४. बेला, समय। ५. मध्य। ६. दोपहर। ७. माता। ८. बेल, श्रीफल। ९. शिव।

इस पार में गंगा है, और उस पार मे जमुना है। बीच मे कदम्ब का पेड है। इस वृक्ष के नीचे सीता जी झाकाझूमरि खेलती हैं और रामचन्द्र पाँसा खेलते हैं ॥१॥

सीता की माता ने पूछा—ए सीता ! इस समय तुम कहाँ गई थी और तुम सारी रात कहाँ रही ? मध्य दोपहर की बेला को तुमने कहाँ बिताया तुम्हारे आने मे इतनी देर हो गई ? ॥२-३॥

सीता ने उत्तर दिया—ए माता। लज्जा की बात मै तुमसे क्या कहूँ। मुझसे यह कहा नही जाता है ॥४॥

राजा दशरथ के घर राजकुमार रामचन्द्र पैदा हुए हैं। वह पाशा खेल रहे थे ॥५॥

माता ने सीता से कहा कि ए बेटी ! तुम अपने हाथो में तिल और चावल लो और बेल का पत्ता लो ॥६॥

ए बेटी ! तुम जाकर शिव की प्रार्थना करना और शिव तुमको आशीर्वाद देंगे ॥७॥

सीता ने अपने हाथों में तिल, चावल और बेल का पत्ता लिया ॥८॥

सीता ने जाकर शिव की प्रार्थना की और शिव ने उन्हे आशीर्वाद दिया ॥९॥

१९. सन्दर्भ—सीता को व्याहने के लिए राम का जनकपुर जाना। मार्ग में छींक तथा उसका शकुन-विचार।

यहि पार गंगा वहि पार जमुना,
बिचवा कदम[1] कर पेड ॥१॥
तेहि तर बानिनि[2] धरेनु दुकनिआँ,
राम लछन दुइनउ[3] ठाढ़[4] ॥२॥
कि तुहुँ रामा लेबेआ खैरा सुपरिआ,
कि हो मगहिया[5] ढोली पान ॥३॥
कि तुहुँ लेबेआ[6] अवधपुर कइ सेंधुर[7],
केका[8] बिआहन जाउ ॥४॥
ना हम लेवइ खैरा सुपरिआँ,
ना हम मगहिया ढोली पान ॥५॥
हम त उ लेवइ अवधपुर कइ सेंधुर,
सीता बिआहन जाव ॥६॥

१. कदम्ब। २. बनिया की स्त्री, बनियाइन। ३. दोनो। ४. खड़े। ५. मगह प्रदेश का। ६. लोगे। ७. सिन्दूर। ८. किसको।

पुडिया बान्धेन[1] बानिन हथवा थम्हायेन[2],
बाये मुख होइ गइ छीक ।।७।।

मोरे पिछुअरवा पडितवा बेटवना[3],
छिकिआ क करउ बिचार[4] ।।८।।

दान भल पउबेआ, दयज[5] भल पउबेआ[6],
सीता बिआहि लइ आउ ।।९।।

सीता बिआहि के घरइ लइ अइबे,
आ तोहका[7] लिखा बनवास ।।१०।।

इस पार मे गंगा है और उस पार मे जमुना बह रही है। इसके बीच मे कदम्ब का पेड है ।।१।।

उसी के नीचे कोई बनिया की स्त्री ने दूकान लगा रखी है। वहा राम और लक्ष्मण दोनो ही खड़े है ।।२।।

उस बनिया की स्त्री ने पूछा—ए राम ! क्या तुम खैर (कथ्था) और सुपारी लोगे अथवा मगहिया पान लोगे। अथवा तुम अयोध्या का सिन्दूर लोगे ? तुम किसमे विवाह करने के लिए जा रहे हो ।।३-४।।

राम ने उत्तर दिया—न तो मैं कथ्था और सुपारी लूँगा और न मगहिया पान ही लूँगा। मै तो अवधपुर का सिन्दूर लूँगा। मैं सीता को व्याहने के लिए जा रहा हूँ। ।।५-६।।

बनिया की स्त्री ने सिन्दूर की पुडिया को बाँधा और राम के हाथ में दे दिया। ठीक उसी समय बायीं दिशा मे छीक हो गई।

राम ने कहा कि मेरे घर के पीछे पण्डित (ज्योतिषी) का पुत्र रहता है। तुम इस छीक का विचार करो ।।७-८।।

पण्डित पुत्र ने कहा कि—ए राम ! आप प्रभूत दान और दहेज की प्राप्ति करेंगे और सीता को व्याह करके घर भी लायेंगे। परन्तु आपके भाग्य मे बनवास लिखा है ।।९-१०।।

इस गीत मे सीता से विवाह करने के लिए राम का अवधपुर जाने का उल्लेख हुआ है। यह स्थान जनकपुर होना चाहिए। इसमे छीक के शुभ तथा अशुभ फल की ओर भी सकेत किया गया है।

---

१. बाँधा। २. दिया। ३. बेटा, छोटा लड़का। ४. शकुन। ५. दहेज। ६. पावोगे। ७. तुमको, तुम्हारे लिये।

२०. सन्दर्भ—सीता को ब्याहने के लिए राम का जाना और मार्ग के कष्टों का लक्ष्मण से वर्णन।

यहि पार गंगा रे वहि पार जमुना,
बिचवा कदम[1] क जुड़ि[2] छाँह ॥१॥
सेहि[3] तर रामा आपनि पलकी सँवारइँ,[4]
लछुमन सँवारइ आपन घोड़ ॥२॥
बेरिआ[5] कि बेरिआ तोहइ बरजउँ[6] लछुमन,
हमरी बरातन जिनि जाहु ॥३॥
हमरी बरातिआ बहुत दिना लगिहइँ;
मरि जावे भुखिआ पियासि ॥४॥
सहबइ[7] भइया भुखिआ पिअसिआ;
सहबइ भुँभुँरी[8] औ घाम[9] ॥५॥
सीता अइसी भउजी बिआहि लइ अउबउ[10],
देखबइ जनक कइ दुआर ॥६॥

इस पार गंगा है और उस पार जमुना जी है और उसके बीच में कदम्ब वृक्ष की शीतल छाया है ॥१॥

उस छाया में बैठ कर राम अपनी पालकी को सुसज्जित कर रहे हैं और लक्ष्मण जी अपने घोड़े को।

राम जी कहते है कि ए लक्ष्मण ! मैंने तुम्हे बार-बार मना किया कि तुम मेरी बारात मे मत चलो क्योंकि मेरी बारात के जाने आने मे बहुत दिन लगेंगे और भूख, प्यास के कारण रास्ते मे तुम्हे बडा कष्ट होगा ॥३-४॥

इस पर लक्ष्मण जी उत्तर देते है कि ए भाई ! मै भूखे और प्यास को सह लूँगा। मैं धूप और भूभुरि (जलती हुई गर्म बालू) को भी सह लूँगा। मै सीता ऐसी भावज को व्याह कर घर लाऊँगा और इसी व्याज से जनक का घर भी देख लूँगा।

२१. सन्दर्भ—राम का विवाह के लिए जनकपुर जाना और बारात का वहाँ स्वागत-सत्कार।

जेहि दिन राम जनकपुर आये हो।
देखन ओनई[11] है दुनिया सीताराम से बनी ॥१॥

१. कदम्ब। २. ठंढा। ३. उसके नीचे। ४. सुसज्जित करते हैं। ५. बार, बार। ६. मना किया। ७. सहूँगा। ८. गर्म बालू। ९. धूप। १०. ले आऊँगा। ११. देखूँगा। ११ उमड पड़ी है

देखन ओनई है सखिया सलहर[1] ।
जइसे झुकइ रयमुनिया[2] सीताराम से बनी ॥२॥
झीनवा[3] का भात जतन से रीधेयुँ[4],
मूँगै दाल बघारी[5], सीताराम से बनी ॥३॥
झीन मैदा रोटी, सुन्नर पोअइयो,
लय घी मां चभोरी[6], सीताराम से बनी ॥४॥
बारा[7] बरइली जतन से पोआइयो,
लय दहिया मां चभोरी सीताराम से बनी ॥५॥
काहेन की पतरी[8] बनि आइन, काहेन डोभ डोभाई ।
पानन की पतरी बनि आइन, सीताराम से बनी ॥६॥
चन्दन काटि पिढ़ई[9] बनि आई ।
पाँतिन पाँती बिछाई सीताराम से बनी ॥७॥
सोने के कटोरवा घीना[10] परोसेयु[11] ।
ऊपर नेबुल[12] रस गारी सीताराम से बनी ॥८॥
जेवन बइठे श्रीकृष्ण कन्धइया,
देति सखी सभ[13] गारी, सीताराम से बनी ॥९॥
चिठिया लिखि लिखि भेजइ माया,
जसोदा पूता छाया, सकुरारी सीताराम से बनी ॥१०॥
सभवा बइटल उनके ससुरे बढइता[14],
देव विदा[15] घर जाई सीताराम से बनी ॥११॥

जिस दिन रामचन्द्र जी विवाह करने के लिए जनकपुर गये उस दिन उनको देखने के लिए सारी दुनिया उमड़ पड़ी ॥१॥

सीता की सखियाँ राम को देखने के लिए उसी प्रकार से उमड़ पड़ी जिस प्रकार काठ की कठपुतली ॥२॥

बारात के स्वागत के लिए पतला तथा पुराने चावल का भात बनाया गया और मूँग की दाल को छौंका गया। पतले मैदे की रोटी पकाई गई और उसे घी मे चुपड़ा गया ॥३-४॥

वही बड़ा और पकौड़ी को बनाया और उसे दही मे डुबोया गया ॥५॥

किस चीज का पत्तल बना हुआ है। पान का पत्तल बना हुआ है ॥६॥

१ संगी-साथी । २. कठपुतली । ३. पतला । ४. पकाया । ५. छौंकना । ६. चुपड़ी हुई । ७. दही-बड़ा । ८. पत्तल । ९. पीढ़ा । १०. घी । ११. परोसा गया । १२. नीबू । १३. सब । १४. श्रेष्ठ । १५. बिदाई ।

चन्दन के पेड़ को काट कर पीढ़ा बनाया गया और उसे पंक्ति पर बिछा दिया गया ॥७॥

सोने के कटोरा में घी परोसा गया और ऊपर से नीबू का रस निचोड़ कर डाला गया ॥८॥

इसके पश्चात् श्रीकृष्ण भोजन करने के लिए बैठे। सब सखियाँ उन्हें गाली देने लगीं ॥९॥

चिट्ठी लिख कर माता यशोदा ने भेजा। यशोदा का पुत्र कृष्ण अपनी ससुराल मे विराज रहा है ॥१०॥

सभा मे बैठे हुए श्रेष्ठ ससुर से श्रीकृष्ण ने कहा कि अब मुझे बिदा दीजिए। मैं घर जाऊँगा।

इस गीत में श्रीकृष्ण का जनकपुर जाने का उल्लेख हुआ है जो परम्परा के विरुद्ध है।

२२. सन्दर्भ—बारात के आने का वर्णन। वर, ससुर और बारातियों का स्वागत करना।

बाजत आवय ककरैली[1] का बजना,
घुमरत आवय निसान[2] ॥१॥
कहवाँ बैठाँउ अजनिया बजनिया[3],
कहवाँ माँ हनऊँ[4] निसान ॥२॥
नाचत आवै पतरंग[5] समधिअवा;
बिहसत दुलरू दमाद ॥३॥
गोयड़े[6] के खेतवा अजनिया बजनिया;
द्वारे पर हनऊँ निसान ॥४॥
सभा मा बैठाउँ पतरंग समधिअवा;
मड़ये[7] मा दुलरू दमाद ॥५॥
का दय[8] समझावउँ अजनिया बजनिया;
का दय के हनऊँ निसान ॥६॥
का दय के समझावउँ पतरंग समधिअवा;
का दय के दुलरू[9] दमाद ॥७॥
दाल, भात दय के समझावउँ अजनियाँ बजनियाँ;
चिउ, गुड़ हनऊँ निसान ॥८॥
दइजा दय के पतरंग समधिअवा;
धिया[10] दय के दुलरू दमाद ॥९॥

---

१. स्थान विशेष। २. झंडा, नगाड़ा। ३. बाजा बजाने वाले। ४. मारना, बजाना। ५. दुबला पतला। ६. पास, समीप। ७. मण्डप। ८. दे करके। ९. दुलरुआ, प्यारा। १०. धीता, दुहिता, पुत्री।

ककरती का बाजा बजता हुआ आ रहा है और झण्डा फहराता हुआ दिखाई पड़ता है। मैं बारात मे बाजा बजाने वाले व्यक्तियो (बजनियो) को कहाँ बैठाऊ और कहाँ नगाड़ा बजाऊँ ॥१–२॥

दुबला-पतला समधी (वर का पिता) प्रसन्नता के मारे नाचता हुआ आ रहा है और दुलरुआ दामाद हँसते हुए आ रहा है। बजनिया द्वार पर आकर बाजा बजा रहा है ॥३–४॥

मैं अपने समधी को सभा (जनवासा) मे और प्यारे दामाद को विवाह के मण्डप मे बैठाऊँगा ॥५॥

मै क्या देकर बाजे वालों को समझाऊँगा ? और क्या देकर नगाड़ा बजाऊँगा। क्या देकर के समधी को सान्त्वना दूँगा और प्यारे दामाद को क्या देकर सन्तुष्ट करूँ ॥६–७॥

मैं दाल और भात खिलाकर बाजे वाले को समझाऊँगा और घी तथा गुड़ देकर नगाड़े वाले को संतुष्ट करूँगा। दहेज देकर समधी को सन्तोष प्रदान करूँगा और अपनी पुत्री को देकर दामाद को प्रसन्न करूँगा।

२३. सन्दर्भ—देवर तथा भावज का प्रेमालाप।

चारिन खूँट हमरे दावा कइ बखरिआ[1];
अँगनवाँ बिचवा ना; सोवइँ भउजी अलबेलवा[2] ॥१॥
अँगनवाँ बिचवा ना।
बइठ जगावइ लहुरा देवरवा;
उठहु हो भउजी ना, परइ कातिक कइ ओसिआ[3]
उठहु भउजी ना।
कइसे के उठउँ मोरे लहुरा देवरवा;
हमइँ हो जोगे[4] ना, बेसहा[5] दखिना[6] कइ चुनरिआ ॥३॥
हमइँ हो जोगे ना।
ओरे पीछे लागे देवरा उँगुरू घुँघुरवा;
अँचरवा-बीचे ना, ओहि बनवइ कइ मुरैला[7] ॥४॥
ओहि अँचरवा विचवा ना।
उठत बइठत बाजइ उँगुरू घुघुरूँ;
अँचरवा विचवा ना, बोलइ बन कइ मुरैला ॥५॥
अँचरवा विचवा ना।

१. बखार, घर। २. अलबेली, सुन्दरी। ३. ओस। ४. योग्य, लिए। ५. खरीदो। ६. दक्षिण देश की। ७. पक्षि विशेष।

कोई कहता है कि मेरे पिता का घर बड़ा लम्बा चौड़ा तथा चौकोर है मेरी अलबेली भावज उस घर के आँगन के बीच मे सो रही है ॥१॥

छोटा देवर उसके पलंग पर बैठ कर अपनी भावज को जगाता है और कहत है कि ए भावज ! उठो। कातिक के महीने की शीत पड़ रही है अत. बाहर सोन उचित नही है ॥२॥

इस पर भावज उत्तर देती है कि ए मेरे छोटे देवर ! मै कैसे ऊठूँ। तु मेरे पहिनने के लिए दक्षिण देश की चूनरी खरीद कर लावो ॥३॥

ए मेरे देवर ! उस चूनरी में किनारे (बार्डर) पर तथा आगे-पीछे (आँच आदि मे) घुघुरू लगा होना चाहिए और आँचल के बीच मे मुरैला पक्षी का चि चित्रित होना चाहिए ॥४॥

उस चूनरी को पहिन कर उठते, बैठते समय घुघुरू बजेगा और आँचल बीच मे चित्रित बन का मुरैला पक्षी बोलेगा ॥५॥

२४. सन्दर्भ—ननद और भावज का पारस्परिक अनन्य प्रेम।

हटियै[1] सेदुँरा मँहग भये बाबा; चूनरी भये अनमोल।
एहि सेदुँरा[2] के कारन बाबा; छोड़ेउ देस तुम्हार ॥१॥
बाबा कहै बेटी दस कोस बैहौं[3]; भैया कहै कोस पाँच।
माया कहे बेटी नगर अजोध्या; नित उठि प्रात नहाँउ ॥२॥
बाबा दिहिन अन,[4] धन, सोनवा;
माया दिहिन लहर[5] पटोर[6]।
भैया दिहिन चढ़न कै हाँ घोड़वा;
भौजी ने आपन सोहाग[7] ॥३॥
बाबा कै सोनवाँ नवै दिन खावै,
फटि जैहै लहर पटोर।
भैया के घोडवा नगर खोदैबों;
भौजी के बाढ़ै अहिवात ॥४॥
बाबा कहै बेटी नित उठ आयेव[8];
माया कहैं छठे मास।
भैया कहै वहिनी काजे बियाहे[9];
भौजी कहे कस[10] बात ॥५॥

---

१. बाजार। २. विवाह। ३. विवाह करूँगा। ४. अन्न। ५. सुन्दर। ६. वस ट। ७. सौभाग्य। ८. उठकर आना। ९. वैवाहिक कार्य के समय। १०. कैसी बा हते हो।

कोई पुत्री अपने पिता से कहती है कि ए पिता जी ! बाजार में सिन्दूर मँहगा हो गया है और चूनरी तो किसी दाम पर भी नहीं मिलती। ए बाबा ! इसी सिन्दूर अर्थात् विवाह हो जाने के कारण आज मैं तुम्हारे देश को छोड़कर ससुराल जा रही हूँ ॥१॥

पिता कहता है कि बेटी ! मैं तुम्हारा विवाह दस कोस की दूरी पर करूँगा। भाई कहता है कि पाँच कोस की दूरी पर। माता कहती है कि तुम्हारा विवाह अयोध्या नगर में होगा जिससे तुम नित्य प्रातःकाल उठ कर नदी में स्नान कर सको ॥२॥

पिता ने अपनी पुत्री के विवाह के अवसर पर अन्न, धन तथा सोना लुटाया। माता ने सुन्दर वस्त्र तथा साड़ी बेटी को दिया। भाई ने चढ़ने के लिए घोड़ा दिया और भावज ने अपना सौभाग्य उसे प्रदान किया ॥३॥

पुत्री इस पर कहती है पिताजी के द्वारा दिया गया धन नव दिन में खर्च हो जायेगा और माता के द्वारा दिये गये ये सुन्दर कपड़े भी फट जायेंगे। भैया का घोड़ा खो जायेगा परन्तु भावज के द्वारा दिया गया सौभाग्य सदा बढ़ता रहेगा ॥४॥

पिता अपनी पुत्री से कहता है कि ए बेटी ! तुम प्रतिदिन उठकर मायके चली आना। माता कहती है कि केवल छठे मास आना। उसका भाई कहता है कि ए बहिन ! तुम केवल वैवाहिक उत्सवों तथा अन्य विशेष अवसरों पर ही मायके आना। परन्तु भावज कहती है—कि यह कैसी बात है ? अर्थात् ऐसा कहना उचित नहीं है ॥५॥

विशेष—लोक-गीतों में ननद तथा भावज में शाश्वतिक विरोध पाया जाता है। परन्तु इस गीत में ननद के प्रति भावज का प्रेम बड़ा घनिष्ठ दिखलाई पड़ता है। ननद-भावज का ऐसा स्वाभाविक प्रेम अन्यत्र उपलब्ध नहीं है।

२५. सन्दर्भ—सास तथा ननद के द्वारा पीड़ित किसी स्त्री की उक्ति।

सेर भइ गोहुँआ[1] दुइ पिसनहरी[2] ;
मेढ़री भभक पिसना होइ भइया किरिआ ॥१॥
पीसि पासि घरवा के लउटेउ ;
जोखा सासु आपन पिसान[3] भइया किरिआ ॥२॥
सासु जोखइ[4] सेरवा ननद दुइ सेरवा ;
वइ सइयाँ पुरवइँ पसेरी भइया किरिया ॥३॥
सासु मारइ खुदका[5] ननद बिख बोलिआ ;
वइ सइयाँ साजइ तरवारि भइया किरिआ ॥४॥

१. गेहूँ। २. पीसनहारी, पीसने वाली। ३. आटा। ४. तौलती है। ५. डंडा।

अस केहु होतइ मोर रसिआ[1] विरसिआ ;
थाम्हिं[2] लेइ मोर तरवार भइया किरिआ ॥५॥
हम भउजी तोर बाटी रसिआ विरसिआ ;
थाम्हि लेबइ[3] तोरि तरवार भइया किरिआ ॥६॥

कोई स्त्री कहती है कि सेर भर गेहूँ है और उसको पीसने वाली दो हैं। मैं अपने भाई की शपथ खाती हूँ कि झीक डालकर इसे अच्छी तरह से पीसना होगा ॥१॥

जब आटे को पीस कर वह स्त्री घर लौट कर आई तब उसने सास से कहा कि इस आटे को तुम तौल लो ॥२॥

सास सेर भर के बाट से उस आटे को जोखती है, ननद दो सेर के बाट से उसे जोखती है और प्रियतम एक पसेरी के बाट से उसे पूरा करता है अर्थात् तौलता है ॥३॥

परन्तु जब आटा तौल में कम निकलता है तो सास डंडे से मारती है, ननद कटु तथा तीखे वचनों को बोलती है और सइयाँ मारने के लिए अपनी तलवार तेज करता है ॥४॥

इस पर वह स्त्री दु:खी होकर कहती है कि आज यदि मेरा कोई प्रेमी होता तो मेरे पति की इस तलवार को पकड़ लेता ॥५॥

इस पर उसकी ननद उत्तर देती है कि ए भावज ! मैं तुम्हारी सखी तथा मित्र हूँ। मै अपने भाई की शपथ खाती हूँ कि मैं भाई की तलवार को पकड़ लूँगी और उन्हें मारने न दूँगी ॥६॥

विशेष—दरिद्र घर की सास अपनी बहू को गेहूँ तौल कर पीसने के लिए देती है। गेहूँ के पीसने के पश्चात् बहू आटे को चुरा न ले इसलिए सास उसे फिर तौलती है। यदि आटा तौल में कम निकला तो वह बहू को शारीरिक दण्ड भी देती है। उपर्युक्त गीत में इसी का उल्लेख पाया जाता है।

२६. सन्दर्भ—रामचन्द्र जी के विवाह का वर्णन।

राम लछुमन दुइनउ भइया चले ससुरारी
की हाँ जीउ। टेक
हाथी साजै घोड़ा साजै साजि चले चारिउ भइया
की हाँ जीउ।
जाइ के उतरे प्रभु निकट नदी पर, उहँइ करत असनान
की हाँ जीउ ॥१॥

---

१. रसिक प्रेमी। २. रोक लेता। ३. लूँगी।

नउवा[1] का लउड़ा धोतिया पखारै,
बभना[2] के तिलक लगावै की हाँ जीउ ॥२॥
जाय के उतरे प्रभु जनक फुलवरिया,
सखियन खबर जनाई की हाँ जीउ ॥३॥
अँगने के पालन दुआरे कय दासन,
कापड़[3] धरत उतारी की हाँ जीउ ॥४॥
गंगा जमुना से जल भर लाइब,
राम कइ पाँव पखारेब[4] की हाँ जीउ ॥५॥

राम और लक्ष्मण दोनों भाई ससुराल को जा रहे है। वे विवाह के लिए हाथी और घोड़ा को सजा रहे है। चारो भाई चलने के लिए तैयार है। रामचन्द्र जी नदी के पास उतरे और वहाँ उन्होंने स्नान किया ॥१॥

नाई का लड़का उनकी धोती निचोड़ रहा है और ब्राह्मण का लड़का तिलक लगा रहा है ॥२॥

इसके बाद रामचन्द्र जी जनक जी की फुलवारी में गये। वहाँ आने की सूचना सीता की सखियों ने उन्हे दी ॥३॥

रामचन्द्र जी जनक के द्वार पर अपने कपड़ों को उतार कर रख रहे हैं। सखियाँ कहती है कि हम लोग गंगा-जमुना का जल भरकर लावेंगी और रामचन्द्र के पैरों को धोवेंगी ॥४-५॥

२७. सन्दर्भ—पिपासित राम और लक्ष्मण को सीता द्वारा जंगल में जल पिलाना।

राम लछन चले बनके अहेरवा[5],
बन बिच लगि गइ पिआसि ॥१॥
अस[6] केहु[7] होतइ यहि धरम नगरिआ,
बूँद एक पनिआ पिआउ ॥२॥
बँसवा के थन्हवा से निकरी सितला (सीता) रानी,
पाउ मेड़रिआ[9] झहनाइ ॥३॥
दहिने हाथे सीता लिहली झझड़े गेड़अवा[10],
पिअहु लछन जुड़ पानि ॥४॥
केकरि अहिउ तुँहु बारी[11] बिटिअवा,
केकरि बहू बहुआरि[12] ॥५॥

---

१. नाई। २. ब्राह्मण। ३. कपड़ा। ४. प्रक्षालन करना, धोना। ५. शिकार। ६. ऐसा। ७. कोई। ८. जड़, मूल। ९. विशेष आभूषण। १०. लोटा। ११. छोटी। १२. श्रेष्ठ।

केकरि[1] आहउ कुल रखनी पतोहिआ,
पनिआँ पीवइ विचारि ॥६॥
राजा जनक कर बारी बिटिअवा,
रामइ कइ बहु बहुआरि ॥८॥
राजा दशरथ क कुल रखनी पतोहिआ,
पनिआँ तूँ पिआ विचारि ॥८॥
पनिआँ ज पियें ओनकइ जेअरा[2] जुडाने[3]
घोडे पीठि भये असवार ॥६॥
डड़िआ चढा मोरी माया कि सोहागिनि,[4]
तोहइँ बिन जग अँधियार ॥१०॥

राम और लक्ष्मण वन में शिकार करने के लिए चले। बन के बीच उन्हें प्यास लग गयी ॥१॥

ऐसा कोई व्यक्ति होता जो इस धर्म नगरी मे एक बूंद पानी हम लोगों को पिला देता ॥२॥

बास की जड में से सीता देवी निकली उन्होंने अपने दाहिने हाथ में बड़ा लोटा लिया और लक्ष्मण से कहा कि तुम ठंढा पानी पियो ॥३-४॥

तब लक्ष्मण ने सीता से पूछा कि तुम किसकी छोटी बेटी हो और किसकी बहू हो। तुम कुल की रक्षा करने वाली किसकी पतोहू (पुत्रवधू) हो। मैं इन बातों का विचार करके ही पानी पिऊँगा ॥५-६॥

इस पर सीता ने उत्तर दिया—मैं राजा जनक की पुत्री हूँ और राम की स्त्री हूँ। मै राजा दशरथ की कुल की रक्षा करने वाली पतोहू हूँ। तुम इसका विचार कर पानी पिओ ॥७-८॥

पानी पीने से उन दोनो का हृदय शान्त तथा संतुष्ट हो गया और घोड़े की पीठ पर सवार हो गये ॥६॥

राम ने सीता से कहा कि ए मेरी माता की सौभाग्यवती (पतोहू) तुम पालकी पर चढो अर्थात् पालकी में बैठ जावो। तुम्हारे बिना सारा ससार अंधकारमय हो गया है।

---

१. किसकी। २. हृदय। ३. संतुष्ट हुआ। ४. सौभाग्यवती।

[वरपक्ष के गीत]

२८. सन्दर्भ—सासु तथा ननद के द्वारा पीड़ित किसी स्त्री का अपने पति से निवेदन।

काहे से छावउँ[1] बड़ घर बाबा,
काहे से छावउँ बसार[2] ॥१॥
काहे से छावउँ लाली गज[3] ओबरि;
गुँजरि भँवर मननाइ ॥२॥
बाँसन छवाया बड़ घर बाबा,
पानन छवाया बसार ॥३॥
फूलन छवाया लाली गज ओबरि,
गुँजरि भँवर मननाइ ॥४॥
निहुरि[4] निहुरि झाँकइ लाली गज ओबरि,
काहे धन[5] मुखवा मलीन ॥५॥
माया तोहरि प्रभु मुखहूँ न बोलइ,
बहिनि बोलइ विष[6] बोल ॥६॥
लहुरा[7] देवर मारइ लाली छड़िअवा,
वहि गुन[8] मुखवा मलीन ॥७॥
माया निकरवइ खड़ी[9] दुपहरिआ,
बहिनि कलेवना कि जून ॥८॥
लहुरा भइअवा क पठउव जीरा कइ लदनिआँ,
हमहूँ तुहूँ रहबइ अकेल ॥९॥
माया तोहारि प्रभु पाकल अमवाँ,
बहिनि बड़ेरी[10] क काग ॥१०॥
लहुरा देवर मोर दाहिनि बँहिआँ,
देखि[11] लेहेँयु अकिल[12] तोहार ॥११॥

कोई लड़की अपने ससुर से कहती है कि ए पिताजी! किस वस्तु से बड़ा घर छवाया है और किस चीज से दालान छवाया है। किससे अन्धकारपूर्ण घर छवाया है जिसमें भँवर गुन्जार कर रहे हैं ॥१-२॥

१. छाऊँगी। २. बैठका, दालान। ३. अन्धकारपूर्ण घर। ४ झुक करके। ५ धनिया, स्त्री। ६. कटु, कठोर वचन। ७ छोटा। ८ इस कारण। ९. मध्य। १०. घर के छज्जा का ऊपरी भाग। ११. देख लिया, समझ लिया। १२ बुद्धि

ससुर उत्तर देता है कि—मैने बाँस से बड़े घर को छवाया है, और बैठके को पाल से छवाया है। फूलों से लाल कोठरी को छवाया है उसमें भँवर गुंजार कर रहे है ॥३-४॥

उस स्त्री का पति झुक-झुक करके उस घर मे अपनी स्त्री को देखकर कहता है कि ए धनिया! तुम्हारा मन मलीन क्यों है? इस पर स्त्री ने उत्तर दिया ए प्रभु! आपकी माता मुझसे मुँह से भी नहीं बोलती है? और आपकी बहिन विष से युक्त अर्थात् कटु तथा व्यंग्य वाणी बोलती है ॥५-६॥

मेरा छोटा देवर मुझे लाल छडी से मारता है। इसीलिए मेरा मुख मलीन है ॥७॥

इस पर पति उत्तर देता है कि—मध्य दुपहरी से मैं अपनी माता को घर से निकाल दूँगा। और बहिन को कलेवा अर्थात् नाश्ता के समय घर से निकालूँगा। मैं अपने छोटे भाई को जीरा की लदनी अर्थात् व्यापार करने के लिए परदेस भेज दूँगा। इस प्रकार मैं और तुम आनन्दपूर्वक घर में रहेंगे ॥८-९॥

इस पर वह चतुर स्त्री उत्तर देती है कि तुम्हारी माता पके हुए आम के समान है अर्थात् वह कब मर जायेगी कोई नहीं जानता। तुम्हारी बहिन घर के छज्जा (बड़ेरी) पर बैठने वाले कौआ के समान है अर्थात् जिस प्रकार कौआ थोड़ी देर के लिए काँव-काँव करके उड कर चला जाता है उसी प्रकार से तुम्हारी बहिन कुछ वर्षों के बाद अपनी ससुराल चली जायेगी। परन्तु तुम्हारा छोटा भाई मेरी दाहिनी भुजा है। मुझे बल प्रदान करने वाला है। मैंने तुम्हारी बुद्धि की परीक्षा कर ली ॥१०-११॥

२९. सन्दर्भ—किसी सुन्दर बालक के अविवाहित रहने का उल्लेख।

आँखी बनी जइसे अम्मा[१] की फाँकी[२],
नकुरा[३] सुगन कइ टोंट[४] ॥१॥
अतनी सूरतिया क दुलहे कवन रामा,
काहे बेटा रहे आ कुँआर ॥२॥
बाबा गयेन मोर दर दरबरिआ[५],
दादा गयेन परदेस ॥३॥
जेठ भइया मोर गये जीरा कइ लदनिआ[६],
के मोर रचइ बिआह ॥४॥
बाबा लइ आये हइं मोहर मालों,
दादा लहर[७] पटोर[८] ॥५॥

१ कच्चा आम। २. कच्चे आम का टुकडा। ३ नाक। ४ चोंच। ५ दरबार। ६. व्यापार। ७. सुन्दर। ८. वस्त्र।

जेठ भइया लइ आए सोन[1] मोहरगडली[2]
अब मोर होइ बिआह ।।६।।

गाँव की कोई स्त्री किसी लड़के से पूछती है कि तुम्हारी आँखें कच्चे आम के टुकड़े के समान बड़ी-बड़ी हैं और तुम्हारी नाक तोता के चोंच के समान नोकीली और सुन्दर है ।।१।।

इतना सुन्दर होने पर भी ए बच्चे तुम्हारा विवाह अभी तक क्यों नहीं हुआ है ।।२।।

इस पर वह लड़का उत्तर देता है कि मेरे पिता जी राजा के दरबार मे गये हैं, दादा परदेस गये हुए हैं तथा मेरे जेठे भाई जीरा का व्यापार करने के लिए बाहर गये हैं। ऐसी दशा मे मेरे विवाह का प्रबन्ध कौन करे ? ।।३-४।।

मेरे पिता जी गले मे पहिनने के लिए सोने की मोहर माला ले आये, दादा सुन्दर कपड़ा ले आये और मेरे जेठे भाई सोने का गहना ले आये। अब मेरा विवाह निश्चय रूप से होगा ।।५।।

३०. सन्दर्भ — राजा दशरथ के द्वारा कैकेयी को वर देने का उल्लेख।

बँसवा कटावइ चलेन राजा दसरथ,
गड़ि गइ अँगुरिया माँ फाँस[3] ।।१।।

अँगुरी बेदनिया[4] मरइँ राजा दसरथ,
केकयी क नेवति[5] बोलाऊ ।।२।।

आई हइ केकयी पलंग चढ़ि बइठी,
हरइँ[6] अँगुरिया कइ पीर ।।३।।

अस के हरिन अँगुरिआ कइ पिरिआ[7],
राजा सोवइँ सुख नींद ।।४।।

सोइ के राजा उठिके बइठे,
भयेन भरेठवन के ठाढ़ ।।५।।

जवन मँगनवाँ तुहूँ मागा रानी केकयी,
उहइ मँगन[8] हम देब ।।६।।

जवन मँगनवाँ हम माँगब राजा दसरथ,
उहइ मँगन हम लेब ।।७।।

---

१. सोना। २. आभूषण-विशेष। ३. बाँस का टुकड़ा। ४. बेदना, कष्ट। ५. निमन्त्रण देकर। ६. हर लिया। ७. पीड़ा, कष्ट। ८. माँग।

रामा क तिलक भरत के चढ़ाबउ,
रामहिं का बन देउ ॥८॥
माँगन तउ तूहूँ माँगिउ रानी केकई,
माँगिउ प्रान अधार[1] ॥९॥
जउने[2] राम बिनु निंदिआ न लागइ[3],
से रामा बन कइसे जाइ ॥१०॥

राजा दशरथ बाँस कटाने के लिए चले। उनकी अँगुली में बाँस का छोटा टुकडा (खपचार) गड गया। इस कारण अँगुली की पीडा से राजा दशरथ मरने लगे और उन्होंने कहा कि कैकेयी को बुलाबो ॥१-२॥

कैकेयी आई और पलग पर चढ कर बैठ गई। और उसने दशरथ की अँगुली की पीडा को हर लिया। उसने दशरथ की अगुली के कष्ट को इस प्रकार से नष्ट कर दिया कि उनको सुख पूर्वक निद्रा आ गई ॥३-४॥

राजा दशरथ सोकर के उठे और खड़े हो गये। उन्होंने कैकेयी से कहा कि जो तुम वर माँगोगी वही वर मैं तुम्हे देने के लिए तैयार हूँ ॥५-६॥

कैकेयी ने कहा कि ए राजा दशरथ! जो वर मै माँगूगी वही वर मै आपसे लूँगी। राम के राज्याभिषेक की जगह भरत का तिलक होना चाहिए और राम को बनबास दे दीजिये ॥७-८॥

इस पर दुखी होकर दशरथ ने कहा कि ए कैकेयी तुमने वर तो माँगा परन्तु मेरे प्राणों के आधार राम को ही माँग लिया। जिस राम के बिना मुझे नींद नहीं लगती वह राम भला बन को कैसे जा सकते है ॥९-१०॥

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी कैकेयी के वर माँगने के विषय में लिखा है कि—

"तापस वेश, विशेष उदासी।
चौदह बरस राम बनवासी॥"

३१. सन्दर्भ—विवाह के दिनों का स्मरण कर किसी पुत्र की उक्ति अपनी माता के प्रति।

वे दिन मोर कहाँ रे गये माई ॥टेक
सोने के छतुरा के माड़उ छवायों।
रूपेन कलसा भरायो मोरी माई ॥१॥
पिअरी पहिरि माइ ब्याहा करायो।
रेसमेन गाँठी जोरायो मोरी माई ॥२॥

---

१. आधार, अवलम्ब। २. जिस। ३. लगती है।

कोई पुत्र अपनी माता से कहता है कि ए माता ! वे मेरे दिन अब कहाँ चले गये जब सोने के छाने से विवाह का मण्डप छाया गया था और चाँदी का कलश विवाह के लिए रखा गया था ॥१॥

जब मैंने पीले वस्त्रों को पहन कर विवाह कराया था और रेशम की चादर से ग्रन्थिबन्धन हुआ था ॥२॥

विवाह में बाँस और फूस से मण्डप बनाया जाता है और मिट्टी के घड़े कलश का काम करते है। वर-विवाह के समय पीले वस्त्रों को पहनता है जो मांगलिक माना जाता है। विवाह के समय वर और कन्या के वस्त्र को जोड़कर उसमें गाँठ बाँध देते हैं। इसे ग्रन्थिबन्धन कहते हैं। उपर्युक्त गीत में बालक इन्हीं बातों का स्मरण करता है। इस गीत को पढ़कर उत्तर रामचरित में भवभूति की यह उक्ति याद आती है—"ते हि नो दिवसाः गता।"

३२. सन्दर्भ—सीता का परित्याग करके दूसरा विवाह करने के विषय में सीता को राम की धमकी।

चिढ़िआ[१] लिखि भेजा राजा दसरथ,
दिहा राजा जनक जी के हाथ ॥१॥
तोहरे दुअरवा फूलइ बइजनिआ[२],
फूलइ अरु झरि जाइ ॥२॥
चिढ़िआ लिखि भेजेउ दुलहे रामा,
देहेउ सारे राजा हाथ ॥३॥
तोहरे दुआरे मारे फूलइ बइजनिआँ,
हमहूँ रँगउबइ[३] सिर पाग[४] ॥४॥
अतना-बचन जब सुनइ सितल रानी,
भइहिं झरोखवा के ठाढ ॥५॥
तोहरे ले दुलरुवा मोर भइया कवन रामा,
वईं[५] हो रँगावइँ सिर पाग ॥६॥
अतना बचन जब सुनइ दुलहे रामा,
घोड़े पीठि भये असवार ॥७॥
ससुरु की धेरिआ[६] चउक[७] पइ छँड़बइ[८],
कइ लेबइ दूसर बिआह ॥८॥

---

१. चिट्ठी पत्र। २. वैजयन्ती फूल। ३. रंगाऊँगा। ४. पगड़ी। ५. वही हो। ६. पुत्री, लड़की। ७. विवाह मण्डप। ८. छोड़ दूँगा।

भीतरा से निकर हुईं सरवा कवने गमा,
धरेन घोड़े क लगाम ॥९॥
हमरी बहिनि लड़कइआ[1] बुधि[2] खेलइ[3],
तुँहइँ[4] रँगाया सिर पाग ॥१०॥

राजा दशरथ ने चिट्ठी लिख कर दिया और दूत (पत्रवाहक) ने कहा कि इसे राजा जनक के हाथों मे दे देना। तुम्हारे द्वार पर वैजयन्ती का फूल फूलता है और फिर झड जाता है ॥१-२॥

दूल्हा राम ने भी चिट्ठी लिख कर भेजा और कहा कि इसे राजा जनक के हाथों में दे देना। तुम्हारे द्वार पर वैजयन्ती का फूल फूलता है। मैं अपने सिर की पगडी को उस फूल के रंग मे रँगाऊँगा ॥३-४॥

सीता जी ने जब इस बचन को सुना तब वह झरोखे के पास खडी हो गईं और कहने लगी कि ए राम ! तुमसे भी दुलरुआ (प्यारा) मेरा भाई है। वही इन फूलों से अपने सिर की पगडी को रँगायेगा ॥५-६॥

विवाह करने के लिए जनकपुर में आये हुए दुलहा राम ने जब सीता के इन वचनों को सुना तब वे अयोध्या लौट जाने के लिए घोड़े की पीठ पर सवार हो गये। क्रोध मे आकर राम ने कहा कि मै ससुर (राजा जनक) की पुत्री (सीता) को विवाह के मण्डप मे चौका पर बैठे ही छोड़कर चला जाऊंगा और अपना दूसरा विवाह कर लूँगा ॥७-८॥

गृह के भीतर से राम का साला निकल कर आया और उसने राम के घोड़े का लगाम पकड़ लिया। राम से प्रार्थना करते हुए उसने कहा कि मेरी बहिन सीता ने अपनी लड़कपन की बुद्धि से ऐसा कह दिया है। तुम्ही इन फूलो से अपनी सिर की पगड़ी को रँगाओ ॥९-१०॥

विशेष—इस लोक गीत मे राम के द्वारा दूसरा विवाह करने की धमकी दी गई है। परन्तु बाल्मीकि के रामायण और तुलसी के रामचरित मानस मे इसका कही भी उल्लेख नही पाया जाता। राम को 'एक पत्नी व्रत:' कहा गया है। अत उनके द्वारा दूसरे विवाह की धमकी कुछ आश्चर्यजनक ज्ञात होती है।

रामायण में राजा जनक के किसी पुत्र का उल्लेख नही पाया जाता। परन्तु इस गीत में उनके पुत्र का वर्णन उपलब्ध होता है। छोटी-छोटी बातों के लिए किस प्रकार से बारातों में झगडा हो जाया करता है इसकी ओर भी संकेत है।

---

१. लड़कपन। २. बुद्धि। ३. कहती है। ४. तुम्ही।

३३. सन्दर्भ—रावण का सीता-हरण करना।

राम लछन चले वन के अहेरवा[१],
वन बिच गोड़िला[२] खचाइ ॥१॥
जे केउ आयें सीता भिख भिखिअरिआ,
गोड़िला बाहेर जिनि जाउ ॥२॥
जोगिआ भेलस[३] धइके आवा हइ रावनवा;
बइठा हइ आसन मारि ॥३॥
जे केहु होइ यहि गोड़िला के भीतर,
जोगिआ के भीख दइ देइ ॥४॥
तर[४] धरिन[५] सोनवा उपर तिल चाउर,
लेहु जोगिआ आपनि भीखि ॥५॥
बाँधी[६] भिखिआ न लेबइ[७] सीता रानी;
गोड़िला बाहेर होइके देउ ॥६॥
एक पाँउ सीता धरी गोड़िला के बाहेर,
दुसरा गोड़िलवा के बीच ॥७॥
तीसरा पाँउ सीता धरइं न पाइंनि;
लइगा रथ बइठाइ ॥८॥
वहि मधुबनवा[८] से लउटे राम लछुमन;
भयें हइं डेवढ़िआ के ठाढ़[९] ॥९॥
ना घर देखेन सीता रनिअवाँ,
नाहीं गगरिआ जुड़[१०] पानि ॥१०॥
कि मोरी सीता दइउ हरि लीन्हा,
कि सीता भइं हइं अलोप[११] ॥११॥
न तोहरी सीता दइउ हरि लीना,
न सीता भइ अलोप[१२] ॥१२॥
जोगिआ भेलस धइके आवहइ[१३] रावनवाँ,
लइगहा[१४] रथ बइठाइ ॥१३॥

---

१. शिकार। २. रेखा। ३. वेश। ४. नीचे। ५. रखा। ६. रेखा के भीतर से दी गई। ७. लूँगा। ८. जंगल। ९. खड़ी। १०. ठंढा। ११. अदृश्य। १२. लुप्त। १३. आया। १४. ले गया।

राम और लक्ष्मण वन में शिकार करने के लिए गये। उन्होंने वन के बीच में रेखा खींच दी और सीता से कहा कि जो कोई भीख मांगने के लिए आवे तो तुम इस रेखा के बाहर मत जाना ॥१–२॥

जोगी का वेश धारण कर रावण आया और वह आसन मार कर बैठ गया। उसने कहा कि जो कोई व्यक्ति इस रेखा के भीतर हो वह मुझ जोगी को भिक्षा दे ॥३–४॥

सीता ने नीचे सोना रखा और उसके ऊपर तिल तथा चावल रखकर कहा कि ए जोगी! तू अपनी भीख ले। इस पर रावण ने उत्तर दिया कि रानी सीता! बाँधी भिक्षा अर्थात् रेखा के भीतर से दी गई भिक्षा मैं नहीं लूँगा। अतः रेखा के बाहर आकर भिक्षा दो ॥५–६॥

सीता ने एक पैर रेखा के बाहर रखा और दूसरा पैर रेखा के बीच में स्थापित किया। तीसरा पग सीता ने अभी रखने भी नहीं पाया था कि रावण उन्हें रथ में बैठा कर ले गया ॥७–८॥

जब जंगल से राम और लक्ष्मण लौट कर आये तब ड्योढ़ी के द्वार पर खड़े हो गये। न तो उन्होंने सीता रानी को घर में देखा और न घड़े में शीतल जल ही पाया ॥९–१०॥

राम कहने लगे कि—क्या मेरी सीता को दैव (भाग्य) ने हर लिया है अथवा सीता कहीं लुप्त हो गई है? इस पर वन देवी ने कहा कि न तो तुम्हारी सीता को दैव ने हरा है और न वह अलोप हुई है। जोगी के भेस में रावण आकर, सीता को रथ पर बैठाकर चुरा ले गया ॥११–१३॥

नकटा

३४. सन्दर्भ—किसी नायिका की उक्ति अपने नायक के प्रति।

छोड़ दे राजा डगरिया[1] हमरी ॥ टेक ॥
जब सुनय पाइहैं ससुरू हमारे;
डाकन[2] न देइहैं डेहरिया[3] अपनी ॥१॥ टेक
जब सुनय पाइहैं जेठ हमारे,
छुअइ न देइहैं गगरिया अपनी ॥२॥ टेक
जब सुनय पाइहैं देवरा हमारे;
छुअइ न देइहैं रसोइया अपनी ॥३॥ टेक
जब सुनय पइहैं बालम[4] हमारे;
सुतइ न देइहैं सेजरिया[5] अपनी ॥४॥
छोड दे राजा डगरिया हमरी।

१. रास्ता। २. लाँघना, फाँदना। ३. देहली, दरवाजा। ४. पति। ५. सेज, शय्या।

कोई नायिका अपने नायक से कहती है कि ए राजा ! मेरे रास्ते को छो दो और मुझसे छेड़ खानी न करो । यदि मेरे ससुर इस बात को सुन पायेंगे तो अपन घर में भी मुझे न घुसने देगें ॥१॥

मेरे पति का जेठा भाई यदि इसको सुन लेगा तो मुझे कुजाति समझक अपना पानी का घड़ा भी मुझे न छूने देगा ॥२॥

यदि मेरा देवर इसको सुन पायेगा तो मुझे अपनी रसोई न छूने देगा ॥३॥

और यदि कहीं मेरा पति इस बात को सुन लेगा तो मुझे दुराचारिणी समझक अपनी सेज पर मुझे नहीं सोने देगा । अत तुम मेरा रास्ता छोड़ दो और मुझे घ जाने दो ॥४॥

३५. सन्दर्भ—परदेस गये हुये प्रियतम के प्रति किसी स्त्री की उक्ति

नजरिया लागी छुटइ कइसे राजा । टेक
बागा लगायो बगइचा लगायों,
निबुला[1] लगाय परदेस गये राजा ॥१॥ टेक
निबुला तोरउ[2] चिखँउ[3] कइसे राजा ।
तारा बधायों ईनारा बधायों;
घटवा बधाय परदेस गये राजा ॥२॥ टेक
गगरिया बोरेउँ[4] खिचउँ कइसे राजा ।
महला उठायो दुमहला उठायो;
खिरिकिया लगाय परदेस गये राजा ॥३॥ टेक
अटरिया[5] पै चढ़ि के झाकेउँ कइसे राजा ।
सेजा लगायों सुपेती[6] लगायो;
तकिया बनाय परदेस गये राजा ॥४॥
रतिया[7] लगाय सूतेउँ कइसे राजा ।
नजरिया[8] लागी छूटइ कइसे राजा ॥

कोई प्रेमिका कहती है कि हे प्रियतम ! जो प्रेम-दृष्टि तुमने लगाई है वह भला अब कैसे छूट सकती है । तुमने बाग लगाया, वाटिका भी लगाई । उस वाटिका में नीबू लगाकर तुम परदेस चले गये । उस नीबू को तोड़ कर उसका स्वाद मैं कैसे लूँ ॥१॥

तुमने स्नान करने के लिए कुँआ बनवाया, और नदी में घाट भी बंधवाया परन्तु तुम परदेस को चले गये । अब तुम्ही बतलावो इस घड़े को नदी में डुबो कर ऊपर कैसे खीचूँ क्योंकि तुम्हारे बिना मेरी इसमे सहायता कौन करेगा ? ॥२॥

१. नीबू । २. तोड़ूँ । ३. आस्वाद लूँ । ४. डुबोऊँ । ५. अटारी । ६ बिछौना ७ प्रम रति रात्रि ८ नजर प्रम-दृष्टि कटाक्ष

तुमने महल (घर) भी बनाया और दुमंजिला मकान भी बनवाया। परन्तु उसमे खिड़की लगवा करके तुम परदेस को चले गये। मैं इस अटारी पर चढ़ करके अब कैसे झाँकू ? ॥३॥

तुमने पलग बनवाया, बिस्तर भी बनवाया। सोने के लिए उस पर तकिया लगाकर तुम परदेस को चले गये। मैं रात में उस पलग पर कैसे सोऊँगी क्योंकि तुम्हारे बिना वह सेज सूनी है ॥४॥

विशेष—यहाँ पर नीबू का लाक्षणिक अर्थ जोवन या कुच है। प्रेमिका कहती है कि ए प्रियतम ! तुमने मेरी शरीर रूपी बाटिका मे कुच रूपी नीबू तो लगाये परन्तु उनका बिना आस्वादन किये ही तुम परदेस को चले गये। तुम्हारे बिना इन निबुओ को तोड़कर इनका आस्वादन कौन करेगा। लोक-गीतो मे प्रियतम द्वारा कुचो के संवर्धन का उल्लेख अनेक स्थानो मे पाया जाता है। इस सम्बन्ध में एक भोजपुरी कहावत इस प्रकार है :—

सइयाँ जी के हाथ लागल,
होइ गइले सिन्होरा ॥

३६. सन्दर्भ—पत्नी के द्वारा पति के चरित्र के सम्बन्ध में सासु से शिकायत।

कवने बन उपजी सुपरिया[1],
कवने बन नरियर ना ॥१॥
रामा कवने बन चूवत[2] बा गुलबिया,[3]
मै चूनरी रँगाउबइ ना ॥२॥
सासु बन उपजी सुपरिया,
सासुर बन नरियर ना ॥३॥
रामा सइयाँ बन चूवत बा गुलबिया ;
मै चूनरी रँगाउबइ ना ॥४॥
पहिरी[4] ओढ़ि धन ठाढ़ी दुअरका[5] रे ना,
सासु तोरा पूता ठाढ़ फुलवरिया,
मलिनिया से ग्वेल[6] करे ना ॥५॥

कोई स्त्री कहती है कि किस बन मे सुपारी उत्पन्न होती है और किस बन मे नारियल पैदा होता है ? किस बन में गुलाब का फूल चू चू कर गिरता है ? मै अपनी चूनरी रँगवाऊँगी ॥१-२॥

---

१. सुपारी। २. चूना, गिरना। ३. गुलाब। ४. सुसज्जित होकर। ५ दरवाजे पर ६. क्रीड़ा, काम-क्रीड़ा।

वह स्त्री स्वयं उत्तर देती हुई कहती है कि सासु के बन में सुपारी पैदा हो है, ससुरजी के बन मे नारियल उत्पन्न होता है। मेरे सइयाँ के बन में गुलाब चू कर गिरता है। मैं वही अपनी चूनरी रँगवाऊँगी ॥३-४॥

उस चूनरी को पहिन कर तथा अलकारो से सुसज्जित होकर वह स्त्री द के दरवाजे पर खड़ी हो गई। इतने मे उसने देखा कि उसका पति मालिन से प्रेम व बाते कर रहा है। तब वह अपने सास से कहने लगी कि ए सास! तुम्हारा लड़क (छोकरा) फुलवाडी मे खड़ा होकर मालिन से काम-क्रीडा कर रहा है ॥५॥

३७. सन्दर्भ—किसी नायिका की अपने प्रियतम से प्रार्थना।

स्याम तनि[1] तिरछी निहारे जाया हो। टेक
ऊँचे पनघटवा चढ़इ न पाइँउ घटवा[2],
स्याम तनि घयेला[3] निकारे[4] जाया हो ॥१॥ टेक
दूरी गगा बड़ी लम्बी सफर है;
स्याम तनि निबुला[5] चिखाये[6] जाया हो ॥२॥ टेक
टूटही खटिया ढील ओरदावन[7],
स्याम तनि तकिया लगाये जाया हो ॥३॥
स्याम तनि तिरछी निहारे जाया हो।

कोई प्रेमिका कहती है कि ए मेरे प्रियतम! तुम मेरे ऊपर तनिक कटाक्ष-पात किये जाना। पनघट ऊँचा है, अत: घाट पर पानी भरने के लिए चढ़ा नही जाता। हे प्रियतम! जरा मेरा घडा पानी से बाहर निकाल देना ॥१॥

गंगा दूर है और यात्रा अभी बड़ी लम्बी है। अर्थात् गन्तव्य स्थान अभी बहुत दूर है। हे प्रियतम! रास्ते के परिश्रम को मिटाने के लिए मुझे नीबू चटाये जाव जिससे प्यास न लगे ॥२॥

मेरी खाट टूटी है और उसका ओरदावन ढीला पड़ गया है। हे प्रियतम! तनिक तकिया लगा देना जिससे सुखपूर्वक मैं सो सकूँ ॥३॥

३८. सन्दर्भ—किसी विरहिणी स्त्री के द्वारा अपने पति के घर न लौटने की चर्चा।

नही आये रे हमारे घनस्याम नहीं आये रे। टेक
जेठ नहीं आये बैसाख नही आये।
तरकइ[8] भुभुरी[9] ऊपर कइ घाम[10] नही आये रे ॥ १ ॥

---

१. तनिक, थोड़ा। २. घाट। ३. घड़ा। ४. निकाल देना। ५. नीबू। [६.] चखाना। ७. खाट में लगी रस्सी जिसे खींच कर खाट को कड़ी करते है। ८ [नी]चे की। ९. गर्म बालू। १०. धूप।

हमारे घनस्याम नहीं आये रे ।
सावन नहीं आये भादव नहीं आये ।
तरकइ कीचा[1] ऊपर कइ बूँद नहीं आये रे ।। २ ।।
हमारे घनस्याम नहीं आये रे ।
कुवार नही आये कातिक नहीं आये
तरकइ जाड़ा ऊपर कइ ओस नहीं आये रे ।। ३ ।।
हमारे घनस्याम नहीं आये रे ।

कोई वियोगिनी स्त्री कहती है कि मेरा प्रियतम आज तक घर लौट कर नही आया । वह बैसाख के महीने में भी नही आया और जेठ के महीने मे नही आया । इस महीने में गर्मी के मारे जमीन गर्म हो जाती है और ऊपर से धूप पड़ती है ।।१।।

वह न तो सावन के महीने में आया और न भादो के ही महीने मे आया । इस महीने मे जमीन पर तो कीचड़ हो जाता है और आकाश से बूँदे बरसती रहती हैं ।।२।

मेरा प्रियतम न तो कुँवार के ही महीने मे आया और न कार्तिक के महीने में ही आया । इन दिनों में नीचे तो जाड़ा पड़ता है और ऊपर से ओस की बूँदे पड़ती हैं ।।३।।

३८. सन्दर्भ—किसी प्रेमिका की उक्ति प्रेमी के प्रति ।

नैना[2] लगाय चला गया आधी रतिया । टेक
ऊँचे भीट[3] पर बोलइ चिरइया[4],
चितवइ घूरेरी[5] घूरेरी सारी रतिया ।। १ ।। टेक
ऊँचे महल चढ़ि बइठइ सिपहिया,
बोलइ मेल्हाइ[6] मेल्हाइ सारी रतिया ।। २ ।। टेक
छोटे मरद कइ लम्बी मेहरिया[7],
मारइ लपेट लपेट सारी रतिया ।। ३ ।। टेक
नैना लगाय चला गया आधी रतिया ।

कोई प्रेमिका कहती है कि मेरा प्रेमी मुझसे प्रेम लगाकर आधी रात को चला गया । ऊँचे टीले पर बैठ कर कोई पक्षी बोलता है और वह सारी रात आँखें गड़ा-गड़ा कर देखता रहता है ।।१।।

मेरा प्रियतम ऊँचे मकान पर चढ़कर बैठा हुआ है और वह सारी रात प्रेम मधुर बाते करता रहता है ।।२।।

---

१. कीचड़ । २. आँख लगाकर, प्रेम लगाकर । ३. टीला । ४. चिड़िया । ५. आँखें गड़ाकर देखना । ६. प्रेम-पूर्वक, मधुरता से । ७. स्त्री. पत्नी ।

गेड़ुवा जुठारइ हमरउ बाग माँ ।
लाची लवँग रस बीरा जोरावउँ ।
बरजो जसोमति अपने लाल का ॥४॥
बिरवा जुठारइ हमरउ बाग माँ ।
फूला नेवारी कइ सेजा लगावौं;
बरजो जसोमति अपने लाल का ॥५॥
हमरी तकियवा बहावइ[1] बाग माँ ।

कोई गोपी यशोदा को उपालम्भ देती हुई कहती है कि ए यशोदा ! तुम अपने लड़के को मना कर दो क्योंकि बाग मे वह हमसे बलात्कार कर रहा था ॥१॥

सोने की थाली में मैने भोजन परोसा है बड़े लोटे में मैने गगा जल पीने के लिए रखा है। परन्तु कृष्ण आकर इन सबको जूठा कर देता है। तुम उसे मना करो ॥२-३॥

मैंने इलायची और लवँग लगाकर पान का बीड़ा लगाया है परन्तु उसे कृष्ण जूठा कर देता है। अतः तुम उसे मना करो ॥४॥

मैंने नेवारी के फूलो से सेज को सुसज्जित किया था। परन्तु वह मेरी तकिया को बाग में फेंक देता है। अत: ए यशोदा ! तुम अपने लड़के को ऐसा करने से मना करो ॥५॥

४२. सन्दर्भ—रामचन्द्रजी के बालकपन का वर्णन ।

दसरथ लाल का उठाइ लिया कनिया[2] ।
नन्हे नन्हे गोड़वा खराउँ[3] भल सोहइ;
अस मन होय रे गढ़ावइ पइजनिया[4] ॥१॥ टेक
लम्बी लम्बी धोतिया पातर करिहइया[5];
अस मन होय रे गढ़ावउ करधनिया[6] ॥२॥ टेक
सँवरे बदन मुख ढुरया[7] पसीना;
भल मन होय रे डोलावउँ रस बेनिया ॥३॥
दसरथ लाल का उठाइ लिया कानिया ।

कोई भक्त कहता है कि दशरथ जी ने अपने पुत्र राम को गोदी मे उठा लिया। राम के छोटे-छोटे पैरो में खड़ाऊँ बड़ा अच्छा लगता है। मेरे मन में ऐसा विचार आता है कि इनके पैर मे पहिनने के लिए पैंजनी बनवा दूँ ॥१॥

रामचन्द्र जी की कमर बहुत पतली है और वे लम्बी-सी धोती पहिने हुए

---

१. फेंक देता है। २. गोद। ३. खड़ाऊँ, पादुका। ४. पैर में पहिनने का गहना। ५. कमर। ६. कमर में पहिनने का गहना। ७. गिरता है।

है। मेरे मन मे ऐसा विचार आता है कि मैं उनके पहिनने के लिए करधनी बनवा दूं ॥२॥

उनके साँवरे बदन से पसीना ढल रहा है। ऐसा मेरा मन करता है कि मै उनको धीरे-धीरे पखा झलूं ॥३॥

४३. सन्दर्भ—सती, साध्वी स्त्री से किसी लम्पट पुरुष का प्रेम प्रस्ताव। स्त्री के द्वारा निषेध।

चला तोरि आई चम्पा की कलिया,
राजा तोरी फूलवगिया माँ। टेक।
तोरइ ज गईउँ धना तोरइउ न पाइउँ;
फाटि गई रेसम की चोलिया ॥१॥
राजा तोरी फूलबगिया माँ।
पाँच रूपइया गज हमरी चोलिअवा;
भला सीदेतिउ[1] बाँकी[2] चोलिअवा ॥२॥
राजा तोरी फूलबगिया माँ।
तोहरी चोलिअवा धना सेतिन[3] माँ सीवइ;
भला एक दिन आउतिउ सेजरिया माँ ॥३॥
राजा तोरी फूलबगिया माँ।
अगिया[4] लगउबइ दरजी तोहरी सेजियवा;
मोरे घरे अहइ[5] सुन्दर छयलवा ॥४॥
राजा तोरी फूलबगिया माँ।

कोई स्त्री अपने प्रेमी से कहती है कि ए राजा! चलो तुम्हारी फुलवाड़ी मे मैं चम्पा की कलियों को तोड़ने चलूँगी। वह स्त्री कली को तोडने के लिए तो गई परन्तु अभी वह उसे तोडने भी न पाई थी कि उसकी रेशम की चोली फट गई ॥१॥

वह दर्जी से कहती है कि मेरी चोली का कपडा पाँच रूपये गज है। मेरे लिए सुन्दर चोली तुम सी दो ॥२॥

इस पर वह दर्जी उत्तर देता है कि ए प्यारी! मै तुम्हारी चोली को मुफ्त मे ही सी दूँगा। परन्तु एक दिन के लिए तुम मेरी सेज पर चली आवो ॥३॥

१. सी देते। २. सुन्दर। ३. मुफ्त। ४. आग लगा दूँगी, नष्ट कर दूँगी।

इस पर क्रोधित होकर वह पतिव्रता स्त्री कहती है कि ए दर्जी ! तेरी सेज मे मै आग लगा दूँगी । मेरे घर मे तुमसे कही अधिक सुन्दर मेरा पति मौजूद है ॥४॥

विशेष—इस गीत मे पतिव्रता स्त्री के धर्म की सुन्दर झाँकी हमें देखने को मिलती है । नीच, लम्पट दर्जी लालच देकर उसे धर्म से भ्रष्ट करना चाहता है परन्तु वह सती स्त्री अपने पातिव्रत धर्म पर अडिग है । ऐसा आदर्श सतीत्व का दर्शन अन्यत्र असंभव है ।

४४. सन्दर्भ—किसी स्त्री का अपने पति के प्रति काम-क्रीड़ा का उल्लेख ।

नजर हमरे लागि गई अरे मोरी गोइयाँ[1] । टेक
जउ[2] हमरे बलमू दुअरवा पर आये ।
ओसरवा[3] मैं भागि गइउँ अरे मोरी गोइयाँ ॥१॥ टेक
जउ हमरे बलमू ओसरवा माँ आये;
दरवजवा मैं भागि गइउँ अरे मोरी गोइयाँ ॥२॥ टेक
जउ हमरे बलमू दरवजवा माँ आये ।
अँगनवा मैं भागि गइउँ अरे मोरी गोइयाँ ॥३॥ टेक
जउ हमरे राजा अँगनवा माँ आये ।
कोठरिया मैं भागि गइउँ अरे मोरी गोइयाँ ॥४॥ टेक
जउ मोरे राजा कोठरिया माँ आये ।
सेजरिया मै भागि गइउँ अरे मोरी गोइयाँ ॥५॥ टेक
जउ हमरे राजा सेजरिया पर आये ।
गोदिया मैं लोटि[4] गइउँ अरे मोरी गोइयाँ ॥६॥
नजर हमरे लागि गई अरे मोरी गोइयाँ ।

कोई स्त्री कहती है कि पति की प्रेम रूपी नजर मेरे ऊपर लग गई है । जब मेरा पति द्वार पर आया तब मैं लज्जा के मारे बरामदे मे भग गई ॥१॥

जब मेरा प्रियतम बरामदे में आया तब लज्जा के मारे मैं घर के दरवाजे पर भगकर चली गई ॥२॥

जब मेरा प्रियतम दरवाजे पर आया तब मै संकोच के मारे आँगन में भाग गई ॥३॥

---

१. सखी । २. जब । ३. बरामदा । ४. लेट गई ।

जब मेरा राजा आगन मे आया तब मै ए सखी शम के मारे कोठरी के भीतर चली गई ॥४॥

और जब मेरा प्रिय ! कोठरी के भीतर चला आया तब मै लज्जा वश सेज के ऊपर लेट गई ॥५॥

और जब मेरा प्रियतम ! मेरी सेज पर आ गया तब मै लज्जा के मारे ए सखी ! उसकी गोदी में लेट गई ॥५॥

विशेष—इस गीत में संभोग शृङ्गार का जो उल्लेख है वह ग्रामीण होते हुए भी ग्राम्य नही है। स्त्री की उक्ति कितनी मार्मिक है तथा यह सहृदयो के हृदय मे गुदगुदी पैदा करने वाली है। इन लोकगीतो की यह विशेषता है कि इनमे वर्णित शृङ्गार अश्लीलता की कोटि तक कही नही पहुँचने पाता। यह कही भोडा और भद्दा नही पाया जाता।

४५. सन्दर्भ—परदेसी पति के विषय में किसी स्त्री की उक्ति।

फुलवन की फुलझारी[1] रे,
बलम कलकतवा निसरगे। टेक

सोने की थरिया मैं जेवना बनायो;
जेवनउ पर अजब बहार[2] रे ॥१॥
बलम कलकतवा निसरगे[3]।

झझरेन गेड़आ गंगा जल पानी,
गेड़अउ पर अजब बहार रे ॥२॥
बलम कलकतवा निसरगे।

लाची लवंग रस बीरा जोरायो;
बिरवन पर अजब बहार रे ॥३॥
बलम कलकतवा निसरगे।

फूला नेवारी का सेजा लगायो;
सेजियन की अजब बहार रे ॥४॥
बलम कलकतवा निसरगे।

वसन्त ऋतु में फूलों की फूलझड़ी लगी हुई है। इसी समय मेरा बालम कलकत्ता चला गया। सोने की थाली मे मैंने भोजन बनाकर परोसा था। उसे भोजन करने में बड़ा आनन्द आता है परन्तु मेरा बालम कलकत्ता चला गया ॥१॥

बडे लोटे में मैंने गंगा जल उसके पीने के लिए रखा था। लाची और लवंग

१. फूलझड़ी। २. आनन्द। ३. निकल गया, चला गया।

लगाकर मैंने उसके लिए पान का बीड़ा खाने के लिए रखा था जो बड़ा ही स्वादिष्ट था परन्तु मेरा बालम कलकत्ता चला गया ॥२-३॥

मैंने नेवारी के फूलों से सेज को सुसज्जित किया था जिस पर सोने में बडा आनन्द आता था परन्तु मेरा पति कलकत्ते को चला गया ॥४॥

४६. सन्दर्भ—राम की कृपा के बिना कोई भी वस्तु सम्भव नहीं है।

बतिआ[1] नाहीं रे बनइ विना रामा के बनाये से। टेक
जउ[2] मोरी मँगिया से सेँनुरा[3] उतरिगे[4]।
मँगिया नाहीं रे सजई[5] मोतिआ के जड़ाए से ॥१॥ टेक
जउ मोरी अँखियाँ से अँजना[6] उतरिगे।
अँखिया नाहीं रे सजइ सुरमा के लगाए से ॥२॥ टेक
जउ मोरे मुँहना से बिरवा उतरिगे।
मुँहना नाही रे सजइ मिसिया[7] के जड़ाए से ॥३॥ टेक

कोई स्त्री कहती है कि बिना भगवान् की कृपा से कोई भी बात नहीं बन सकती अर्थात् कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। यदि मेरे माँग से सिन्दूर धुल गया अर्थात् मैं विधवा हो गई तो श्रृङ्गार के लिए सिर में कितने भी मोती के आभूषण पहिनों परन्तु वह सुन्दर नहीं लगता ॥१॥

यदि मेरी आँखों से अजन जाता रहा अर्थात् विधवा होने के कारण मैं आँखों का श्रृङ्गार अञ्जन लगा कर नहीं कर सकती तब कितना भी आँखों में सुरमा लगाया जाय परन्तु उसकी शोभा नहीं हो सकती ॥२॥

यदि मैं विधवा-धर्म के कारण पान नहीं खा सकती तब दाँतों मे कितनी भी मिस्सी लगाई जाय परन्तु उसकी शोभा नहीं होती ॥३॥

इस गीत का भाव यह है कि यदि भगवान् ने भाग्य में सुख नहीं लिखा है तब मनुष्य कितना भी उपाय करे उसे वह सुख नहीं मिल सकता है।

४७. सन्दर्भ—राम के साथ सीता के बन चले जाने पर सीता के माता-पिता द्वारा दुःख प्रकट करना।

कउने बन सीता बिअहि[8] लइगे राम। टेक
सभवा बइठ मोर बपई जउ झंखई;
आजु मोरी बिटिया बनइ बन जाईं ॥१॥ टेक

---

१. बात, काज। २. जब। ३. सिन्दूर। ४. नष्ट हो गया। ५. शोभित होना। ६. अंजन। ७. मिस्सी। ८. विवाह करके।

मचिया बइ॰, मोरी माया जउ झंखइँ ।
आजु मोरी बिटिया बनइ बन जाइँ ॥२॥ टेक
पंसा खेलत मोर भइया जउ झंखइँ ;
आजु मोरी बहिनी बनइ वन जाइँ ॥३॥ टेक
रामा रोसइयाँ मोर भउजी जउ झखइँ ;
आजु मोरी वइरिनि[1] भलेइ[2] बन जाइँ ॥४॥
कउने बन सीता विअहि लइगे राम ॥

सीता जी कहतीं है कि राम मेरा विवाह करके मुझे आज किस बन मे लिए जा रहे हैं। सभा (दरबार) में बैठकर मेरे पिता (जनक) दुःखी हो रहे है और कहते है कि आज मेरी लड़की बन-बन में घूम रही है ॥१॥

मचिया पर बैठ कर मेरी माता दुःखी हो रही है और कहती है कि आज मेरी लड़की बन-बन में घूम रही है ॥२॥

पासा (जुआ) खेलते हुए मेरा भाई दुःखी हो रहा है और कहता है कि आज मेरी बहन बन-बन मे घूम रही है ॥३॥

परन्तु रसोई घर मे बैठी हुई मेरी भावज प्रसन्न हो रही है और कहती है कि यह अच्छा हुआ कि मेरी बैरिन ननद आज बन बन में घूम रही है ॥४॥

४८. सन्दर्भ—किसी भक्त की भगवान् के प्रति भावना ।

कउनी जून[3] भये निसरी महादेव ,
भला कउनी जून भगवान् । टेक
सुरुज उवत[4] भये निसरे महादेव ,
गउवा ढुरत[5] भगवान् ॥ १ ॥
भला गउवा ढुरत भगवान् ।
काहेन छुरवा मैं नरवा[6] छिनायो[7] ,
काहेन खपरी[8] नहाय ॥ २ ॥
भला काहेन खपरी नहाय ।
सोने के छुरवा मैं नरवा छिनायो ;
रूपेन[9] खपरी नहाय ॥ ३ ॥

---

१. बैरिन, शत्रु । २. भला हुआ, अच्छा हुआ । ३. समय, वेला । ४. उगते हुए । ५. आते हुए । ६. नाल । ७. काटना । ८. खप्पर, पक्की मिट्टी के बर्तन का टूटा भाग । ९. चाँदी ।

भला रूपेन खपरी नहाय ।
कहवाँ ओलरउँ[1] मैं निसरी महादेव ;
कहँवइँ ओलारउँ भगवान् ॥ ४ ॥
भला कहवइँ ओलारउँ भगवान् ।
सुपवा[2] ओलारउँ मैं निसरी महादेव ;
डोलवइ[3] ओलारउँ भगवान् ॥ ५ ॥
भला डोलवइ ओलारउँ भगवान् ।
काह रे पिआउँ मैं निसरी महादेव ,
आरे काह[4] पिआउँ भगवान् ।
भला काह पिआउँ भगवान् ।
दुधवा पिआउँ मैं निसरी महादेव ;
दहिया पिआउँ भगवान् ॥ ७ ॥
भला दहिया पिआउँ भगवान् ।

किसी भगवान की अनुरागिनी का कथन है कि किस समय शंकर उत्पन्न हुए और किस समय भगवान । अपने प्रश्नों का स्वयं ही उत्तर देती हुई वह कह रही है कि सूर्य उदित होते शंकर उत्पन्न हुए और गोधूली की बेला (सन्ध्या समय) में भगवान ॥१॥

वह पुन: कह रही है कि मैं किस छूरे से उनका नाल कटवाऊँ और किस खप्पर में उन्हें स्नान करवाऊँ ?॥२॥

इसका उत्तर देती हुई वह कह रही है कि सोने के छूरे से मैंने उनका नाल कटवाया और चाँदी की खप्पर में उन्हें स्नान कराया ॥३॥

वह कहती है कि मैं कहाँ शंकर को सुलाऊँ और कहा भगवान को ॥४॥

उत्तर में कहती है सूप में मैं शंकर को सुलाती हूँ और हिंडोले में भगवान को ॥५॥

वह पूछती है कि क्या मैं शंकर को पिलाऊँ और क्या भगवान् को ॥६॥

उत्तर में कहती है कि मैं शंकर को दूध पिलाती हूँ और भगवान को दही ॥७॥

४६. सन्दर्भ—अपने परदेसी पति से मिलने के लिए किसी स्त्री का संगिन का रूप धारण करना । पति के उसे पहचान लेने पर उसका स्वागत-सत्कार ।

सातइ फेड़वा अमिल[5] कइ फरिके ;
घपसि[6] लागि, फरिके घपसि लागी ना ॥१॥

---

१. सुलाऊँ । २. सूप । ३. हिंडोला । ४. क्या वस्तु । ५. इमिली । ६. अधिक फलों का लगना ।

रामा जेहि तरे साइगा[1] नयकवा ;
जगाये नाही जागई ना ॥२॥
दूधवा की फुहिया[2] मैं नयका जगायो ;
मै नयका जगायो हुँ ना ॥३॥
रामा भइले भिनुसरवा[3] अखिरिया ,
नायक पछतावेउ हु ना ॥४॥
गउना के लागउ मोरी माया बहिनिया ,
बहिन लागउ ना ॥५॥
बहिनी एकइ अकिल हमइ देतिउ ,
तउ हरि से दरस पाई ना ॥६॥
हथवा मा लेतिउ कुचरवा,[4] बगल छिटकनिया[5]
बगल छिटकनियहु ना ॥७॥
रामा हेलनी[6] भेलस[7] धई के जातिउ ;
तउ हरि से दरस पावा ना ॥८॥
घोड़वा बहारइ घोड़सरिया ;
तउ हथिन महफि लागी ना ॥९॥
रामा झरके बहारइ चौपरिया[8],
जहाँ पर राजा बइठइ ना ॥१०॥
देखत हरि मुसकाने कहाँ कइ हेलिन ना ।
रामा हमरे जियन राधा रुकमिन खोरिया[9] बहारइना ॥११॥
अलबेले रंग"उ चुनरिया हेलिन पहिरावउ ना ।
पकड़उ न नगरा[10] के सोनरवा बेगहि चला आवउना ॥१२॥
सोनवा गढ़िबेया ककनवा हेलिन पहिरउबइ ना ।
पकड़उ न नगरा के कहरवा बेगहि चला आवा ना ।
कहरा अलबेले डड़िया फँदावउँ,
हेलिन पहुँचावइ ना ॥१३॥

---

१. सो गया । २. रुई का टुकड़ा । ३. प्रात काल । ४. झाड़ू । ५. टोकरी । ६. भंगिन । ७. वेश । ८. चौपाल । ९. गली । १०. नगर ।

कोई पति प्रेमिका कह रही है सात इमली के वृक्ष हैं जो फलो से लदे हुए है उन्ही पेड़ों के नीचे हमारा नायक सो गया जो जगाने पर भी नही जागता ॥२॥

वह कह रही है कि दूध की फुही से (स्तनों के दूध की झड़ी से) मैंने नायक को जगाया। अन्त मे सुबह हो गयी और (नायिका द्वारा) जगाए जाने पर न जागने के कारण नायक अब पछता रहा है ॥३-४॥

पुन वह किसी ग्रामीणा से कह रही हे ग्रामीणा बहिन, मेरे ऊपर दया करो ॥५॥

हे बहिन मुझे एक ही अक्ल (बुद्धि) दो जिससे मैं हरि का दर्शन पा जाऊँ ॥६॥

उसकी बातों का उत्तर देती हुई ग्रामीणा कह रही है—

तुम हाथ मे झाड़ू ले लो और बगल में टोकरी ॥७॥

इस प्रकार यदि तुम भगिन का वेश धारण करके जाओगी तो हरि का दर्शन जरूर पाओगी ॥८॥

वह भंगिन का वेश धारण करके घोड़े के लिए घुडसाल बटोरने (साफ) लगी और हाथियो के स्थान को भी साफ करने मे लग गई ॥९॥

वह जहाँ राजा बैठते हैं उस चौपाल को खूब साफ करके बटोर रही है ॥१०॥

उसको देखते ही हरि मुस्कराने लगे और कहने लगे कहाँ की भंगिन हो ! भगिन ने कहा भला, हमारे जीते जी राधा और रुक्मणि गली मे झाड़ू देने का (बटोरने का) कार्य कर सकती है (कभी नही कर सकती) ॥११॥

उसे पहचान कर हरि ने कहा इसे सुंदर रंग की चूनर पहनाओ और नगर के स्वर्णकार को पकड लो, वह शीघ्र चला आए और सोने का ककना (कंगन) बना कर दे दे जिसे भगिन को पहना दू ॥१२॥

नगर के कहार को पकड़ लो, वह शीघ्र चला आए। वह अलबेला कहार अपनी डोली सजा कर उस पर इस भंगिन को पहुँचा आवे ॥१३॥

५०. सन्दर्भ—किसी प्यासे राजकुमार का ब्राह्मणी से जल पिलाने की प्रार्थना।

ऊँचिन कुइयाँ कइ नीची जगतिया हो ना।
रामा पनिया भरइ एक बराम्हिनी हो ना ॥ १ ॥
घोडवा चढ आवइ एक रजपूतवा हो ना।
रानी बूँद एक पनिया पिअइतू हो ना ॥ २ ॥
कइसे के पनिया पियाउँ रजपूतवा हो ना।
राजा जतिया तउ मोरी जोलहिनिया हो ना ॥ ३ ॥
जउ रानी तोरी जतिया होतइ जोलहिनिया हो ना।
रानी झलकेइ बरिया दुइनौ कनवा हो ना ॥ ४ ॥

कुँआ ऊँचा है परन्तु उसकी जगत बहुत नीची है। उस जगत पर चढ़कर कोई ब्राह्मणी पानी भर रही है ॥१॥

घोडे पर चढ़कर कोई राजपूत (क्षत्री) आ रहा है। वह उस ब्राह्
र्थना करता है कि तुम मुझे थोड़ा-सा जल पिला दो ॥२॥

इस पर ब्राह्मिणी उत्तर देती है कि ए राजपूत ! मै तुम्हे कैसे पानी पि
राजा ! मैं जाति की जोलाहिन हूँ ॥३॥

इस पर वह राजकुमार उत्तर देता है कि तुम झूठ बोलती हो। यदि
लाहिन होती तो तुम्हारे दोनों कानों मे बालियाँ सुशोभित होती। [परन्तु ऐस
त तुम जोलाहिन नही हो] ॥४॥

**५१. सन्दर्भ—किसी भाई के द्वारा गलती से अपने बहनोई का
कर देना। उसकी विधवा बहिन का करुण-
तथा विलाप।**

के तउ खनावा भइया सगरा[1] तलउना[2]।
के तउ वधाँवा ऊँच घाट चुनरिया पर रग चुवइ ॥ १ ॥
बपई[3] खोदयेउ बहिना सगरा तलउना।
पितिअइ[4] बँधाये ऊँच घाट चुनरिया पर रग चुवइ ॥ २ ॥
कँहवइ[5] बाटे बहिनी पाँव कइ पनहिया।
कहँवइ सीतल तलवार चुनरिया पर रग चुवइ ॥ ३ ॥
ओसिअइ[6] तउ भीजी पाँव कइ पनहिया।
रामा रकतइ[7] बूड़इ तलवार चुनरिया पर रंग चुवइ ॥ ४ ॥
कँहवइ मारेया भइया कहँवइ ढकेलेया भइया।
कँहवइ चील्ह मेडरानी[8] चुनरिया पर रंग चुवइ ॥ ५ ॥
ऊँचवइ मारेया वहिनी खलवइ[9] ढकेल्या वहिनी।
सरगा[10] चील्ह मेड़रानी चुनरिया पइ रंग चुवइ ॥ ६ ॥
मारेया तउ तुहुँ भइया मरइउ न जान्या।
मारेउ आपन बहनोइया चुनरिया पर रग चुवइ ॥ ७ ॥
के सउ छवाइ भइया राड़ के छपरवा[11]।
के तउ लगावइ बेड़ा पार चुनरिया पर रंग चुवइ ॥ ८ ॥
हमहीं छवउवइ[12] बहिनी राड़[13] के छपरवा।
हमहीं लगउबइ[14] बेड़ा पार चुनरिया पर रंग चुवइ ॥ ९ ॥

---

१. सागर, बहुत बड़ा पोखरा। २. तालाब। ३. बाप, पिता। ४. पितिय
५. कहाँ। ६. ओस। ७. रक्त, खून। ८. चक्कर काटना। ९. खाल, नी
गड्ढा। १०. स्वर्ग, आकाश में। ११. छप्पर। १२. छवाऊँगा। १
१४. लगाऊँगा, बेड़ा पार करूँगा।

कोई बहिन अपने भाई से कहती है कि ए भाई ! सागर और तालाब किसने खुदवाया है और किसने ऊँचा घाट बँधाया है । मेरी चूनरी पर रंग चू रहा है ॥१॥

इस पर भाई उत्तर देता है कि ए बहिन ! पिताजी ने सागर और तालाब खुदवाया है और मेरे चाचा ने ऊँचा घाट बँधवाया है ॥२॥

ए बहन ! मेरे पैर का जूता कहाँ है और मेरी सीतल तलवार कहाँ है ? ॥३॥

बहिन ने उत्तर दिया—पैर का जूता ओस से भीग रहा है और तुम्हारी तलवार रक्त मे डूब रही है ॥४॥

[भाई ने गलती से अपने बहनोई की हत्या कर दी थी]

बहिन ने पूछा—ए भइया ! तुमने कहाँ मारा और कहाँ ढकेल दिया और चील कहाँ मँडरा रही है ? ॥५॥

भाई ने उत्तर दिया—ऊँचे स्थान पर मैने मारा और नीचे स्थान पर ढकेल दिया । आकाश मे चीले मंडरा रही है ॥६॥

बहिन ने कहा—ए भाई ! तुमने मार तो डाला परन्तु यह नही जाना कि तुमने किसको मारा ? तुमने अपने बहनोई की हत्या कर दी है ॥७॥

विधवा बहिन कहती है कि ए भाई ! मेरी जैसी रांड का छप्पर कौन छवावेगा और कौन मेरी जीवन-नैया को पार लगावेगा ॥८॥

इस पर भाई उत्तर देता है—ए बहिन ! मै ही विधवा के छप्पर को छवाऊँगा और मैं ही तुम्हारा बेडा पार लगाऊँगा अर्थात तुम्हारे जीवन का निर्वाह करूँगा ॥९॥

५२. सन्दर्भ—गंजेड़ी, भंगेड़ी पति को गाँजा-भाँग न पीने के लिए पत्नी का उपदेश ।

मोरा लाठी बजवा[1] लडइया मति जाउ रे ॥ टेक
मोरा लाठी बजवा तइ गाँजा मति पिआउ रे ।
जितने कइ गाँजा पिआ उतने कइ भाँग रे ॥ १ ॥
उतने कइ बीव खात्या जियरा जुडाय रे ।
खूटिय पइ धोती वा पेटरिया[2] मां टोपी रे ॥ २ ॥
कोनवा मां लाठी वा लेउ मति जाउ रे ।
टठिया[3] मां रोटी वा कटोरिया मां दाल रे ॥ ३ ॥
बोरसी[4] मा दूध वा तू पी मति जाउ रे ।
मोरा लाठी बजवा लडइया मति जाउ रे ॥ ४ ॥

१. लट्ठबाज—लाठी से लड़ाई करनेवाला । २. बाक्स । ३. थाली । ४. माटी की बनी अङ्गीठी जिसमें उपले पर दूध गर्म किया जाता है

कोई स्त्री कहती है कि ए मेरे लट्ठबाज पति तुम लड़ाई मे लड़ने मत जावो। मेरे लट्ठबाज को कोई गाजा मत पिलाये। वह जितने रुपयो पीता है उतने का ही भाँग खाता है ॥१॥

यदि वह उतने रुपयों का घी खाता तो मेरे हृदय को शान्ति मिल‹ र धोती और पेटारी (बाक्स) मे उसकी टोपी रखी हुई है। घर के कोने लाठी है। कही उसे लेकर वह लड़ाई करने के लिए चला न जाय ॥२-३॥

थाली मे रोटी और कटोरी में दाल उसके खाने के लिए रखी हुई है ' उसके लिए दूध रखा है। वह कही उसे पी न जाय ॥४॥

५३. सन्दर्भ—सौतिया डाह का चित्रण।

चमेली बन छाइ रहे राजा मेरे। टेक

जउ तुहू राजा चमेली बन छउबेआ[1]।
नइहर चलि जावइ राजा मोरे ॥ १ ॥

जउ तुहू रनिया नइहरे चलि जाबू।
दूसरि लइ अउबइ रनिया मेरी ॥ २ ॥

जउ तुहू राजा दूसरि लइ अउबेया[2]।
सवति होइ कै रहबइ राजा मेरे ॥ ३ ॥

जउ तुहू रनिया सवति होइके रहबू।
तुहइ मरवउबइ[3] रनिया मेरी ॥ ४ ॥

जउ तुहू राजा हमइ मरवउबेया।
सवति दुःख देवइ राजा मेरे ॥ ५ ॥

जउ तुहू रनिया सवति दुःख देबिउ।
तीरथ करि अउबइ[4] रनिया मेरी ॥ ६ ॥

जउ तुहू राजा तीरथ कइ अउबइ।
तरिया तर जावइ राजा मेरे ॥ ७ ॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरा पति चमेली के बगीचे में घूम रहा है। वा सम्बोधित करती हुई कहती है ए मेरे राजा! यदि तुम चमेली के बगीचे स करोगे तो मैं अपने मायके चली जाऊँगी ॥१॥

इस पर उसका पति उत्तर देता है कि ए मेरी रानी! यदि तुम अपने जावोगी तो मैं दूसरी स्त्री से विवाह कर उसे घर में लाऊँगा ॥२॥

---

१. निवास करोगे। २. लाऊँगी। ३. मरवाऊँगा। ४ कर आऊँगा।

स्त्री उत्तर देती है—यदि तुम दूसरी स्त्री को घर में लावोगे तो मैं उसकी सौत बन कर रहूँगी ॥३॥

पति—ए मेरी रानी ! यदि तुम सौत बन करके घर में रहोगी तो मैं तुम्हें जान से मार या मरवा डालूँगा ॥४॥

स्त्री—ए मेरे राजा ! यदि तुम मुझे जान से मरवा डालोगे तब मैं अपनी सौत को भूत बन कर दुःख दूँगी ॥५॥

पति—ए मेरी रानी ! यदि तुम अपनी सौत (मेरी स्त्री) को दुःख दोगी तब मैं तीर्थ करने के लिए बाहर चला जाऊँगा जिससे प्रेत बाधा शान्त हो जाय ॥६॥

स्त्री—ए राजा ! यदि तुम तीर्थ करने चले जावोगे तो मैं भी तुम्हारे साथ तर जाऊँगी ।

झूमर

५४. सन्दर्भ—देवर तथा भावज का प्रेम ।

कवन फूलवा फूलई खड़ी दोपहरिया ;
कवन फूलवा फूलई आधी रात ॥१॥
फूला बगिया ।
अरे लाल फूलवा फूलई खड़ी दोपहरिया ;
उज्जर फूलवा फूलई आधी रात ॥२॥
फूला बगिया ।
ओहि फूलवा कइ अँगिया[1] सिआउबइ ;
अरे अँगिया पहिर फूलवा लोढ़बइ[2] ॥३॥
फूला बगिया ।
अँगिया पहिर के अँगना बहारेउ[3] ;
आरे देवरा धरइ गोरी बाँह ॥४॥
फूला बगिया ।
काऊ[4] धरेया देवरा मोरी बहिया ;
हमरा कन्था[5] अहै परदेस ॥५॥
फूला बगिया ।

कोई स्त्री कहती है कि कौन-सा फूल ठीक दोपहर के समय फूलता है और कौन आधीरात के समय फूलता है ॥१॥

१. चोली । २. चुनना । ३. झाड़ू लगाया । ४. क्यों पकड़ा । ५. कन्त, पति ।

लाल फूल (अड़हुल) ठीक दोपहर में फूलता है और सफेद फूल आधीरात को खिलता है ।।२।।

वह स्त्री कहती है कि उसी फूल की अपनी चोली सिलाऊँगी और उस चोली को पहिनकर बगीचे में फूल चुनूँगी ।।३।।

जब मैं उस चोली को पहिनकर आँगन में झाड़ू दे रही थी तब देवर ने मेरी गोरी तथा सुन्दर बाँह को पकड़ लिया ।।४।।

इस पर भावज ने कहा कि ए देवर ! तुम मेरी बाँह को क्यों पकड़ रहे हो ? मेरा पति तो परदेस में है अत: मैं सुख-संभोग कैसे कर सकती हूँ ।।५।।

५५ सन्दर्भ—नायक और नायिका की प्रेम-क्रीड़ा का वर्णन ।

हारुउना[1] चमकइ दुइनउ[2] गले । टेक
एक्कइ[3] खटोलवा[4] पर दुइ सुतवइया[5];
करवटिया[6] का तरसई दुइनउ जने ।।१।। टेक ।
एक्कइ पिछउरे[7] मां दुइ दुइ ओढ़वइया[8];
हॅइचातानी[9] माॅ चीरइ[10] दुइनउ जने ।।२।। टेक ।
एक्कइ बिरवना[11] मा दुइ दुइ कुचवइया ;
कूवइ का तरसइ दुइनउ जने ।।३।। टेक ।
एक्कइ रूमलिया दुइ दुइ पोंछवइया[12];
पोंछइ का तरसइ दुइनउ जने ।।४।। टेक ।

कोई स्त्री कहती है कि नायक और नायिका के गले में हार सुशोभित नहीं हो रहा है। एक ही छोटी चारपाई पर दोनों—नायक और नायिका—सोने वाले हैं। परन्तु खाट छोटी होने के कारण वे करवट नहीं बदल सकते ।।१।।

एकही दुलाई को दो आदमी ओढ़ने वाले हैं। वे दोनों उसे खींच-खाँच कर फाड़ देते हैं ।।२।।

पान के एक ही बीड़े को खाने वाले दो आदमी हैं। दोनों उसे खाने के लिए तरस रहे हैं ।।३।।

एक ही रूमाल में मुँह पोंछने वाले दो आदमी हैं। परन्तु दोनों उसमें अपना मुँह पोंछने के लिए तरस रहे हैं ।।४।।

१. हार । २. दोनों । ३. एक । ४. छोटी चारपाई । ५. सोने वाले । ६. करवट । ७. पिछौरी, दुलाई । ८. ओढ़ने वाले । ९. खींचा-तानी । १०. फाड़ देते है । ११. पान का बीड़ा । १२. पोंछने वाले ।

५६ सन्दर्भ—किसी नायिका की उक्ति नायक के प्रति ।

आँगन मे केवला[1] गमकि[2] रहे जंजीर सोने की । टेक ।
सोने की थरिया मा जेवना बनायो;
आँगन मा जेवना जेइँ रहे, जंजीर सोने की ॥१॥
झझरेन गेड़ुआ गंगा जल पानी ।
आँगन में गेड़ुआ घूट रहे जंजीर सोने की ॥२॥
लाची लवँगा का बीरा जोरायों;
आँगन में बिरवा कूच रहे जंजीर सोने की ॥३॥
फूल नेवारी का सेजा लगायो;
आँगन मे सेजिया सूत रहे, जंजीर सोने की ॥४॥ टेक ।

कोई स्त्री कहती है कि मेरे आँगन मे केवड़ा का फूल सुगन्धि को बिखेर रहा है । मैंने सोने की थाली में भोजन परोसा था मेरा प्रियतम आँगन में भोजन कर रहा है ॥१॥

बड़े लोटे मे मैंने उसके पीने के लिए गंगा जल रखा था । मेरा प्रियतम आँगन में बैठकर पानी पी रहा है ॥२॥

इलायची और लवंग को लगाकर मैंने पान का बीड़ा तैयार किया था । मेरा प्रिय आँगन मे बैठकर पान खा रहा है ॥३॥

मैंने नेवारी के फूलों से सेज को सुसज्जित किया था । मेरा प्रियतम आँगन में ही सेज बिछा कर सो रहा है ॥४॥

५७. सन्दर्भ—जोगी भरथरी का अपनी माता तथा स्त्री से भिक्षा माँगना । उनकी स्त्री के द्वारा जोगी होने का कारण पूछना ।

कहती सामदेव गुजरिया, धूमिल[3] भइली मोर चुनरिया ।
पियऊ कवन रंग रँगाया; इ गुदरिया[4] ना ॥१॥
छोड़ि के धन दौलत अउ माल, काहे बना अहा कंगाल ।
कौने कारन बनि के घूमत; अहा भिखरिआ ना ॥२॥
बोले राजा भरथरी, सुना नारी पतुरी[5] ।
हम कै भावै नाहीं; सेजिया गुजरिया ना ॥३॥
करम[6] मा लिखा न हमरे जोग,
कइसे करौ राज हम भोग ।

१. केवड़ा का फूल । २. सुगन्धि दे रहा है । ३. मलीन । ४. गुदड़ी । ५. पतली, सुन्दरी । ६. भाग्य ।

हमका नीक[1] ना लागइ
तोर सेजरिया ना ॥४॥

मूड को मुड़ा लिया हइ हम;
अब ना लागी तोर बलम।
माता दइ देआ भीख;
अब करा न अबेरिआ[2] ना ॥५॥

हम का नाहीं हइ धन की आस;
बिस्तर हइ जंगल की घास।
बलकल[3] सोइ रहब;
करबइ वहीं गुजरिआ[4] ना ॥६॥

मोरी माता सुनऊ कलाम[5];
मोरे गुरू का गोरख नाम।
जे देहें हमका ज्ञान;
कइ गठरिया ना ॥७॥

जोगी खड़ा है तोहरे द्वार;
माता कइ देआ भिच्छा दान।
सब दिन फूल रहई;
तोरी फुलवरिया[6] ना ॥८॥

बेटा कहि के भिच्छा दीन;
अइसन जोग भरथरी कीन।
बनइ के कहई ससुरिया दीन;
इहइ झुमरिया ना ॥९॥

सामदेव नामक गूजरी कहती है कि मेरी चूनरी धूमिल अर्थात् मैली हो गई है। ए मेरे प्रियतम ! तुमने इस गूदड़ी को किस रंग में रंगा लिया है ? ॥१॥

तुम घर की धन, सम्पत्ति और माल अर्थात् समस्त सामग्री को छोड़कर कंकाल अर्थात् गरीब क्यों बने हुए हो ? तुम किस कारण से भिखारी बन के घूम रहे हो ? ॥२॥

राजा भरथरी ने उत्तर दिया कि ए गूजरी ! ए सुन्दरी नारी ! सुनो। हमको अब शय्या (सेज) पर सोना अच्छा नहीं लगता है ॥३॥

---

१. अच्छा। २. बेर। ३. बल्कल, वृक्ष की छाल। ४. गुजर करना। ५. बात। ६. वाटिका, परिवार।

मेरे भाग्य में जोगी होना लिखा है। मैं अब राज्य का भोग कैसे करूँ? मुझे तुम्हारे साथ सेज पर सोना अच्छा नहीं लगता है ॥४॥

मैं अब सिर के बालों को मुड़ाकर सन्यासी या जोगी हो गया हूँ। अब मैं तुम्हारा पति नहीं हूँ। ए माता! अब मुझे भिक्षा दे दो। अब अधिक विलम्ब मत करो ॥५॥

हम को धन की आशा नहीं है और मेरा अब बिस्तरा जंगल की घास है। अब मैं बल्कल (केले की छाल) पहिन कर सो रहूँगा और इस प्रकार वहीं जंगल में ही गुजर करूँगा ॥६॥

ए मेरी माता! तुम मेरी बात सुनो। मेरे गुरु का नाम गोरखनाथ है। वही मुझे जोग रूपी ज्ञान की गठरी देंगे ॥७॥

जोगी तुम्हारे द्वार पर खड़ा है। ए माता! मुझे भिक्षा-दान दो। सब दिन तुम्हारी फुलवारी फूली रहेगी अर्थात् तुम सदा सुखी और प्रसन्न रहोगी ॥८॥

भरथरी की इस प्रार्थना पर बेटा कहकर उनकी स्त्री ने उन्हे भिक्षा दिया। मसुरियादीन नामक कवि इस झूमर को बनाकर गा रहे है ॥९॥

विशेष—इस गीत में राजा भरथरी के जोगी बनने का उल्लेख है। जोगी बनने से पहिले अपनी स्त्री की आज्ञा लेना अत्यन्त आवश्यक होता है। इसलिए भरथरी भिक्षा के रूप में अपनी स्त्री से जोगी होने की अनुमति ले रहे हैं। चूँकि अब उन्होंने अपना लौकिक संबंध त्याग दिया है अत अपनी स्त्री को माता कह कर सम्बोधित करते है।

लोक गीतों का रचयिता अज्ञात-नामा होता है परन्तु इस गीत में इसके रचयिता का नाम मसुरियादीन दिया हुआ है। इससे ज्ञात होता है कि यह गीत अपेक्षाकृत अर्वाचीन है।

५८. सन्दर्भ—राजा दशरथ के द्वारा श्रवण कुमार को मारना। श्रवण के प्यासे माता-पिता का प्राण त्याग।

कहती सामदेव गुजरिआ[1]
रही बारी[2] मोर उमरिआ[3]।
हमरी फुलवइ[4] फुलवरिया,
पिया उजारि गये ना ॥१॥
भितरा धरन गइउँ मइ थारी,
धइके लौउटिउँ बड़ी हाली[5]।
देख पड़ा पिंजड़वा खाली,
दिल दुःखारी भइले ना ॥२॥

१. गुजर (अहीर) की स्त्री। २. कम। ३. आयु। ४. फूली हुई। ५. जल्दी से।

राजा दसरथ मारा बान
    सरवन गिरि गये उतान[1]।
मुख से कहा यही जबान,
    राम तइआरी भइले ना ॥३॥

माता पिता कइ नहीं ठेकान[2],
    गये पानी बिना परान[3]।
हमरे जान के खातिर[4] राजा,
    भिखारी भये ना ॥४॥

सुन लेया परासर कइ बयान,
    नइया ऊपर डगमगान[5]।
राजा रामचन्द्र के घरवा से,
    निकारी[6] भइले ना ॥५॥

सामदेव नामक कोई गुजरिया कहती है कि अभी मेरी आयु बहुत छोटी है। हमारी फूली हुई फुलवारी को प्रियतम उजाड़ कर चला गया अर्थात् मेरे आनन्दमय जीवन को उसने नष्ट कर दिया ॥१॥

वह गूजरी कहती है कि मैं घर के भीतर थाली रखने के लिए गई और बहुत जल्दी ही थाली को रख कर लौट आई। परन्तु जब पिंजड़े को खाली देखा तो मेरा दिल अत्यन्त दुःखी हो गया ॥२॥

जल भरने के लिए नदी के किनारे गये हुए श्रवण कुमार को राजा दशरथ ने बाण मारा जिससे वह चित्त (पीठ के बल) होकर गिर पड़ा। उसने अपने मुख से केवल यही बात कही कि हे राम! अब मैं मरने के लिए तैयार हो गया अर्थात् मर रहा हूँ ॥३॥

मेरे माता और पिता का अब कोई ठिकाना नहीं है? पानी के बिना अब उनके प्राण निश्चय ही निकल गये होंगे। राजा दशरथ मेरे प्राणों के लिए भिखारी बन गये अर्थात् भिखारी के समान मेरे प्राणों की भिक्षा लेकर ही सन्तुष्ट हुए ॥४॥

पराशर कवि वर्णन कर रहा है। जीवन-नैया डगमगा रही है। श्रवण कुमार के बध स्वरूप राजा रामचन्द्र का घर से निष्कासन हो गया अर्थात् कैकेयी के वर के कारण रामचन्द्र को १४ वर्ष के लिए बन जाना पड़ा।

---

१. पीठ जमीन से लगी तथा छाती आकाश की ओर। २. ठिकाना, पता। ३. प्राण। ४. लिए। ५. डगमगाती है। ६. निष्कासन, बनवास।

५६ सन्दर्भ—किसी स्त्री का अपने सखियों के साथ अयोध्या स्नान करने जाने का वर्णन।

चलहुँ न सखिया सलेहरि,
अवध चलबैं, अवध चलबै ना।
सखिआ अवध के निर्मल पानी,
गेड़ुवा[1] भरि लावहु गेड़ुवा भरि लावहु ना ॥१॥
केका महँ सउँपउँ अन, धन,
के का धउराहर[2]।
सखिआ केका सउपउँ कन्धइआ,
तउ चलउँ संघ[3] गोहने ॥२॥
सखिआ सासु क सउपउँ अन धन,
ननद धउराहर।
अरे जेठनिआँ क सउँपउँ[4] कन्धइआ[5],
चलंहु संघ गोहने ॥३॥
सासु तउ अहीं मोरि वइरिनि,
ननद वर आपन हो।
सखिआ जेठनिअउँ क नान्हा अतिबारा[6],
चलउँ कइसे संघ गोहने ॥४॥
चारि सखी मिलि पानी भरइँ,
चारि निसारहि, चारि निसारहि हो।
रामा ठाढि जसोदा निहारइँ,
कन्हइआ केकइ रोवइ हो ॥५॥
लघुरी[7] तउ धरइ मोहरवा,
गगरी घिरुचि पइ[8], गगरी घिरुचि पइ हो।
सखिआ झपटि खोलइ केवार
कन्हइआ मोरे नाहीं बाटे[9] हो ॥६॥
छोड़ेउ पेट भर दाना,
तना भइ कापड़[10] हो।
सखिआ छोड़ेउँ मइँ सोरहउ[11] सिगार,
कन्हइआ के कारन हो ॥७॥

---

१. लोटा। २. धरोहर। ३. साथ, साथ। ४. सौपोंगी। ५. कन्हैया, लड़का। ६. विश्वास। ७. छोटी। ८. खींचो। ९. है। १०. कपड़ा। ११. षोडश शृङ्गार।

खाअहु पेट भर, दाना[1],
तनइ भइ कापड़ हो।
सखिआ करहु तु सोरहउ सिगार,
कन्हइआ जनु[2] नाही भये हो ॥८॥

कोई स्त्री अपनी सखियों से कहती है कि तुम सब लोग अयोध्या स्नान करने के लिए चलो। ए सखियों! अयोध्या में सरयू का जल अत्यन्त निर्मल है। अतः वहाँ चल कर बड़े लोटे में भर कर पानी लावो ॥१॥

ए सखी! मैं किसको अपना अन्न और धन सौपूँगी और किसको अपना धरोहर रखने के लिए दूँगी। किसको अपना कन्हैया अर्थात् प्रियतम सौंप कर जाऊँगी। तब तुम लोगों के साथ अयोध्या चलूँगी ॥२॥

उसकी सखियो ने कहा। अपनी सास को अन्न और धन सौप दो। अपनी ननद को धरोहर दे दो। अपनी जेठानी (बडे भाई की स्त्री) को अपने प्रियतम को सौप दो। तब तुम हम लोगों के साथ चलो ॥३॥

इस पर उस स्त्री ने उत्तर दिया कि सास तो मेरी परम शत्रु है और मेरी ननद अपने घर अर्थात् ससुराल में है। मै अपनी जेठानी पर विश्वास नही करती अतः तुम लोगों के साथ स्नान करने के लिए कैसे चलूँ ॥४॥

चार सखियाँ मिल कर पानी भर रही है। चार जल को खींच रही है। वहाँ यशोदा देखती हैं और कृष्ण और कैकेयी रो रही हैं ॥५॥

छोटी (ननद ?) गागर को खींच कर उसमे मुहर रख रही है। ए सखि! झपटि कर अर्थात् जल्दी से किवाड खोलो क्योंकि मेरे घर में प्रियतम नही है। (अर्थ अस्पष्ट है)।

वह स्त्री कहती है कि मैंने प्रियतम के अभाव में पेट भर अन्न खाना छोड दिया है, शरीर मे कपडा पहिनना छोड़ दिया है और ए सखी। मैंने अपने सोलह शृङ्गार का परित्याग कर दिया है ॥७॥

इस पर उसे समझाती हुई कोई सखी कहती है कि तुम पेट भर अन्न खावो, शरीर में कपडा पहिनो और सोलहो शृङ्गार करो। तुम ऐसा समझ लो कि कन्हैया नही है ॥८॥

इस गीत का अर्थ बहुत स्पष्ट नही है।

---

१. अन्न। २. मानो।

६०. संदर्भ—मनोरंजन की सामग्री उपस्थित करने के लिए किसी स्त्री का अपने पति से निवेदन।

हमई धानी[1] रंग चुनरी रँगाइ दे पिआ। टेक।
बागा लगाइ दे, बगइचा पिआ।
उसमें छोटा-सा निबुला[2] लगाइ दे पिआ ॥ १ ॥
बिना तोरे न मानइ हमारा जिआ[3]।
तारा[4] खनाइ दे तलरिआ[5] खनाइ दे।
उसमें छोटी सी मछली छिला[6] दे पिआ ॥ २ ॥
बिना खेले न मानइ हमारा जिआ।
कुइयाँ खनाइ दे, जगतिआ[7] बनाइ दे।
हमइ छोटा सा घइला[8] मँगाइ दे पिआ ॥ ३ ॥
बिना बोरे न मानइ हमारा जिआ।
महला उठाइ दे दुमहला उठाइ दे।
ओ मा छोटी सी खिरकी लगा दे पिआ ॥ ४ ॥
बिना झाँके न मानइ हमारा जिआ।

कोई स्त्री कहती है कि ए प्रियतम ! तुम मेरे पहिनने के लिए धानी रंग की चुनरी रँगा दो। मेरे घूमने के लिए बाग और वाटिका लगा दो। उसमें छोटा-सा एक नीबू का भी पेड़ लगा दो। उस नीबू को बिना तोड़े मेरा जी नहीं मानता ॥१॥

मेरे लिए तालाब और तलैया खुदवा दो और उसमें छोटी-सी मछली छोड़ दो। क्योंकि बिना जल-क्रीड़ा किये मेरा मन नहीं मानता ॥२॥

मेरे लिए तुम एक कुँआ खुदवा दो, उसकी जगत (चबूतरा) भी बनवा दो और ए प्रिय ! एक छोटा-सा घडा भी मँगवा दो। क्योंकि मेरा मन कुँये, में बिना घड़ा डुबाये नहीं मानता ॥३॥

तुम महल बनवा, दो मंजिला मकान भी बनवा दो। ए प्रिय ! उसमें छोटी-सी खिड़की भी लगवा दो। क्योंकि मेरा मन बाहर बिना झाँके हुए नहीं मानता ॥४॥

---

१. कुछ-कुछ पीला रंग। २. नीबू। ३. जियरा, हृदय। ४. तालाब। ५. तलैया। ६. छोड़ दो। ७. कुयें के चारों ओर चबूतरा। ८. घड़ा।

६१. सन्दर्भ—किसी स्त्री के भाई और देवर के द्वारा जुआ खेलना।

देवरा हमार खेलथि[1] पचिसवा[2] रे साँवलिया। टेक॥
देवरा हारे मोर बाग बगइचा;
मोरा भइया जीते हैं निबुलवा॥ १॥
अरे साँवलिया
देवरा हारे मोर महलह, दुमहल;
मोर भइया जीते बँगलवा॥ २॥
अरे साँवलिया।
देवरा हारे मोर माया[3], बहिनियाँ,
मोर भइया जीते ननदिया॥ ३॥
अरे साँवलिया।

कोई स्त्री कहती है कि मेरा देवर जुआ खेलता है। मेरा देवर जुये मे बाग और वाटिका हार जाता है परन्तु मेरा भाई नीबू के पेड़ को जीत लेता है॥१॥

मेरा देवर घर तथा दो महले मकान को हार जाता है परन्तु मेरा भाई जुये में बँगला को जीत लेता है॥२॥

मेरा देवर जुये में अपनी माता और बहन दोनो को हार जाता है और मेरा भाई मेरी ननद को जुये में जीत लेता है॥३॥

विशेष—इस गीत में जुआ खेलने का वर्णन है जिसमें अपनी माँ और बहन को भी दाँव पर लगाने का उल्लेख है। जुये की प्रथा भारतवर्ष में अत्यन्त प्राचीनकाल से चली आती है। इस गीत में बहन ने अपने भाई को ही सदा विजयी बनाया है जिससे उसका भाई के प्रति सहज स्नेह प्रकट होता है।

६२. सन्दर्भ—परदेसी पति का घर लौटना। अपनी बहन से अनजान में प्रेम की बातें करना।

ऊँची महलिया कइ सुरुज दुवरिआ हो;
गोइयाँ चारिउ[4] ओरिया झुका ओसरवा[5] ना॥ १॥
घोड़वा चढा आवै राजा कइ छोकड़वा[6];
गिर परीं कान्धे कइ रूमलिया[7] ना॥ २॥

---

१. खेलता है। २. पासा, जुआ। ३. माता। ४. चारों ओर। ५. बरामदा। ६. लड़का। ७. तौलिया।

भीतर बाटिउ कि बाहरे, रानिअवा ,
गोइयाँ[1] लइ न लेतिउ कान्धे कइ रूमलिया ना ॥ ३ ॥
भीतरा से निकरी पतरी तिरियवा ;
लइ लिही कान्धे कइ रूमलिया ना ॥ ४ ॥
घोड़वा से उतरे राजा कइ छोकड़वा ;
धइ लीहें रानी कइ गोरि बहियाँ ना ॥ ५ ॥
छोड़ छोड़ राजापूतवा मोरी गोरी बहियाँ;
हम तउ बड़े बाबू कइ बिटियवा[2] ना ॥ ६ ॥

ऊँचे महल में 'सूर्य' नामक द्वार बना हुआ है और उस महल के चारों ओर बरामदा बना हुआ है ॥२॥

किसी राजा का लड़का घोड़े पर चढ़ कर चला आ रहा है। इतने में उसके कन्धे के ऊपर रखी हुई रूमाल (तौलिया) गिर पड़ी ॥२॥

वह कहता है कि ए मेरी रानी ! (प्रियतमा !) तुम महल के भीतर हो अथवा बाहर हो। तुम मेरे कन्धे पर से गिरी हुई रूमाल को उठाओ ॥३॥

यह सुनकर महल के भीतर से एक पतली, सुन्दरी स्त्री निकली और उसने कन्धे पर से गिरी हुई रूमाल को उठा लिया ॥४॥

इतने में राजा का वह लड़का घोड़े पर से उतरा और उसने रानी की गोरी बाँह को पकड़ लिया ॥५॥

तब उस स्त्री ने कहा कि ए राजपूत !—राजा के पुत्र—तुम मेरी बाँह को छोड़ो, छोड़ो। मैं तुम्हारे बड़े पिता (ताऊ) की लड़की हूँ। (अत मेरे साथ तुम्हारा यह काम अनुचित है) ॥६॥

६३. सन्दर्भ—किसी प्रेमिका का प्रेम-प्रलाप।

बेला फूलइ आधीरात, गजरवा[3] केकरे गले डारउँ। टेक।
अरे बेला चमेली दुइनउ बहिनी ,
ओऊ फूलइ आधी रात ॥ १ ॥
गजरवा केकरे गले डारउ।
अरे रामा अउ लछन दुइनउ भाई ;
ओऊ जागइँ सारी रात ॥ २ ॥
गजरवा केकरे गले डारउँ।

---

१. यार, प्रेमी। २. बिटिया, लड़की। ३. फूलों की बनी हुई सुन्दर माला।

अरे गगा अउ जमुना दुइनउ वहिनी ;
ओऊ बहइ[1] एक धार ॥ ३ ॥
बेला फूलइ आधीरात ;
गजरवा केकरे गले डारउँ ।

कोई स्त्री कहती है कि बेला का फूल आधीरात को फूलता है । मै
की माला को किसके गले मे डालूँ ? बेला और चमेली दोनो बहने है और
आधी रात को फूलती है । अत: मै यह गजरा किसके गले में डालूँ ?॥१॥

राम और लक्ष्मण दोनों भाई है । वे दोना ही सारी रात जागते
अत: मै यह गजरा किसके गले मे डालूँ? ॥२॥

गंगा और यमुना दोनो बहने है वे दोनो ही एक साथ मिलकर एक
रूप मे बहती है । बेला आधीरात को फूलता है अत यह गजरा किसके
डालूँ ?॥३॥

६४. सन्दर्भ—किसी विरहिणी स्त्री का दुःख ।

दरद मोर बढ़ि गई अब ना जीवइ[2] । टेक ।
वलाय[3] देउ रे मोरे सासु ससुर का ;
महलिया सँउपइ[4] अब ना जीवइ ॥ १ ॥ टेक
वलाय देउ रे मोरे जेठ जेठानी का ;
लरिकवन सँउपइ अब ना जीवइ ॥ २ ॥ टेक
वलाय देउ रे मोरे देवरा देवरानी का ।
गहनवा सँउपइ अब ना जीवइ ॥ ३ ॥ टेक
वलाय देउ रे मोरे पियवा छयलवा[5] का ।
जियरवा[6] सँउपइ अब ना जीवइ ॥ ४ ॥ टेक

कोई वियोगिनी स्त्री कह रही है कि प्रियतम के वियोग के कारण मेरा
व बहुत ही बढ़ गया है । अत: अब मै नही जी सकती । मेरे सास और ससुर क
े । मैं उन्हे अपना मकान सौंप दूंगी । अब मैं नही जी सकती ॥१॥

वह कहती है कि मेरे जेठ और जेठानी को तुम लोग बुला दो । मै
डको को उनके सुपुर्द कर दूँगी क्योंकि अब मैं नही जी सकती ॥२॥

मेरे देवर और देवरानी को बुला दो । मैं उन लोगो को अपना गहना
गी क्योंकि अब मैं नही जी सकती ॥३॥

---

१. बहती हैं । २. जीऊँगी । ३. बुला दो । ४. सौंप दूँगी । ५. ६
हृदय ।

तुम लोग मेरे छैला प्रियतम को बुला दो। उसे मैं अपना हृदय सौंप दूँगी। उसके वियोग जन्य कष्ट के कारण मैं अब जीवित नहीं रह सकती ॥४॥

६५. सन्दर्भ—कृष्ण के प्रति किसी गोपी की उक्ति।

अलबेला[1] मोहन[2] मोर रोकइ गली। टेक।
वे अलबेला फुलवरिया मां बइठा।
छोड़उ डार हम तोरब[3] कली॥ १ ॥ टेक
वे अलबेला कुँअना पर ठाढ़ा।
छोड़उ घाट हम भरी गगरी॥ २ ॥ टेक
वे अलबेला सड़किया पर बइठा।
छोड़उ डगर[4] हम जावइ चली॥ ३ ॥ टेक
वे अलबेला सेजरिया पर बइठा;
छोड़उ सेज हम सूतब अकेली॥ ४ ॥ टेक
अलबेला मोहन मोर रोकइ गली।

कोई गोपी कहती है कि सुन्दर कृष्ण मेरी गली को रोक कर खड़ा हो जाता है। वह प्यारा मोहन फुलवाड़ी में बैठा हुआ है। (गोपी उनसे कहती है कि) तुम इस फूल की डाल को छोड़ दो क्योंकि मैं इसकी कली को तोड़ना चाहती हूँ ॥१॥

वह छैला कुँयें के ऊपर खड़ा है। तुम मेरा पानी भरने का घाट (पनघट) छोड़ दो। मैं अपनी गगरी भरना चाहती हूँ ॥२॥

वह छैला सड़क के ऊपर बैठा हुआ है। तुम मेरा रास्ता छोड़ दो जिससे मैं बिना बाधा के चली जाऊँ ॥३॥

वह मेरा प्यारा छैला मेरी सेज के ऊपर बैठा हुआ है। गोपी उससे कहती है तुम मेरी सेज को छोड़ दो जिससे मैं अकेली सो सकूँ ॥४॥

६६ सन्दर्भ—कृष्ण के द्वारा किये गये उपद्रवों के सम्बन्ध में गोपियों का उपालम्भ।

अरे कोंधा[5] का के[6] समुझावइ। टेक
के समुझावइ के गले[7] लावइ;
अरे कोंधा का के समुझावइ॥ १ ॥
हाथा मां कूड़ी[8] बगल मां सोटा[9];
अरे गलियों मां धूम मचावइ॥ २ टेक॥

१. छैला, सुन्दर। २. प्रियतम, कृष्ण। ३. तोड़ूँगी। ४. रास्ता। ५. कृष्ण। ६. कौन। ७. गले लगावे, प्रेम करे। ८. दही का बर्तन, मटकी। ९. डंडा।

पान खाइ, पिचकारी मारइ,
अरे अँचरा[1] हमार बिगाडइ ॥ ३ ॥ टेक
सेजा सूतइ मोतिन लर तोरइ,
अरे बहियाँ हमार मिरोरइ[2] ॥ ४ ॥
अरे काँधा का के समुझावइ ॥

गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण को कौन समझावे। उसे कौन समझा उसके उपद्रवों के कारण उसे कौन गले लगावे ॥१॥

वह हाथ मे कूँड़ी (दही की मटकी) और बगल में डंडा लेकर गलियों मचाता फिरता है ॥२॥

वह पान खाता है और उसकी पीक को पिचकारी के समान छोड़ता है प्रकार वह मेरे आँचल को पान की पीक लगा कर खराब कर देता है ॥३॥

वह मेरी सेज पर सोकर, मेरे गले में पड़ी हुई मोतियों की माला को देता है और रोकने पर मेरी बाँहों को मरोड़ देता है ॥४॥

६७. सन्दर्भ—किसी प्रेमिका की अपने प्रियतम के प्रति उक्ति।

बोलइ रयमुनिया[3] पितरिया[4] के पिंजड़ा। टेक
सोने के थरिया मां जेवना बनायेउँ,
जेवइँ रयमुनिया पितरिया के पिंजड़ा ॥ १ ॥ टेक
झझड़ेन गेड़आ गंगाजल पानी,
घुटै रयमुनिया पितरिया के पिंजड़ा ॥ २ ॥ टेक
लाची लवँग रस बीरा जोरायेउँ;
कूचइ रयमुनिया पितरिया के पिंजड़ा ॥ ३ ॥ टेक
फूलवा नेवारी के सेजा लगायेउँ,
सूतइ रयमुनिया पितरिया के पिंजड़ा ॥ ४ ॥ टेक

कोई प्रेमिका कहती है कि मेरा तोता (प्रियतम) पीतल के पीजड़े में बोलता है। मैने सोने की थाली में उसके लिए भोजन परोसा परन्तु वह पीतल पीजड़े मे ही रहकर भोजन करता है ॥१॥

मैने बड़े लोटे में उसके पीने के लिए गंगा जल रखा, उसके खाने के इलायची और लवङ्ग से युक्त पानों का बीड़ा लगा कर रखा परन्तु वह पीजड़े मे कर पानी पीता और पान खाता है ॥२-३॥

---

१. आँचल। २. मरोड़ता है। ३. कपड़े की बनी हुई गुड़िया, तोता। इसका अभिप्राय प्रियतम से है। ४. पीतल।

मैंने नेवारी के फूलों से उसकी सेज को सुसज्जित किया था। परन्तु मेरा तोता (प्रियतम) उसी पींजड़े में सोता है ॥४॥

६८. सन्दर्भ—यमुना में जल भरने का वर्णन।

जल कइसे भरौं जमुना गहरी। टेक
ठाढे भरउँ तउ ससुरू देखत है;
बइठे भरउँ तउ भीजइ[1] चूनरी ॥ १ ॥ टेक
धीरे चलउँ घर बालक रोवतु हुई;
झपटी[2] चलउँ छलकइ[3] गागरी ॥ २ ॥
जल कइसे भरौं जमुना गहरी ॥

कोई स्त्री कहती है कि मै जमुना में जल कैसे भरूं क्योंकि यह बहुत गहरी है। अत इससे डूब जाने की आशंका है। यदि खड़े-खड़े जमुना में जल भरूं तो मेरा ससुर मुझे देखता है और यदि बैठकर पानी भरूं तो मेरी चूनरी भीगती है ॥१॥

यदि जल भर कर धीरे-धीरे चलूँ तो घर में बालक रो रहा है और यदि जोर से जल्दी-जल्दी चलूँ गगरी का जल छलकता है। अत. जमुना में जल कैसे भरूं यह समझ में नहीं आता ॥२॥

६९. सन्दर्भ—किसी व्यापारी से उसकी स्त्री की प्रार्थना।

तेरी बनिज[4] नहि भावइ रे बनिजारा[5] लदइआ। टेक
सब कुछ लादेआ नमक जिनि[6] लादेआ[7],
बूँदा परे, भला बूँदा परे, गलि जइहो हो ॥ १ ॥
बनिजारा लदइआ।
सब कुछ लादेआ कुसुम जिनि लादेआ,
बूँदा परे रंग जइहइ हो ॥ २ ॥
बनिजारा लदइआ।
सब कुछ लादेआ लवँग जिनि लादेआ,
बूँदा परे महँक जइहे हो ॥ ३ ॥
बनिजारा लदइआ।

कोई स्त्री कहती है कि ए बनिजारा! तेरा यह व्यापार मुझे अच्छा नहीं

१. भीजती है। २. जल्दी से। ३. छलकती है। ४. वाणिज्य, व्यापार। ५. व्यापारी। ६. मत। ७. लादना।

लगता। तुम व्यापार करने के लिए सब कुछ लाद कर ले जाना परन्तु नमक मत लादना। क्योंकि पानी पड़ने पर नमक गल कर नष्ट हो जायेगा ॥१॥

तुम सब कुछ लादना परन्तु फूलों को लाद कर मत ले जाना क्योंकि पानी पड़ने से उसका रंग बहकर नष्ट हो जायेगा ॥२॥

तुम सब कुछ लादना परन्तु लवँग लाद कर व्यापार के लिए मत ले जाना। क्योंकि पानी पड़ने पर उसकी सुगन्ध निकल जायेगी ॥३॥

७०. सन्दर्भ—एक सखी (गोपी) का दूसरी सखी से कृष्ण-लीला का उल्लेख।

सखिया भूलि गयेन नँदलाला,
नाहि जानी कउनी[1] गलिया ना।
देखेउँ देखेउँ जमुना तट पइ,
गेंद लोकावत[2] ना ॥१॥
झटका गेंद गिरा जमुना जलमां,
वनहूँ क कूदत देखेउँ न।
देखेउँ भइ देखेउँ विन्दावन बेनु बजावत,
सब सखि रहस[3] (रास) मचावन लागीं,
वनहूँ नाचत देखेउँ ना ॥२॥
देखेउँ भइ देखेउँ कुंज गलिन माँ,
ग्वालिन दही लइके जाइत ना।
ग्वालिन दही उतारन लागी,
वनका[4] छीनत देखेउँ ना ॥३॥

कोई गोपी दूसरी गोपी से कहती है कि ए सखी! न जाने किस गली मे कृष्ण जी मुझे भूल गये। मैंने उन्हें यमुना के किनारे गेंद खेलते हुए देखा ॥१॥

जोर से फेंकने से वह गेंद यमुना में गिर गई। उसे निकालने के लिए मैने उन्हें यमुना में कूदते हुए देखा। वृन्दावन में वंशी बजाते हुए और जब मेरी सखियाँ रास-लीला कर रही थी तब उनको नाचते हुए मैंने देखा ॥२॥

जब कुंज-गली में ग्वालिने दही लेकर जा रही थी तब मैने देखा कि श्रीकृष्ण जी उनकी दही की मटकी को उतार कर उनसे दही छीन रहे है।

---

१. कौन। २. गेंद उछाल कर दूसरे को देना। ३. रास-लीला। ४. उनको (श्रीकृष्ण)।

७१ सन्दर्भ—कृष्ण की लीला का वर्णन।

कइसे भरौं जमुना जल पनिआ,
स्याम डगरिआ[1] रोकइ ना।
ठाढ़ गलिन[2] माँ गउवा चरावइ,
देत दुहन[3] का दाम कइसे ना ॥१॥
ठाढ़ गलिन माँ कम्बल ओढ़े,
देत दुशाला दान कइसे ना।
ठाढ़ गलिन माँ वेणु बजावइ,
तोरइ मधुरी तान[4] कइसे ना ॥२॥

कोई गोपी कहती है कि मैं जमुना के पानी को भर कर कैसे लाऊँ क्योंकि मेरे मार्ग को रोक लेते हैं। गली में खड़े होकर गाय चराने का बहाना करते दूध का दाम भी नहीं देते हैं ॥१॥
अपने तो गली में कम्बल ओढ़कर खड़े हैं और हम लोगों को दुशाला ओढ़ने दान में देते हैं। वे गली में खड़े होकर मुरली बजाते हैं और सुन्दर मधुर गायन करते हैं ॥२॥

७२. सन्दर्भ—बघेलों से युद्ध का वर्णन। बहन द्वारा अपने भाई की वीरता की प्रशंसा।

छोटी मोटी दोहनी[5] दुधन कई, बिन हो अगिनि बाफ[6]।
बलइआ लेवेइं बीरन[7]।
से दुध पिअईं भइआ मोर, लड़ईं बघेलवा के साथ ॥१॥
बलइआ लेवेइं बीरन।
बघेल ये लड़इ सउ[8] डेढ़ सउ, मोर भइआ लड़ईं अकेल।
बलइआ लेवेइ बीरन।
बघेल ये हारन सउ डेढ़ सउ, मोर भइले जितले अकेल ॥२॥
बलइआ लेवेइँ बीरन।
बघेलिनि रोवइं सउ डेढ़ सउ; मोर भउजी[9] जउ करइँ सिगार ॥३॥
बलइआ लेवेइ बीरन ॥

बहन कहती है कि दूध रखने या दूहने की छोटी-सी मटकी है। ताजे दूहे गये बिना आग के ही भाप निकलती है। मेरा भाई उसी धारोष्ण दूध को पीता बघेलों के साथ लड़ता है। अपने भाई की मैं बलैया लेती हूँ ॥१॥

---

१. डगर, रास्ता। २. गली। ३. दूध। ४. आलाप। ५. दूध दूहने का ६. भाप ७. भाई। ८. सौ। ९. भावज।

बघलो की सख्या सौ डढ़ सौ है परन्तु मेरा वीर भाई उनसे अकेला ही लड़ता है। सारी बघेलो की सेना हार गई और मेरा भाई उनसे अकेला ही जीत गया ॥२॥

लड़ाई मे मारे गये बघेलो की विधवा स्त्रियाँ रो-रो कर विलाप कर रही है परन्तु मेरी भावज प्रसन्नता के कारण अपना शृङ्गार कर रही है क्योकि मेरा भाई लड़ाई जीत कर आया है ॥३॥

७३. सन्दर्भ—'जालिम तथा कठिन' नौकरी करने के लिए पानी बरसते में जाना :

ठाढ़ी कुँआ पर भीजइ गोरिया,
सिर पर धरे गगरिआ ना। टेक।

सपुरू बड़ा कड़ा[1] जल बरसइ;
कइसे जाब्या नोकरिया ना ॥१॥

पाँव पनहिआ हाथ छतुरिआ,[2]
सिर पर धरे रूमलिआ ना ॥२॥

पतवहु मजे मजे चला जावइ,
जालिम कठिन नोकरिया ना ॥३॥

ठाढ़ी कुँआ पर भीजइ गोरिया,
सिर पर धरे गगरिआ ना ॥४॥

जेठवा बड़ा कड़ा जल बरसई,
कइसे जाब्या[3] नोकरिया ना ॥५॥

पाँव पनहिआ,[4] हाथ छतुरिआ;
सिर पर धरे रूमलिआ ना ॥६॥

साहेब मजे मजे चला जावइ,
जालिम कठिन नोकरिया ना ॥७॥

ठाढ़ी कुँआ पर भीजइ गोरिया;
सिर पर धरे गगरिया ना ॥८॥

देवरा बड़ा कड़ा जल बरसइ,
कइसे जाब्या नोकरिया ना ॥९॥

पाँव पनहिआ, हाथ छतुरिआ,
सिर पर धरे रूमलिआ ना ॥१०॥

---

१. जोरो से। २. छाता। ३. जावोगे। ४. जूता।

भउजी मजे मजे चला जाबइ,
जालिम कठिन नोकरिया ना ॥११॥
सइयाँ बड़ा कड़ा जल बरसई,
कइसे जाब्या नोकरिया ना ॥१२॥
पाँव पनहिया, हाथ छतुरिया;
मन माँ तोरी सुरतिया[1] ना ॥१३॥
धनिया मजे-मजे चलि जाबइ;
जालिम कठिन नोकरिया ना ॥१४॥

कोई सुन्दरी स्त्री सिर पर गगरी को धारण किये कुँऐ पर खडी हुई भींग रही है। वह अपने ससुर से कहती है कि ए ससुर जी ! बड़े जोरो से पानी बरस रहा है इसमें आप अपनी नौकरी पर कैसे जाइयेगा ॥१॥

ससुर ने कहा—पैर मे जूता पहिन लूँगा और हाथ मे छाता लेकर सिर पर धारण करूँगा और रूमाल ले लूँगा। ए पतोहू ! मैं बड़ी अच्छी तरह धीरे-धीरे चला जाऊँगा। नौकरी बड़ी जालिम तथा कठिन होती है ॥२-३॥

कुँऐ पर खड़ी होकर वह गोरी सिर पर घड़ा रख कर पानी में भीग रही है ॥४॥

ए मेरे जेठ। जल बड़े ज़ोरो से बरस रहा है। तुम अपनी नौकरी पर कैसे जावोगे ? ॥५॥

पाँव में जूता और सिर पर छाता धारण कर और हाथ मे रूमाल लेकर ए मेरी भवहि ! मैं बहुत अच्छी तरह से चला जाऊँगा क्योंकि नौकरी बहुत कठिन होती है ॥६—७॥

सिर पर घड़ा लेकर, कुँऐ पर खड़ी वह गोरी पानी मे भीग रही है। वह कहती है—ए देवर ! बड़े ज़ोरो से पानी बरस रहा है। तुम अपनी नौकरी पर कैसे जावोगे ॥८—९॥

इस पर उसका देवर उत्तर देता है कि पैर में जूता हाथ में छाता और सिर पर तौलिया (रूमाल) रखकर ए भावज ! मैं बड़े मजे में चला जाऊँगा क्योंकि नौकरी बड़ी कठिन होती है ॥१०—११॥

फिर वह स्त्री अपने पति से कहती है कि ए प्रियतम ! पानी बड़े जोरो से बरस रहा है। तुम अपनी नौकरी पर कैसे जावोगे ॥११—१२॥

इस पर पति उत्तर देता है कि—पैर मे जूता, हाथ मे छाता और अपने हृदय मे तुम्हारी स्मृति (अथवा सुन्दर रूप) को धारण कर ए धनिया ! मैं बड़े आनन्द से चला जाऊँगा। क्योकि नौकरी बड़ी जालिम तथा कठिन होती है ॥१३—१४॥

---

१. स्मरण।

७४. सन्दर्भ—नायिका की उक्ति नायक के प्रति।

तोर मन कहउँ लगाउ दिल हम से। टेक
हिआँ न मानउ मदरसा मा चलिके।
पक्की सिअहिया लिखाय ल्या हमसे॥ १॥
हिआँ न मानउ बजरिया मां चलिके।
पक्की कसमिया खिआउ लिया हमसे॥ २॥
हिआं न मानउँ गंगा जी मां चलिके।
हलि के कसमिया खिआउ लिया हमसे॥ ३॥

नायिका नायक से कहती है कि तुम्हारा मन कहाँ है अर्थात् किस स्त्री मे अनुरक्त हो गया है? तुम मुझसे अपना दिल लगावो। इस पर नायक अपनी सफाई देता हुआ कहता है कि यदि तुम यहाँ मेरा विश्वास नहीं करती हो तो मदरसा (स्कूल) मे चलकर पक्की स्याही से मुझसे लिखवा लो कि मै किसी दूसरी स्त्री से प्रेम नही करता॥ १॥

यदि तुम यहाँ नही मानती हो तो बाजार में चल कर दस-बीस आदमियो के सामने इस बात की शपथ खिलवा लो॥ २॥

यदि तुम यहाँ पर मेरी शपथ का विश्वास नहीं करती तो गंगा जी में खड़ा कराकर मुझसे हृदय से कसम खिलवा लो [जिससे तुम्हे सन्तोष हो जाय कि मै निर्दोष हूँ]॥ ३॥

लोगो का ऐसा विश्वास है कि गगा जल और तुलसी को हाथ में लेकर या गगा मे खड़े होकर शपथ खाने वाला आदमी कभी झूठ नही बोल सकता। इसी बात का उल्लेख इस गीत में किया गया है।

७५. सन्दर्भ—किसी स्त्री की उक्ति पति के प्रति।

मइँ आगरवाली[1] बालम मोर बनियाँ। टेक।
सोने की थरिया मइँ जेवना बनाएउ।
जेउनउ न जेवइँ बढ़ावइ[2] दुकनिया॥ १॥
झझरेन गेड़आ गंगा जल पानी।
गेड़ुवउ न घूटँइ बढ़ावइ दुकनिया॥ २॥
लाची लवँग रस बीरा जोरायो।
बिरवउ न कूचइँ बढ़ावइ दुकनिया॥ ३॥

---

1 अग्रवाल की स्त्री। २. बन्द करना।

कोई स्त्री कहती है कि मै अग्रवालिन अर्थात् अग्रवाल वैश्य की स्त्री हूँ और मेरा पति बनिया है। सोने की थाली में मैने भोजन बनाकर परोसा था परन्तु वह भोजन न करके अपनी दूकान को बन्द करने मे लगा हुआ है ॥ १ ॥

बडे लोटे मे मैने उसके लिए गगा जल पीने को रक्खा था परन्तु वह पानी न पीकर अपनी दूकान बन्द करने मे लगा हुआ है ॥ २ ॥

लाची और लबंग को लगाकर मैने उसके लिए पान का बीड़ा तैयार किया था परन्तु वह पान न खाकर दूकान बन्द कर रहा है ॥ ३ ॥

७६. सन्दर्भ—किसी सती, साध्वी स्त्री की उक्ति दुश्चरित्र पुरुष के प्रति ।

चले जाउ का चितवत मोरी ओर । टेक
तू तउ अहा यार काला कलूटा ।
मोर सइयाँ सुरुजवा कइ जोत[1] ॥ १ ॥
तू तउ लिही[2] यार लाठी[3] अवर डडा[4] ।
मोर सईयाँ सोबरन क सोट[5] ॥ २ ॥

कोई सती स्त्री कहती है कि ए दुष्ट ! तुम अपने रास्ते से चले जावो। मेरी ओर बुरी निगाह से क्यो देख रहा है। तुम तो बिल्कुल काले कलूटे हो और मेरा पति सूर्य की ज्योति के समान प्रकाशमान और सुन्दर है ॥ १ ॥

तुम लाठी और डडा लेकर उजड्ड देहातियो की तरह हो परन्तु मेरा पति सोने की छड़ी लेकर चलता है। [इस प्रकार मेरा पति धन और सौन्दर्य में तुमसे कही बहुत बड़ा है।] ॥ २ ॥

७७. सन्दर्भ—सास और ननद के चरित्र का चित्रण ।

चम्पा गले क हार राजा तिलरिया लेबइ । टेक
तिलरी पहिरि धना अँगना बहारइ ।
देखइ सासु जरि जाय ॥ १ ॥
राजा तिलरिया लेबइ ।
तिलरी पहिरि धना पानी का गइलिनि ।
देखइ छयेल जरि जाय ॥ २ ॥
राजा तिलरिया लेबइ ।

१. ज्योति, प्रकाश । २. लिये हो । ३-४. लाठी और डंडा में यह अन्तर है कि लाठी बड़ी और मोटी होती है परन्तु डंडा उससे अपेक्षाकृत छोटा और पतला होता है । ५. छड़ी ।

तिलरी पहिरि धना जेवना बनायो।
देखइ ननद जरि जाय ॥ ३ ॥
चम्पा गले का हार, राजा तिलरिया लेबइ।

कोई स्त्री अपने पति से कहती है कि ए राजा ! मेरे गले मे चम्पा की माला सुशोभित है। अब मैं तुमसे तिलरी (गले का आभूषण विशेप) लूँगी।

पति द्वारा प्रदत्त उस तिलरी को पहन कर बहू आँगन में झाड़ू लगाने लगी। उस तिलरी को देखकर उसकी सास जलने लगी ॥ १ ॥

उस तिलरी को पहनकर बहू पानी भरने के लिए गई। उसे देखकर कोई छैला आकृष्ट हो गया ॥ २ ॥

उस गहने को पहनकर बहू रसोई बनाने लगी। उसे देखकर ननद को बडा दुःख तथा डाह हुआ ॥ ३ ॥

पति के द्वारा स्त्री के सन्मान को देखकर उसकी सास तथा ननद प्राय. द्वेष करती है। उसी का उल्लेख इस गीत मे है।

७८. सन्दर्भ—किसी रूप गर्विता नायिका की उक्ति।

निबुलवा[1] तोहरे तरे अँधियारी[2]। टेक।
निबुला तोरि तोरि ढेरा[3] लगाऊँ,
सासुर का धरब बेगारी[4] ॥ १ ॥
निबुला लइ के चलेउ सरकारी[5],
निबुलवा तोहरे तरे अँधियारी ॥ २ ॥
निबुला तोरि तोरि ढेरा लगाऊँ,
जेठवा के धरब बेगारी ॥ ३ ॥
निबुला लइ के चलेउ सरकारी,
निबुलवा तोहरे तरे अँधियारी ॥ ४ ॥
निबुला तोरि तोरि ढेरा लगाऊँ,
देवरा के धरब बेगारी ॥ ५ ॥
निबुला लइ के चलेउ सरकारी,
निबुलवा तोहरे तरे अँधियारी ॥ ६ ॥
निबुला तोरि तोरि ढेरा लगाऊँ,
बलमा के धरब बेगारी ॥ ७ ॥

---

१. नीबू, यौवन, स्तन। २. अन्धकार, अन्धेर। ३. ढेरी, राशि। ४. बिना पैसा दिए काम करवाना। ५ स्वकीय अपना राजकीय।

निबुला लइ कै चलेउ सरकारी,
निबुलवा तोहरे तरे अँधियारी ॥ ८ ॥

नीबू ! तुम्हारे तले-नीचे अंधेरा है। नीबुओं को तोड़ तोड़ कर मैंने उनकी ढेर लगा दी । अब इनको ले चलने के लिए अर्थात् इनका उपभोग करने के लिए अपने ससुर को बेगार में पकडूँगी ॥ १ ॥

ससुर जी ! इन सरकारी (स्वकीय मेरे) नीबुओं को लेकर चलिए । इन नीबुओं के नीचे अँधेरा छाया हुआ है । [भाव यह है कि यौवन का आस्वादन करने से आदमी अन्धा हो जाता है] ॥ २ ॥ आगे के अर्थ सरल है ।

७९. सन्दर्भ—किसी नायिका की नायक के प्रति उक्ति ।

ऐसा गुलजार[1] कहाँ पाया,
मह[2] मह महकै दुइनऊ[3] सेजरिया[4] । टेक

कि तुहूँ पाया बनिया दुकनिया,
कि रे पाया ससुरार ॥ १ ॥ ऐसा०

नाहीं रे पाया बनिया दुकनिया,
नाहीं रे पाया ससुरार ॥ २ ॥

हमरे अँगनवा तुलसी के पेडवा,
फुलवा फुलै आधी रात ॥ ३ ॥
मह मह महकै सेजरिया,
ऐसा गुलजार कहाँ पाया,
मह मह मँहकै सेजरिया ॥ ४ ॥

कोई नायिका नायक से कहती है कि ऐसा सुगन्धित तथा सुन्दर फूल तुमने कहाँ से प्राप्त किया जिससे हम दोनों की सेज बहुत ही अधिक सुगन्धित हो गई है ।

क्या तुमने इसे किसी बनिये की दूकान पर पाया है अथवा अपनी ससुराल में पाया है ? ॥ १ ॥

नायक कहता है कि न तो मैंने इसे किसी बनिये की दूकान पर पाया है और न अपनी ससुराल ही में इसे पाया है ॥ २ ॥

हमारे घर के आँगन में तुलसी का पेड़ है । उसमे आधी रात को फूल फूलता है । [वही से उस फूल को मैने पाया है] ॥ ३ ॥

तुमने इस फूल को कहाँ पाया जिससे मेरी सेज बहुत सुगन्धित मँहक रही है ॥ ४ ॥

---

१ फूल । २. बहुत अधिक महँकना । ३. दोनों । ४. सेज, शैया ।

८०. सन्दर्भ—कृष्ण के प्रति किसी गोपी की उक्ति ।

छोड़ो रे बाँह बनवारी, मैं मर गयी लाज के मारे ।
जो बनवारी कुआँ पर जइहै,
पनिया भरन हम जावै करारी[1] ॥ १ ॥ छोड़ो०
जो बनवारी जंगल माँ[2] रहब्या[3],
देखै हम जावैं करारी ॥ २ ॥ छोड़ो०
जो बनवारी मथुरा को जइहै,
दहिया बेंचे हम जावै करारी ॥ ३ ॥ छोड़ो०
जो बनवारी जमुना के तीरे जइहै,
हम नहाये जइबै करारी ॥ ४ ॥ छोड़ो०

कोई गोपी कहती है कि हे कृष्ण ! तुम मेरी बाँह को छोड़ो मारे मरी जाती हूँ ।

हे बनवारी ! यदि तुम कुँये पर जावोगे तब मैं पानी भरने अवश्य जाऊँगी ॥ १ ॥

हे बनवारी ! यदि तुम जंगल में रहोगे तब भी मैं तुम्हें देखने अवश्य जाऊँगी ॥ २ ॥

हे कृष्ण ! यदि तुम मथुरा को जावोगे तब मैं दही बेंचने अवश्य जाऊँगी ॥ ३ ॥

हे बनवारी ! यदि तुम जमुना के किनारे जावोगे तब मैं वहाँ लिए अवश्य जाऊँगी ॥ ४ ॥

८१. सन्दर्भ—किसी प्रेमिका की उक्ति अपने प्रियतम के

फिर सें बोलों तुम्हारी बोल प्यारी लगे । टेक ।
बागा[4] भी बोल्या बगैंचा[5] भी बोल्या[6],
कोइल घबड़ाय गई फिर से बोल्या ॥ १ ॥
तारा[7] भी बोल्या इनारा[8] भी बोल्या,
कहारिन घबड़ाय गई फिर से बोल्या ॥ २ ॥
महला भी बोल्या दुमहला भी बोल्या,
सासु घबड़ाय गई फिर से बोल्या ॥ ३ ॥
सेजा भी बोल्या सुपेती[9] भी बोल्या,
सवत[10] घबड़ाय गई फिर से बोल्या ॥ ४ ॥

---

१. अवश्य, निश्चित रूप से । २. में । ३. रहोगे । ४. बाग । [illegible]
प्रतिध्वनित हुआ । ७. इनारा में जोड़ तोड़ का निरर्थक शब्द । ८
[illegible]ल, सपत्नी ।

कोई प्रेमिका अपने प्रियतम से कह रही है कि तुम फिर से बोलो, तुम्हारी बोली अच्छी लगती है।

तुम्हारी बोली से बाग और बाटिका सभी प्रतिध्वनित हो गये। तुम्हारी मधुर बोली सुनकर कोयल भी घबड़ा जाती है ॥ १ ॥

तुम्हारी बाणी से कुँआ भी प्रतिध्वनित हो गया। उसे सुनकर कुँये पर जल भरने वाली कहारिन भी घबड़ाय गई [कि इतनी सुन्दर आवाज कहाँ से आ रही है] ॥ २ ॥

तुम्हारी मधुरी बोली से अपना घर (महल) भी प्रतिध्वनित हो गया और मेरी सास घबड़ाय गई ॥ ३ ॥

सेज पर भी तुम्हारी सुन्दर आवाज सुनाई पड़ती है। अतः मेरी सौत (सपत्नी) घबड़ाय गई [कि यह हृदयहारी ध्वनि किसकी है] ॥ ४ ॥

सावन

८२. सन्दर्भ—जनक जी के द्वार पर राम की बारात का वर्णन।

अरे रामा चन्दा उइ[1] चटकील[2];

जनक जी के द्वारे रे हरी ।।टेक।।

सोनवा की थरिया माँ जेवना बनाइब[3] रामा;

अरे रामा जेवना जेवइँ सौ साठ ।।१।।

जनक जी के द्वारे रे हरी।

झझरे गेडुववा गंगा जल पनिया रामा;

अरे रामा गेडुअवा घूँटइ सौ[4] साठ ।।२।।

जनक जी के द्वारे रे हरी।

लाची लवंगिया के बिरवा जोराइब रामा;

अरे रामा बिरउ घूँटइ सौ साठ ।।३।।

जनक जी के द्वारे रे हरी।

फूलवा नेवारी के सेजिया लगाइब रामा;

अरे रामा सेजिया सुतैं सौ साठ ।।४।।

जनक जी के द्वारे रे हरी।

कोई स्त्री कहती है कि राजा जनक जी के द्वार पर रामचन्द्र रूपी चन्द्रमा प्रकाशित हो रहा है। मैंने सोने की थाली में भोजन बनाकर परोसूँगी। आज एक सौ साठ आदमी भोजन करेंगे ।।१।।

बड़े-बड़े लोटों में गंगा-जल भर कर रख दिया गया है। आज उसे एक सौ साठ आदमी पियेंगे ।।२।।

मैं लाची और लवंग को लगाकर पान का बीड़ा बारातियों के लिए तैयार करूँगी। उन पान के बीड़ों को एक सौ साठ आदमी खायेंगे ।।३।।

नेवारी के फूलों से सुसज्जित कर मैं उन लोगों के लिए पलंग बिछाऊँगी। आज उन सेजों पर एक सौ साठ आदमी (बाराती) सोयेंगे।

---

१. उदित होता है। २. प्रकाशमान। ३. बनाऊँगी। ४. एक सौ साठ।

८३. सन्दर्भ किसी स्त्री की उक्ति अपने पति जेठ और देव आदि के प्रति।

हरे रामा बेला फुलइ आधी रात;
चमेली भिनसारे[1] हे हरी ॥१॥
सोनवा की थरिया माँ जेवना बनाएउँ,
हरे रामा सइयाँ जेवइं[2] आधी रात,
ससुर भिनसारे हे हरी ॥२॥ टेक
लाची लवंगिया के बिरवा आरे जोरायेउँ;
हरे रामा सइयाँ कूचइ आधी रात;
जेठ भिनसारे हे हरी ॥३॥ टेक
फूला नेवारी के सेजिया इसायेउँ;
मोरे मइयाँ सुतइ आधी रात;
देवर भिनसारे हे हरी ॥४॥
हरे रामा बेला फूलइ आधी रात;
चमेली भिनसारे हे हरी ॥५॥

कोई स्त्री कहती है कि बेला का फूल आधी रात को फूलता है और चमेली प्रात काल मे विकसित होती है। सोने की थाली मे मैंने भोजन बना कर परोसा। मेरा पति आधी रात को भोजन करता है परन्तु ससुर सारी रात बिता कर प्रात काल खाता है ॥१-२॥

इलायची और लवग को लगा कर मैंने खाने के लिए पान का बीडा तैयार किया था। मेरा सइयाँ तो आधी रात को पान खाता है परन्तु मेरा जेठ प्रात.काल खाता है ॥३॥

मैंने नेवारी के फूलों से सजा कर सेज को सुसज्जित किया था। मेरा सँइया उस पर आधी रात सोता है परन्तु देवर प्रात.काल मे सोता है ॥४॥

८४. सन्दर्भ—नायिका की उक्ति नायक के प्रति।

मथुरा के चलइया दुइनउ[3] जने[4]। टेक
तू होआ[5] आँधी हम होबै पानी;
गलिया माँ झकोरत दुइनउ जने ॥१॥
तू होआ लोटा हम होबै डोरी;
कुअनवाँ माँ लफाना[6] दुइनउ जने ॥२॥
मथुरा के चलइया दुइनउ जने ॥

---

1 प्रात:काल। 2 भोजन करता है। ३. दोनों। ४. आदमी। ५. हो जाव। ६. हाथ लगाकर या लटका कर पानी खींचना।

कोई स्त्री अपने प्रियतम से कहती है कि हम दोनो मथुरा को जाने वाले है। हे प्रियतम ! तुम आँधी हो जाव और मैं पानी बन जाऊँ और हम दोनो आदमी मथुरा की गलियो मे हवा तथा पानी का झोका मारते हुए चलें ॥१॥

हे प्रियतम ! तुम लोटा हो जावो और मै डोरी बन जाऊ और हम दोनों आदमी मिल कर कुआ से पानी निकालेंगे ॥२॥

८५. सन्दर्भ—किसी प्रेमिका की उक्ति अपने प्रेमी के प्रति।

तू तउ दरदउ[1] न जान्या[2] मोहन हमरी। टेक
तरा लाली रजइया[3] उपर सुजनी[4]।
मुख चुम्मइ न देवइ बिगर[5] झुलनी ॥१॥
लागी लागी बजरिया मकनपुर[6] की।
गोरी लइले झुलनिया अपने मन की ॥२॥
बिना पाती[7] कइ झुलनी सजत नाही।
चहय[8] रोइ मरउँ मोहन मिलत नाही ॥३॥
तरे दूधे कइ साटी[9] ऊपर माठा।
ऐसी झुलनिउ पै बैइठइ छयल[10] बाँका[11] ॥४॥
जइसे वन कइ लकड़िया कटक[12] टूटइ।
वइसे लागी परितिया कसत (ट) छूटइ ॥५॥
जइसे बन कइ लकड़िया का तोर उउबइ।
वइसे लागी नजरिया छोड़ाइ अउवइ[13] ॥६॥
जइसे कथ्था[14] सुपारी कटत नाहीं।
लरिकइ योंउ की यारी[15] छुटत नाहीं ॥७॥

कोई प्रेमिका अपने प्रेमी से कहती है कि ए मोहन ! तुम मेरे हृदय के दर्द को नही जानते हो। नीचे लाल रजाई (लिहाफ) हैं और ऊपर सूजनी है। परन्तु झुलनी पहिने बिना मै अपने मुख का चुम्बन लेने नही दूँगी ॥१॥

मकनपुर का बाजार लगा हुआ है। ए गोरी ! अपने मन के अनुकूल तुम झूलनी खरीद लो ॥२॥

---

१. दर्द, कष्ट। २. जानते हो। ३. लिहाफ। ४. एक प्रकार का सूती बिछौना जिसमें बहुत अधिक सिलाई की जाती है। ५. बिना। ६. स्थान विशेष। ७. झुलनी की एक प्रकार की विशेष बनावट। ८. चाहे। ९. नीचे का बचा हुआ, तलछट। १०. छैला, प्रिय। ११. कुटिल, सुन्दर। १२. कष्ट से। १३. आऊँगी। १४. खैर। १५. प्रेम मित्रता।

बिना पत्ती के झुलनी अच्छी नहीं लगती है। चाहे रोते हुए मर जाय परन्तु प्रियतम (मोहन) से मिलन नहीं हो सकता ॥३॥

नीचे दूध की सीठी (तलछट) है और ऊपर माठा है। ऐसी सुन्दर झुलनी पर बाँका प्रियतम बैठा हुआ है अर्थात् उसकी दृष्टि झुलनी पर लगी हुई है ॥४॥

जिस प्रकार से बन की लकड़ी बड़े कष्ट से टूटती है उसी प्रकार से लगी हुई प्रीति बड़े कष्ट से छूटती है ॥५॥

जिस प्रकार से वन की लकड़ी को तोड़ दिया जाता है, उसी प्रकार से प्रियतम की लगी हुई नजर से अपने को छुड़ा लूँगी ॥६॥

जैसे कत्था और सुपारी बड़ी कठिनाई से काटा जाता है वैसे ही लड़कपन से चली आती हुई मित्रता (लरिकाई की प्रीति) बड़ी मुश्किल से छूटती है ॥७॥

प्रेम का सम्बन्ध अटूट होता है इसी तथ्य की ओर इस गीत में संकेत किया गया है।

८६. सन्दर्भ—प्रेमी और प्रेमिका का प्रेमालाप।

हमका ढूढ़ि कहाँ पउबा[1] सँवलिया। टेक
जउ मैं होतिउँ बन कइ कोइलिया;
लासा[2] फँदाय[3] तुहै लउ अउबइ जनिया ॥१॥ टेक
जउ मैं होतिउँ जल कइ मछलिया;
जाला[4] छोड़ाइ तुहै लउ अउबइ[5] जनिया ॥२॥ टेक
जउ मैं होतिउँ महला की रनिया।
बंशी बजाय तुहै लउ अउबइ जनिया[6] ॥३॥ टेक

कोई प्रेमिका कहती है कि ए प्रियतम! तुम मुझे ढूढ़ने पर भला कहाँ पावोगे। इस पर उसका प्रेमी उत्तर देता है कि यदि तुम बन की कोयल होती मैं गोंद लगाकर तुम्हें पकड़ कर अपने घर ले आता ॥१॥

यदि तुम जल की मछली होती तो मैं जाल में से तुम्हें छुड़ाकर अपने पास ले आता ॥२॥

यदि तुम किसी महल की रानी होती तो मैं वंशी बजाकर और तुम्हें मुग्ध करके अपने घर ले आता ॥३॥

विशेष—व्याध जंगल में पक्षियों को पकड़ने के लिए एक लम्बे बाँस का प्रयोग करते है। वे उस बाँस के अगले सिरे पर गोंद लगा देते हैं और धीरे-धीरे

१. पावोगे। २. गोंद। ३. लगाकर के। ४. जाल। ५. लाऊँगा। ६ प्रिया, स्त्री।

जाकर पेड़ पर बैठे हुए पक्षी के पंखों में उस गोंद को लगा देते हैं जिससे उसके पंख बाँस से लिपट जाते हैं। इस प्रकार पक्षी उड़ने में असमर्थ हो जाता है। ऊपर के गीत में पक्षी पकड़ने की इसी पद्धति का उल्लेख किया गया है।

८७. सन्दर्भ—घर वाले व्यक्तियों के द्वारा पीड़ित किसी विरहिणी स्त्री की उक्ति।

ई कोइल बोलइ सहा न जाय रे।
अरे जवन बोली[1] सासु बोलइ उहइ[2] ससुरवा।
ई जियरा कहइ भला (वला) होइ जाइ रे ॥१॥
जवन बोली जेठ बोलइ उहइ जेठनिया,
ई जियरा कहइ जहर, विष खाइ रे ॥२॥
जवन बोली देवर बोलइ उहइ देवरनिया[3]।
ई जियरा कहइ मिलेन[4] होइ जाइ रे ॥३॥
ई कोयल बोलई सहा न जाय रे ॥

कोई विरहिणी स्त्री कहती है कि कोयल की बोली अब सही नहीं जाती है क्योंकि उससे बड़ा कष्ट हो रहा है। जैसा कटु वचन हमारी सास बोलती है वैसा ही ससुर भी बोलता है। मेरा हृदय कहता है कि इससे मर जाना अच्छा है ॥१॥

जैसे विषम वचन हमारा जेठ बोलता है वैसा ही मेरी जेठानी भी बोलती है। मेरा हृदय कहता है कि इससे तो विष को खाकर मर जाना अच्छा है ॥२॥

जैसे प्रिय तथा मधुर वचन मेरा देवर बोलता है वैसा ही मेरी देवरानी भी बोलती है। मेरे जी में अब यह आता है कि देवर से मिलन कर लूँ अर्थात् उससे प्रेम संबंध स्थापित कर लूँ ॥३॥

विशेष—जब घर के सभी लोग शत्रु बन जाते हैं तो जिस दिशा से प्रेम प्राप्त होता है उधर आकर्षण होना स्वाभाविक है। इसी का उल्लेख गीत में हुआ है।

८८. सन्दर्भ—स्त्री के प्रति पति का प्रगाढ़ प्रेम। सखी की उक्ति सखी के प्रति।

सिकिया[5] अइसी न डोलइ बारी[6] धना[7]। टेक
सासु कहइ बउहर[8] पानी लइ आवा।
सइयाँ कहइ, कूँअना गिर जइहै बारी धना ॥१॥ टेक
सासु कहइ बहुअर रोटी बेलन[9] का।

---

१. कटु वचन। २. वही। ३. देवरानी, देवर की स्त्री। ४. मिलाप, प्रेम संबंध। ५. सींक। ६. छोटी। ७. स्त्री। ८. बहू, बधू। ९. रोटी को बेलना।

सइयां कहइ धुअना[1] लागि जइहै बारी धना २
सिकिया अइसी न डोलइ बारी धना ॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरी यह छोटी सखी सींक के समान पतले शरीर वाली है। इसकी सास कहती है कि ए बहू! पानी कुयें से भर कर लावो परन्तु इसका पति कहता है कि मेरी स्त्री नहीं जायेगी क्योंकि उसके कुँये में गिरने की आशंका है ॥१॥

उसकी सास कहती है कि ए बहू! चलकर रोटी बनाओ परन्तु उसका प्रियतम कहता है कि मेरी प्यारी प्रिया को रसोई बनाते समय धुँआ लग जायेगा ॥२॥

यह छोटी स्त्री सींक के समान पतले शरीर वाली है अतः यह कुछ काम नहीं करती।

८६. सन्दर्भ—विरहिणी स्त्री का मोर की आवाज सुनकर नींद का न आना।

मोरवा[2] बोलै सारी रात, रात पिया नींद न आवै। टेक ॥
बागा भी बोलै बगइचा भी बोलै,
आरे बोलै निबुलवा[3] की डारि ॥१॥
रात पिया नींद न आवै।
महला पै बोलै दुमहला पे बोलै।
आरे बोलै खिरिकिया की आरि[4] ॥२॥
रात पिया नींद न आवै ॥
तारा पै बोलै इन्दारा[5] पै बोलै,
आरे बोलै जगतिया[6] की आरि ॥३॥
रात पिया नींद न आवै।
सेजिया पै बोलै सुपेतिया पै बोलै;
बोलै तकियवा की आरि ॥४॥
रात पिया नींद न आवै।

कोई विरहिणी स्त्री कहती है कि ए प्रियतम! मोर सारी रात बोलता रहता है। अतः तुम्हारे बिना मुझे बिल्कुल ही नींद नहीं आती। मोर बाग में बोलता है, वाटिका में बोलता है और नीबू की डाल पर चढ़ कर बोलता रहता है। इससे नींद नहीं आती ॥१॥

---

१. धुँआ। २. मोर। ३. नीबू। ४. किनारा, पास। ५. कुआँ। ६. कुयें के चारों ओर ऊँचा चबूतरा जिस पर चढ़कर लोग पानी भरते हैं।

यह महल पर चढकर बोलता है, दुमहले पर चढकर बोलता है और खिड़की पर बैठकर भी बोलता है। अतः रात को नींद नहीं आती ॥२॥

यह कुँये पर से बोलता है, उसकी जगत (चबूतरा) के किनारे पर चढ़कर बोलता है। इसलिए मुझे नींद नहीं आती ॥३॥

यह मोर मेरी सेज के पास से बोलता है, बिस्तर पर चढ़कर बोलता है और मेरे तकिये के पास खड़े होकर बोलता है। अतः ए प्रिय ! तुम्हारे बिना मुझे नींद नहीं आती ॥४॥

९०. सन्दर्भ—किसी विरहिणी स्त्री की उक्ति अपने परदेसी प्रियतम के प्रति।

दुख दइके बलमुआ[1] बिदेसय[2] गये। टेक
चारा महीनवा के बरखा होअतु[3] है;
आरे छावा बँगलवा उजारि गये ॥१॥ टेक
चारा महीनवा कै जाड़ा होअतु है;
आरे लाली रजइया[4] उठाये गये ॥२॥ टेक
चारा महीनवा के गरमी होअतु है;
आरे प्यारी बेनियवा[5] उठाये गये ॥३॥
दुःख दइके बलमुआ बिदेसय गये।

कोई विरहिणी स्त्री कहती है कि मेरा बालम मुझे वियोग रूपी दुःख देकर स्वयं परदेस चला गया। चार महीने—आषाढ़, सावन, भादों और कुवार—तक वर्षा होती रहती है। वे मेरे छाये हुये घर को उजाड़ कर चले गये ॥१॥

चार महीने—कार्तिक, अगहन, पूस और माघ—तक जाड़ा पड़ता है। परन्तु मेरे प्रियतम मेरी लाल रजाई (लिहाफ) को उठाकर लेते गये जिससे जाड़े के कारण मैं बहुत दुःख पा रही हूँ ॥२॥

चार महीने—फागुन, चैत, बैसाख और जेठ—बड़ी गर्मी पड़ती है। परन्तु मेरा प्यारा बालम मेरी प्यारी बेनिया (पंखा) को उठाकर लेता गया। अतः अब मैं पखा कैसे झलूँ ॥३॥

९१. सन्दर्भ—आदर्श पति-प्रेम का वर्णन।

बइठा मोरे राम[6] ! झुलनियाँ के छहियाँ ॥ टेक
सोने की थरिया माँ जेवना बनायो,
जेवँउ मोरे राम डोलाउँ रस[7] बेनिया[8] ॥१॥
बइठा मोरे राम०

---

१. बालम, प्रिय। २. विदेश को। ३. होता है। ४. लिहाफ। ५. पंखा। ६. प्रियतम। ७. प्रेम से, धीरे-धीरे। ८. पंखा।

झझरन गेड़आ[1] गंगाजल पानी;
घूटउँ मोरे राम डोलाउँ रस बेनियाँ ।।२।।
बइठा मोरे राम०

लाची लँवग कै बीरा जोरायौं ।
कूचउँ मोरे राम डोलाउँ रस बेनियाँ ।।३।।
बइठा मोरे राम०

फूला नेवारी[2] कै सेजा लगायौं,
सूतउँ मोरे राम डोलाउँ रस बेनिया ।।४।।
बइठा मोरे राम०

कोई स्त्री कहती है कि मेरे प्रियतम ! तुम मेरी झुलनी की छाया के बैठो अर्थात् मेरी गोदी में चले आवो । मैंने भोजन को बना कर सोने को में परोस दिया है । ए मेरे प्रियतम ! तुम भोजन करो और मैं धीरे-धीरे पखा रही हूँ ।।१।।

मैंने बड़े लोटे मे तुम्हारे पीने के लिए गंगा जल रख दिया है । तुम पियो और मै पंखा झल रही हूँ ।।२।।

मैंने इलायची और लवग के साथ पान का बीड़ा तुम्हारे खाने के लिए ल है । तुम उसे खावो । मै पंखा-झल रही हूँ ।।३।।

मैंने नेवार के फूलो से तुम्हारी शय्या को सजाया है । ए मेरे पियतम ! उस पर सोवो और मै धीरे-धीरे पखा झल रही हूँ ।।४।।

९२. सन्दर्भ—वर्षा में विरहिणी स्त्री के कष्टों का उल्लेख ।

पुरबइ[3] चढी बदरिया बरसन लागे बड़े बूँद । टेक
टपकन[4] लागे अरे मोरे बाँगलवा,
सासुरु छवावै आपन बाँगलवा ।
मोर, पिय छाये[5] विदेसवा रे ।।१।। टेक
जेठवा[6] छवावै आपन बाँगलवा,
मोर पिय छाये विदेसवा रे ।।२।। टेक
देवरा छवावै[7] आपन बाँगलवा,
मोर पिय छाये विदेसवा रे ।।३।। टेक
टपकन लागे मोर बाँगलवा रे ।।

कोई विरहिणी स्त्री कहती है कि पूर्व दिशा मे बादल आकाश में चढ

---

१. बड़ा लोटा । २. पुष्प-विशेष । ३. पूर्व दिशा । ४. चूने लगा । ५. गया ६. पति का जेठा भाई । ७. मरम्मत कराना ।

और बादलों ने बड़े-बड़े बूँदो को बरसाना प्रारम्भ कर दिया। वर्षा के कारण मेरा घर टपकने लगा। मेरा ससुर अपना घर तो छवाता है। परन्तु मेरा पति विदेश में है। अतः मेरे घर को कौन छवावे ॥१॥

मेरे पति का जेठा भाई अपना घर तो छवाता है परन्तु मेरा पति विदेस में है।

मेरा देवर अपना घर तो छवाता है परन्तु मेरा पति तो विदेस मे है। अत. मेरे टपकते हुए घर को मेरे प्रियतम के बिना कौन छवावेगा ॥३॥

८३. सन्दर्भ—बेटी का मायके के लिए प्रगाढ़ प्रेम तथा ननद और भावज का शास्वलिक विरोध ॥

लागै सावन का महीनवा, बेटी सासुरवै[1] बाटी ना । टेक
सभवा बइठल मोर बपई बढ़इते,[2]
बपई हथिया सकलपै[3] ना ॥१॥ टेक
गंगा मइया तनिक[4] हटि जातिउ,
बेटी नैहरवै अउतिन ना ॥२॥ टेक
मचिया बइठल मोरी माया बढ़इनिन,
माया मोतिया सकलपै ना ॥३॥ टेक
पंसा[5] खेलत मोर भइया बढ़इते,
घोड़वा सकलपै ना ॥४॥ टेक
गगा मइया तनिक हटि जातिउ,
बेटी नैहरवै अउतिन ना ॥५॥ टेक
रामा रसोइया मोर भउजी बढ़इते,
भउजी सोनवा सकलपै ना ॥६॥ टेक
गंगा मइया तीन लोक बोहिअउतिउ[6],
ननद सासुरवै रहतिन ना ॥७॥ टेक
लागै सावन का महीनवा,
वेटी सासुरवै बाटी ना ॥८॥ टेक

ससुराल मे गई हुई कोई लड़की कह रही है कि सावन का महीना आ गया परन्तु मैं अभी अपने ससुराल में ही हूँ ॥१॥

वह कहती है कि सभा में बैठे हुए ए मेरे श्रेष्ठ पिता! तुम हाथी का संकल्प (दान) करते हो ॥२॥

---

१. ससुराल में ही। २. श्रेष्ठ। ३. संकल्प करना। ४. थोड़ा सा। ५. चौपड़। ६. बहा देती।

ए गंगा माता ! तुम्हारा पानी थोड़ा घट जाता जिससे बेटी अपने मायके ली आती ॥२॥

फिर बेटी कहती है कि मचिया पर बैठी हुई ए मेरी श्रेष्ठ माता ! तुम मोती ा दान करती हो। पाशा खेलते हुए मेरे श्रेष्ठ भाई ! तुम घोड़ा का दान रो ॥३-४॥

ए गंगा माता ! तुम जरा थोड़ा घट जाती तो बेटी अपने मायके चली ाती ॥५॥

रसोइया मे बैठी हुई मेरी श्रेष्ठ भावज ! तुम सोना का दान करो ॥६॥

इस पर भावज क्रोधित होकर कहती है कि ए गंगा माता ! तुम अपने प्रवा ा तीनो लोकों को बहा ले जाती जिससे ननद अपनी ससुराल ही रह जाती ॥७॥

सावन का महीना आ गया परन्तु बेटी आज भी अपनी ससुराल मे ही पड़ ई है ॥८॥

सावन के महीने में नव विवाहिता लड़कियाँ अपने मायके जाने के लिए कितन उत्सुक रहती है इसकी सुन्दर झाँकी इस गीत मे देखने को मिलती है ।

९४. सन्दर्भ—सावन में बहिन को मायके लाने के लिए भाई क उसके घर जाना ।

लील[1] घोड़ चितकाबुल[2] मोरवा[3],
घोड़वा कइ सोने कइ लगाम ।
वहि घोड़वा पइ चढ़ि कइ गँउना,
भइया बहिनियाँ के जाइ ॥ १ ॥
जाइ के पहुँचे बहिनी के देसवा,
गउना[4] के लोगवा डेरॉइ ।
मत डेरउ लोगवा, मति डेरउ लोगवा,
हम तउ बहिनियाँ के भाइ ॥ २ ॥
आइ के उतरे बहिनी दुअरवा,
बहिनी कइ ससुरू डेराँइ ।
मति डेरउ भइया, तू मति डेरउँ,
हम तउ बहिनियाँ के भाइ ॥ ३ ॥
जउ तुहुँ होइतउ बहिनी के भइया,
लइ अउतेआ घुघूरी[5] लदाइ ।
लेउ ना भइया साठि रुपइआ,
बहिनी बिदा कइदेइँ ॥ ४ ॥

---

१. नील । २. चितकबुर, चितकावर । ३. मोरवंश । ४. गाँव के । ५. अ विशेष ।

कइसे के भइया बहिनी बिदा कइ देईं,
बहिनी के कोछे[1] गदेल[2]।
बारा महीनवा पइ लागे हइ सावनवा,
बहिनी लिआइ लइ जाव ॥ ५ ॥
काटउ न मोरे भइया भलली[3] मकोइआ[4],
रूँधउ[5] ससुरवा कइ राह ॥ ६ ॥

नीला और चितकबरा घोड़ा है उसके सिर पर मोरपंखी लगी हुई है और उसकी लगाम सोने की है। उसी घोड़े पर चढ़ कर भाई अपनी बहन के गाव जा रहा है। जब वह बहन के देश पहुँच गया तो उसे देख कर गाँव के लोग डरने लगे। इस पर उसके भाई ने उत्तर दिया, तुम लोग मुझसे डरो मत हम तो अपनी बहन के भाई हैं। जब वह जाकर बहन के दरवाजे पर उतरा तो उसे देख कर उसकी बहन का समुर डर गया। उससे उसके भाई ने कहा—"तुम मत डरो, मैं तो अपनी बहन का भाई हूँ।" इस पर बहन के ससुर ने कहा—"यदि तुम बहन के भाई होगे तो (सावन के महीने मे उसे देने के लिए) घुघुरी (भिगोया, चना) लदा कर जरूर लाते।" बहन के ससुर से उसके भाई ने कहा—"हे भाई, तुम साठ रुपये ले लो और मेरी बहन को बिदा कर दो।" ससुर ने उत्तर दिया—हे भाई, तुम्हारी बहन को कैसे बिदा करें—"क्योंकि उसकी गोद में बच्चा है।" भाई ने कहा कि 'बारह महीने पर सावन मास लगा है—मैं ऐसे मौके पर बहन को लिवा जाऊँगा।' ससुर के न बिदा करने पर उसकी बहन ने कहा—हे भैया, जंगल की लगी हुई मकोय (एक जंगली पौदा जो बैर के तुल्य होता है) को काट कर हमारे ससुर का मार्ग रूँध दो (घेर दो) जिसमें आते-जाते इस काँटेदार पौधे से उनका वस्त्रादि फट जाय।

९५. सन्दर्भ—किसी विरहिणी की उक्ति बादल के प्रति।

बदरिआ तु तउ मोर हरि बेलमाइउ[6]। टेक
सोने के थरिआ माँ जेवना बनायुँ;
अरे जेउनउ जेंवत घिरि आइउँ ॥१॥ टेक
झँझरेन गेड़आ गंगाजल पानी,
गेड़अउ घूँटत घिरि आइउ ॥२॥ टेक
लाची लँवग रस बीरा जोराइउँ;
बिरवउँ कूँचत घिरि आइउँ ॥३॥ टेक
फूला नेवारी क सेजा लगाइयुँ;
सेजिअउ[7] सूँतत[8] घिरि आइउँ ॥४॥
बदरिआ तु तउ मोर हरि बेलमाइउ ॥

१. कक्ष, गोदी। २. लड़का, गदेला। ३. लगी हुई। ४. मोटा अन्न-विशेष का पौधा ५ रोक दो। ६ घेर कर लिया। ७ सेज पर। ८ सोते समय ही।

कोई विरहिणी स्त्री कहती है कि ए बदली तुमने मेरे प्रियतम के आगमन मे विलम्ब कर दिया। सोने की थाली मे मैंने उनके लिए भोजन परोसा था। परन्तु भोजन करने के लिए आने वाले समय मे ही तुम आकाश मे घिर आई ॥१॥

बड़े लोटे में पीने के लिए मैंने उनके लिए पानी रखा था। प्रिय के खाने के लिए लाची और लवग से युक्त पान का बीड़ा रखा था परन्तु पान खाने के समय ही तुम घिर आई ॥२–३॥

मैंने नेवार के फूलों से उनकी सेज को सुसज्जित किया था। परन्तु तुम सेज पर सोने के लिए आने के समय पर ही आकाश मे घिर आई जिससे मेरा प्रिय घर न आ सका। इस प्रकार तुमने उसके आने मे बाधा उपस्थित कर दी ॥४॥

८६. सन्दर्भ—किसी नायिका की उक्ति नायक के प्रति।

के गुलाबी रंग छोड़ा[1] मोरी चुनरी माँ। टेक
सोने के थरिआ माँ जेवना बनायउँ,
जेंवइ[2] क नीम तरे जेवइ मोरे अँगने माँ ॥१॥ टेक
लाची लवंग रस बीरा जोरायउँ,
कूँचइ क नीम तरे, कूँचइ मोरे अँगने माँ ॥२॥ टेक
झझड़ेन गेडआ गंगा जल पानी;
घूँटइ क नीम तरे घूँटइ मोरे अँगने माँ ॥३॥ टेक
फूला नेवारी का सेजा लगायउँ;
सूतइ क नीम तरे सूतइ मोरे अँगने माँ ॥४॥
के गुलाबी रंग छोड़ा मोरी चुनरी माँ।

कोई नायिका कहती है कि मेरी चूनरी के ऊपर किसने गुलाबी रंग डाल दिया है। मैंने प्रियतम के लिए सोने की थाली मे भोजन बना कर परोसा था। उनको नीम के नीचे भोजन करना चाहिए था परन्तु वे मेरे आँगन में ही खाने लगे ॥१॥

मैंने इलायची और लवग लगाकर पान का बीडा उनके खाने के लिए तैयार किया था। बड़े लोटे मे उनको पानी पीने के लिए दिया था। उन्हे पानी नीम के नीचे पीना चाहिए था परन्तु मेरे आँगन मे ही पीने लगे ॥२–३॥

मैंने नेवार के फूलो से उनकी सेज को सुसज्जित किया था। उनको नीम के वृक्ष के नीचे सोना चाहिए था परन्तु मेरे आँगन मे ही सो गये ॥४॥

८७. सन्दर्भ—प्रेमिका की उक्ति प्रियतम के प्रति।

अरे रामा गंगा तोरी लहरिया;
करेजवा[3] सालै[4] रे हरी। टेक
अरे रामा एही पार तब तबला बाजै,
ओहि पार सारंगी रे हरी ॥१॥

---

१. डाला। २. भोजन करना चाहिए था। ३. कलेजा, हृदय। ४. कष्ट देती है।

अरे रामा बीचवा मा हरमुनिया,
बाजि-बाजि रहि जाइ रे हरी ॥२॥
अरे रामा एही पार तब मैना बोलै.
ओहि पार तोता रे हरी ॥३॥
अरे रामा बिचवा माँ बुल बुल,
थिरिक रहि जाई रे हरी ॥४॥

कोई प्रेमिका कहती है कि ए गंगा ! तेरी लहरें मेरे हृदय को कष्ट दे रही इस पार तो तबला बजता है और उस पार सारगी बजती है इन दोनो के बीच रमोनियम बज उठती है ॥१-२॥

ए प्रियतम ! इस पार तो मैना बोलती है और उस पार तोता बोलता है और मे बुल-बुल थिरक-थिरक कर नाचती है ॥३-४॥

८८. सन्दर्भ—ग्रीष्म ऋतु में गर्मी से पीड़ित किसी भावज की उक्ति ननद के प्रति।

अरे रामा जलदी से बेनिया[1] डोलाउ,
गरम मोरे लागे रे हरी। टेक।
अरे रामा जाइ कहेब मोरे बारे ससुर से;
जलदी से बाँसवा[2], कटाव ॥ १ ॥
गरम मोरे लागे रे हरी।
अरे रामा जाइ कहेब मोरे बारे जेठ से,
जलदी से बाँसावा चिराव[3] ॥ २ ॥
गरम मोरे लागे रे हरी।
अरे रामा जाइ कहेब मोरे बारे देवर से;
जलदी से बेनिया बनाउ ॥ ३ ॥
गरम मोरे लागे रे हरी।
अरे रामा जाइ कहेब मोरे बारे बलम से;
जलदी से बेनिया डोलाउ ॥ ४ ॥
गरम मोरे लागे रे हरी।

कोई स्त्री कहती है कि ए प्रियतम ! मुझे जल्दी से पंखा झलो क्योंकि मुझे लग रही है। वह अपनी ननद से कहती है कि तुम मेरे ससुर से जाकर कहो कि बनाने के लिए वे जल्दी बाँस कटवायें ॥ १ ॥

तुम मेरे जेठ से कहो कि वे जल्दी से बाँस को चिरावे और मेरे छोटे देवर से कि वह जल्दी से पखा बनावे। क्योंकि मुझे बड़ी गर्मी लग रही है ॥ २-३ ॥

ए ननद ! तुम मेरे छोटे बालम (प्रियतम) से जाकर कहना कि वह जल्दी र मुझे पंखा झले क्योंकि मुझे बड़ी गर्मी लग रही है ॥ ४ ॥

---

१ बाँस का बना हुआ पखा २ बाँस ३ चिरवाना फड़वाना

६६ सन्दर्भ—अपने परदेसी प्रियतम को ढूँढ़ने के लिए निकली हुई किसी स्त्री की उक्ति।

अपने पिय क हेरन[1] निकेलेउ राम;
जोगिनिया बन के ना। टेक

बाग भी हेरेउँ बगइचा भी हेरेउँ;
निबुला[2] घूमर[3] घूमर के हेरेउँ;
राम मलिनिया बन के ना॥ १॥

तारा[4] भी हेरेउँ ईनारा भी हेरेउँ;
घटवा घूमर घूमर के हेरेउँ;
राम कहारिन बन के ना॥ २॥

महला भी हेरेउँ दुमहला भी हेरेउँ;
खिरकी घूमर घूमर के हेरेउँ;
राम रानियवा बन के ना॥ ३॥

सेजिया भी हेरेउँ सुपेतिया[5] भी हेरेउँ;
तकिया उलटि पुलटि के हेरेउँ,
राम सवतिया[6] बन के ना॥ ४॥

अपने पिया के हेरन निकेलेउ;
राम जोगिनिया बन के ना॥ ५॥

किसी स्त्री का पति बहुत दिनो परदेश से नही आया है। अतः वह स्त्री कहती है कि मै अपने प्रिय को ढूँढ़ने के लिए जोगिनी बन कर घर से निकल पड़ी हूँ। मैने उन्हे बाग मे भी खोजा और वाटिका में भी खोजा। मालिन बन करके मैंने नीबू के पेड़ों के पास घूम-घूम कर के ढूँढा (परन्तु वे नही मिले)॥ १॥

मैंने उन्हे कुये मे भी खोजा और कहारिन के समान उन्हे प्रत्येक घाट पर घूम-घूम करके खोजा॥ २॥

मैंने उन्हे महल में भी खोजा और दुमञ्जिले मकान में भी खोजा और रानी बनकर मैंने उन्हे खिरकी पर बैठकर भी देखा (परन्तु वे कहीं दिखाई नहीं पड़े)॥ ३॥

मैंने उन्हें सेज पर भी ढूँढ़ा और बिस्तर पर भी ढूँढ़ा। सौत(सपत्नी) के समान

१. खोजने के लिए। २. नीबू। ३. घूम घूम करके। ४. तालाब। ५. बिस्तर। ६. सौत।

अर्थात् सौत की उत्सुकता के साथ मैंने तकिया को उलट पुलट कर भी उनको खोजा (परन्तु इनका कहीं पता नहीं चला ।। ४ ।।

मैं आज अपने प्रिय को ढूँढने के लिए योगिनी बनकर घर से निकल पड़ी हूँ ।।५।।

१००. सन्दर्भ—ऊधव के प्रति गोपियों का वचन ।

उधो जाय के लिखा स्याम का पतिया[१] । टेक ।
एक चंद बड़ी, दूजे दिहे बेदिया[२];
तीजे मोतियन हार जड़े छतिया ।। १ ।।
एक खोले लटा,[३] दूजे घेरे घटा;
तीजे बरसन लागे सावन बुंदिया ।। २ ।।
एक रैन[४] बड़ी, दूजे स्याम नही;
तीजे सासु बोले बिरहन[५] बोलिया ।। ३ ।।
उधो जाय के लिखा स्याम का पतिया ।

गोपियाँ ऊधव जी से कहती है कि ए ऊधो ! तुम जाकर कृष्ण से कहना कि वे हम लोगों को पत्र क्यो नहीं लिखते ? एक तो पूर्णचन्द्रमा आकाश मे निकला है (जो उद्दीपन का काम करता है) दूसरे हमारे शरीर में विरह जन्य वेदना है और तीसरे मेरे गले में श्रीकृष्ण के द्वारा दी गई रत्न जटित मोतियो की माला है (जो उनका स्मरण दिला कर और भी कष्ट दे रही है) ।। १ ।।

एक तो विरह के कारण हमने अपने बालों को खोल रखा है, दूसरे आकाश मे घटाये घिरी हुई हैं और तीसरे सावन के मेघ बड़ी-बड़ी बूँदे बरसाने लगे । (ये सभी विरह में उद्दीपन का काम कर रहे है) ।। २ ।।

एक तो सावन की रात बड़ी होती है, दूसरे श्याम (प्रियतम अथवा कृष्ण) घर पर नही है और तीसरे मेरी सास कटु तथा कठोर बचन बोलती है । (ऐसी दशा मे प्रिय के बिना चैन कैसे पड़ सकती है) ।

१०१. सन्दर्भ—दक्षिण देश में गये हुये परदेसी पति के वियोग में विरहिणी की कजली खेलने में असमर्थता ।

केहि संग खेलउँ कजरिया सखिया,
हरि मोरे छाये[६] दखिनवा,[७] ना । टेक ।
असाढ़ मास घनाघन गरजइ;
रिमझिम बरसइ सवनवा ना ।। १ ।।
भादौ मास चमाचम चमके;
जियरा[८] मोर डेरानें ना ।। २ ।।

---

१. पत्र चिट्ठी । २. वेदना, कष्ट । ३. बाल । ४. रात्रि । ५. कटु तथा कठोर वचन । ६. विराजमान है । ७. दक्षिण देश । ८. हृदय ।

कुवार माझ कुँवर रख लागे;
कातिक बरै दीपकवा ना ॥ ३ ॥
अगहन मास उठी है लगनिया[1];
सब सखी चली गवनवा ना ॥ ४ ॥
माघ पूस कै जाड़ा सतावै;
थर थर काँपै करेजवा ना ॥ ५ ॥
फागुन मास मा रंग उड़त है;
केहि पर छोड़ेउ अबिरिया[2] ना ॥ ६ ॥
चैत मास बन टेसू फूलै;
भँवरा केलि करै फुलवरिया ना ॥ ७ ॥
जेठ वैसाख मां गरमी सतावै;
चोलो बदा[3] भिजै पसिनवा ना ॥ ८ ॥

कोई विरहिणी स्त्री अपनी सखी से कहती है कि ए सखी ! आज मैं कजली किसके साथ खेलूँ ? मेरे प्रियतम तो दक्षिण देश में विराजमान हैं। आषाढ़ मास में बादल जोरों से गरजते हैं और सावन में रिमझिम रिमझिम वर्षा होती है ॥ १ ॥

भादों में बिजली चम-चम चमकती है और मेरा हृदय इससे डरता है ॥ २ ॥

कुवार (आश्विन) के महीने में पितृपक्ष लगता है और कातिक में आकाश-दीप जलाया जाता है ॥ ३ ॥

अगहन के महीने में विवाह का शुभ मुहूर्त प्रारम्भ हो गया और मेरी सखियाँ विवाहित होकर अपनी ससुराल चली गईं ॥ ४ ॥

पूस और माघ में जाड़ा बड़ा कष्ट देता है और शरीर थर-थर काँपता रहता है ॥ ५ ॥

फागुन के महीने में रंग उड़ता है। मैं किस पर गुलाल डालूँ (क्योंकि मेरा पति तो परदेस में है) ॥ ६ ॥

चैत में बन में टेसू के फूल फूलते हैं और भँवरा बगीचे में लगे हुए फूलों से क्रीड़ा करता है अर्थात् उनका रस चूसता है ॥ ७ ॥

वैसाख तथा जेठ के महीनों में गर्मी बहुत कष्ट देती है और पसीने के कारण मेरी चोली के बन्द भींग जाते है ॥ ८ ॥

---

१. विवाह के दिन, मुहूर्त। २. अबीर, गुलाल। ३ चोली बाँधने की रस्सी।

१०२. सन्दर्भ—अपने पति तथा देवर के प्रति किसी स्त्री की उक्ति।

तुलसी का पेड़ एक चन्दन का बिरवा। टेक।
सोने की थरिया मा जेवना[1] बनायेउँ;
ये दोनों जेंय[2] गये हमरे आँगनवाँ॥ १॥
झझरेन गेड़ुआ गंगा जल पानी;
ये दोनो घूँट गये हमरे आँगनवा॥ २॥
लाची लवँग रस बिरवा जोराएउँ,
ये दुइनउ कूच गयें हमरे आँगनवा॥ ३॥
फूल चुनि चुनि सेजिया लगायेउँ,
ये दुइनउ[3] सोइ गये हमरे आँगनवा॥ ४॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरे घर में तुलसी का पौदा और चन्दन का एक वृक्ष है। सोने की थाली में मैंने भोजन बनाकर परोसा था। ये दोनों—मेरे पति और देवर मेरे आँगन में उसे खा गये॥ १॥

बड़े लोटे मे मैंने गंगा जल पीने के लिए रखा था परन्तु ये दोनो मेरे आँगन में आकर उसे पी गये॥ २॥

इलायची और लवँग से युक्त मैंने पान का बीड़ा खाने के लिए रखा था। परन्तु ये दोनो मेरे आँगन मे आकर इसे खा गये॥ ३॥

मैंने फूलों को चुन-चुन करके उनमे सेज को सोने के लिए सुसज्जित किया था परन्तु ये दोनो मेरे आँगन में आकर उस पर सो गये॥ ४॥

१०३. सन्दर्भ—किसी विरह विधुरा स्त्री का अपने परदेसी पति के पास सन्देश भेजना।

एक मन कहइ सुगना पटकि अरे उड़ावउँ अही ना। टेक।
दूसर मनवा कहइ बाँके रजऊ[4] कइ पाला[5] सुगनवा अही ना॥ १॥
अपुना तउ गये राजा दखिनी जरे बनिजिया[6],
जिआय के गये ना एक हारिला[7] सुगनवा॥ २॥
खाय क नउ माँगय सुगना दूध अउ भतवा,
रामा, पिअइ का माँगइ ना।
बाँके राजा कइ गिलसिया,
सुगना पिअइ का माँगइ ना॥ ३॥

---

१. भोजन। २. भोजन कर गये। ३. दोनों। ४. राजा, पति। ५. पाला गया पालित। ६. वाणिज्य। ७. हरे रंग का।

सोवइ का तउ सुगना सेजिया अउ सुपेती,
रामा, रजउ जी कइ तकीया, सिरहाने माँगइ ना ॥ ४ ॥
उड़ि के तउ सुगना घुँघटवा चढ़ि के बइठइ,
घुँघटवा चढ़ि के ना।
रामा, काटइ लागे ना हमरी झुलनी कइ पतिया[1],
काटइ लागे ना ॥ ५ ॥
उड़ि के सुगना हमरी चोलिया चढ़ि बइठइ ना,
वइ वउ काटइ लागे ना।
हमरी अँगिअवा कै बँदवा, सुगना काटइ लागे ना ॥ ६ ॥
उड़ि के सुगना दखिनवा गये ना,
वही परदेसवा गये ना।
बाँके रजऊ की जुलुफिया[2] सुगना बइठि गये ना ॥ ७ ॥
झारेन पोछेन रजऊ अवरु जाँघ बइठायन,
पूँछइ लागेन ना ॥ ८ ॥
घरा कय हवलिया[3] रजऊ पूँछइ लागे न ना।
कौने रंग[4] सुगना हमरी माया,
कौने रंग बहिनिया बाटी[5] ना
रामा, कौने रंग सुगना, बाँकी धनिया[6] बाटी ना ॥ १० ॥
माया तोहरी कूटइँ,[7] बहिनिया तोहरी पीसइँ,[8]
गोरी गोरी बहियाँ, हरिअरि हरिअरि अरे चुरिया। टेक।
तोहरी बाँकी[9] धनियाँ भरइँ झोकवनि[10] पनियाँ ना ॥ ११ ॥
अतनी बयन[11] जब सुनइँ बाँके रजऊ, चूवै हो लागी ना।
वन[12] के नयनन से अँसुइया,[13] चुवन हो लागी ना ॥ १२ ॥
एक मन कहइ सुगना पटकि अरे उड़ावउँ अही ना।
दूसर मनवा कहइ बाँके रजऊ कइ पाला सुगनवा अही ना ॥ १३ ॥

कोई विरह विधुरा स्त्री कहती है कि एक बार मन में यह आता है कि इस

---

१. पत्तों वाली। २. लम्बे बाल। ३. हाल, दशा। ४. प्रकार, दशा। ५. है। ६. स्त्री, धन्या। ७. कूटती है। ८. पीसती है। ९. सुन्दर। १०. ओरों से, झोंके से। ११. बचन। १२. उनके। १३. आँसू।

तोता को उडा दू और इसके द्वारा अपने पति के पास सन्देश भेजू । दूसरी बात मन में यह आती है कि यह मेरे पति के द्वारा पाला गया है ।।१।।

अपने तो मेरा पति दक्षिण दिशा की ओर व्यापार करने के लिए चला गया परन्तु मेरे लिए उसने एक हरे रग का तोता पाल कर मुझे दिया ।।२।।

खाने के लिए यह तोता दूध और भात माँगता है और पीने के लिए मेरे पति का गिलास चाहता है ।।३।।

सोने के लिए यह तोता मेरे पति की शय्या (सेज), तोशक और तकिया माँगता है ।।४।।

यह सुग्गा इतना ढीठ और उदण्ड हो गया है कि यह उडकर मेरे सिर के घूंघट पर बैठ गया और मेरे नाक की झूलनी के पत्तियों को काटने लगा ।।५।।

यह सुग्गा उडकर मेरी चोली पर बैठ गया और उसने मेरी चोली के बन्द को काटना प्रारम्भ कर दिया ।।६।।

इसके बाद वह सुग्गा उडकर दक्षिण देश को गया (जहाँ मेरा पति व्यापार के लिए गया था) । वहाँ वह उसके घुंघराले लम्बे-लम्बे बालों पर जाकर बैठ गया ।।७।।

पति ने उसके पखो को झाडा और पोंछा और उसे अपने जघे पर बैठा कर उससे अपने घर का समाचार पूछने लगा ।।८-९।।

ए सुगना ! मेरी माता कैसी है, और मेरी बहिन ! किस प्रकार से रहती है । ए सुग्गा ! मेरी स्त्री किस तरह से अपना दिन काट रही ? ।।१०।।

इस पर सुग्गे ने उत्तर दिया तुम्हारी माता धान कूटती है, तुम्हारी बहिन जाँत पीसती है और तुम्हारी गोरी गोरी और हाथो मे हरी चूडी पहिनने वाली धनिया कुँआ से पानी भरकर अपनी जीविका चलाती है ।।११।।

सुग्गे की इतनी बात को सुनकर उस परदेसी पति की आँखों से लगातार आँसुओ की वर्षा होने लगी ।।१२।।

इस दुःखद समाचार को सुनाने के कारण एक बार उसके मन मे आया कि इस सुग्गे को उड़ा दूँ । दूसरी बार मन मे यह आया कि यह मेरा पालतू सुग्गा है ।।१३।।

विशेष—इसी आशय का एक गीत भोजपुरी में पाया जाता है । परन्तु उसके अन्तिम पद मे थोडा परिवर्तन उपलब्ध होता है । भोजपुरी गीतो का पति अपनी माता, बहिन तथा स्त्री की दयनीय दशा को सुनकर अपनी नौकरी छोड देता है और अपनी संचित कमाई को लेकर घर लौट आता है । इसके अतिरिक्त इन दोनो गीतों में बहुत कुछ समानता है ।

कजरी

१०४. सन्दर्भ—मायके जाने के लिए किसी स्त्री का अपने पति से निवेदन। पति की बहाना बाजी।

हम का जाय दया नइहरवा[1],
मोरी कजरिया बीती[2] जाय। टेक।

जउ धना जावू[3] तू नइहरवा
हम का जेवना के जेवाँई।

अपनी बहिनी के बोलाय के,
नइहरवा तू तब जाव ॥ १ ॥

जउ धना जावू तू नइहरवा,
हम का गेड़या[4] के घुँटाइ।

अपनी बहिनी के बुलाइ के,
नइहरवा तू तब जाव ॥ २ ॥

जउ धना जावू तू नइहरवा,
हमका सेजिया के[5] सुलाई[6]।

अपनी बहिनी के बुलाइ के,
नइहरवा तब तू जाव ॥ ३ ॥

हम का जाय दया नइहरवा,
मोरी कजरिया बीती जाय।

कोई स्त्री अपने पति से कहती है कजली खेलने के दिन बीते जा रहे हैं। अतः तुम मुझे अपने मायाके जाने दो। इस पर उसका पति उत्तर देता है कि ए स्त्री! यदि तुम अपने मायाके चली जावोगी तो मुझे भोजन बनाकर कौन खिलावेगा? अतः तुम अपनी छोटी बहिन को मेरी सेवा करने के लिए बुलाकर अपने मायके जावो ॥ १ ॥

वह पति अपनी पत्नी से फिर कहता है कि ए धनिया! यदि तुम मायके चली जावोगी तब मुझे पानी कौन पिलायेगा? अतः तुम अपनी बहन—मेरी सरहज—को बुलाकर अपने मायके जावो ॥२॥

पति फिर कहता है कि ए धनिया! यदि तुम मायके चली जावोगी तब मुझे

१. नैहर, मायका। २. कजली के दिन बीते जा रहे हैं। ३. जावोगी। ४. पानी। ५. कौन। ६. सुलायेगी।

स० पर कौन सुनायेगा। अत: तुम अपनी छोटी बहन को बुलाकर अपने मायके जावो। स्त्री उससे प्रार्थना करती है कि कजली के दिन बीते जा रहे हैं अत: तुम मुझे मायके जाने दो ॥३॥

विशेष—कजली के दिनों में नव विवाहिता बहू कजली खेलने के लिए अपने मायके चली जाती है। इसी कारण इस गीत में कोई बहू मायके जाने के लिए पति से आग्रह कर रही है। परन्तु उसका दुष्ट पति अनेक प्रकार का व्याज बनाकर उसे वहाँ जाने देना नहीं चाहता। अन्त में वह कामुक पति एक ऐसी शर्त रखता है जिसे मानने के लिए वह स्त्री कभी तैयार नहीं हो सकती।

'मोरी कजरिया बीती जाय' इस पंक्ति में कितनी व्याकुलता भरी पड़ी है।

१०५ सन्दर्भ—किसी युवती लड़की की अपने ससुराल जाने की प्रबल इच्छा।

बलम परदेस मोरे माँगइ गवनवा। टेक।
बपइ कहइ बेटी होगा सपनवा[1]।
सपन जरि जाय बपइ जाबइ[2] गवनवा ॥ १ ॥
भाई कहँई बहिनी होगा सपनवा।
सपन जरि जाय[3] भइया जावइ गवनवा ॥ २ ॥
भउजी कहँइ ननदी होगा सपनवा।
सपन जरि जाय भउजी जावइ गवनवा ॥ ३ ॥

कोई युवती लड़की कहती है कि मेरा परदेसी बालम मेरा गवना माँग रहा है। उसका पिता कहता है ए बेटी! ससुराल चली जाने पर तुम मेरे लिए सपना हो जावोगी। इस पर वह लड़की उत्तर देती है कि तुम्हारे इस विचार में आग लग जाय। ए पिता जी! मैं तो गवना अवश्य जाऊँगी ॥१॥

उसका भाई कहता है कि ए बहन! तुम मेरे लिए सपना हो जावोगी। इस पर कहती है कि तुम्हारे सपने में आग लग जाय, वह जल जाय। मैं तो गवना जरूर जाऊँगी ॥२॥

भावज कहती है कि ए ननद! तुम मेरे लिए सपना हो जावोगी। ननद उत्तर देती है कि तुम्हारा सपना जल जाय। ए भावज! मैं तो ससुराल अवश्य जाऊँगी ॥३॥

विशेष—इस गीत में वर्णित लड़की युवती मालूम होती है इसीलिए वह, अपने पिता, भाई और भावज से ससुराल जाने की इच्छा प्रकट कर रही है। अन्यथा लड़कियाँ लज्जा के कारण ससुराल जाने का नाम तक नहीं लेतीं।

१. सपने के समान अदृश्य। २. जाऊँगी। ३. नष्ट हो जाय।

१०६. **सन्दर्भ—सावन में मायके जाने के लिए पति से स्त्री की प्रार्थना।**

लागे सावन क महीना दिल लागइ न हमार;
हमइ नइहर[1] पहुँचाइ देआ अरे साँवलिया। टेक।
जाइब नइहरे कि ओर झूलब झूलना हिंडोल[2];
सोउब बाबा की अटरिआ अरे साँवलिया ॥ १ ॥
सँइयाँ जइहौ ससुरारि देबइ चनना[3] केवार;
नाही खोलबइ सकरिआ[4] अरे साँवलिया ॥ २ ॥
सँइआँ जइहौ रिसिआइ[5] सखि लेइहौ मनाय[6],
देबइ जादू कइ पेटरिआ[7] अरे साँवलिआ ॥ ३ ॥

कोई स्त्री अपने पति से कहती है कि ए प्रियतम। सावन का महीना अब आ गया है। मेरा मन अब यहाँ नहीं लगता अतः तुम मुझे मायके पहुँचा दो। मैं अपने मायके जाऊँगी, वहाँ हिंडोला लगा कर झूला झूलूँगी। ए सावलियाँ! वहाँ मैं अपने पिता की अटारी पर सुख पूर्वक सोऊँगी ॥१॥

यदि तुम मुझे लेने के लिए अपनी ससुराल जावोगे तो मैं घर से लगे हुए चन्दन के दरवाजे को बन्द कर दूँगी। तुम्हारे आग्रह करने पर भी मैं केवाड़ की जंजीर को न खोलूँगी ॥२॥

और जब तुम मुझ से रुष्ट हो जावोगे तब मेरी सखियाँ तुम्हे प्रसन्न कर देगी और मैं तुम्हे जादू की पिटारी दूँगी अर्थात् अपनी अलौकिक सुन्दरता से तुम्हारे ऊपर मैं जादू का काम करूँगी ॥३॥

१०७. **सन्दर्भ—प्रेमिका का अपने प्रियतम से परिहास।**

रजऊ गड़ियन[8] के इजनवा,
कजरी अब ना खेलबइ[9] ना। टेक।
जउ मैं खायो आलू, सँइया होइ गये भालू[10]।
आलू अब ना खाबइ ना ॥ १ ॥
जउ मैं खायो भाटा,[11] सँइया होइ गये नाटा[12]।
भाटा अब ना खाबइ ना ॥ २ ॥
जउ मैं पहिरेउ पइरी,[13] सँइया हो गये बइरी[14]।
पइरी अब ना पहिरब ना ॥ ३ ॥

---

१. मायका। २. हिंडोला, झूला। ३. चन्दन। ४. साँकल, जंजीर। ५. क्रोधित होना। ६. प्रसन्न करना। ७. पेटारी, बाक्स। ८. रेल गाड़ी। ९. खेलूँगी। १०. रीछ। ११. बैंगन। १२ छोटा, कोल्हू का बैल। १३. पैर में पहिनने का एक विशेष आभूषण। १४. बैरी, शत्रु।

जउ मैं पहिरेउ सारी, सँइयाँ भागि गये ससुरारी ।
सारी अब ना पहिरब ना ।। ४ ।।
रजऊ गड़ियन के इंजिनवा,
कजरी अब ना खेलबइ ना ।

कोई स्त्री अपने पति से कहती है कि ए प्रिय ! मै रेलगाड़ी के इंजन मे बैठकर कजली खेलने के लिए अपने मायके अब नही जाऊँगी जब मैने आलू खाया तब मेरा सँइयाँ भालू बन गया । अत: अब मै आलू नहीं खाऊँगी ।। १ ।।

जब मैने भाँटा (बैगन) खाया तब मेरा पति नाटा (छोटा या तेली का बैल) बन गया । अत: अब मैं बैगन नही खाऊँगी ।।२।।

जब मैने अपने पैरो में पइरी (पैर का एक विशेष आभूषण) पहिना तब मेरा पति मेरा बैरी बन गया । अत: अब मैं पइरी नही पहिनूँगी ।।३।।

जब मैने अपने पति को लुभाने के लिए सुन्दर सारी पहिनी तब वह अपनी ससुराल भाग गया । अत. अब मै साडी नही पहिनूँगी । ए मेरे राजा ! अब में रेल गाड़ी के इंजन पर चढ़कर कजली खेलने के लिए अपनी ससुराल नहीं जाऊँगी ।।४।।

विशेष—इस गीत मे दाम्पत्य परिहास का सुन्दर चित्र उपस्थित किया गया है। भाँटा, नाटा, पइरी. बइरी, सारी और ससुरारी आदि शब्दो में अनुप्रास की योजना सुन्दर बन पड़ी है ।

१०८. सन्दर्भ—बगीचा में झूला झूलने के लिए सखियों का जाना । एक सखी की उक्ति दूसरी के प्रति ।

झलुआ[1] परा यार तोरी बगिआ,
हम धना झूलन अउबइ[2] ना । टेक ।
सासु ससुर की चोरी, सइयाँ की बरा[3] जोरी;
हम धना झूलन अउबइ ना ।। १ ।।
जेठ जेठानी की चोरी, सइयाँ की बराजोरी;
हम धना झूलन अउबइ ना ।। २ ।।
देवरा देवरानी की चोरी, सइयाँ की बराजोरी;
हम धना झूलन अउबइ ना ।। ३ ।।
झलुआ परा यार तोरी बगिआ;
हम धना झूलन अउबइ ना ।। ४ ।।
आज पग[4] धरि तोरी बगिया;
हम धना झूलन अउबइ ना ।। ५ ।।

१. झूला । २. आऊँगी । ३. जबरदस्ती । ४. पैदल ।

कोई स्त्री अपनी सखी से कहती है कि ए सखी तेरे बाग मे झूला पडा हुआ है। मैं आज वहाँ झूला झूलने चलूँगी। सास तथा ससुर से लुक-छिप करके तथा पति के मना करने पर भी जबरदस्ती करके मै तुम्हारे बाग मे झूला झूलने चलूँगी ॥१॥

जेठ और जेठानी से छिपकर के और प्रियतम के मना करने पर भी मै झूला झूलने आऊँगी ॥२॥

देवर तथा देवरानी से लुप छिप करके तथा पति के मना करने पर भी मै झूला झूलने आऊँगी ॥३॥

ए सखी ! तुम्हारे बगीचे में झूला लगा है अतः आज मैं पैदल वहाँ झूला झूलने के लिए आऊँगी ॥४-५॥

१०६. सन्दर्भ—किसी स्त्री का अपने पति से पहिनने के लिए विभिन्न आभूषणों को बनवा देने की प्रार्थना।

गुलेबन्द[1] बन वाइ देआ पहिरब हम बालमू। टेक
चाँदी तीस भरी[2] मँगवाइ दिआ, कड़ा[3] छड़ा[4] बनवाइ दिआ।
पहिरब दूरिअइ से बाजी छमाछम बालमू ॥ १ ॥
सोना तीन भरी मँगवाइ देआ, जवाहार[5] बनवाइ देआ।
पहिरब दूरिअइ से चमकी चमाचम बालमू ॥ २ ॥
साड़ी मखमली मँगवाइ देआ, धानी रंग मा बोरइ[6] देआ।
पहिरब दूरिअइ से छलकी छलाछल बालमू ॥ ३ ॥
लकड़ी हाथ भइ मँगाइ देआ, ओकइ पिटना[7] गढ़ाइ देआ।
मारबि पिठिया पर बोली घमाघम बालमू ॥ ४ ॥

कोई स्त्री अपने पति से कहती है कि ए बालम ! मेरे लिए गलाबन्द बनवा दो जिसे मैं पहिनूँगी। मेरे लिए तीस तोला चाँदी मँगवा दो तथा पैरो मे पहिनने के लिए कडा तथा छडा बनवा दो। मै जब उन्हे पहिन कर चलूँगी तब दूर से ही छम छम की आवाज होगी ॥१॥

तीन तोला सोना मँगवा दो और उससे गले में पहिनने के लिए हार बनवा दो। जब मैं उसे पहिनूँगी तब वह दूर से ही चमाचम चमकेगा ॥२॥

---

१. गले का आभूषण विशेष। २. चाँदी की तौल। ३-४. पैर में पहनने के विशेष आभूषण। ५. गले में पहनने का हार। ६. रँगवा दो। ७. मोटा, चौड़ा तथा चपटा छोटा सा डंडा।

मेरे लिए मखमल की साड़ी मँगवा दो और उसे धानी रंग मे रंगवा दो। जब मैं उसे पहिनूँगी तब दर्शकों की दृष्टि उस पर से फिसल पड़ेगी ॥३॥

एक हाथ लम्बी लकड़ी मँगवा दो और उससे मेरे लिए एक पिटना (चौड़ा तथा चपटा डंडा) बनवा दो। जब उससे मैं किसी की पीठ पर मारूँगी तब धमाधम की आवाज़ होगी ॥४॥

११०. सन्दर्भ—भावज तथा ननद में वार्तालाप शिष्ट परिहास की झलक।

कउने रंग मुँगवा कवने रंग मोतिआ;
कवने रंग ना ननदी तोर विरना[1] ॥ १ ॥

लाले रंग मुँगवा सफेदे रंग मोतिआ,
सावले रंग ना ननदी तोर बिरना ॥ २ ॥

अरे छिटि[2] गइले मुँगवा हेराइ गई मोतिआ;
कोहाइ[4] गये ना ननदी तोर बिरना ॥ ३ ॥

हेरि लेबइ मुँगवा, बयेरि लेबइ मोतिआ;
मनाइ[5] लेबइ ना ननदी तोर बिरना ॥ ४ ॥

कोई भावज अपनी ननद से कहती है कि मूँग की दाल किस रंग की है मोती किस रंग का है और ए ननद ! तेरा भाई किस रंग का है ? ॥१॥

इस पर ननद उत्तर देती है कि मूँग की दाल लाल रंग की है, मोती सफेद रंग का है और ए मेरी भावज ! मेरा भइया साँवले रंग का है ॥२॥

भावज कहती है कि मूँग की दाल बिखर गई, मोती भी खो गया और ए ननद ! तुम्हारे भइया मुझसे रूठ गये ॥३॥

(परन्तु कोई चिन्ता की बात नहीं है) मै मूँग की दाल को बटोर लूँगी, मोती को खोज लूँगी और ए ननद ! तुम्हारे रूठे हुए भइया को मैं मना लूँगी अर्थात् प्रसन्न कर लूँगी ॥४॥

१११. सन्दर्भ—गवना का दिन आने पर नव विवाहिता स्त्री की चिन्ता।

पाती[6] आइ गइ गँवन[7] की अरे साँवलिया। टेक
राधा परोसिनि मोरे नन्हवा[8] कइ गोतिन;
गीति गाइ देआ लगन की अरे साँवलिया ॥ १ ॥

---

१. भाई। २. बिखर गया। ३. खो गया। ४. रूठ गया। ५. प्रसन्न कर लूँगी। ६. चिट्ठी। ७. गवना। ८. लड़कपन।

पूजा चकरी[1] अउ सिलिकरा[2] घर कि ततबीर।
ख्याल करा तू चलन की अरे साँवलिया ॥ २ ॥
हिल्ला बोलइ पहाड़ धूमिल होइ गये सिंगार;
मार पड़इ कोड़वन[3] की अरे साँवलिया ॥ ३ ॥

कोई विवाहिता स्त्री कहती है कि मेरे गवने के दिन की चिट्ठी आ गई है। मेरे पडोस में रहने वाली राधा मेरे लड़कपन की सखी है। ए राधा! अब तुम मेरे गवने के गीत गावो ॥१॥

वह स्त्री स्वय कहती है कि पूजा की सामग्री, जाँत और सिल-बट्टा आदि घर के जो सामान की चिन्ता करनी चाहिए तथा अब ससुराल चलने का ख्याल करना चाहिए ॥२॥

ससुराल मे सास कटु वचन बोलती है, काम करने से सारा शरीर का शृङ्गार मलीन पड़ जाता है और पति कोडो से मारता है ॥३॥

विशेष—इस गीत मे किसी ग्रामीण स्त्री की हृदय की आशंकाये स्वाभाविक रूप मे प्रकट हुई है। ससुराल मे नवागता वधू को 'दरूनिया' सास के कटुवचन सुनने पड़ने है परिश्रम पूर्वक काम भी करना पड़ता है और कोई काम खराब हो जाने पर पति की मार भी सहनी पड़ती है।

११२. सन्दर्भ—किसी परदेसी पति के प्रति बिरहिणी स्त्री की उक्ति।

गवना लिआया[4] पिया घर बइठवले,
आप कन्ता छाये[5] परदेसवा अरे साँवलिआ ॥१॥
आप नाहीं आवइँ चिठिआ नाहीं भेजइँ,
लिखि लिखि भेजइ विरोगवा[6] अरे साँवलिआ ॥२॥
बरहेँ वरिस पापी[7] चिठिआ जउ भेजेन,
परिगइ[8] सासुजी के हथवा अरे साँवलिआ ॥३॥
सासु ननद मोरि नन्हवा कइ बइरिनि;
चिठिआ बचावइँ पिछवरवा अरे साँवलिआ ॥४॥
लहुरा देवरवा,मोरा नन्हवाँ[9] क मितवा[10];
चिठिआ बाँचइ मोरे समनवा अरे साँवलिआ ॥५॥

---

१. जाँत। २. सील। ३. कोड़ा। ४. लाकर के। ५. विराजमान है। ६. वियोग, कष्ट ७ दुष्ट ८ पड़ गई ९ लड़कपन १० मित्र

ओरे पाछे लिखेआ देवरा खेम[1] कुसलिआ[2];
बिचवा माँ हमरा बिरोगवा अरे साँवलिआ ॥६॥

विरहिणी स्त्री कहती है कि गवना करा कर मेरे प्रियतम ने मायके से मुझे ससुराल मे लाकर बैठा दिया और स्वयं वह परदेस को चला गया ॥१॥

वह स्वयं न तो आता है और न चिट्ठी ही भेजता है। मैंने अपने विरह के कष्टो को लिखकर उसके पास कितनी ही बार भेजा ॥२॥

बारह वर्ष के पश्चात् जब उस पापी पति ने चिट्ठी भी भेजी तब वह सासु के हाथो मे पड गई अर्थात् सास को मिल गई ॥३॥

वह विरहिणी कहती है कि सास और ननद तो मेरी जन्म की ही वैरिन हैं; ये घर के पीछे भाग (पिछुवाडा) मे उस चिट्ठी को किसी से पढवा रही हैं ॥४॥

मेरा नन्हा सा देवर मेरे लड़कपन का ही यार या साथी है। वह मेरे सामने ही उस चिट्ठी को पढता है ॥५॥

वह अपने देवर से प्रार्थना करती है कि ए मेरे देवर! तुम इसका जवाब देते समय पत्र के पिछले भाग में अपना समाचार लिखना परन्तु उसके बीच में मेरे बियोग (कष्ट) की बातें लिखना (जिसे पढ़ कर मेरा पति घर को शीघ्र लौट आये) ॥६॥

विशेष—इस गीत में विरहिणी स्त्री के कष्टों का वर्णन बड़ा ही मर्मस्पर्शी है इसमे सत्य का अंश बहुत अधिक है। बहुत से पति जीविका उपार्जन करने के लिए दूर देश विशेषत. कलकत्ता और रंगून को चले जाते हैं और अनेक वर्षो तक रुपया भेजने की बात तो दूर रही पत्र तक नही भेजते। यदि वर्षो बाद कोई पत्र आया भी तो उसकी अनपढ स्त्री उसे दूसरों से पढवाती फिरती है। उसका उत्तर लिखवाने के लिए दूसरो से प्रार्थना करनी पडती है। यदि दुर्भाग्यवश उसकी सास जीवित रही तो पति के इस पत्र के कारण व्यङ्ग वाणो की वर्षा भी सहनी पडती है। इस ग्रामीण नारी-जीवन का चित्रण उपर्युक्त गीत में हुआ है।

११३. सन्दर्भ—विरहिणी स्त्री द्वारा परदेसी पति को चिट्ठी भिजवाना।

मिलहु न सखिआ मिलहु सलेहरि[3];
मिलि जुलि चली कइथा[4] द्वारे अरे साँवलिया ॥१॥
आये हई कइथा डेवढ़िआ[5] चढ़ि बइठें;
चिठिआ लिखेन समाचार की अरे साँवलियाँ ॥२॥

---

१. क्षेम। २. कुशल समाचार। ३. सखी। ४. कायस्थ। ५ ड्योढी, देहली।

अइसी एक चिठिआ लिखेआ भइया कइथा;
चिठिआ छपइ अखबार माँ अरे साँवलिया ।।३।।

जाइके चिठिआ पहुँची दरबार माँ:
तोरा सँइआँ अइही कुआर मा अरे साँवलिया ।।४।।

चिठिआ बाँचत सइयाँ हँसि मुसुकाने;
मोरि धनि चतुरी[1] सयान[2] अरे साँवलिया ।।५।।

कोई विरहिणी स्त्री कहती है कि ए मेरी सखी और सलेहरी ! तुम सब लोग और हमलोग मिल कर उस कायस्थ के दरवाजे पर चलें ।।१।।

वे उससे कहती है कि ए कायस्थ ! हम लोग तुम्हारे दरवाजे पर चिट्ठी मे ‌‌ार लिखवाने के लिए आई हुई है ।।२।।

ए भाई कायस्थ ! तुम एक ऐसी चिट्ठी लिखो जो अखबार में छप जाय ।।३।।

वह चिट्ठी उस मालिक के दरबार मे पहुँच गई जहाँ पर उस विरहिणी का रहता था ।।४।।

उस चिट्ठी को पढ़ कर वह पति मुसकराने लगा और अपने मन मे कहने लगा ‌री स्त्री बड़ी चतुर और चालाक है ।।५।।

११४. सन्दर्भ—किसी प्रेमी का अपनी प्रियतमा से मिलने के लिए जोगी बनकर उसकी ससुराल जाना ।

यार[3] मारइ तिरछी नजरिया अरे साँवलिया ।टेक
जब गोरियाँ क परा है सुदिनवा[4];
यार छोड़इ दाना औ पनिया अरे साँवलिया ।।१।।

जब गोरिया कइ उठा महकवा[5];
यार रोवइ बीचै डगरियाँ अरे साँवलिया ।।२।।

सासु कइ डेहरी डाकइउ न पाइबो,
जोगिया डेहरिया के ठाढ़ बा अरे साँवलिया ।।३।।

गवने कइ खिचरी[6] मै रिधइउ[7] न पाइउँ;
जोगिया कइ बाजि गई बासुरिया अरे साँवलिया ।।४।।

गुड़िया खेलत मोर लहुरी[8] ननदिया;
दइ न देतिउ जोगिया का भिखिया अरे साँवलिया ।।५।।

---

१ चतुर । २ सयानी, चालाक । ३. मित्र । ४. जाने का दिन या समय । ‌‌को । ६. खिचड़ी । ७. पकाना । ८. छोटी लघु

तरे धरे सोनवा उपर तिल[1] चाउर[1];
लेउ जोगिया आपन भिखिया अरे साँवलिया ॥६॥

आपन भिखिया भीतर धरउ बहिनी;
जो हो कइहँ, वइ देइहै अरे साँवलिया ॥७॥

कि तोरा लागइ भउजी ! भइया भतीजवा;
कि तोरा नान्हे कइ मिलनियाँ[2] अरे साँवलिया ॥८॥

ना मोरा ननदी भइया भतीजवा;
नाहीं मोरा नान्हे कइ मिलनियाँ अरे साँवलिया ॥६॥

हमरे बपइया[3] जी के साठ सइ गऊवा;
ओनही[4] कइ अही[5] चरवहवा अरे साँवलिया ॥१०॥

कोई प्रेमिका कहती है कि मेरा प्रियतम ! मुझे तिरछी नजरों से मारता है। जब उसकी प्रेमिका के ससुराल जाने का दिन नजदीक आ गया तब उसने अपनी प्रेमिका के भावी वियोग के कारण अन्न खाना और पानी पीना छोड़ दिया ॥१॥

जब उसकी प्रेमिका ससुराल जाने के लिए पालकी पर बैठी और जब वह पालकी चल पड़ी तब उसका प्रेमी प्रियतम रास्ते के बीच में खड़ा होकर रोने लगा ॥२॥

अभी वह स्त्री अपनी ससुराल मे सासु के द्वार को लाँघ कर घर के भीतर जा भी नहीं पायी थी कि उसका प्रेमी जोगी का वेश बना कर उसके द्वार पर जाकर खड़ा हो गया ॥३॥

सास कहती है—गवने की खिचड़ी अभी मैं पका भी नहीं पायी कि इतने में जोगी की बासुरी बज गई ॥४॥

इस पर उसकी प्रेमिका कहती है कि गुड़िया खेलने वाली मेरी छोटी ननद इस जोगी को भीख दे दो ॥५॥

उसने नीचे तो सोना को रखा और ऊपर तिल तथा चावल को रखा। ननद ने कहा कि ए जोगी ! अपनी भिक्षा ले लो ॥६॥

इस पर जोगी ने कहा कि ए बहिन ! अपनी भीख तुम अपने पास रखो। जिसने तुमको यह भिक्षा देने के लिए कहा है वही मुझे भीख देगी तभी मैं लूँगा ॥७॥

इस पर ननद ने उससे पूछा कि ए भावज ! क्या यह तुम्हारा भाई अथवा भतीजा लगता है अथवा क्या यह तुम्हारे बचपन का मिलने वाला प्रेमी है ॥८॥

१. चावल। २ मित्र, यार। ३ बाप। ४ उन्हीं का ५. है।

भावज ने कहा कि ए ननद ? यह न तो मेरा भाई या भतीजा है और न यह लड़कपन का मेरा प्रेमी ही है ॥६॥

हमारे पिता जी के घर साठ सौ (६०,००) अर्थात् छः हजार गायें है यह उन्ही की गायों को चराने वाला (चरवाह) है।

विशेष—इस गीत में जिस प्रेम का वर्णन किया गया है वैसा समाज मे बहुत कम पाया जाता है। सतीत्व की भावना तथा पर्दे की प्रथा के कारण कोई युवती किसी युवक से इस पूर्वानुराग में प्रवृत्त नही होती। परन्तु यदि कदाचित् पूर्वानुराग हो भी तो वह विवाह के पश्चात् सदा के लिए नष्ट हो जाता है। अत इस गीत मे वर्णित प्रेम अपवाद स्वरूप ही समझना चाहिए।

११५. सन्दर्भ—परदेसी पति का घर लौटना और बिना जाने हुए अपनी स्त्री से छेड़ खानी करना।

घोडवा ऩगल[१] करउ मुसाफिर,
हमइ भरइ दे गगरी ॥१॥
घोड़े पर से बोला मुसाफिर बड़ी रसीली बोल;
जनिया[२] जरा घूँघट पट खोलो, देखी सुरतिया[३] तोर ॥२॥
घूँघटे तर से बोली रनियवा;
बडी टका[४] की बोल।
चाकी[५] परइ घोड़े चढवइया;
हम तउ लागउँ[६] बहिनिया तोर ॥३॥
घोड़े पर से गिरा मुसाफिर;
भुइयाँ पर मुरझाइ।
जीतेउँ काशी, जीतेउ पुर पाटन,
जीतेउ देस गुजरात ॥४॥
तोह से हारी ये बाँकी जनिया;
तू तउ लागा बहिनियाँ मोर ॥५॥

कोई स्त्री कहती है कि ए मुसाफिर ! तुम अपना घोडा हटा लो। मुझे गागर भरने दो ॥१॥

घोड़े के ऊपर चढ़ा हुआ मुसाफिर बड़ी रसीली बोली बोला और उसने कहा कि ए जनियाँ ! तुम अपना घूँघट जरा हटा लो जिससे मैं तुम्हारे सुन्दर मुखँ को देख सकूँ ॥२॥

१. किनारे। २. स्त्री। ३. सौन्दर्य। ४. शुष्क तथा खरा जवाब। ५. वज्र। ६ सगूँगी। ७ सुन्दर।

घूँघट में से उस स्त्री ने बड़ा ही मुँह तोड़ जवाब दिया और कहा कि ए घोड़े पर चढ़ने वाले ! तेरे ऊपर वज्र पड़ जाय। मैं तो तेरी बहन लगूँगी फिर तुम ऐसी बाते क्यों करता है ॥३॥

इतना सुनते ही घोड़े पर चढ़ा हुआ वह मुसाफिर मूर्छित होकर जमीन पर गिर गया ॥४॥

होश आने पर उसने कहा कि मैने काशी, पाटन तथा गुजरात आदि देशों को तो जीत लिया परन्तु ए सुन्दर स्त्री ! तुमसे मैं हार गया। तू मेरी बहिन लगनी हो (अतः तुमसे मुझे ऐसी बाते नही कहनी चाहिए थी) ॥५॥

११६. सन्दर्भ—किसी राजा के लड़के के द्वारा किसी सुन्दरी स्त्री को पालकी पर अपने महल में लाना।

मोरे पिछुवरवा कटहरे कइ बरिया[1];
अवइ हो लागी ना।
रस मधुरी वयरिया;[2]
अवइ हो लागी ना ॥१॥
भीतरा से निकरी है साँवर आरे गोरिया;
लेबइ हो लागी ना; रस मधुरी वयरिया ॥२॥
लेबइ हो लागी ना।
घोड़वा चढ़ि आवै राजा कइ छोकड़वा[3];
पूँछइ हो लागै ना, गोरी साँवर जी से बतिया ॥३॥
पूछइ हो लागै ना।
कितना दिना तोहरा भये है वियहवा;
कितना दिना ना; हरि गये परदेसवा ॥४॥
कितना दिनवा ना।
पाँच बरिसवा भये है बिअहवा,
बरिस रोजवा ना; हरि गयेन परदेसवा ॥५॥
कितना दिनवा ना।
इतना बचन सुनि राजा कइ छोकड़वा;
कटावै लागे ना, लाले आले बाँसवा ॥६॥
कटावै लागे ना।
गोरी साँवर जी के डोलिया फदावै लागे ना ॥७॥

१ बगीचा। २- बयार हवा। ३. लड़का।

आगे आगे चलइ लायक कइ घोड़वा;
पाछे आवै ना, गोरी साँवर कइ डड़िया ॥८॥
पाछे आवै ना।

कहँवय[1] उतरइ लायक कइ घोड़वा;
कहँवय उतरइ ना; गोरी साँवर[2] जी कइ डड़िया ॥९॥
कहँवय उतरइ ना।

दुवरइ उतरइ लायका कइ घोड़वा;
महलिया उतरइ ना, गोरी साँवर जी के डड़िया[3] ॥१०॥
महलिया उतरइ ना।

कोई स्त्री कहती है कि मेरे घर के पीछे कटहल का बगीचा है। उसमे शीतल, मन्द, मधुर और सुगन्धित हवा आ रही है ॥१॥

भीतर से कोई गोरी युवती निकली और वह शीत तथा मन्द वायु का आनन्द लेने लगी ॥२॥

इतने में घोडे पर चढ़ा हुआ कोई राजा का छोकडा (राजकुमार) आया और वह उस युवती स्त्री से बाते करने लगा ॥३॥

उसने पूछा-तुम्हारा विवाह कब हुआ था और तुम्हारा पति कितने दिनो से परदेस गया हुआ है ॥४॥

इस पर उस युवती ने उत्तर दिया—पाँच वर्ष हुए, मेरा विवाह हुआ था और एक वर्ष हुए मेरा पति परदेस चला गया ॥५॥

राजा का लड़का इतनी बातों को सुनते ही लाल, लाल बाँसो को कटवा कर पालकी बनवाने लगा। उस पालकी पर उसने उस युवती को बैठा दिया ॥६-७॥

राजकुमार का घोड़ा आगे आगे चल रहा था और पीछे पीछे उस युवती की पालकी चल रही थी ॥८॥

उस राजकुमार का घोड़ा कहाँ रुकेगा और उस गोरी की पालकी कहाँ उतरेगी। राजकुमार का घोडा द्वार पर रुकेगा और उस साँवर गोरिया की पालकी राजमहल मे उतरेगी ॥९-१०॥

११७. सन्दर्भ—किसी विरहिणी का वियोग-वर्णन।

हरी हरी आये सावन मास,
सजन[4] घर नाहीं रे हरी। टेक

१ कहाँ। २ स्यामा सुन्दरी। ३ पालकी। ४ साजन प्रियतम।

हमसे करि करार[1] गये साजन;
बेगि धना[2] घर अउबइ रे हरी ॥१॥
हरी हरी ना घर आये स्याम;
लिखै नाहीं पाती[3] रे हरी ॥२॥
असाढ़ मास निहारत[4] विति गये;
सावन लागै सुहावन रे हरी ॥३॥
हरी हरी ना घर आये कन्त;
किया छल भारी रे हरी ॥४॥
अगन[5] गगन सखि बहत पवन पुरवाई[6] रामा,
मरत पिया दुःख भारी रे हरी ॥५॥
उडत फुहार[7] बयार सग में दिहा हिलोर मचाई रामा;
हरी हरी अब सखि होइ गइ;
सासुर कइ तइयारी रे हरी ॥६॥
हरी हरी आये सावन मास;
सजन घर नाही रे हरी ॥७॥

कोई विरहिणी स्त्री कह रही है कि सावन का महीना आ गया परन्तु हमारे साजन अभी घर लौट कर नहीं आये। हमसे वे प्रतिज्ञा करके गये थे कि मैं शीघ्र ही घर लौट कर आऊँगा ॥१॥

वे न तो अभी तक लौट कर आये ही और न उन्होंने कोई भी चिट्ठी ही भेजी ॥२॥

आषाढ़ का महीना उनके आने की इन्तजारी ही मे बीत गया परन्तु वे नही आये। अब सावन का महीना आ गया जो बड़ा सुहावना लगता है ॥३॥

आज तक मेरे प्रियतम घर नही लौटे। उन्होंने मेरे साथ बड़ा भारी छल किया ॥४॥

आकाश भयानक दिखाई दे रहा है और पुरवैया हवा बडे जोरो से चल रही है। आज प्रिय के वियोग के कष्टों से मैं मरी जा रही हूँ ॥५॥

वर्षा की फुहारे उड़ रही है। इसके साथ ही जोरो की हवा चल रही है। इससे मेरा हृदय कम्पित हो रहा है। ए सखी ! अब प्रियतम के आने का समय (अवसर) आ गया है ॥६॥

---

१. प्रतिज्ञा। २. धनिया, स्त्री। ३. चिट्ठी। ४. प्रतीक्षा करते हुए। ५ अगम्य- भयावना। ६- पुरवैया हवा। ७. वर्षा की बूंदें।

ए सखी ! सावन का महीना आ गया परन्तु मेरे साजन अभी तक परदेस से लौटकर नहीं आये ।।७।।

११८ सन्दर्भ—वियोगिनी स्त्री का वर्णन ।

बदरिया बरसइ स्याम घर नाहीं । टेक
बागा माँ बरसइ बगीचा माँ बरसइ,
मलिनियाँ तरसइ, स्याम घर नाहीं ।।१।। टेक
तारा पइ बरसइ इन्दारा[1] पइ बरसइ,
कहारिनि तरसइ[2], स्याम घर नाहीं ।।२।। टेक
महला माँ बरसइ दुमहला माँ बरसइ,
ननदिया तरसइ, स्याम घर नाहीं ।।३।। टेक
सेजिया पइ बरसइ तकिया पइ बरसइ;
रनियवाँ तरसइ, स्याम घर नाहीं ।।४।।
बदरिया[3] बरसइ स्याम घर नाहीं;
बदरिया बरसइ ।।५।।

कोई वियोगिनी स्त्री कहती है कि बादल बरस रहे हैं परन्तु मेरा प्रियतम घर पर नहीं है। बाग में तथा वाटिका मे पानी बरस रहा है। आज मालिन सुरत-संभोग के लिए तरस रही है क्योंकि उसका पति घर पर नहीं है ।।१।।

कुँये के ऊपर वर्षा हो रही है। आज कहारिन तरस रही है क्योंकि उसका प्रिय घर पर नहीं है ।।२।।

महल के ऊपर दो मंजिले मकान के ऊपर वर्षा हो रही है। आज ननद तरस रही है क्योंकि उसका प्रियतम घर पर नहीं है ।।३।।

सेज के ऊपर वर्षा हो रही है, तकिया पर वर्षा हो रही है। आज इस वर्षा में मै अपने स्याम के लिए तरस रही हूँ क्योंकि वे घर नहीं है। वर्षा हो रही है परन्तु पिया परदेस में है ।।४-५।।

११९ सन्दर्भ—रात्रि में भी पति से मिलने में स्त्री की कठिनाइयाँ ।

सावलाँ[4] सोवथि[5] अँटरिया,
मइ कउनी[6] विधि जाउँ रे।
सासु , ननदि मोरे नान्हेन[7] कइ बैरनि,
आँगन पलँग बिछावइँ ।।१।।

---

१. कुँआ । २. तरसना, लालायित होना । ३. बादल । ४. सुन्दर (पति) । ५. सोता है । ६. किस प्रकार ७. लड़कपन ।

मइ कउनी विधि जाउँ रे।

जेठ जेठानी मोरी नान्हेन कइ बइरिनि;
सोवइँ दिअना[1] जलाइ रे ॥२॥
लहुरा देवर मोर नान्हेन कइ मितवा[2];
लावइँ रेसम की डोरी, भउजि चढ़ि जाउ रे ॥३॥
मइ कउनी विधि जाउँ रे।
लहुरी ननद मोर नान्हेन कइ छिदरी[3],
काटइ रेसम डोरी, भउजि गिरि जाइ रे ॥४॥
मइ कउनी विधि जाउ रे।
साँवला सोवथि अटरिया
मइ कउनी विधि जाउ रे ॥५॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरा सुन्दर पति अटारी पर सोता है। उससे मिलने के लिए मैं किस प्रकार जाऊँ। मेरी सास और ननद जन्म से ही मेरी बैरिन है। ये दोनो कमबख्त आँगन मे पलँग बिछा कर सो जाती है। अतः लज्जा के कारण मैं अपने पति से मिलने के लिए कैसे जाऊँ ॥१॥

मेरे जेठ और जेठानी जन्म से ही मेरे वैरी है। ये दीपक जला कर सोते है। अतः मैं प्रकाश मे अपने पति से मिलने के लिए कैसे जाऊं? ॥२॥

मेरा छोटा तथा प्यारा देवर लड़कपन से ही मेरा यार है। वह अटारी से रेशम की डोरी बाँधकर उसे नीचे लटका देता है और कहता है कि ए भावज! तुम इस डोरी को पकड़ कर अटारी पर चढ़ जाव ॥३॥

मेरी छोटी ननद लड़कपन से ही मेरी घोर बैरिन है। वह कहती है कि मैं रेशम की डोरी काट दूँगी जिससे मेरी भावज गिर जायेगी ॥४॥

मेरा प्रियतम अटारी पर सो रहा है। मै उससे मिलने के लिए किस प्रकार जाऊँ ॥५॥

विशेष—इस गीत मे गाँवो मे प्रचलित पर्दा की प्रथा का चित्रण बडी ही सुन्दर रीति से किया गया है। गाँवों में स्त्रियाँ अपने पति से दिन मे तो मिल ही नही सकती, रात्रि मे भी बड़ी कठिनता से कहीं भेंट हो सकती है। उस पर भी सास तथा ननद के द्वारा उसमे कम बाधा उपस्थित नही की जाती। बिचारी नवागता वधू के लिए अपने प्रियतम से मिलना क्या है पहाड़ को पार करना है।

भोजपुरी प्रदेश मे भी पर्दे की यही प्रथा विराँजमान है। अनेक भोजपुरी

---

१. मित्र, यार। २. छिन्द्रान्वेषणी. दोष खोजने वाली। ३. दीपक।

गाता मे उपयुक्त प्रकार के भाव पाये जाते है। भोजपुरी प्रदेश मे पर्दे की प्रथा अधिक है और पति-पत्नी का मिलाप कितना लुकछिप कर होता है इसका बड़ा वर्णन राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी 'आत्मकथा' मे 'मेरा विवाह' अध्याय के अन्तर्गत किया है। इस विषय के जिज्ञासुओ को यह पुस्तक अवश्य चाहिए।

१२०. सन्दर्भ—किसी प्रेमिका की उक्ति अपने प्रियतम के प्रति

कवने देसवा का लइके चल्या[1] मोरे हरी। टेक
चला चली वही देस का;
जहाँ चुनरी विकाय रही मोरे हरी ॥१॥ टेक
चुनरी ऐसी चीज जवन;
कमरा[2] छिपाइ रही मोरे हरी ॥२॥ टेक
चला चली वही देस का;
जहाँ चोलिया विकाय रही मोरे हरी ॥३॥ टेक
चोलिया अइसी चीज;
जब जोवन[3] छिपाइ रही मोरे हरी ॥४॥ टेक
चला चली वही देस का;
जहाँ टिकुली बिकाथ रही मोरे हरी ॥५॥ टेक
टिकुली अइसी चीज;
जवन मथवा छिपाइ रही मोरे हरी ॥६॥ टेक

कोई प्रेमिका कहती है कि ए प्रियतम! किसी देश को मुझे लेकर चलो उसी देश को हम लोग चले जहाँ चुनरी बिक रही हो ॥१॥

चुनरी ऐसी सुन्दर वस्तु है जिसको पहिनने से कमर छिप जाती प्रियतम! चलो उस देश को हम लोग चले जहाँ चोली बिक रही हो ॥२-३॥

चोली ऐसी सुन्दर वस्तु है जिससे स्तन छिपा रहता है। ए प्रियतम! हम लोग उस देश को चलें जहाँ टिकुली बिक रही हो ॥४-५॥

टिकुली ऐसी सुन्दर वस्तु है जिससे सिर सुशोभित होता है ॥६॥

१२१. सन्दर्भ—कृष्ण के प्रति किसी गोपी की उक्ति।

मै पानी भरई जाउँ स्याम मारइ नजरिया। टेक
अपुनी तउ पहिरइ स्याम धोती, अँगउछा[4],
मै पानी भरइ जाँउ मोर चमकइ चुनरिया ॥१॥ टेक

१. चलो। २. कमर। ३. स्तन। ४. तौलिया।

अपुना तउ पहिरइ स्याम मोहर अउ माला।
मै पानी भरइ जाँउ मोर चमकइ टेसरिया[1] ॥२॥ टेक
अपुना तउ खायेन स्याम खैरा अउ सुपारी।
मैं पानी भरइ जाँउ मोर चमकइ बतीसिया[2] ॥३॥ टेक

कोई गोपी कहती है कि जब मै पानी भरने के लिए जाती हूँ तब श्याम (कृष्ण) मेरे ऊपर नजर लगाता है अर्थात् मुझसे प्रेम करता है। कृष्ण स्वयं तो धोती और तौलिया पहिनता है परन्तु मैं चूनरी पहिनती हूँ और जब पानी भरने के लिए जाती हूँ तब मेरी चूनरी चमकने लगती है ॥१॥

कृष्ण स्वय गले मे सोने की मोहर माला पहिनता है। जब मैं पानी भरने जाती हूँ तो तब मेरी टिकुली चमकने लगती है ॥२॥

कृष्ण स्वयं तो कत्था और सुपारी खाता है। मैं जब पानी भरने के लिए जाती हूँ तब मेरी बतीसी --दाँतो की पक्ति--चमकने लगती है ॥३॥

१२२. सन्दर्भ—कोई स्त्री कम आयु में ही उसका विवाह कर देने के कारण अपने पिता का उपालम्भ कर रही है।

मोरी पतली कमर, लम्बी सेज झुकउँ जइसे नागिनिया[3]। टेक
कारे[4] कहँउ अपने बारे पण्डित का,
जवन नान्हें[5] विचारइ[6] सुदिनवा ॥१॥ मोरी०
कारे कहउँ अपने नउवा, बारी[7] का;
जउन नान्हें निआवे[8] सुदिनवा ॥२॥ मोरी०
कारे कहँउ अपने सासु ससुर का,
जउन नान्हें पठावे[9] सुदिनवा ॥३॥ मोरी०
कारे कहँउ अपने भाई, बपई का,
जउन नान्हें पठावे गवनवा ॥४॥ मोरी०
मोरी पतली कमर लम्बी सेज,
झुकउँ जइमे नागिनिया ॥५॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरी कमर पतली है। जब अपने सेज पर मै झुकती हूँ तो ऐसा मालूम होता है जैसे नागिन झुक रही हो। मैं अपने पण्डित से क्या कहूँ जिसने लड़कपन मे ही मेरे विवाह का दिन निश्चित कर दिया ॥१॥

---

१. टिकुली। २. बतीसी, बत्तीस दातों की पंक्ति, ३. नागिन। ४. क्या कहूँ ५. लड़कपन मे। ६. निश्चित करता है। ७. जाति-विशेष। ८. ले जाता है. ९. भेजता है।

१२४. सन्दर्भ—किसी नायिका का नायक से अधिक अपनी विशेषता बतलाना।

राति हो गरजइ बदरिया। टेक
सँइयाँ कइ बँगला दिल्ली सहर माँ;
हमरउ जहानाबाद[1] हो, गरजइ बदरिआ ॥१॥
सँइयाँ कइ बँगला पनवा से छावा;
हमरउ हरे हरे बाँस हो, गरजइ[2] बदरिया ॥२॥
सँइयाँ के बँगला मा माटिउ न लाई;
हमरउ चूनेकारि[3] हो, गरजइ बदरिया ॥३॥
राति हो गरजइ बादरिया।

कोई स्त्री कहती है कि रात्रि में बादल गरजते हैं। मेरे प्रियतम का बँगला तो दिल्ली शहर में है और मेरा बंगला जहानाबाद (बिहार, जिला–गया) में है ॥१॥

मेरे प्रियतम का बँगला तो पान से छाया गया है और मेरा बँगला हरे-हरे बाँसो से छाया गया है ॥२॥

सँइया के बँगले में कही मिट्टी नही दिखाई पड़ती परन्तु मेरे बँगले में चूने से सफेदी की गई है। रात्रि मे बादल गरजते हैं ॥३॥

१२५. सन्दर्भ—एक गोपी की उक्ति दूसरी गोपी से।

सखिअउ[4] स्याम बिना बृज सूना। टेक
अन्न बिना जइसे प्रान दु:खित है;
अरे गोइयाँ! जल बिनु तलफत[5] जइसे मीना ॥१॥ टेक
छोटे बलम कइ नारी दु:खित है;
अरे गोइयाँ! गलिया माँ फिरा या मलीना[6] ॥२॥ टेक
सूर स्याम बलि जाँई चरन की,
छोटा बलम[7] बिधना[8] लिख दीना ॥३॥ टेक

कोई गोपी कहती है कि ए सखी! कृष्ण के बिना ब्रज सूना दिखाई देता है। अन्न के बिना जैसे शरीर को कष्ट होता है और जल के बिना जैसे मछली तड़पती रहती है ॥१॥

उसी प्रकार जिस स्त्री का पति छोटा अर्थात् बालक होता है वह दु:खी रहती है और ए सखी! वह गलियों मे उदासीन होकर घूमती फिरती रहती है ॥२॥

---

१. बिहार राज्य के गया जिले में एक स्थान। २. गरजती है। ३. चूने से सफेदी की गई है। ४. ए सखी। ५. व्याकुल होती है। ६. उदासीन। ७. बालम, पति। ८. ब्रह्मा, बिधाता।

ए सखी ! मैं भगवान् के चरणो पर बलि जाती हूँ जिन्होने मेरे भाग्य मे छोटा पति लिख दिया है अर्थात् भाग्यहीन होने के कारण मुझे छोटा पति मिला है ॥३॥

विशेष—गाँवो मे अनेक युवती स्त्रियो का विवाह छोटे बच्चों से कर दिया जाता है जिससे उन्हे आजीवन कष्ट भोगना पड़ता है । यद्यपि बाल विवाह की यह प्रथा अब धीरे-धीरे कम होती जा रही है परन्तु फिर भी इसका प्रचार कुछ कम नही है । उपर्युक्त गीत में ऐसी ही स्त्री का वर्णन पाया जाता है ।

१२६. सन्दर्भ—परदेसी पति के घर लौट आने के लिए पत्नी के द्वारा पति के मालिक की मृत्यु का अभिशाप ।

इ रेलिया बइरिनि[1] बलम का लिही जाइ रे ।टेक।
जउने[2] सहरवा मा पिआ मोर नोकर;
लगतइ अगिनिया सहर बरि[3] जाइ रे ॥१॥
जउने सड़किया पइ पिआ मोर नोकर;
बरसइ दइया[4] सड़कि बहि जाय रे ॥२॥
जउने बबुअवा के पिआ मोर नोकर;
इसतउ[5] करैबा[6] बबुआ मरि जाइ रे ॥३॥
इ रेलिया बइरिन बलम का लिही जाइ रे ।

कोई स्त्री कहती है कि यह रेल जो मेरे पति को परदेस लिये जा रही है मेरी बैरिन है । जिस शहर मे मेरा प्रियतम नौकरी करता है उसमे आग लग जाती और सारा शहर जलकर राख हो जाता है ॥१॥

जिस सड़क पर मेरा प्रियतम नौकरी करते हुए आता जाता है । ए भगवान् ! उस सड़क पर इतनी वर्षा करो कि वह सड़क वर्षा के मारे टूट कर बह जाय ॥२॥

जिस सेठ या बाबू के यहाँ मेरा प्रियतम नौकरी करता है उसको सर्प काट ले और वह मर जाय । इसके फलस्वरूप मेरे पति की नौकरी छूट जायेगी और वह घर लौट आयेगा ॥३॥

विशेष—इस गीत मे पति से मिलने की पत्नी की उत्कट अभिलाषा दिखाई पड़ती है । वह चाहती है मेरा पति नौकरी छोड़कर घर आ जाय और उस व्यक्ति का नाश हो जाय जो इस कार्य मे बाधा उपस्थित करता हो ।

---

१. बैरिन । २. जिस । ३. जल जाय । ४. दैव, भगवान । ५. काट लेता । ६. सर्प-विशेष । करियैर साँप जिसे अंग्रेजी में करैत कहते हैं । यह विषैला होता है ।

१२७. सन्दर्भ—सावन के दिनों में किसी विरहिणी स्त्री की उक्ति।

अरे रामा सावन चढ़े लिलकारी[1] विरन[2] नाहीं आवे रे हरी।टेक।
सोनवा क थरिया मां जेवना बनायो रामा।
हरे रामा जेउनउ पड़े अलसाइ[3] विरन नाही आवे रे हरी ॥१॥
झझरेन अरे गेड़आ गंगा जुड़[4] पनिया रामा।
अरे रामा गेड़ुअइ पड़ा अलसाइ विरन नाहीं आवे रे हरी ॥२॥
लाची अरे लवंगिया रामा बिरवा अरे जोरायो रामा।
अरे रामा विरवउ परा कुम्हिलाइ[5] विरन नाही आवे रे हरी ॥३॥

कोई विरहिणी स्त्री कहती है कि सावन का महीना आ गया परन्तु मेरा वीरन (भाई या पति) अभी तक नही आया।

मैंने सोने की थाली मे भोजन बना कर परोसा था। परन्तु भोजन यों ही रखा रह गया और मेरा बीरन नही आया ॥१॥

बड़े लोटे में मैंने शीतल गंगा जल भरकर पीने के लिए रखा था परन्तु लोटा का पानी यों ही रखा रह गया और मेरा वीरन नही आया ॥२॥

लाची और लवग लगाकर मेंने पान का बीड़ा तैयार किया था परन्तु पान यो ही रखा रह गया। वह सूख गया। फिर भी मेरा वीरन नहीं आया ॥३॥

१२८. सन्दर्भ—किसी स्त्री की उक्ति।

हरे रामा सोने बनी सन्दूक रूपेन लागे ताला रे हरी।टेक।
हरे रामा ओही सन्दूकिया मा ससुरु जी कइ सफवा[6] रामा।
हरे रामा होइ गइ समरा[7] की जून[8] खुलत नाहीं ताला रे हरी ॥१॥
हरे रामा ओही सन्दूकिया मां बलमू जी कइ धोतिया रामा।
हरे रामा होइ गइ नहाउने की जून खुलत नाहीं ताला रे हरी ॥२॥

कोई स्त्री कहती है कि सोने की सन्दूक बनी हुई है और उसमें चाँदी का ताला लगा हुआ है। उसी सन्दूक में मेरे ससुर जी की पगड़ी रखी हुई है। इतनी देर हो गई परन्तु ताला खुलता ही नहीं है ॥१॥

उसी सन्दूक में मेरे बालम जी की धोती रखी हुई है। अब नहाने का समय हो गया परन्तु सन्दूक का ताला खुलता ही नहीं है ॥२॥

---

१. ललकार करके, जोरों से। २. भाई। यहाँ इसका अर्थ पति। ३. अलसाना। यों ही रखा रह जाना। ४. शीतल। ५. सूख जाना। ६. साफा, पगड़ी। ७ समरा? ८. समय, बला

१२९. सन्दर्भ—स्त्री की उक्ति पति के प्रति ।

हरे रामा बहइ पवन पुरवइया,
झकोरइ मोरी सारी रे हरी । टेक

सोने के थरिया माँ जेवना बनायो रामा ।
हरे रामा जेवइ[1] ननद जी के भइया, बटोरइँ[2] मोरी सारी रे हरी ।।१।।

झझरेन अरे गेडुआ गंगा जुड़ पनिया रामा ।
अरे रामा घूँटइ ननद जी के भइया, बटोरइँ मोरी सारी रे हरी ।।२।।

लाची अरे लँवगिया रामा, बिरवा अरे जोरायो रामा ।
हरे रामा कूँचइ[3] ननद जी कइ भइया, बटोरइँ मोरी सारी रे हरी ।।३।।

कोई स्त्री कहती है कि पुरवैया हवा बह रही है और वह मेरी साड़ी को उड़ा रही है। मैंने सोने की थाली में भोजन बना कर परोसा है। मेरी ननद का भाई (पति) भोजन कर रहा है। उसके साथ ही वह मेरी उड़ती हुई साड़ी को पकड़ कर बटोर रहा है ।।१।।

बड़े लोटे में मैंने गंगा का शीतल जल पीने के लिए रखा है। ननद का भाई उसे पी रहा है और [illegible] को इकट्ठी कर रहा है ।।२।।

मैंने लाची और लवंग लगाकर पान का बीड़ा तैयार किया है। मेरी ननदजी का भइया उसे खा रहा है तथा मेरी साड़ी को बटोर रहा है ।।३।।

१३०. सन्दर्भ—नायक की उक्ति नायिका के प्रति ।

हरे रामा गोरी कइ गोरइया[4] जियरा मारइ रे हरी । टेक

गाला माँ तउ हँसुलिया कमरा माँ करधनिया ।
हरे रामा केसिया माँ फूलवा जियरा[5] मारइ रे हरी ।।१।।

माथा माँ तउ सोहै रामा सिरे कइ टिकुलिया ।
हरे रामा अँखिया कइ सुरमवा, जियरा मारइ रे हरी ।।२।।

बहियाँ माँ तउ सोहइ रामा बाजूबन्द[6] बिजायठ[7] रामा ।
हरे रामा कलाइ माँ ककनवा जियरा मारइ रे हरी ।।३।।

हथवा माँ तउ सोहइ रामा हरी हरी चुरिया रामा ।
हरे रामा गोड़वा कइ मेहउरवा[8] जियरा मारइ रे हरी ।।४।।

कोई प्रेमी नायक कह रहा है कि उस गौर वर्ण वाली स्त्री का सौन्दर्य मेरे

---

१. भोजन करना । २. इकट्ठा करना । ३. खाना । ४. सुन्दरता । ५. हृदय । ६-७ अलंकार विशेष ८ महावर

में चोट कर रहा है। उसने अपने बालों में जो फूल लगा रखे हैं वे हृदय पर
रते है ॥१॥

उसके सिर में टिकुली सुशोभित है और उसकी आँखों मे लगा हुआ सुरमा मेरे
को बेध रहा है ॥२॥

उसकी बाँहों में बाजूबन्द और बिजायठ सुशोभित है और कलाई में कगन
लगता है जो मेरे हृदय को कष्ट दे रहा है ॥३॥

उसकी हाथों में हरी हरी चूडियाँ शोभा दे रही है और उसके पैरों मे सुन्दर
र लगा हुआ है। इन्हें देखकर मेरे हृदय को कष्ट होता है ॥४॥

स्त्री का सौन्दर्य तथा प्रसाधन उद्दीपन का काम कर रहे है अतः नायक को
कष्ट होता है।

१३१. सन्दर्भ—नायिका की उक्ति नायक के प्रति।

हरे रामा खड़ा जमुन दह तीर छयल मुसकाना रे हरी। टेक
सोनवा कइ थरिया माँ जेवना बनायो रामा।
हरे रामा जेंवइ जमुन दह के तीर छयल मुसुकाना रे हरी ॥१॥
झझरेन अरे गेड़आ रामा गंगा जड पनिया रामा।
हरे रामा घूँटइ जमुन दह के तीर, छ[illegible]काना रे हरी ॥२॥
लाची अरे लवँगिया रामा विरवा अरे जोरायो रामा।
हरे रामा कूँचइ जमुन दह के तीर, छयल मुसुकाना रे हरी ॥३॥

कोई नायिका कहती है कि जमुना के किनारे खडा हुआ छैला मुझे देखकर
राने लगा। मैंने सोने की थाली में भोजन बनाकर रखा था। मेरा छैला जमुन
नारे उसे खाता हुआ मुसकरा रहा है ॥१॥

शेष दोनों पद्यों का अर्थ सरल और स्पष्ट है।

१३२. सन्दर्भ—किसी व्यक्ति की उक्ति।

गले माँ तिल काला अरे साँवलिया। टेक
देखो जगल की सफाई, फूल फैकें है ललाई।
महारानी है लुभानीं अरे साँवलिया ॥१॥
देखो ऊँचा है मकान, जिसमें हिन्दू मुसलमान।
बाजे ढोलिया चिकारा, अरे साँवलिया ॥२॥
मारइँ गंगा माई हूल, टूटइ हबड़ा कइ पूल।
कलकत्ता सहर घबडाना, अरे साँवलिया ॥३॥

देखो नारी है छतीसी[1], दाबे परी है बतीसी[2]।
लगाये आँखिन माँ सुरमा, अरे साँवलिया ॥४॥

कोई स्त्री कहती है ए साँवलिया ! तुम्हारे गले मे काला तिल का निशान दिखाई पड़ रहा है। जंगल की सफाई देखो। सभी फूलों में लालिमा दिखाई पड रही है। इसे देखकर महारानी भी आकर्षित हो गई है ॥१॥

यह ऊँचा मकान देखो जिसमें हिन्दू और मुसलमान दोनो रहते हैं। इसमें ढोल और नगाड़ा बजता है ॥२॥

गंगा जी जोरो से हिलोरा मार रही है जिसके धक्के से हबडे का पुल टूट रहा है। पुल के टूटने से कलकत्ता शहर मे घबराहट पैदा हो गई है ॥३॥

यह स्त्री बडी चलती पुर्जी और कुलटा है। यह अपने दाँतों को दबाये हुए है। इसने अपनी आँखो में सुरमा लगाया है।

१३३. सन्दर्भ—भावज के प्रति किसी देवर का दुराचरण।

पुरुब के देसवा से आवा है सोनरवा,
पइ आवा है सोनरवा।
पइ कोइला धधकावइ रे अँगनवा,
पइ कोइला धधकावइ रे अँगनवा ॥१॥

कोइला धधकावे पइ, सोनवा गलावे पइ,
सोनवा गलावे पइ।
रइया[3] रइया जोरइ रे कँगनवा,
पइ रइया रइया जोरइ रे कँगनवा ॥२॥

कँगना पहिरि धना अँगना बहारइँ पइ,
अँगना बहारइँ पइ।
देवरा निहारइ पइ भउजी के हाथवा,
पइ भउजी के हाथवा ॥३॥

रहु[4] रहु देवरा तुम्हइँ मरवउबइ,
तुम्हइ मरवउबइ पइ।
जब घर अइहइँ रे साजनवा[5]।
पइ जब घर अइहइँ रे साजनवा ॥४॥

१. छली तथा कुलटा। २. दाँत जिनकी संख्या ३२ है। ३. गहने के संधि भाग का छोटा अंश। ४ ठहरो। ५ साजन पति।

काहे के भउजी तू जिआ मरवउबू,
तू जिआ मरवउबू।
पइ कसि कसि बाँधउ रे अँचरवा।
पइ कसि कसि बाँधउ रे अँचरवा[1] ॥५॥

पूर्व देश से कोई सोनार आया है। वह गहना बनाने के लिए आँगन मे कोयला जला रहा है ॥१॥

वह कोयला जला कर सोने को गला रहा है और कँगने के छोटे-छोटे अशो को वह जोड़ रहा है तथा उसे तैयार कर रहा है ॥२॥

कँगने को पहिन कर वह स्त्री आँगन को बहारने के लिए चली। उस समय उसका देवर उसके हाथों को गौर से देख रहा है ॥३॥

इस पर भावज क्रोधित होकर कहती है कि ए देवर! जब मेरा पति घर लौटकर आवेगा तब मैं तुझे जान से मरवा डालूँगी ॥४॥

इस पर उसका दुष्ट देवर उत्तर देता है कि ए भावज! तुम मुझे जान से किस लिए मरवाओगी। तुम मुझे आँचर से कस कर बाँध लो अर्थात् मुझे एक बार आलिङ्गन कर लेने दो ॥५॥

टिप्पणी—अवधी गीतों की भाँति भोजपुरी गीतों में भी भावज के प्रति देवर के दुश्चरित्र का उल्लेख पाया जाता है। एक भोजपुरी गीत में कोई देवर अपनी भावज से अनुचित प्रस्ताव करता है। इस पर वह सती भावज उत्तर देती है कि ए दुष्ट देवर! मेरे सामने ऐसा अनुचित प्रस्ताव मत करो। अन्यथा जब मेरा पति परदेस से लौट कर घर आयेगा तब मैं तेरी लम्बी-लम्बी बाहुओं को तलवार से कटवा डालूँगी। भोजपुरी गीत की एक पक्ति इस प्रकार है :—

"अलकी तोर बहियाँ कटाइ हो देवो ना'।"

१३४. सन्दर्भ—नायिका की उक्ति नायक के प्रति।

एक फूल फूलइ दूसर फूल फूलइ,
तीसर फूल काला अरे साँवलिया। टेक
ओहि फूलवा कइ गजरा बनायो।
केकरे गले डालउँ, अरे साँवलिया ॥१॥
ससुरू गले डालूँ सासु रस लीना।
बलम तउ होइगे माली, अरे साँवलियाँ ॥२॥

---

[1] अंचल।

गजरा केकरे गले डालूँ अरे साँवलिया।
जेठा गले डालूँ जेठानी रस लीना।
बलम तउ होइगे माली, अरे साँवलिया ॥३॥
गजरा केकरे गले डालूँ अरे साँवलिया।
देवरा गले डालूँ देवरानी रस लीना।
बलम तउ होइगे माली, अरे साँवलिया ॥४॥
गजरा केकरे गले डालूँ अरे साँवलिया।

बाग मे एक फूल फूलता है, दूसरा फूल फूलता है। ए साँवलिया! तीसरा फूल फूलता है। उन फूलों को लेकर मैंने एक माला तैयार की। ए प्रिय! अब उसे किसके गले में डालूँ ॥१॥

यदि उसे ससुर के गले में डालूँ तो सास उस माले का रस लेगी। ए बालम! तुम माली हो गये हो ॥२॥

यदि अपने जेठ के गले में डालूँ तो मेरी जेठानी उसका सुगन्ध लेगी ॥३॥

यदि देवर के गले में माला डालूँ तो देवरानी उसका रसास्वादन करेगी। ए बालम! तुम तो माली बन गये हो अतः फूलो का यह हार किसके गले में डालूँ? ॥४॥

१३५. सन्दर्भ—किसी युवती पुत्री का अपना गवना कर देने को माता-पिता से प्रार्थना।

हरे रामा बाबा के सागरवा[1] मोरवा बोलइ रे हरी। टेक
हरे रामा मोरवा कइ सबदिया सुनके जियरा ववड़ाने रामा।
हरे रामा बपइ पंछी देइ दे मोर गवनवा रे हरी ॥१॥
हरे एँसउँ की साँवनवा बेटी खेलउ न कजरिया रामा।
हरे रामा आगे अगहन मां देबइ[2] तोर गँवनवाँ रे हरी ॥२॥
हरे रामा मोरवा कइ सबदिया सुनिके जियरा घबड़ाने रामा।
हरे रामा माया पंछी दइ दे मोर गवनवा रे हरी ॥३॥
हरे रामा एँसऊँ की सावनवा बेटी खेलउँ न कजरिया रामा।
हरे रामा आगे अगहन मां देबइ तोर गँवनवा रे हरी ॥४॥

पुत्री कहती है कि मेरे पिता के तालाब के किनारे मोर बोलता है। मोर के शब्द को सुनकर मेरा हृदय व्याकुल हो जाता है। ए मेरे पिताजी के पंखी! तुम मेरा गवना दे दो ॥१॥

१- बड़ा तालाब। २- दूँगी।

इस पर पिता उत्तर देता है कि ए बेटी ! इस वर्ष के सावन में तुम कजली खेलो। अगले वर्ष जब अगहन का महीना आयेगा तब मैं तुम्हारा गवना दूँगा ।।२।।

पुत्री फिर कहती है कि मोर की मीठी बोली को सुनकर मेरा हृदय घबड़ाने लगता है। ए मेरी माता के पक्षी ! तुम मेरा गवना दे दो ।।३।।

माता उत्तर देती है कि ए बेटी ! इस साल के सावन मास मे तुम कजली खेल लो। अगले वर्ष अगहन मे मै तुम्हारा गवना अवश्य कर दूँगी ।।४।।

१३६. सन्दर्भ—ननद के द्वारा ससुराल के कष्टों का अपनी भावज से वर्णन।

भीतरा से निकरी ननद भउजइया ननद भउजइया।
दुइनउ की ऐसी जोडी अरे साँवलियाँ ।।१।।
नइहरे मां रहेउ बड़ा रे सुख कीना।
खेलत रहेउँ होरी अरे साँवलिया ।।२।।
ससुरे गयो बड़ा रे दुःख परा।
बेलन का परी रोटी अरे साँवलिया ।।३।।
दुइनउ की ऐसी जोडी अरे साँवलिया।
नइहरे मा रहेउँ बड़ा रे सुख कीना।
फहिरत रहेउँ सारी अरे साँवलियाँ ।।४।।
ससुरे मां गयो बड़ा रे दुःख परा।
पहिरइ का परी लुगरी अरे साँवलिया ।।५।।
नइहरे मां रहेउँ बड़ा रे सुख कीना।
परइ लागी पेटी[1] अरे साँवलियाँ ।।६।।
ससुरे मां गयो बड़ा रे दुःख परा।
छटकि गई पेटी अरे साँवलिया ।।७।।

घर के भीतर से ननद और भावज निकली। इन दोनों की जोड़ी बड़ी सुन्दर है ।।१।।

ननद अपनी भावज से कहती है कि ए भावज ! मायके मे मैंने बड़ा सुख किया। मैं सदा होली खेलती रहती थी ।।२।।

परन्तु जब मै ससुराल गई तब वहाँ मुझे बड़ा कष्ट हुआ। मुझे वहाँ रोटी बेलनी पड़ी ।।३।।

---

१. मोटे होने के कारण पेट में निशान का पड़ जाना जिसे पेटी पड़ना कहते हैं।

मायके मे मैं सुन्दर साड़ी पहिनती थी। मैंने बडा ही सुख किया ॥४॥

परन्तु जब मैं ससुराल गई तब मैंने बड़ा दु ख किया। वहाँ मुझे फटी पुरानी साड़ी (लुगरी) पहिननी पडती थी ॥५॥

नैहर मे मैंने बड़ा सुख किया। मोटे होने के कारण मेरे पेट में पेटी पडने लगी। परन्तु जब मैं ससुराल गई तब मुझे बड़ा कष्ट हुआ अधिक काम करने मे र दुबली हो गई और मेरे पेट की पेटी जाती रही ॥६-७॥

१३७. सन्दर्भ—किसी नायिका की उक्ति नायक के प्रति।

हरे रामा करिके सोरहउ सिंगार लिहिन बेलमाई रे हरी। टेक
कड़ा[1] के ऊपर छड़ा[2] विराजइ, झनन झनन जब बाजई रामा।
हरे रामा हनब करेजवा बान, जान मुसुकाई रे हरी ॥१॥
पतरी कमर में कसि करधनिया, चलिउँ चाल लचकनिया रामा।
हरे रामा खाइउँ मुख मां पान, चलिउँ अठिलाई रे हरी ॥२॥
दँतिआ मां दइ मिस्सी मारिउँ सबसे नजरिया रामा।
अरे रामा गिरइ छयल[3] मुरुझाई[4] धरनि अकुलाई रे हरी ॥३॥

कोई नायिका कहती है कि मेरा नायक सोलहों शृङ्गार करके मुझे अपने पास रोक लिया। मैंने कड़ा के ऊपर छड़ा पहन लिया है वह जब झन झन करके बजने लगता है तब नायक के कलेजे में वह बाण सा चुभता है ॥१॥

मैंने अपनी पतली कमर में करधनी पहनी है, लचकती हुई चाल से चलती हूँ। मैं मुंह में पान खाकर इठलाती हुई चलती हूँ ॥२॥

दाँतों मे मिस्सी लगाकर मैं नजर लड़ाती हुई चलती हूँ। मेरा नायक मुझे देखकर धरती पर मूर्छित होकर गिर पडता है ॥३॥

१३८. सन्दर्भ—किसी नायिका की उक्ति नायक के प्रति।

हरे रामा सावन मस्त महीना छयल नाहिं आए रे हरी। टेक
सावन भादों की अँधियारी, सूनी सेज हमारी रामा।
अरे रामा तलफँउ सारी रात, यार नाहिं आए रे हरी ॥१॥
सावन मास हमैं ना भावै, पिया बिना मदन सतावै रामा।
अरे रामा करिके कौल[5] करार यार नाहिं आए रे हरी ॥२॥
संग सखी सब करै सिंगारा, गावैं राग करारा[6] रामा।
अरे रामा केहि पर करउँ सिंगार यार नाहिं आए रे हरी ॥३॥

---

१. पैर में पहिनने का अलंकार विशेष। २. वही। ३. छैला। ४. मूर्छित होकर। ५. प्रतिज्ञा करना ६. ज़ोरों से।

कोई विरहिणी नायिका कहती है कि सावन का महीना बड़ा मस्ताना होता है परन्तु मेरा छैला अभी तक परदेस से लौटकर घर नहीं आया ॥१॥

सावन तथा भादों की अन्धकारमयी रात्रि में प्रियतम के बिना मेरी सेज सूनी है। मैं सारी रात उनके वियोग के कारण व्याकुल थी परन्तु मेरा यार नहीं आया ॥२॥

सावन का महीना मुझे अच्छा नहीं लगता क्योंकि इस मास में प्रियतम के बिना कामदेव बड़ा कष्ट देता है। मेरा यार आने की प्रतिज्ञा करके, शपथ खाकर भी घर लौटकर नहीं आया ॥२॥

मेरी सखियाँ अपना श्रृङ्गार कर रही हैं और सुन्दर गीत गा रही हैं। परन्तु मैं किसके ऊपर अपना श्रृङ्गार करूँ? मेरा निर्दयी प्रियतम तो घर लौटकर आया ही नहीं ॥३॥

१३९. सन्दर्भ—नायिका की उक्ति नायक के प्रति।

मधुवन[1] छाइ रहया मनमोही[2] बीत गए बारहमासा ना। टेक
सोनवाँ की थरिया मां जेवना बनायो रामा।
हरे रामा मधुवन जेईं रहया मनमोही, बीत गए बारह मासा ना ॥१॥
झझरेन गेड़ुआ गंगा जुड़ पनिया रामा।
अरे रामा मधुवन घूँटि रहया मनमोही, बीत गए बारहमासा ना ॥२॥
लाची लवँगवा कइ बिरवा अरे जोरायो रामा।
अरे रामा मधुवन कूँचि रहा मनमोही, बीत गए बारहमासा ना ॥३॥

मेरे मन को मोहने वाला प्रियतम मधुवन में विराजमान है। बारहों महीने बीत गये परन्तु वह लौट कर घर नहीं आया। मैंने सोने की थाली में उसके लिए भोजन बनाकर परोसा था परन्तु बारहों महीने बीत गये। वह भोजन करने के लिए नहीं आया ॥१॥

बड़े लोटे में मैंने प्रियतम के पीने के लिए पानी रखा था। उसके लिए लवंग तथा इलायची लगाकर पान का बीड़ा तैयार किया था परन्तु वह मधुवन में आनन्द कर रहा है और बारह महीने बीत जाने पर भी नहीं आया ॥२-३॥

१४०. सन्दर्भ—नायिका की उक्ति नायक के प्रति।

फूलवा फूलि रहे बागन माँ सावन हरी हरी पतिया ना। टेक
सोनवा अरे की थरिया रामा जेवना अरे बनायो रामा।
जेवना जेइं रहे बागन मां सावन हरी हरी पतिया ना ॥१॥

---

१. मथुरा। २. मन को मोहित करने वाला।

लाची अरे लवँगिया रामा बिरवा अरे जोराचो रामा।
बिरवा कूचि रहे बागन मां सावन हरी हरी पतिया ना ॥२॥
फूला अरे नेवारी[1] रामा सेजिया अरे लगायो रामा।
सेजिया सूति रहे बागन मा सावन हरी हरी पतिया ना ॥३॥

सावन के महीने मे बाग में फूल फूले हुए है और उनमें हरी-हरी पत्तियाँ दिखाई पड रही है। सोने की थाली मे मैंने भोजन बनाया था परन्तु मेरा प्रियतम घर न आकर बाग मे ही भोजन कर रहा है ॥१॥

मैने उसके लिए लवंग तथा इलायची लगाकर पान तैयार किया था। परन्तु बगीचे में ही वह पान खा रहा है ॥२॥

उसके सोने के लिए फूलों की सेज मैंने तैयार की थी। परन्तु वह बगीचे मे ही सेज पर सो रहता है, घर मे आता ही नही ॥३॥

१४१. सन्दर्भ—किसी नायिका की उक्ति परदेसी पति के प्रति।

मिरजापुर सहर बँगलवा, भँवरा कब घर आउबइ ना। टेक
हसुली मारा था देवरवा बाँकी तिरछी तोर नजरिया।
मोर करेजवा सालइ ना ॥१॥ मिरजा०
मोरी बहियाँ फरकइ टड़िया कब लइ आउबया ना।
घुण्डी मारा था देवरवा, बाँकी तिरछी तोर नजरिया ॥२॥
मोर करेजवा सालइ ना।
मोरी कलाई बिराजइ अगेला कब लइ अउबइ।
घुण्डी मारा था देवरवा, बाँकी तिरछी तोर नजरिया ॥३॥
मोर करेजवा सालइ ना।

मिर्जापुर शहर मे बँगला है। ए मेरे भँवरा (पति) तुम कब घर पर लौट कर आओगे।

मेरे देवर की नजर बड़ी तिरछी है। वह मेरे कलेजे को छेद देती है ॥१॥

ए प्रियतम! मेरी बाई बाँह फड़क रही है। तुम टड़िया को कब लावोगे? देवर ने घुण्डी मारी है ॥२॥

मेरी कलाई सूनी पड़ी हुई है। तुम उसके लिए कंकन कब लावोगे? देवर ने घुण्डी मारी है। उसकी नजर तिरछी है जिससे मेरा कलेजा छिद जाता है ॥३॥

---

1 नेवार का पलंग।

१४२. सन्दर्भ—पत्नी के द्वारा पति का उपालम्भ ।

सइँअइ हमारइ मधुबनिया । टेक
दिन के लियावइ राजा ककरी कइ बतिया,[1]
राती लियावइ राजा खरवुजिया[2] ।।१।।
दिन के लियावइ राजा सूखी बहुरिया ।
राती लियावइ राजा गुग्धनिया ।।२।।
दिन मे लियावइ राजा मुँह से ना बोले ।
राति खेलावइ राजा भरि कनिया[3] ।।३।।

कोई स्त्री कहती है कि मेरा पति मधुवन से निवास करता है। वह दिन मे लिए छोटी छोटी ककड़ी लाता है परन्तु रात्रि मे वह खरबूजा लाता है ।।१।।
दिन में तो वह मेरे भोजन के लिए सूखी हुई लिट्टी लाता है परन्तु रात मे र धनिया ले आता है ।।२।।
वह दिन में तो मुझसे मुँह से भी नहीं बोलता परन्तु रात मे मुझे अपनी गोद र खेलाता है अर्थात् आलिङ्गन करता है ।।३।।

१४३. सन्दर्भ—किसी नायिका की उक्ति नायक के प्रति ।

के बइरी बंसी बजावा रे झूलनी हालै मोर । टेक
पाँचा पचीस कइ घोड़वा रे साढ़े दस कइ लगाम ।
बइठन वाला लरिकवा हो लचकइ करिहाव ।।१।।
पाँचा पचीस कइ नथिया हो, साढ़े दस कइ बुलाक ।
पहिरन वाली लरिकवा हो मुख चूवइ गुलाब ।।२।।
मोलह ठाड़े कइ सिढ़िया हो चढ़इव झनकार ।
बालम का देखउ लरिकवा हो उतरे मना मोर ।।३।।
के बइरी बसी बजावा रे झूलनी हालै मोर ।

कोई नायिका कह रही है कि किस वैरी ने यह बंशी बजाई है। मेरे नाक की साँस की हवा से हिल रही है ।
पचीस और पाँच (तीस) रुपये का घोड़ा है। उसमे साढ़े दस रुपये की लगी हुई है। उस पर बैठने वाला लड़का है जिसकी कमर लचक रही है ।।१।।
पचीस और पाँच रुपये की नथिया है और साढ़े दस रुपये का बुलाक है। पहिनने वाली स्त्री की आयु अभी बहुत कम है परन्तु उसके मुख से गुलाब चू अर्थात् उसका मुख गुलाब के समान सुन्दर है ।।२।।

---

१ छोटी ककड़ी । २ खरबूजा । ३ गोद ।

महल पर चढ़ने के लिए सोलह सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। मैं उन सीढ़ियों झनकारती हुई चढ़ी। परन्तु वहाँ पर जब मैंने अपने बालक पति को देखा तो मैं बि उदासीन और दु:खी हो गई ॥३॥

१४४. सन्दर्भ—किसी प्रेमिका की उक्ति प्रेमी के प्रति।

हमरी गलिन मति आया सँवलिया। टेक
हमरी गलिन माँ घाम बहुत है।
छाता लगाइ चलि आयो सँवलिया ॥१॥
हमरी गलिन मां काँटा बहुत है।
जूता लगाइ चला आया सँवलिया ॥२॥
हमरी गलिन मां कीचा बहुत है।
घोड़ा कुदाय चलि आया सँवलिया ॥३॥

कोई प्रेमिका कहती है कि ए प्रियतम! तुम मेरी गली मे मत आना। मेरी गली में धूप बहुत तेज लगती है अतः छाता लगाकर तुम चले आना ॥१॥

हमारी गली में बहुत अधिक काँटे हैं। अतः आते समय तुम जूता लगा कर आना ॥२॥

हमारी गली में बड़ा कीचड़ है। अतः घोड़े पर चढ़कर तुम आना जिससे तुम्हारे पैरों मे कीचड़ न लगने पावे ॥३॥

विशेष—इस गीत मे अपनी गली में प्रियतम को न आने के लिए नायिका ने जो आदेश दिया है उसे विधि रूप मे ही निषेध समझना चाहिए कुछ अन्यथा नही। चतुर स्त्रियाँ इसी निषेध की भाषा में बातें करती है। महाकवि श्री हर्ष ने दमयन्ती के विषय में कितनी सटीक बात कही है कि :—

"निषेधवेशो विधिरेष तेऽथवा, तवैव युक्ता खलु वाचि वक्रता।
विजृम्भितं यस्य किल ध्वनेरिदम्, विदग्ध नारी वचनं तदाकर: ॥"

१४५. सन्दर्भ—किसी प्रेमिका की अभिलाषा।

लगे नयना बान उड़ि जातिउ रे। टेक
जे चन्दा होतिउ छियाइ भल रहतिउँ
उठइ बदरा छिपाइ रहतिउ रे ॥१॥
एहि पार गङ्ग वहि पार जमुना।
बहइ दरिआउ पँवर[1] जातिउ रे ॥२॥

---

१. तैरना।

जो लवगा होतिउ घपस भल फरतिउँ ।
कूँचइ छयला पान मँहक जातिउ रे ॥३॥

कोई प्रेमिका कह रही है कि मेरी आँखों में प्रियतम का सौन्दर्यरूपी बाण लग गया है। अत. मै उड़ जाना चाहती हूँ । यदि मैं बादल होती तो चन्द्रमा के समान प्रियतम को मैं अपने अञ्चल में छिपा लेती ॥१॥

इस पार तो गगा है और जमुना है । दोनो नदियाँ जोरों से बह रही है । मै चाहती हूँ कि उनको तैर जाऊँ ॥२॥

यदि मैं लवंग होती तो खूब फलती और जब मेरा प्रियतम पान खाता तब मैं उसे सुगन्ध प्रदान करती ॥३॥

१४६. सन्दर्भ—नायिका की उक्ति नायक के प्रति ।

हरे रामा छोटे बालम गुलनारी[1] चलन नीक लागइ रे हरी । टेक
सोने अरे की थरिया रामा जेउना अरे बनायो रामा ।
हरे रामा छोटे बालम गुलनारी जेवत नीक लागइ रे हरी ॥१॥
झझरेन अरे गेडुवा रामा गंगा जल पनिया रामा ।
हरे रामा छोटे बालम गुलनारी, घूँटत नीक लागइ रे हरी ॥२॥
लाची अरे लवंगिया रामा बिरवा अरे जोरायो रामा ।
हरे रामा छोटे बालम गुलनारी, कूँचत नीक लागइ रे हरी ॥३॥
फूला अरे नेवारी रामा सेजिया अरे लगायो रामा ।
हरे रामा छोटे बालम गुलनारी सूतत नीक[2] लागइ रे हरी ॥४॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरा छोटा बालम बड़ा सुन्दर है। जब वह चलता है तब बहुत ही अच्छा लगता है । मैंने सोने की थाली मे भोजन बनाया था । भोजन करते समय वह बहुत ही अच्छा लगता है ॥१॥

मैंने बड़े लोटे मे उसके पीने के लिए ठंढा गंगा जल रखा था, लाची और लवंग लगाकर पान तैयार किया था तथा फूलों की सेज को बिछाया था। वह जल पीते समय, पान खाते हुए तथा पलंग पर सोते समय बड़ा ही अच्छा लगता है ॥२–४॥

१४७ सन्दर्भ—किसी राजा की पुत्री का कहार के साथ जाना ।

एक फूल फुलइ बेला अरे चमेली, दूसर फूलइ न ।
अँतरा गुलाब दूसर फुलइ न ॥१॥

---

१. सुन्दर । २. अच्छा ।

से फूला लोढ़ई[1] कहारिन[2] कइ पुतवा,
पगड़िया खोंसइ न ॥२॥

मचिअइ बइठी राजा कइ बिटिअवा, कहारी पूता न।
हम तउ चलबइ तोहरे सगवा, कहारिन पूता न ॥३॥

तू तउ खाबू रानी गोहुँआ चउरवा, मकुनियाँ[3] खाई न।
भरी बखरी[4] कइ पनिया, मकुनियाँ खाई न ॥४॥

तू तउ खाबू रानी पाने कइ बिरवा, सुरतिआ खाई न।
भरी बखरी कइ पनियाँ, सुरतिया खाई न ॥५॥

तू तउ बाटिउ रानी महला अरे दुमहला,
मड़इयाँ छाँई न।
भरउ बखरी कइ पनिया,
मड़इया छाँई न ॥६॥

एक बन गई दूसर बन गई, तीसरे बनवा न।
ओनके लागि गई पिअसिया, तीसरे बनवा न ॥७॥

पइयाँ[5] तोरे लागउँ कहारी कइ पुतवा, मखिअवा बेचि न।
मोंहि पनिया पिआवा, मखिअवा बेंचि न ॥८॥
तुँहइ असि दूसरि बहुत अइही रनिया,
हमका गाँजवा पियावहुँ झुलनिया[6] बेंचि न ॥९॥
हमका गाँजवा पियावहु झुलनिया बेचि न।

एक फूल बेला और चमेली फूलता है और दूसरा फूल गुलाब फूलता है। उस फूल को कहार का लड़का चुनता है और उसे अपनी पगड़ी मे खोस लेता है ॥१-२॥

मचिया पर बैठी हुई राजा की लड़की कहती है कि ए कहार के पुत्र ! मैं तुम्हारे साथ चलूँगी ॥२॥

तब उस कहार के छोकड़े ने कहा कि ए रानी ! तुम तो चावल और गेहूँ खावोगी। परन्तु मैं तो लिट्टी खाता हूँ और अपनी बखरी में पानी भरता हूँ ॥३-४॥

ए रानी ! तुम तो (मगहिया) पान का बीड़ा खाओगी और मै सुरती खाकर अपनी बखरी का पानी भरूँगा ॥५॥

---

१. चुनना। २. कँहार (एक जाति विशेष)। ३. गेहूँ से पकाया गया रोटी के समान वह भोज्य पदार्थ जिसके भीतर सत्तू भरा रहता है।—देहाती कचौड़ी ४. अन्न रखने का स्थान। ५ पैर। ६ नाक का एक गहना।

ए रानी ! तुम तो महल में रहने वाली हो परन्तु मैं अपनी मड़ई अर्थात् ...ा छाकर अपनी बखरी मे पानी भरता हूँ ॥६॥

राजा की पुत्री उस कहार के लडके के साथ एक बन में गई, दूसरे बन मे ...रन्तु तीसरे बन में जाने पर उसको प्यास लगी ॥७॥

राज पुत्री ने कहा—ए कहार के लड़के ! मैं तुम्हारे पैर पडती हूँ तुम अपना ...बेच कर मुझे पानी पिलावो ॥८॥

इस पर कहार के बेटे ने कहा—तुम्हारी ऐसी रानी दूसरी बहुत मिलेगी। ...नी नाक की झूलनी को बेचकर मुझे गाँजा पिलावो।

इस गीत मे जिस घटना का उल्लेख हुआ है वह सामन्त शाही युग की अनहोनी ...ी जान पड़ती है।

१४८. सन्दर्भ—किसी बाल तथा अनाड़ी पति से विवाह होने के कारण उस स्त्री की मनोव्यथा का वर्णन।

कस[1] गोरी थमवा[2] धरे आज ठाढ़ी। टेक
भीतरा से निकरी साँवर[3] एक गोरी।
कस गोरी थमवा धरे आज ठाढ़ी ॥१॥
थमवा कइ दरद करेजवा मा साली।
अगरे कइ लहँगा बुरहानपुर[4] कइ सारी।
पहिरे न जाने मोर भउजी अनारी ॥२॥
नाक सोहइ नथिया काने मां दुइ बारी।
अरे पहिरे न जाने मोर भउजी अनारी ॥३॥
आँखि सोहे कजरा टिकुरि[5] रतनारी[6]।
देइउ न जाने मोर भउजी अनारी ॥४॥
पहिरि ओढ़ के राजा चढ़ि गई अटारी।
फूला नेवारी[7] कइ सेजा लगावे प्यारी।
अरे तबहूँ न जागे राजा लरिका अनारी[8] ॥५॥
अरे अस मन हो या मारउ हनिके कटारी।
मारि के कटारी जड़ि[9] जेउ रे केवारी ॥६॥
नउवा[10] तोरा पूता मरे, बभनवा[11] कइ दाढ़ी।
अरे जे रे मोर बर हेरैं,[12] लरिका अनारी ॥७॥

---

१. कैसे। २. खम्भा। ३. सोलह वर्ष की युवती स्त्री। ४. एक विशेष नगर। ...नी। ६. लाल, ७. नेवार। ८. मूर्ख। ९. बन्द कर देना। १०. नाई। ११. ...। १२. खोजता है।

काहे का पूता मरै काहे जरे दाढ़ी।
तोर रे करम माँ लिखा लरिका अनारी ॥८॥

यह गोरी स्त्री खम्भे को पकड कर क्यों खड़ी है? घर के भीतर से एक सोलह वर्षीया युवती निकली। आज वह खम्भा पकड कर क्यो खड़ी हैं ॥१॥

वह कहती है कि आज मेरे कलेजे में दर्द हो रहा है। आगरा का लँहगा है और बुरहानपुर की साड़ी है परन्तु मेरी अनाड़ी भावज उसे पहिनना नही जानती है ॥२॥

नाक मे तो नथिया है और कानों मे दो बालियाँ है। परन्तु मेरी अनाड़ी भावज उन्हें पहिनना नहीं जानती है ॥३॥

आँखों में काजल सुन्दर लगता है और ललाट पर लाल टिकुली अच्छी लगती हैं। परन्तु मेरी अनाड़ी भावज उसे लगाना नही जानती ॥४॥

वह स्त्री कपड़े और गहनों को पहिन कर अटारी पर गई और उसने नेवार के पलंग पर फूलो को बिखेर दिया। परन्तु उसका अनाडी पति भी नही जागा ॥५॥

इस पर वह अत्यन्त दु:खित होकर कहती है कि मेरे मन में ऐसा होता है कि अपनी छाती मे कटारी मार कर आत्म-हत्या कर लूँ और आत्म हत्या करने के पहिले भीतर से दरवाजे को बन्द कर दूँ जिससे कोई खोल न सके ॥६॥

इस अनमेल विवाह पर दु:खी और क्रोधित होकर वह अभिशाप देती हुई कहती है कि वह नाऊ का लड़िका मर जाय और उस ब्राह्मण की दाढ़ी जल जाय जिसने मेरे लिए ऐसा मूर्ख, अनाड़ी तथा बालक पति खोजा है ॥७॥

इस पर उसे सान्त्वना देते हुए कोई कहता है नाई का पुत्र मरने तथा ब्राह्मण की दाढ़ी जलने का अभिशाप क्यों देती हो। तुम्हारे भाग्य मे अनाड़ी पति ही लिखा था। (अतः इसमे किसी का दोष क्यों देती हो) ॥८॥

विशेष:—लोक गीतो में बाल विवाह, वृद्ध विवाह तथा अनमेल विवाह का वर्णन अधिकतर पाया जाता है। गाँवों मे धनिक व्यक्तियों की पुत्रियो के विवाह के लिए नाई और ब्राह्मण ही वर खोजने के लिए जाते है और लोभ वश किसी अयोग्य वर को विवाह के लिए पसन्द कर लेते है। इस गीत में किसी बालक तथा अनाडी पति से विवाह का वर्णन उपलब्ध होता है। इसीलिए यह स्त्री बालक पति खोजने के कारण नाई और ब्राह्मण को अभिशाप देती है।

भोजपुरी मे भी इसी प्रकार का एक लोक गीत उपलब्ध होता है जिसमें किसी बालक तथा नादान पति से विवाह हो जाने के कारण किसी तरुणी के हार्दिक दु:खों का हृदय द्रावी वर्णन हुआ है। इस गीत का शीर्षक है "बनहारी हो ह्मरा के लरिका भतार"। यह गीत भोजपुरी प्रदेश मे अत्यन्त लोकप्रिय तथा प्रसिद्ध है।

१४९. सन्दर्भ—बाल पत्नी स्त्री की दुःखद दशा का वर्णन।

हरे रामा चढ़ली[1] जवानी[2] जोर जुलुम कइ डारइ रे हरी। टेक
बारा डाड़े की सिढ़िया रामा चढ़ि गइउ अकारने रामा।
हरे रामा सइयाँ का देखेउ लरिकवा[3] उतरेउ मन मारी रे हरी ॥१॥
हरे रामा जावा से देखेउँ सइयाँ का लरिकवा रामा।
हरे रामा खाना पानी छूट, नींद नाही आवइ रे हरी ॥२॥
हरे रामा माई-बाप मिल जनम दीना,
सुरति[4] दीन भगवान् रामा।
हरे रामा दइअउ[5] मउति[6] दइ देत,
जिअउँ हम कइसे रे हरी ॥३॥

कोई स्त्री जिसका पति बालक है अपने दुःखों का वर्णन करती हुई कहती है [illegible]री भरी हुई जवानी है अतः मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है।

मैं बिना किसी कारण ही सीढी पर चढ़कर महल के ऊपर गई। वहाँ अपने को लड़का देखकर मैं बहुत दुःखी हुई और नीचे उतर आई ॥१॥

जब से मैंने अपने बालक पति को देखा है तब से खाना-पीना छूट गया है। [illegible] तथा दुःख के कारण मुझे नींद भी नही आती ॥२॥

पिता और माता ने मुझे जन्म दिया, भगवान् ने मुझे सौन्दर्य प्रदान किया। [illegible]व मुझे मृत्यु दे दे तो भी वह अच्छा है क्योंकि ऐसी दशा मे मै कैसे जीवित [illegible]कती हूँ ॥३॥

१५० सन्दर्भ—बालक पति वाली किसी युवती स्त्री के हृदय की मनोव्यथा।

अबइ न गयेउ गवनवाँ अरे साँवलिया। टेक
गइयुँ नउअवा कि ओरी, गइयुँ मकइया[7] कि चोरी।
नउआ लइजा मोर सुदिनवा[8] अरे साँवलिआ ॥१॥
कच्चे पक्के हइ मकान खम्भा गड़े दस पाँच।
खिरकी कटी हइ हजार बरसि पाँच कइ सजनवाँ ॥२॥
एकतउ सँइआँ कि नदानी,[9] दूजे भइयुँ मटिहानी[10]।
मोर फुटहा[11] करमवाँ[12] अरे साँवलिआ ॥३॥

---

१. पूर्ण। २. यौवन। ३. लड़का। ४. रूप, सौन्दर्य। ५. दैव, भाग्य। [illegible]त्यु। ७. मक्का। ८. अच्छा दिन। ९. बेवकूफी। १०. नष्ट, मिट्टी में मिला। [illegible] फूटा हुआ। १२ भाग्य कर्म।

सोउब बाबा की अटारी, सुन्दर सेज हइ सँवारी;
जंगल कोयल कुहुकारी, अरे साँवलिआ ॥४॥

कोई युवती स्त्री कहती है कि अभी तक मेरा गवना नही हुआ। मैं मक्का के खेत मे से लुक छिप कर नाई के मकान के पास गई थी और उससे कहा कि ए नाई ! मेरे गवने के निश्चित दिन की सूचना मेरे ससुराल वालो को दे आ ॥१॥

(जब नाई ने कहा कि मैं तुम्हारी ससुराल का पता नही जानता तब वह स्त्री कहती है कि) उस गाव में कच्चे, पक्के कुछ मकान है, वहाँ दस-पाँच खम्भे गड़े हुए है। उन मकानों मे बहुत सी खिड़कियाँ लगी हुई है। वही मेरी ससुराल है। मेरा साजन पाँच वर्ष का है ॥२॥

एक तो मेरा पति छोटा तथा मूर्ख है जो मेरा गवना करा कर ले नही जाता। दूसरे मै मिट्टी में मिली जा रही हूँ क्योकि मेरा यौवन बीतता जा रहा है। सभी प्रकार से मेरा भाग्य फूट गया है ॥३॥

अब मैं सुन्दर सेज बिछाकर अपने पिता की अटारी पर सोऊँगी। मेरी काम वासना को उद्दीपित करने वाली कोयल मधुर बोली जंगल मे बोल रही है।

१५१. सन्दर्भ—पत्नी की छोटी सी बात पर पति का क्रोधित हो जाना और फलस्वरूप दूसरा विवाह कर लेना।

मोरे पिछुवरवा लवँगिया कइ बरिआ[1];
पै लउँगरि[2] चुवै हो आधी रतिया ॥१॥
अरे साँवलिया।

लउँगा बनिजिया[3] सासु तोरा पूता गये;
पै लइके आये भंगिआ[4] मरिचिआ ॥२॥
अरे साँवलिया।

भँगिआ पिसत मोरे पहुँचा[5] पिराने[6];
पै लइके अउतेआ चेरिया लउँड़िया ॥३॥
अरे साँवलिया।

अतनी बचन सुनेन राजा के कुँअरवा;
पै घोड़े पीठि भये असवरवा ॥४॥
अरे साँवलिया।

माया धरइ अट्का बहिन धरइ पट्का[7];
पै धना धरा घोड़े कइ लगमिआ[8] ॥५॥
अरे साँवलिया।

१. वाटिका। २ छोटा लौंग। ३. व्यापार। ४. भाँग। ५. हाथ। ६ कष्ट पाना पीड़ित होना ७ पट वस्त्र ८ लगाम

छोड़ा माया अटुका बहिनि छोड़ा पटुका;
पै छोड़ा धना घोड़े कइ लागमिआ ॥६॥
अरे साँवलिया ।
चेरिआ क गये सवति लइके आये,
अब सुख सोवा हो राजा धेरिआ[1] ॥७॥
अरे साँवलिया ।
सुख से सोवइँ तोहंरी माया औ वहिनिआ,
कठिन दुःख दिहा[2] हौ दगाबजवा[3] ॥८॥
अरे साँवलिया ।

कोई स्त्री कहती है कि मेरे घर के पीछे लवंग की वाटिका है उसमें आधी रात को छोटा-छोटा लवंग सदा चूता रहता है ॥१॥

वह बहू अपनी सास से कहती है कि सास ! तुम्हारा पुत्र लवग का व्यापार करने के लिए गया है परन्तु वह परदेस से भाँग और मिर्च ले आया ॥२॥

भाँग को पीसते समय मेरे हाथ दर्द करने लगे। इस काम के लिए मेरा पति कोई लौडी या दासी ले आता तो अच्छा होता ॥३॥

इतनी सी छोटी बात को सुनते ही वह राजा का पुत्र (पति) घोडे की पीठ पर परदेस जाने के लिए सवार हो गया ॥४॥

पुत्र को मनाने के लिए उसकी माता उसके अंगो को पकड़ने लगी, उसकी बहन ने वस्त्रों को पकड़ा और स्त्री ने घोड़े के लगाम को ही पकड़ लिया जिससे वह परदेस न जा सके ॥५॥

तब उसने कहा कि ए माता ! मेरे अंगों को छोड़ो, वहन ! तुम मेरे वस्त्र को छोडो और ए धनिया ! तुम मेरे घोड़े की लगाम को छोड़ दो ॥६॥

वह पति दासी पाने के व्याज से परदेस गया और किसी दूसरी स्त्री से विवाह करके एक सौत लेते आया। उसने व्यङ्ग्य पूर्वक अपनी स्त्री से कहा कि ए राजा की लडकी अब तुम सुखपूर्वक सोवो ॥७॥

इस पर उसकी स्त्री ने दुःखी होकर कहा कि तुम्हारी माँ और बहिन अब सुख-पूर्वक सोवें। ऐ धूर्त और दगाबाज ! तुमने अपना दूसरा विवाह कर मुझे बहुत बडा दुःख दिया ॥८॥

विशेष—इस गीत में उस समाज का सजीव चित्रण किया गया है जिसमें अत्यन्त तुच्छ और छोटी-छोटी बातों पर रुष्ट तथा क्रोधित होकर पति अपना दूसरा विवाह कर लिया करता है। अधिक तो क्या तिलक तथा दहेज में रुपयों की थोडी

---

१ दुहिता लडकी २ दिया ३ विश्वासघात करने वाला

सी कमी होने और बारातिया का उचित सत्कार न होने पर तुनुक मिजाज ससुर अपने लड़के का दूसरा विवाह कर देते हैं। स्त्री के द्वारा की गई छोटी सी गलती के कारण भी दुष्ट पति सौत लाने की धमकी ही नहीं देता बल्कि इस धमकी को कार्य रूप में परिणत भी कर देता है। बहु-विवाह के दुष्परिणाम का यह गीत प्रत्यक्ष प्रमाण है। अवधी प्रदेश तथा भोजपुरी प्रदेश में बहु-विवाह की यह कुप्रथा इतनी अधिक प्रचलित है कि इसकी प्रतिध्वनि लोक-गीतों में भी सुनाई पडती है।

१५२. सन्दर्भ—साध्वी तथा पतिव्रता स्त्री के आचरण पर पति के द्वारा सन्देह करना।

काली काली चुनरी सबुजि[1] बूटी ना,
चूँदरि पहिरैं साँवरि[2] गोरिया जेकै हरि परदेस ॥१॥
चिठिआ लिखैंआ वनाइके कइथा[3],
बँचतइ घर का आवइ ना ॥२॥

कइथा कइ चिठिआ रे कइथवइ हथवा ना;
बाके रजऊ[4] जी कइ घोड़वा अरे दुवारे ठिहिनाय[5] ॥३॥
तुँइ कसबिनिआ[6] धना, कयथा दगवाजावा;
केकरे करनवा[7] अरे ठाढ़ी[8] कइथा के दुअरवा ॥४॥
हम कसबिनिआं राजा कइथा दगावाजवा;
तोहरे करनवा राजा ठाढ़ी कइथा के दुअरवा ॥५॥

कोई स्त्री–जिसका पति परदेस गया हुआ है—काली साड़ी पहिने हुए है जिसमे सबुज रंग के बूटे छपे हुए है ॥१॥

वह स्त्री उस साडी को पहिन कर अपने परदेसी पति के पास पत्र लिखवाने के लिए किसी कायस्थ के घर गई और उससे कहा कि तुम ऐसी चिट्ठी लिखो जिसको पढ़ते ही मेरा पति परदेस से घर लौट आवे ॥२॥

कायस्थ ने स्त्री के प्रार्थना करने पर पत्र लिख दिया परन्तु वह चिट्ठी अभी उसी के हाथ मे थी कि इतने ही में उसका पति घोड़े पर चढ कर परदेश से आ गया और उसका घोडा दरवाजे पर हिनहिनाने लगा ॥३॥

अपनी स्त्री को कायस्थ के दरवाजे पर खडा देख कर वह कहने लगा कि ए मेरी स्त्री तुम वेश्या हो और वह कायस्थ दगाबाज है। तुम किस कारण उस कायस्थ के दरवाजे पर खडी थी ॥४॥

---

१. काला तथा हरा रंग। २. सुन्दरी। ३ कायस्थ। ४. राजा, पति के लिए आदर-सूचक शब्द ५ हिनहिनाना ६ वेश्या ७. कारण लिए ८ खड़ी

स्त्री ने आहत होकर उत्तर दिया कि मैं अवश्य ही वेश्या हूँ और वह कायस्थ दगाबाज है। ए राजा ! तुम्हारे कारण से अर्थात् तुम्हारे पास पत्र लिखवाने के लिए कायस्थ के दरवाजे पर खड़ी थी ॥५॥

विशेष—गावो में लिखने पढने का काम प्राय कायस्थ लोग ही किया करते है। यदि किसी को रुपया देना या दिलवाना होता है तो वहाँ भी सर खत (हैण्ड नोट) लिखने का काम कायस्थ ही किया करते है। इसी कारण यह स्त्री अपने पति के पास पत्र लिखवाने के लिए कायस्थ के घर जाती है। इससे पति के प्रति उसके प्रेम की अधिकता स्पष्ट प्रकट होती है।

गवँई के मर्द जीविका के लिए परदेस चले जाते हैं। वहाँ जाकर वर्षों तक न तो कोई चिट्ठी भेजते हैं और न अपने बाल बच्चों को खाने के लिए रुपया ही। जब वे कमाई कर दो-चार वर्ष के बाद घर आते है तो अपनी स्त्री से घर का समाचार पूछने की तो बात दूर रही उलटे उसके चरित्र पर आशंका करने लगते है। कुछ मनचले तो अपने साथ 'सौत' भी लिए आते हैं। ऐसी घटनाये प्रायः हुआ करती है। इससे इन मर्दों की हृदयहीनता तथा दुष्टता का परिचय मिलता है। ऊपर के गीत में इसी का सुन्दर चित्रण किया गया है।

१५३. सन्दर्भ—किसी कुलटा नायिका की उक्ति नायक के प्रति।

बगिअइ आउतेया रे साँवलिया सुननेया सावन की बहार। टेक
हसुली पहिरेयो हलका पहिरेयो मूँगन की बहार।
सुन कइ रीझइ उनकइ यार ॥१॥ टेक

वह पर रुनके झुनके बपई,
टड़िया पहिरेयो बाजू पहिरेयो।
ओह पर रुनके झुनके बपई,
सुनके रीझइ उनकइ यार ॥२॥

काड़ा पहिरेयो छड़ा पहिरेयो,
ओहि पर चुटुर मुटुर बाजइ।
सुनिकइ रीझइ उनकइ यार ॥३॥

बेगिअइ आउतेया रे साँवलिया
सुनतेया सावन की बहार ॥

कोई कुलटा स्त्री कहती है कि ए मेरे साँवलिया ! तुम बगीचे मे आना और वहाँ सावन का आनन्द लेना। मैंने हसुली और हलका पहनकर अपना शृङ्गार किया है जिसको देखकर मेरा यार मुझ पर लट्टू हो जायेगा।

मैंने टड़िया और बाजू पहना है। इसको देखकर मेरा पिता बिगड़ता है परन्तु मेरा यार मुझ पर लट्टू हो जाता है २

मैंने कड़ा और छडा पहिना है जिनको पहन कर चलने पर चुटुर चटुर की आवाज होती है। इसे सुनकर मेरा यार रीझता है। ए मेरे प्रेमी! तुम शीघ्र चले आवो जिससे सावन में कजली के गीत तुम सुन सको ॥३॥

१५४. सन्दर्भ—किसी कुलटा स्त्री का वर्णन।

घूमइ निकरी[1] बजरिया अरे साँवलिया। टेक
घूमइ निकरी बजार, हाथे लिही वा रूमाल।
हेरइ[2] निकरी अपने यार, मारइ तिरछी नजरिया[3] ॥१॥
अरे साँवलिया।

गोरी गई बरई[4] दूकान, बीरा खाइ पाँच पान।
बोल बोलईं जइसे मॅयन[5] वा अरे साँवलिया ॥२॥

गई दरजी दूकान, चोली लिही बूटेदार।
वन्दा[6] कसेन[7] बटनदार, चाल चलई उमरइआ[8] ॥३॥
अरे साँवलिया।

गोरिआ क बार जइसे रेसमें क लासा[9];
मोती गुहे बार-बार, मुख देखइ दरपनियाँ[10] ॥४॥
अरे साँवलिया।

गोरिआ क जंघा जइसे कदली कइ खम्भा।
सारी पहिरइ एकहरिआ[11] अरे साँवलिया ॥५॥

कोई स्त्री बाजार घूमने के लिए निकली है। उसने अपने हाथों में रूमाल ले रखा है। वह अपने यार-प्रियतम या प्रेमी को खोजने निकली है और अपनी तिरछी नजरों के द्वारा सब को अपनी ओर आकृष्ट कर रही है ॥१॥

वह सुन्दरी स्त्री पान बेचने वाले—पनहेरी—के दूकान पर गई और पाँच बीड़ा पान खाया। और बहुत ही सुन्दर वाणी बोलती है ॥२॥

वह दर्जी की दूकान पर गई। उसने बूटी दार चोली सिलवाया। उसने अपनी चोली के बन्दों को कस दिया और बडे घर की स्त्री की चाल से चलने लगी ॥३॥

उस सुन्दरी के बाल इतने कोमल और मुलायम हैं कि मालूम होता है कि रेशम के गुच्छे हों। वह बार-बार अपने बालों में मोती को गूहती है और दर्पण में अपना मुँह देखती है ॥४॥

---

१. निकली। २. खोजती है। ३. नजर, कटाक्ष। ४. पान बेचने वाला। ५. मदन, कामदेव के समान सुन्दर रूपवाली। ६. बन्द। ७. कस दिया। ८. उमराव, रईस आदमी। ९. गुच्छा, लच्छा। १०. दर्पण। ११. एकहरी, बिना पेटीकोट के, कलाई

इस गोरी का जंघा इतना सुन्दर है कि मालूम होता है कि यह केले का खम्भा हो। वह पेटीकोट के बिना ही एकलाई साड़ी पहिनती है जिससे उसका सारा शरीर दिखलाई पड़ता रहता है ॥५॥

विशेष—लोक गीतों में सती स्त्रियों का वर्णन तो प्राय उपलब्ध होता है परन्तु किसी कुलटा का वर्णन संभवत नही पाया जाता। अतः इस गीत को अपवाद स्वरूप ही समझना चाहिए।

१५५ सन्दर्भ—भारत की दीन हीन दशा पर भगवान श्रीकृष्ण से प्रार्थना।

अरे रामा पड़ी भँवर वीच नइया केहू न खेवइया रे हरी ॥टेक॥
भारत के दुःख दूर करइया, आ जा क्रस्न कन्हइया रामा।
अरे रामा तुम बिनु रोवति गइया, बिरिज के वसवइया रे हरी ॥१॥
बिरिदावन में धेनु चरायो, जमुना नीर पिआयो रामा।
अरे रामा दधि माखन के खवइया, बेनु के बजवइया रे हरी ॥२॥
गोपिन के संग रहस[1] रचायो, लीला ललित देखायो रामा।
अरे रामा नख पर गिरि के उठवइया, बृज[2] के बचवइया रे हरी ॥३॥

भारत की नाँव भँवर के बीच मे पड़ गई है परन्तु उसका कोई खेवैया नही है। ए कृष्ण कन्हैया! भारत के दुःख दूर करने के लिए तू आ जा। ए कृष्ण! तुम व्रज को बसाने वाले हो। तुम्हारे बिना गायें रो रही हैं ॥१॥

तुमने वृन्दावन मे गायों को चराया जमुना के जल को पिलाया। तुम दही और माखन को खाने वाले हो तथा वेणु को बजाने वाले हो ॥२॥

तुमने गोपियो के संग रास क्रीड़ा की। उनको अपनी लीला दिखलाया। तुमने अपनी कानी अंगुली के नख पर गोवर्धन पर्वत को उठा लिया। इस प्रकार तुमने व्रज की रक्षा की ॥३॥

बारहमासा

१५६. सन्दर्भ—विभिन्न महीनों में अनुभूत किसी विरह-विधुरा स्त्री के दुःखों का वर्णन।

असाढ़ मास घना घन गरजै,
रिम झिम लगा सँवनवाँ ना।

---

१ रास २ व्रज

भादों मास बिजुलिआ चमकै,
हरि[1] का देखा सपनवाँ ना ।।१।।

कुआर मास कुँअर[2] पख लागे,
कातिक दीपक[3] लेसनवाँ[4] ना।

अगहन मास सुदिन क महिनवाँ,
सब सखी चली गवॅनवाँ ना ।।२।।

पूस मास माँ परै तुसारा,[5]
माघइ काँपइ करेजवा ना।

फागुन मास देवर घर नाहिं,
केहि सॅग खेलउँ फगुनवाँ ना ।।३।।

चइत मास बन टेसु फुलतु हइं,
बइसाखइ लिखइँ अवनवाँ ना।

जेठ मास चलइ धूप काला,
सिर से ढुरइ[7] पसिनवाँ ना ।।४।।

कोई विरह विधुरा स्त्री कहती है कि आषाढ के महीने में बादल जोरो से गरजते हैं और सावन मे पानी रिमझिम रिमझिम बरसने लगता है। भादो में बिजली जोरों से चमकने लगती है। इसी मास मे मैंने अपने प्रियतम के आने का सपना देखा ।।१।।

कुआर (आश्विन) के महीने में पितृ पक्ष होता है और कातिक में आकाश-दीप जलाया जाता है। अगहन का महीना बधुओ के आने-जाने के लिए बड़ा शुभ माना जाता है। इसलिए मेरी सारी सखियो का गवना हो गया और वे अपनी ससुराल चली गई ।।२।।

पूस के महीने मे बडी ठंढक पडती है और माघ मे जाड़े के मारे कलेजा काँपने लगता है। फागुन के मादक मास मे तो देवर घर पर है नही, अब मै किसके साथ होली खेलूं ?

चैत मे टेसू का फूल बन मे खिलता है। वैसाख के महीने में प्रियतम ने अपने घर आने के बारे में लिखा है। जेठ मे धूप बड़ी तेज होती है और लू चलती है। सिर से पसीना सदा नीचे गिरता रहता है ।।४।।

---

१. प्रियतम। २. पितृपक्ष। ३. आकाश-दीप। ४. जलाना। ५. जाड़ा, शीत। ६ आगमन, आना ७ गिरता है

१५७. सन्दर्भ—विभिन्न मासों में अनुभूत किसी विरहिणी स्त्री के कष्टों का वर्णन।

लागे हइ पूस जिअरा भये दुइ टूक;
जरइ नइहर क रहनवाँ,[1] अरे साँवलिया ॥ १ ॥
लागे हइँ माघ जिअरा होइ गये बेहाल;
जाड़ा मरउँ बिनु ओढनवाँ[2] अरे साँवलिया ॥ २ ॥
लागे हइँ फगुनवाँ घरवा नाही मोर देवरवा,
के संग खेलउँ फगुनवाँ[3], अरे साँवलिया ॥ ३ ॥
लागे हइँ चइतवा पिया होइ गये ठकइचवा[4];
केतना महउँ ओरहनवा[5], अरे साँवलिया ॥ ४ ॥
लागे हइँ बइसाख, सोवइ सवती[6] के साथ;
नाही मानइ मोर कहनवा[7] अरे साँवलिया ॥ ५ ॥
लागे हइँ जेठ पिया पुरवइँ[8] आपनि टेक;
माड़ी भीजथ[9] पसिनवा अरे साँवलिया ॥ ६ ॥
लागे हइँ असाढ़ देव बरसइ मूसलधार;
गोरी भीजथि अँगनवाँ अरे साँवलिया ॥ ७ ॥
लागे हइ सावनवाँ गोरी झूलथि पलनवाँ;
गोद लिहीं हइ ललनवाँ[10] अरे साँवलिया ॥ ८ ॥
लागे हइ भदवना गोरी झटकइ[11] आपन केश,
मुख देखइँ दरपनवाँ[12] अरे साँवलिया ॥ ९ ॥
लागे हइ कुआर मँइआँ बइठें हइ दुआर;
कइसे निकरउं समनवाँ अरे साँवलिया ॥ १० ॥
लागे हइँ कतिकवा घरवा नाही मोर पियवा;
केहि पर करउँ मइँ सिंगरवा[13] अरे साँवलिया ॥ ११ ॥
लागे हइँ अगहनवा, बिनु पिया अनमनवा[14];
अब कइसे काटइँ दिनवा, अरे साँवलिया ॥ १२ ॥

---

१. रहना, निवास। २. ओढ़ने का वस्त्र। ३. होली। ४. परदेसी ? ५. उलाहना, उपालम्भ। ६ सपत्नी। ७. कहना, कथन। ८. पूरा करता है। ९. भीगता है। १०. लड़का। ११. साफ करना। १२. शीशा। १३. शृंगार। १४ उदासीन।

कोई विरहिणी स्त्री कहती है कि पूस का महीना लग गया । पति वियोग के कारण मेरा हृदय दो टुकड़ों में हो गया । ए सांवलिया ! अब मायके में रहना-निवास करना मुझे आग के समान जला रहा है ॥१॥

अब माघ का महीना लग गया । मेरा हृदय विह्वल हो गया है । ओढ़ना के बिना मैं जाड़े के मारे मर रही हूँ ॥२॥

अब फागुन लग गया, मेरा देवर घर मे नही है । अब मैं किसके साथ फागुन अथवा होली खेलूँगी ॥३॥

अब चैत का महीना आ गया । मेरा प्रियतम परदेसी हो गया अर्थात् जीविका के लिए परदेस को चला गया है । अब मैं कितने दिनों तक—उलाहना सहूँगी ॥४॥

अब वैसाख का महीना आ गया । मेरा पति मेरी सौत के साथ परदेस में सो रहा है । वह घर लौट आने के लिए मेरी प्रार्थना को नही सुनता ॥५॥

अब जेठ का महीना आ गया । मेरा पति अमुक वर्षों तक परदेस मे रहने की अपनी टेक को निभा रहा है । गर्मी की भीषणता से पसीने के कारण मेरी साड़ी भीज रही है ॥६॥

आषाढ़ का महीना आ पहुँचा । अब दैव मूसलाधार वर्षा करने लगे हैं । मैं गोरी आँगन में भीज रही हूँ ॥७॥

अब सावन का महीना लग गया । वह गोरी अपनी गोदी मे बालक को लेकर पालने मे झूला झूल रही है ॥८॥

अब भादों का महीना आ गया । गोरी स्त्री (विरहिणी स्त्री) अपने बालों को झटक रही है अर्थात् साफ कर रही है और अपने मुख को शीशे में देख रही है ॥९॥

(भादों के महीना मे पति परदेस से आ गया)

अब कुआर (आश्विन) का महीना आ गया । मेरा प्रियतम घर के द्वार (बैठका) मे बैठा हुआ है । मैं उसके सामने कैसे निकलूँ ॥१०॥

परन्तु कार्तिक का महीना आते ही पति परदेस चला गया । अब वह घर पर नहीं है । अतः मै किस पर शृङ्गार करूँ अर्थात् किसको प्रसन्न करने के लिए आज साज शृङ्गार करूँ ॥११॥

अब अगहन का महीना आ गया । प्रियतम के बिना मेरा मन बड़ा उदासीन है । ए साँवलिया ! अब मैं अपना दिन कैसे काटूँगी ? ॥१२॥

बारह मासा में प्रिय के वियोग के कारण प्रत्येक मास में विरहिणी के द्वारा

अनुभूत कष्टो का वर्णन होता है। इस गीत मे भी इसी परम्परा का पालन किया गया है। बारहमासा का प्रारम्भ प्रायः आषाढ़ के महीने से हुआ करता है परन्तु यह गीत पूस के मास से शुरू होता है।

१५८. सन्दर्भ—पति के वियोग में किसी विरहिणी का प्रलाप।

मोरी कउन[1] हरइ[2] तन पीरा बिना हो रघुबीरा।
मइ[3] तउ कइसे धरउ जिय धीरा, बिना हो रघुबीरा ॥१॥

असाढ़ मास दइया गरजइ घुमड़इ,
सावन गेड़ुली[4] गम्भीरा।
भादउ बिजुली तड़ तड़ तड़कइ,
मोर थर थर काँपइ सरीरा ॥२॥ बिना हो०

क्वार मास बरसा भए थोरा,
कातिक माँ बहु भीरा।
अगहन मास गोरी गवने जातु है,
पहिरि कुसुम[5] रग चीरा ॥३॥ बिना हो०

पूस मास तउ हनइ[6] तुसारा[7]
माघौ माँ बरसइ नीरा।[8]
फागुन फाग केकरे संग खेलउँ,
मइ केहि पर छिरकउँ अबीरा[9] ॥४॥ बिना हो०

चइत मास फूले बन टेसू[10]
बइसाखई धूर उड़ाई।
जेठ मास जवते लागे हइ,
पिया मोर धाइ के आई ॥५॥

मोरी कवन हरइ तन पीरा।
बिना हो रघुबीरा ॥

कोई विरहिणी स्त्री कहती है कि मेरे शरीर की पीड़ा को कौन हरेगा अर्थात् दूर करेगा। मै अपने हृदय मे धैर्य्य कैसे धारण करूँ ॥१॥

आषाढ़ मास में बादल घुमड़ते और गरजते रहते है और सावन में बादलों का दल आकाश मे घूमता रहता है। भादो मे बिजली तड़तड़ करती हुई चमकती रहती है। उसकी भयंकर आवाज को सुनकर मेरा शरीर काँपने लगता है ॥२॥

---

१. कौन। २. हरेगा। ३. मै। ४. गोलाकार बादल ? ५. कुसुम्भी रंग। ६. मारता है, पड़ता है। ७. जाड़ा। ८. जल- पानी। ९. गुलाल। १० पलाश।

कुवार के महीने मे ब ा जोगी सी होती है कार्तिक मे गगा मे स्नान करने वालों की बड़ी भीड़ होती है ।" अगहन महीने मे लड़कियाँ कुसुम्भी रंग की साड़ी पहिन कर गवने जाती है ॥३॥

पूस के महीने मे घनघोर जाड़ा पड़ता है । माघ मे मघवट बरसता है । गोरी स्त्री कहती है कि फागुन के महीने मे मैं किसके साथ फाग खेलूँगी और किस पर गुलाल छिरकूँगी ॥४॥

चैत के महीने में बन मे पलाश फूलता है । वैसाख मे धूल उड़ती है । परन्तु जेठ के महीने के लगते ही मेरा प्रियतम दौड़ कर घर आ गया । रघुवीर प्रिय के बिना मेरे शरीर की पीड़ा को कौन हरेगा ॥५॥

१५६. सन्दर्भ—पति के वियोग में किसी विरहिणी का करुण प्रलाप । प्रत्येक मास में अनुभूत कष्टों का वर्णन ।

लागे मासवा असाढ़ बाढ़ै नदिया औ नार[1] ।
कइसे राति दिना गाढ़[2] ननदो के बिरना[3] ॥१॥

आइ साँवा[4] कोदइ[5] कइ बोआइ हर[6] मइ कइसे नधवाई[7] ।
बिना ननदी के भाई, बैठी सोचइ अँगना ॥२॥

लागे सावन का महीना, गोरी करथी[8] सिंगार ।
गुँहइ[9] मोती बारम्बार सब पहिरि के गहना ॥३॥

गाँवइं कजरी के गीत, हमका लागइ अनरीत[10] ।
घरमां नाही मोरा मीत, के झुलावइ[11] झूलना ॥४॥

लागइ भादों का महीना, बहै जमुना गभीरा ।
उठइ बिरहिन का पीरा ।
पिया कइगयन करार[12] जब लियायन[13] गवना ॥५॥

लागे मासवा कुआर घर भावे ना दुआर ।
छल कइलन बड़ा भारी ननदी के बिरना ॥६॥

विजा दसमी के मेला, पास एकउ ना अधेला[14] ।
गोरी सोच थी अकेला, मेला[15] होइगा सपना ॥६॥

लागे कातिक का महीना, अब ना चूअइ पसीना ।
हमरी महल अँधियारी, के ले बावइ[16] दियना[17] ॥८॥

---

१ नाला । २. कष्ट मय । ३ भाई । ४ एक मोटा अन्न । ५. कोदो । ६ हल । ७. हल चलाना । ८ करती है । ९. गूँथती है । १० बुरा । ११. झुलावेगा । १२. शर्त । १३ लिया ले आया । १४. कौड़ी । १५. मिलना । १६. जलायेगा । १७. दीपक ।

लागे मासा अगहन, परी दुनियां मां लगन[1]।
आवइ ननदी के सुदिन, पिया न मानै कहना ॥९॥

घर मा नाही ननदी के भाई, अहइ[2] उमिर लरिकाई।
बिना ननदी के बिरना, के पठावइ[3] गवना ॥१०॥

लागे मसवा[4] जो पूस, दिन भइले अब फूस[5]।
जाडा धावै जिया मार के उठावै उठना ॥११॥

लागे माघ अब मास, सइयाँ कइगे निरास।
मोरा मनवा उदास, ननदी के बिरना ॥१२॥

जबसे लागे ऋतु बसन्त, घर मा नाही मोरा कन्त[6]।
गुण्डा होइगो साधू सन्त, अब कराथी[7] भजना ॥१३॥

लागे फागुन महीना, अब चूअइ ना पसीना।
सइयाँ आवइ ना रसीना[8], ननदी के बिरना ॥१४॥

रूख डारइँ पाती झार[9], दूजै फगुआ धमार।
गुण्डा गावत हइ कबीर, केह पर डारउँ हम अबीर।
घर घर बाजइ बजना, ननदी के बिरना ॥१५॥

चैत फूले री फुलारी, बैठे रोवइ धुकुमारी।
मइल[10], भइल मोर सारी, ननदी के बिरना ॥१६॥

लागे मास वा बैसाख, नाही मिलने की आस।
घर मां नाही मोरा पीउ, मोरा लागे नाही जीउ।
जोरे[11] पिय के कमाई, ससुरे के रहना ॥१७॥
लागे मासवा औ जेठ, मन भइले अब हेठ[12]।
कबले[13] अइहे मोर जेठ[14], ननदी के बिरना ॥१८॥

यह गीत भी बारहमासा है। इसमे बिरहिणी स्त्री प्रत्येक मास में अनुभूत अपने कष्टों का वर्णन करती हुई कहती है कि आषाढ का महीना लग गया। नदी और नालों मे बाढ़ आ गई। मेरी ननद के भाई ने (मेरा पति) मेरे लिए रात और दिन कष्ट मय बना दिया है ॥१॥

अब सॉवा और कोदो के बोने का समय आगया। मैं हल कैसे जोतवाना प्रारम्भ करूँ? मैं ननदी के भाई (पति) के बिना, आँगन में बैठ कर शोक कर रही हूँ ॥२॥

---

१. विवाह। २ है। ३ भेजेगा। ४ मास, महीना। ५. छोटा। ६. पति। ७ कहूँगी। ८. रसीला, रसिक, प्रेमी। ९. पतझड़। १०. मैली। ११. [illegible]। १२ नीच, छोटा। १३ कब तक। १४ पति का जेठा भाई।

सावन का महीना आ गया अब वह सुन्दरी स्त्री शृङ्गार कर रही है वह सब गहनों को अपने शरीर में पहिन कर अपने बालों में मोतियों को गूँथ रही है ॥३॥

मेरी सखियाँ सावन के महीने में कजली का गीत गाती है। परन्तु यह मुझे बुरा लगता है, मुझे दुःख प्रदान करता है। मेरा मित्र अर्थात् पति मेरे घर में नही है। अतः मुझे झूले पर कौन झुलायेगा ॥४॥

भादों का महीना अब पहुँच गया। गभीर (अथाह जल वाली) यमुना बह रही है। अत विरहिणी के शरीर में पीडा हो रही है। जब गवना कराने के लिए मेरा पति गया था तब उसने यह शर्त किया था कि मै भादों मे परदेस से घर लौट आऊँगा ॥५॥

कुँवार का महीना आ गया। अब मुझे घर और द्वार अच्छा नही लगता। मेरी ननद के भाई ने मेरे साथ बड़ा भारी छल किया ॥६॥

कुवार के महीने मे विजया दशमी का मेला लगता है। परन्तु मेरे पास एक कौड़ी भी नहीं है जिससे कोई सामान खरीद सकूँ। गोरी एकान्त मे बैठ कर सोच रही है कि मेरे लिए मेला देखना (पति से मिलना) कठिन हो गया है ॥७॥

कातिक का महीना आ गया। अब गर्मी के कारण शरीर से पसीना नही चू रहा है। हमारे इस अन्धकार भरे घर मे दीपक कौन जलायेगा ॥८॥

अगहन का महीना आ पहुँचा। अब दुनिया में विवाह का लग्न पड़ गया अर्थात् विवाह होने लगा। ननद के ससुराल जाने का समय (सुदिन) आ गया। परन्तु प्रियतम मेरा कहना नहीं मानता है ॥९॥

घर में मेरी ननद का भाई नही है। आयु अभी छोटी है। जब घर मे मेरा पति ही नहीं है तब मेरी ननद को गवने मे कौन देगा अर्थात् उसको गवना मे देकर उसे ससुराल कौन भेजेगा ॥१०॥

वह स्त्री कहती है कि अब पूस का महीना आगया। अब दिन छोटे होने लगे। जाडा अब हृदय को बड़ा कष्ट देता है ॥११॥

अब माघ का महीना लग गया। घर न लौट करके प्रियतम ने मुझे बडा निराश कर दिया। ए मेरी ननद के भाई अर्थात् पति तुम्हारे बिना मेरा मन बड़ा उदास रहता है ॥१२॥

जब से बसन्त ऋतु लगी है तब से मेरा कन्त--पति घर में नही है। सब साधू और सन्त अब झूठे हो गये। क्योकि मेरे पति के घर लौटने के सम्बन्ध मे उन्होने जो भविष्य वाणी की थी वह सब असत्य निकली ३

फागुन का महीना आ पहुचा अब गर्मी के कारण पसीना नही चूता है . मेरा रसिक पति घर नहीं आता है ॥१४॥

अब वृक्षों मे पत्ते झडने लगे। फगुआ के गीत गाये जाने लगे। गुण्डा लोग 'कबीर' गाने लगे। अब मै किस पर गुलाल डालूँगी। घर, घर में बाजा बज रहा है ॥१५॥

चैत के महीने मे फुलवारी में फूल फूलते है। सुकुमारी विरहिणी स्त्री बैठे हुए रो रही है। मेरी साड़ी मैली हो गयी ॥१६॥

अब बैसाख का महीना आ गया। अब प्रियतम से मिलने की आशा नहीं है। घर मे मेरा प्रियतम नही है। अत मेरा मन नही लग रहा है। परदेस मे जीविकोपार्जन करने वाले मेरे पति की कमाई में आग लग जाय। उसकी सारी कमाई नष्ट हो जाय। ससुराल में निवास भी अब व्यर्थ है ॥१७॥

जेठ का महीना अब आगया। मेरा मन अब अत्यन्त उदास है। मेरी ननद का भाई (पति) परदेस से लौटकर कब तक घर आयेगा ॥१८॥

यह बारहमासा क्या है किसी विरहिणी के कष्टमय जीवन का महाकाव्य है। पति के बिना उस स्त्री को कितना कष्ट उठाना पड़ रहा है इसका बड़ा ही सुन्दर चित्रण इस गीत मे हुआ है।

[खण्ड : तीन]

जाति संबंधी-गीत

- अहीरों व धोबियों के गीत (बिरहा)
- कहारों के गीत (कोहरऊ)
- चमारों के गीत (चमरऊ)

बिरहा

१६०. **सन्दर्भ—किसी रूप गर्विता स्त्री का वर्णन।**

तलवा माँ[1] चमकइ ताल की नरइआ[2];
डाड़े मेड़े[3] गोहुआ कइ बालि।
सभवा मां चमकँइ हो पिया की पगडिया;
मड़ये[4] माँ टिकुली[5] हमारि॥

कोई स्त्री कहती है कि तालाब में उस ताल की मछली सुशोभित होती है। गेहूँ की बाली हरी-भरी दिखाई पडती है। सभा में मेरे पति की पगडी है और घर के आँगन या मण्डप में मेरी टिकुली सुन्दर लगती है।

१६१. **सन्दर्भ—सीता का स्वरूप-वर्णन तथा लंका में निवास का उल्लेख।**

पतरी अँगुरिआ रानी सीता कइ भइआ;
अइसे मुँदरी[6] वरन[7] करिहाऊ[8]।
अरे ठाढ़ि बिसूरइ[9] गढ़ लका माँ;
अइसे सुधिआ छोड़ेआ[10] भगवान्॥

रानी सीता की अँगुलियाँ बहुत पतली है और उनकी कमर इतनी पतली [illegible] अँगूठी। भगवान् राम ने उनकी सुधि भुला दी। अत. वे लंका में अशोक के नीचे खड़ी रो रही है—दु खित हो रही है।

१६२. **सन्दर्भ—धोबी की उक्ति धोबिन के प्रति।**

लाली लाली रोटिआ वनाइउ भरेठिनि[11],
चले होई ककरा के घाट।
तीनि चीजि जिनि भूलिउ मोरी धोबइनि,
हुकवा,[12] तमाकू अउ[13] आगि॥

धोबी अपनी स्त्री से कहता है कि तुम मोटी-मोटी, लाल-लाल रोटिय

---

१. में। २. मछली। ३. मेड़। ४. मण्डप। ५. सिर की बिन्दी (टिकुली)। [illegible] ७. वर्ण, रंग समान। ८ कमर कटि। ९ दु:ख करती हैं। १०. [illegible] या ११ धोबिन १२ हुक्का १३ और।

बनाना जिन्हें लेकर कपड़ा धोने के लिए घाट पर चलना होगा। ए मेरी धोबिन! तुम इन तीन चीजों को अपने साथ ले जाना मत भूलना—(१) हुक्का। (२) तम्बाकू और (३) आगि।

१६३ सन्दर्भ—कपड़ा धोने के लिये धोबी का घाट को प्रस्थान करना।

लादि फाँदि के चला भरेठा[1],
आई बदरिआ फेरि।
कोठवा परसे भरेठिन पुकारइ,
लावा गदहवा फेरि[2]॥

धोबी कपड़ा धोने के लिये सब सामान लेकर के चला परन्तु इतने में बादल घिर आये। तब कोठे पर चढ़ी हुई उसकी स्त्री ने पुकार कर उससे कहा कि गदहे को लौटा ले आवो। वर्षा आने के कारण अब घाट पर जाने की आवश्यकता नही है।

१६४. सन्दर्भ—भाई तथा पुत्र का आदर्श-वर्णन।

अरे भाई बखानी रामचन्दर, जउन[3],
लहुरे[4] भाई लछिमन कइ सेआ[5] कीन।
पुतवा बखानी सरवन पुतवा क,
जवन नान्हेन[6] काँवरि धरि[7] लीन॥

रामचन्द्र के समान प्रेमी भाई की प्रशंसा करनी चाहिए जिन्होने अपने छोटे भाई लक्ष्मण को शक्ति लग जाने पर उसकी इतनी सेवा की। श्रवण कुमार के समान पुत्र प्रशंसनीय है जो बाल्यावस्था ही मे अपने वृद्ध माता और पिता को काँवरि में बैठा कर एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाता था तथा इस प्रकार उनकी सेवा करता था।

१६५. सन्दर्भ—माता-पिता के प्रति कृतघ्नता का फल।

गुरू मेट ना गाइ बिरहवा,
ना गंगा भेटि[8] करी असनान[9]।
जे मेंटइ माता पिता कइ करनिआ[10],
उनका[11] जीवइ[12] नरक होइ जाइ॥

गुरू की आज्ञा के बिना मैं विरहा नहीं गा सकता और गंगा को छोड़ कर

१. धोबी। २. लौटा लावो। ३. जो। ४. छोटा। ५ सेवा। ६ लड़कपन ही में। ७. धारण किया ८ छोड़ कर ९ स्नान १० करनी उपकार ११ उनका १२ जीवन

दूसरी नदी में स्नान नहीं कर सकता। जो लोग अपने माता-पिता के द्वारा किये गये उपकारों को भूल जाते हैं या उन्हें नष्ट कर देते हैं उनका जीना नरक के समान है।

१६६. सन्दर्भ—नदी और तीर्थों की महत्ता।

गंगा अहइ[1] बड़ी गुदावरी,
तीरथि बड़ो परयाग[2]।
हो सबसे बड़ी अजोधा नगरी,
जँह भगवान् लेहेन[3] अवतार ॥

कोई भक्त कहता है कि गंगा और गोदावरी श्रेष्ठ नदियाँ हैं और प्रयाग तीर्थों में सबसे बड़ा है। नगरी में सबसे बड़ी अयोध्या नगरी है जहाँ साक्षात् भगवान् रामचन्द्र जी ने जन्म लिया था।

१६७. सन्दर्भ—किसी भक्त के द्वारा राम का दर्शन।

हरे राम क देखा हइ राम नगर माँ,
खेलइ लरिकवा साथ।
हरे गोड़वा माँ सोहइ लाल पनहिआँ[4],
हाथे माँ धनुहा[5] बान ॥

कोई भक्त कहता है कि मैंने रामनगर में रामचन्द्र को देखा है। वे लड़कों के साथ वहाँ खेल रहे थे। उनके सुन्दर पैरों में लाल जूता सुशोभित था और वे अपने हाथ में धनुष तथा बाण लिये हुये थे।

१६८ सन्दर्भ—नायक का नायिका के प्रति हास्यजनक उक्ति।

आरे गउआ कइ[6] नइहर[7] बाँस बरइली[8],
भइँसिउ घाघरा[9] पार।
अरे गोरिआ कइ नइहर जमुना के पारवा,
जँह मोलउ[10] नारि बिकाइ ॥

गाय का मायका तो बरेली में है परन्तु भैंस का मायका घाघरा अर्थात् सरयू के उस पार है। मेरी स्त्री का मायका जमुना नदी के उस पार है जहाँ स्त्रियाँ मूल्य देकर खरीदी जाती हैं अर्थात् बिकती हैं।

इस बिरहे का भाव यह है कि बरेली की गायें तथा सरयू के पार की भैंसे अच्छी तथा अधिक दूध देने वाली होती हैं।

---

१. है। २. प्रयाग। ३ लिया था। ४. जूता। ५ धनुष। ६. का। ७. मायका ८ बरेली ९ सरयू १० मोल से, दाम लेकर।

१७२. सन्दर्भ—गंगा जी के प्रति किसी की उक्ति ।

हरे ए गंगा माई तू बाढ़ति आवा[1],
फाटत आवइ कगार[2] ।
हरे ए गंगा माई तोरी छतिया चलावइँ नाउ नवइआ,
पँजरी[3] हुलल[4] हइ बाँस ।।

कोई भक्त कहता है कि तुम अधिक जल के कारण बढ़ती चली आ रही हो और अपने किनारों को गिराती जा रही हो । ए गगा माता ! तुम्हारी छाती (जल की सतह) पर हम लोग नाव चलाते है और उसको खेने के लिए तुम्हारे जल मे लम्बा बाँस डालते हैं ।

१७३. सन्दर्भ—विभिन्न देवियो द्वारा वाद्य और नृत्य ।

अरे अबला देवी तबला बजावइ,
कड़े कइ सीतला[5] बजावइ झाँझ ।
अरे विन्धाचल माई खँझड़ी बजावइ,
नाचइ भूत, बैताल ।।

कोई कहता है कि अबला देवी तो तबला बजा रही है और सीतला देवी झाँझ बजा रही है । बिन्धाचल की अष्टभुजी देवी खँजडी बजा रही है और भूत तथा बैताल नाच रहे है ।

१७४ सन्दर्भ—कलकत्ता नगर का वर्णन ।

अरे देखइक चाही[6] भइया सहर कलकतवा,
अरे घूमइ क चाही किला कइ मइदान[7] ।
अरे करइ क चाही काली जी के दरसनवा,
भागीरथी गंगा असनान[8] ।।

कोई कहता है कि कलकत्ता शहर अवश्य देखना चाहिए और वहाँ किला का मैदान घूमना चाहिए । कलकत्ते की काली जी का दर्शन तथा वहाँ भागीरथी (गंगा) मे स्नान अवश्य करना चाहिए ।

१७५. सन्दर्भ—देवी की पूजा का वर्णन ।

अरे ऊँच चउतरा देवी सारद कइ
ओनइ[9] नीम कइ डारि ।
अरे तरा[10] से मलिनिआँ फुलवा चढ़ावइँ,
परा धजा[11] फहराइ ।।

---

१. बढ़ती आती हो । २. किनारा । ३. बगली, पार्श्वभाग । ४. घुसेड़ना । ५. चेचक की अधिष्ठात्री देवी सीतला । ६ चाहिए । ७. मैदान । ८ स्नान । ९. झुकी हुई १० नीचे से ११ ध्वजा

कोई भक्त कहता है कि शारदा देवी का चबूतरा जिस पर उनकी मूर्ति स्थापित है बहुत ऊँचा है। उस पर नीम की डाल झुकी हुई है। नीचे से मालिन उस मूर्ति पर फूल चढ़ाती है और चबूतरे के ऊपर ध्वजा फहरा रही है।

१७६. सन्दर्भ—बिरहा की उत्पत्ति।

हरे ना बिरहा कइ करी एती खेती,
नाही करी रोजिगार।
हरे बिरहा होइ गऊ के पछवा,
जउ सुघर[1] होइँ चरवाह[2]॥

कोई गवैया कहता है कि बिरहा की न तो खेती होती है और न इसका व्यापार ही होता है। यदि पशुओं का चराने वाला अच्छा हो तो गाय के पीछे बिरहा की उत्पत्ति होती है।

भाव यह है कि गाय को चराते समय चरवाह के मुँह से बिरहा आप से आप निकलने लगते हैं।

१७७ सन्दर्भ—आम के फलने और गिरने का वर्णन।

हरे आम फरे पतलुकवा,[3]
डार डार रखवार[4]।
हरे एक आम गिरे ननदी कि लुगरी,[5]
परिगा[6] ननदी कि लुगरी माँ दाग॥

कोई स्त्री कहती है कि आम वृक्ष की सबसे ऊँची डाल पर फलता है और प्रत्येक डाल पर फलने वाले आमों की रक्षा करने वाला रखवाला मौजूद है। एक आम मेरी ननद के फटी पुरानी साड़ी पर गिर गया जिससे उसकी साड़ी में आम का दाग लग गया।

[आम के चोप का दाग कपड़े में लग जाने पर छुड़ाने पर भी नहीं छूटता।]

१७८. सन्दर्भ—स्त्री की उक्ति अपने पति से।

अरे भईंसी चलइ भुइँ धमकइ,[7]
कुर्मिनि डाढ़ि तँवाईं[8]।
कुर्मी तोहरे बाप कइ दाढ़ी जरवइ,
उढरि[9] अहिर के जाब।

भैंस के चलने से पृथ्वी कम्पित होने लगती है। कुर्मी की स्त्री इस बात को

---

१ सुघड़, सुन्दर। २. गायों को चराने वाला। ३ सबसे ऊँची डाल का अग्रभाग। ४ रक्षपाल, रखवाली करने वाला। ५. फटी, पुरानी साड़ी। ६. पड़ गया ७ कम्पित होना ८ दुखी होना ९ रक्षिता निकली हुई

देख कर दुःखी होती है। वह अपने पति से कहती है कि ए कुर्मी ! तुम्हारे पिता की दाढ़ी जल जाय क्योंकि यह भैंस तुम्हारे यहाँ से अहीर के घर जा रही है।

यहाँ भैंस का लाक्षणिक अर्थ काली कलूटी रक्षिता स्त्री से भी हो सकता है जिसमें अहीर के घर चले जाने पर कुर्मी के पिता के कलंक की बात कही गई है।

१७९. सन्दर्भ—पशुओं के चराने का उल्लेख।

अरे गउआ चरावइँ अहिर कइ बिटिआ।
भइसिउ[1] चरावइँ गगेल[2] (गगेल)।
अरे भेड़िआ चरावइ गड़रिआ कइ बिटिआ,
बइनउ[3] रन बन पीटइ सिहोर[4]॥

कोई कहता है कि अहीर की लड़की गाय चराती है और गगोल जाति की लड़की भैंस चराती है। गड़ेरिया की बिटिया भेड़ चराती है और जंगल मे सिहोर वृक्ष के फल को तोड़ती रहती है।

१८०. सन्दर्भ—बबूल के पेड़ से गाड़ी बनाने का उल्लेख।

अरे कोटवा कि आरी[5] बबुरी[6] बोआयेउँ,
अरे बबुरी बाढ़ि[7] लागि अकास।
अरे बबूरी कटाइ लढ़िया[8] बनायुँ,
चिलबिल[9] काटि जुआरि[10]॥

कोई किसान कहता है कि मैंने किले के पास बबूल का वृक्ष बोआ था जो बढ़कर के आकाश में लग गया अर्थात् बहुत ऊँचा हो गया है। उस बबूल के वृक्ष को काट कर मैंने लकड़ी की गाड़ी बनाई और चिलबिल के पेड़ को काट कर उसका धुरा बनाया।

विशेष—बबूल की लकड़ी बहुत मजबूत होती है जो गाड़ी बनाने के काम मे आती है।

१८१. सन्दर्भ—स्त्री का रूप बनाकर के गोदना गोदने के लिए श्रीकृष्ण का राधा के यहाँ जाना।

गोदना गोदइ[11] चले बनवारी,
तन पइ पहिरि कुसुम[12] रंग सारी।
गलिया गलिया माँ पुकारी;
बृज नारी के लिए॥१॥

---

१. भैंस को। २. जाति विशेष। ३. वे तो। ४. वृक्ष विशेष। ५. पास। ६. बबूल का वृक्ष। ७. बो आया। ८ बढ़कर, गाड़ी। ९ वृक्ष विशेष। १०. धुरा ? ११ गोदने के लिए। १२ कुसुम्भी रंग।

अइसे मजा रहो बनवारी;
लखि के रूप अपसरा[1] हारी।
माँग मोतियनि से सँवारी;
राधा प्यारी के लिए ।।२।।

राधा सुनि के खबर पहुँचावईं;
अपने महलन बीच बोलावईं।
वशीवट चट पट दौड़ावईं,
लीलाहारी के लिये ।।३।।

जाके बोली सखी सयानी,
बतिया मानो[2] मोर मस्तानी।
चलि के गोदना गोदावा;
सखी दिलदारी के लिए ।।४।।

संग मे चले स्याम जदुराई;
पतरी कमर तीन बल खाई।
सिर पर दउरी[3] धरे बनाई;
मिउकुमारी[4] के लिए ।।५।।

राधा निरखि रूप भई आसिक,[5]
गोदना गोदउ दिल का माफिक।
सूरुज देवता गोदउ गोइयाँ;[6]
उजियारी[7] के लिए ।।६।।

सुइया चुभुर चुभुर[8] चलाइ;
सखिया चौंकि चौंकि रहि जाई।
तनका नही रही अब होस,[9]
सुन्दर सारी के लिए ।।७।।

ललिता कहा सखी अलबेली,
नकली पहिरि के मोहन चोली।
आये बरसाने की टोली;
ठगहारी[10] के लिए ।।८।।

---

१. अप्सरा। २. स्वीकार कर लो। ३. छबडी। ४. राधा। ५. निछावर, प्रेमी। ६ मित्र प्रेमी। ७ प्रकास। ८ चुभाते हुए। ९ होश। १० ठगने या धोखा देने के लिए

श्रीकृष्ण कुसुम्भी रंग की साडी पहिन कर तथा स्त्री का वेस बनाकर गोदना गोदने के लिए चल पडे और गली गली मे व्रज की नारी—राधा—के लिए पुकार मचाने लगे ॥१॥

वनवारी के इस रूप को देखकर किसी गोपी ने कहा कि तुम इसी प्रकार से अपने को सुसज्जित किये रहो। तुम्हारे रूप को देखकर अप्सराये भी हार मान जाती है। तुमने राधा को प्रसन्न करने के लिए मोतियो से अपनी माँग को सजा रखा है ॥२॥

राधा के पास श्रीकृष्ण के आने की जब खबर पहुँची तब उन्होने लीला करने मे चतुर श्रीकृष्ण को बुलवाने के लिए वशीवट को अपनी दूतियो को भेजा और अपने महल मे उन्हे बुलाया ॥३॥

गोपियो ने कृष्ण से कहा कि मेरी मस्तानी—आनन्द से भरी हुई बात को मानो। हमारी दिलदार—सहृदय-सखी (राधा) को गोदना गोदो ॥४॥

गोपियों की इस बात को सुनते ही श्रीकृष्ण अपने सिर टोकरी लेकर राधा के लिए चल पड़े। उनकी कमर बहुत पतली थी अत सिर पर भारी बोझ होने के कारण वह बार-बार लचक जाती थी ॥५॥

राधा श्रीकृष्ण के इस रूप को देखते हो नितान्त आसक्त हो गई और उसने कहा कि तुम मेरे मन के अनुरूप गोदना गोदो। तुम मेरे शरीर पर सूर्य की प्रतिमा को गोदो जिससे प्रकाश होता रहे ॥६॥

श्रीकृष्ण गोदना गोदने समय सुइयो को चुभाते हुए उन्हे चुभुर चुभुर चला, रहे थे। इसे देखकर सखियाँ चौंक पड़ी। इस पीड़ा के कारण राधा बेहोश हो गई ॥७॥

तब अलबेली—सुन्दर—ललिता सखी ने कहा कि श्रीकृष्ण स्त्री की नकली चोली पहिनकर बरसाना मे हम लोगों को ठगने के लिए आये है ॥८॥

विशेष—हिन्दी के अनेक कवियो ने श्रीकृष्ण के द्वारा स्त्री का छद्म रूप धारण कर मनिहारी (चूड़ी पहिनाने वाली) तथा गोदनहारी (गोंदना गोंदने वाली) के वेश मे बरसाना जाकर राधा को चूड़ी पहिनाने तथा गोंदना गोदने का उल्लेख किया है। इसी पुस्तक में पिछले एक लोक—गीत मे श्रीकृष्ण के मनियारी रूप का वर्णन हो चुका है। यहाँ उनका गोंदन हारी रूप प्रस्तुत है। हिन्दी के रीतिकालीन कवि पद्माकर ने राधा के विभिन्न अगो में विभिन्न देवताओ की आकृतियो को गोद का उल्लेख किया है। उनका एक पद्य इस प्रकार है।

"द्वै लिख बाहिन मे व्रजचन्द रु.
गोल कपोलन कुञ्ज बिहारी

त्यों 'पदमाकर' याहि हिये हरि,
गोद गोविन्द गले 'गिरिधारी।
या विधि ते नख से सिख लौं,
लिख नाम अनन्त भवै भव प्यारी।
साँवरे के रंग गोदं दे गात,
अरो गोदनान की गोदन हारी॥''

१८२. सन्दर्भ—चक्रव्यूह तोड़ने के लिए लड़ाई में अभिमन्यु के चले जाने पर उत्तरा का विलाप।

उत्तरा करती है रुदन, हमका छाडि के सजन[1];
सइयाँ केकरी डगरिया[2]; धराइ के गया॥१॥
चकावीहु[3] कठिन जाल, पती भये मोर हवाल[4];
अपने दिल कइ सारी हाल, न बताइ के गया॥२॥
अबही बारी[5] हइ उमर, कइसे करउँ मइ सबर[6];
हमके घोर के जहर, न पिलाइ के गया॥३॥
रहे बड़े बड़े सरदार, केऊ न कुछ करे गोहार[7]।
फूटी भगिया हमार; सिर कटाइ के गया॥४॥
वोझी नइया तू हमार; नाही किहा वहि पार।
मोरे पापिनी क सुधि; विसराइ के गया॥५॥
चारिउ ओरिया[8] निहारी; सती होने क बिचारी।
दिअना[9] जलत मोरी अटारी, आपइ[10] बुझाइ के गया॥६॥
सुधि कबहूँ न भूली; जाइ के अर्जुन से बोली।
हमके फागुन ऐसो होली, न जलाइ के गया॥७॥
चकावीहु मा मरे; हमके छोड़ि के घरे।
सब का मुड़िया[11] तरे; लटकाइ के गया॥८॥

अर्थ स्पष्टतया सरल है।

---

१. साजन पति। २. राह। ३. चक्रव्यूह। ४. व्याकुल। ५. सब्र, सन्तोष। ६ आवाज लगाना, चिल्लाना। ७ ओर दिशा ८ दीपक। ९ आप ही। १० मुण्ड सिर

कोहरऊ

१८३ सन्दर्भ—किसी परदेसी पति को बुलाने के लिए विरहिणी स्त्री का बादल से प्रार्थना।

कउने बन उपजी सुपरिआ,[1] कउन बन नरियर न।
रामा कउने बन चुअइ गुलबिया तउ चूनरी रँगउवइ[2] न ॥१॥

सासु बन उपजी सुपरिआ, ससुर बन नरियर न।
रामा सइयाँ बन चुअइ गुलबिया, तउ चुनरी रँगउवइ न ॥२॥

रामा मोरि मोरि पहिरव चुनरिआ, भरेठवन[3] ठाढ़ि भई न।
पहिरि ओढ़ि धना ठाढि भई भरेठवन चित गवा न ॥३॥

सासु तोर पूता खड़ा फुलवरिया, मलिनियाँ से केलि[4] करई न।
रस कइ बतिया क सुनि मोर जियरा तरसइ न ॥४॥

सात नखत[5] मोर भाइ लागइँ बदरी बहिनि लागइँ न।
बदरी जाइ के बरसिउँ फुलवरिया भीजत हरि घर आवइँ न ॥५॥

भिजत भिजत हरि घर आवइँ भरेठवन ठाढ़ भये न।
धना[6] खोलहु चनन केवरिआ भीजइ सिर पगिया न ॥६॥

एक तउ साँकर[7] खटोलना[8] दूसरे बालक रोवइँ न।
स्वामी लेउ न मूँठी भरि पुअलिआ[9] भरेठवन सूति रहउ न ॥७॥

एक तउ बहइ पुरवइआ, पुरवइआ मोरी बइरनि न।
रामा बउरे करमवा क पातर, पइरवा[10] उड़ाइ लइ गइ न ॥८॥

किस बन में सुपारी उत्पन्न होती है और किस बन में नारियल पैदा होता है। बन मे गुलाब का फूल चूता है। मैं उस फूल के रंग से अपनी चूनरी गी ॥१॥

मेरे सासु के बन में सुपारी पैदा होती है और ससुर के बन मे नारियल होता है। सँइया के बन से गुलाब फूल चूता है। मैं उसी से अपनी साड़ी गी ॥

ऊँची अटारी में खड़ी होकर मैं अपनी साड़ी (चूनरी) को मोड़ मोड़ कर गी ॥३॥

वह स्त्री अपनी सास से कहती है कि ए सासु ! तेरा पुत्र फूलवारी में खड़

१ सुपारी। १ रँगाऊँगी ३ ऊँचा स्थान अटारी या मन्दर ?४ मजाक

होकर मालिन (माली की स्त्री) से मजाक (संभोग ?) कर रहा है। उसकी रस से भरी हुई बातो को सुनकर मेरा हृदय तरस रहा है ।।४।।

सातो नक्षत्र (सप्तर्षि तारा) मेरे भाई लगते हैं और बदरी मेरी बहिन लगती है। वह बदरी से प्रार्थना करती हुई कहती है कि तुम उस फुलवारी में जाकर बरस जावो। जब मेरा पति जलसे भीगने लगेगा तब वह लौट कर घर आवेगा ।।५।।

भीगते भीगते हुए पति घर आया और भरेठा पर आकर खड़ा हो गया। और कहा कि ए स्त्री ! तुम चन्दन के केवाड़ को खोलो। मेरे सिर की पगड़ी भीग रही है ।।६।।

तब उसकी स्त्री उत्तर देती है कि एक तो खटोला बहुत सँकीर्ण है, दूसरे उस पर सोया हुआ बालक रो रहा है। इसलिए ए स्वामी। (पति) मूँठ भर (थोडा सा) पुआल लो और भरेठा मे जाकर सूत रहो ।।७।।

स्त्री पुन. कहती है—एक तो पुरवैया हवा बह रही है। यह पुरवैया मेरी बैरी है (क्योकि मेरा पति सो जाने पर शीतल पुरवैया हवा के चलने से जगने का नाम नही लेता)। दूसरे मै कर्म की पतली हूँ अर्थात् मैं अभागिन हूँ। उस पुआल को भी हवा उडा कर ले गई। अतः अब मै अपने पति को बिछाने के लिए क्या दूँगी ।।८।।

इस गीत मे बादल से प्रियतम की फुलवाड़ी मे जल बरसाने की प्रार्थना की गई है जिससे भीग कर वह लौटकर घर चला आवे। यह एक नवीन भाव है जो अन्यत्र उपलब्ध नही होता। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि घनानन्द ने किसी विरहिणी के द्वारा उसके आँसू को प्रियतम के आँगन में बरसाने की बिनती की है :—

"कबहूँ वा बिसासी सुजान आँगन मा अँसुआन का लै बरसो ।।"

एक भोजपुरी गीत मे कोई तेलिन की स्त्री किसी बैल से कहती है कि तुम कोल्हू को छटका दो जिससे जुआठ की लकड़ी से मेरे पति का सिर फूट जाय। और वह मरहम-पट्टी के लिए ही सही, घर तो लौटकर आवे।

१८४. सन्दर्भ—देवर और भावज की प्रेम-वार्ता।

कासी बिसेसर कइ साँकरि[1] गलिआ,
निसरि[2] गयेन मोर पतरा नयकवा ना ।।१।।
अपनी महलिया से देवरा सन कारइ[3],
चलि आवा न भउजी मोरि अटरिआ ना ।।२।।
कइसे के आवउँ देवरा तोहरी अँटरिआ,
कहिहुँ लउटईं न मोर पतरा[4] नयकवा[5] ना ।।३।।

१ सकरी पतली २ निकल गया ३ बुलाता है ४ पतला ५ प्रियतम, नायक

अउ तुँहूँ देवरा हमहिं लोभानेउ,
एक चटकलि[1] चुनरिआ रँगायेउ ना ॥४॥
मोरी बगलिआ चनन कइ पेड़वा,
कि बिचइ ठँइआँ ना।
रँगरेजवा दुकनिआँ कि हेइ लागि ना ॥५॥
कितउ रँगावेउ देवरा उनुखुआ[2] कुनुखुआ,
एक हंसा मुरैला कि बिचे ठइयाँ[3] ना ॥६॥
चलत फिरत बोलइ उलुलू अउ कुनुखू,
एक हंसा मुरैला, कि बइठे बाजइ (बोलइ) ना ॥७॥

किसी स्त्री का पति परदेस चला गया है। वह विरह से दुखी होकर कह रही है कि काशी में बाबा विश्वनाथ की गली बड़ी पतली है। मेरा प्यारा प्रियतम जिसका शरीर पतला है वही चला गया है ॥१॥

अपने महल (घर) से उस स्त्री का देवर उससे कहता है कि ए भावज ! तुम अटारी पर चले आवो ॥२॥

इस पर उसकी भावज उत्तर देती हुई कहती है कि ए देवर ! मैं तुम्हारी अटारी पर तुम्हारे पास कैसे आऊँ ? यदि कहीं मेरा पतला प्रियतम लौटकर घर चला आवे तब क्या होगा ॥३॥

फिर उसकी भावज कहती है कि ए देवर ! यदि तुम मुझे लुभाना चाहते हो तो गहरे रंगों वाली एक साड़ी मुझे रंगवा कर दो ॥४॥

देवर कहता है कि मेरे मकान के पास ही में चन्दन का एक पेड़ है। उसी के बीच में एक रंगरेज की दूकान है। वहीं पर तुम्हारी साड़ी को रंगवा दूँगा ॥५॥

भावज कहती है कि तुम मेरी साड़ी के किनारे पर चाहे साधारण पक्षियों को बनवाना परन्तु साड़ी के बीच हंस की आकृति अवश्य चित्रित करवाना ॥६॥

साड़ी पहिन कर चलते फिरते समय साधारण पक्षी बोलेंगे परन्तु उसको पहन कर बैठने पर हंस अपनी मधुर आवाज करेगा ॥७॥

चमरऊ

१८५. सन्दर्भ—काली माता की प्रशंसा।

बम्बइया माँ बम्बा देवी कलकतवा मा काली।
सूक सनीचर मेला लागइ पूजइ २ नरनारी ॥१॥
उत्तर दिसा माँ नगर अजोधिया धन्य सरजू माई।
हर मंगल का मेला लागइ दुनिया उलटि के धाई ॥२॥

१ गहरे रंगों वाली २ पक्षि विशेष ३ स्थान

बुढ़वा मंगल का भइया मेला लागइ भारी।
मेऊ चढावइ धजा नारियल कउ चढावइ डाली ।।३।।

खोलि तऊ केवरिया मइया दरसन तोर पाई।
एक पइसा कइ पान फूल मंदिल मा चढ़ाई ।।४।।

लउटि के आवइ लागी तउ घंटा तोर बजाई ।।५।।

कोई भक्त कहता है कि बम्बई मे बम्बा देवी और कलकत्ता देवी विराजमान है। देवी जी के यहाँ शुक्रवार और शनिवार को मेला लगता है और बगाली लोग उनकी पूजा करते हैं ।।१।।

उत्तर दिशा मे अयोध्या नगरी है। वहाँ सरयू नदी बहती है। प्रत्येक मगल को वहाँ मेला लगता है। उस स्थान पर लोगो की बड़ी भीड़ लगती है ।।२।।

बुढवा मंगल को वहाँ बडा भारी मेला लगता है। मै उस मेले मे ध्वजा गाड़ूंगा और देवता को नारियल चढाऊँगा। कोई फूलो की डाली चढायेगा ।।३।।

भक्त प्रार्थना करता हुआ कहता है कि ए माता! अपना दरवाजा खोलो जिससे मै तुम्हारा दर्शन कर सकूँ। मै एक पैसे का पान-फूल मंदिल मे चढा सकूँ तथा जब पूजा करके लौट कर जाने लगूँ तब घंटा बजा सकूँ ।।४-५।।

१८६. सन्दर्भ—किसी बिरहा गाने वाले की उक्ति।

अतनी जूनि के गाइ बिरहवा,
अरे भइया मोर बिरहा कइ जून।
सभ तउ गाँवइँ साझाँ सबेरवा,
हे रामा हम गावइँ सब जून ।।१।।

ठाउँ ठाउँ ठँइयाँ का गाइँ ए भइया,
परगा परग डिउहारा।
थाप थाप पइ लोरी लँवगिया,
मीला मील अगियारा ।।२।।

कोस कोस पर होमिया कराई,
धुँअना अकासइ जाई।
केका सुमिरि के आसन मारी,
केका सुमिरि के गाई ।।३।।

धरती सुमिरि के आसन मारी,
सुरसती सुमिरि के गाई ।।४।।

कोई बिरहा का गवया कह रहा है कि इस समय बिरहा कौन गावेगा?

इस समय विरहा गाने का तो मेरा समय है। सब लोग साझ और सवेरे विरहा गाते है परन्तु मैं सभी समय विरहा गाता हूँ ॥१॥

पग पग पर डीहवार है और थोडी थोडी दूर पर लोरी के गाने वाले हैं। और मील मील पर अगियार है ॥२॥

मैं हर एक कोस पर होम करूँगा। उसका धुँआ आकाश में उड़कर जायेगा। मैं धरती (पृथ्वी माता) को स्मरण कर आसन लगाऊँगा और सरस्वती का स्मरण कर विरहा गाऊँगा ॥३-४॥

[खण्ड : चार]

श्रम संबंधी-गीत

□ निरवाही

निरबाही

१८७. सन्दर्भ—किसी राजा के द्वारा किसी तेलिन को अपने घर रक्षिता के रूप में रख लेना।

कउनी कि जुनिआँ[1] तेलिन घनियाँ[2] लगावइ हो न।
अरे कउनी जुनिआँ कोइलरि सबद सुनावइ हो न ॥१॥

आधी की रतिया तेलिनि घनिआँ लगावइ हो न।
अरे पाछिलि[3] रतिया कोइलरि सबद सुनावइ हो न ॥२॥

देहु न मोरी सासु तेले कइ तेलहँडी[4] हो न।
सासु तेलवा बेचन हम जावइ हो न ॥३॥

सगरिउ नगरिया तू तेलिन तेलवा बेंचिउ हो न।
अरे राजावा नगरिया जिनि[5] जाइउ हो न ॥४॥

गलिया कि गलिया पुकारइ तेलिनिआ हो न।
अरे केउ लेइ तेलवा हमार हो न ॥५॥

अपनी महलिया चढ़ावइ राजा पुकारइँ हो न।
तेलिन हम लेबइ तेलवा तोहार हो न ॥६॥

तेलवा लइ धरउँ तमुआ के भीतरा हो न।
तेलिनि बइठउँ न हमरी बगलिया[6] हो न ॥७॥

कइसे के बइठउँ मइ[7] तोहरी बगलिया हो न।
राजा धोतिया धूमिलि[8] मोरी बाटी हो न ॥८॥

धोतिया न तोहरी धोबिया घर जइहीं हो न।
रानी पहिरउ न हमरा डुपटवा[9] हो न ॥९॥

बरहे बरिसवा जउ लउटा तेलियवा हो न।
माया[10] कहाँ गइ हमरी तेलिनिआँ हो न ॥१०

---

१ जून, समय। २. तेल पेरने के लिए एक बेर में जितना तिल या ते[illegible] जाता है उसे घानी कहते हैं। ३. पश्चात् रात्रि ब्राह्म मुहूर्त। ४. तेल [illegible]र्तन। ५ मत निषेध। ६ बगल. पास में। ७. मैं। ८. गन्दा, उ[illegible] [illegible]ादर। १० माता।

तोहरी तेलिनि भइया गरब[1] गुमानिनि हो न ।
रामा राजा क लगरिया तेलवा बेचइ हो न ॥११॥

रामा [illegible] कि गलिया तेलिया[2] बानी बजावेन हो न ।
अरे झटकहि[3] के जागइ रानी बड़ पहलिया हो न ॥१२॥

देहु न तुहूँ राजा तेलवा कइ दमवा[4] हो न ।
राजा देहु न मोरी बइठकिया[5] हो न ॥१३॥

कइ लख[6] लेबू रानी तेलवा कइ दमवा हो न ।
तेलिनि कइ लख लेबू बइठकिया हो न ॥१४॥

एक लाख लेबइ राजा तेलवा कइ दमवा हो न ।
राजा सउ[7] लाख लेबइ बइठकिया हो न ॥१५॥

मोहना मटुकि[8] धइके रोवइ [illegible] रजउ हो न ।
रामा भल पति[9] खोइउ [illegible] हो न ॥१६॥

मोहना रूमलिया धइके हँसइ तेलियवा हो न ।
भल घर बइठे बिढ्यु[10] तेलिनिआ हो न ॥१७॥

किस समय तेलिन तेल पेरने के लिए घानी लगाती है और किस समय कोयल अपना मधुर शब्द सुनाती है ॥१॥

अर्धरात्रि को तेलिन घानी लगाती है और पिछली रात (प्रात काल के समय) को कोयल अपना मधुर शब्द सुनाती है ॥२॥

कोई बहू कहती है कि ए मेरी सास । तुम मुझे तेल रखने का बर्तन दो । मैं तेल बेचने के लिए जाऊँगी ॥३॥

सास ने कहा—ए बहू ! तुम सब जगह तेल बेचना परन्तु उस राजा के नगर मे तेल बेचने के लिए मत जाना ॥४॥

तेलिन गली गली मे यह पुकारती हुई जा रही थी कि मेरा कोई तेल लेगा ॥५॥

राजा ने उसे पुकार कर अपने महल मे चढा लिया और कहा कि तेलिन । मै तुम्हारे तेल को लूँगा ॥६॥

---

१ गुमान अथवा गर्व करने वाली । २. तेल्नी । ३. जल्दी से । ४. दाम, मूल्य । ५. बैठक साथ में बैठना । ६. लाख, लक्ष (रुपया) । ७ सौ लाख, अर्थात् एक करोड़ । ८ तेल का घड़ा मटका ९ इज्जत प्रतिष्ठा १० बाबू है

तुम तेल को लेकर इस शामियाना (कनात) के भीतर रख दो और कहा कि ए तेलिन ! तुम मेरी बगल-पास-में बैठ जावो ॥७॥

तेलिन ने कहा—ए राजा ! मैं तुम्हारे पास आकर कैसे बैठ जूं, क्योंकि मेरी धोती अत्यन्त गंदी है ॥८॥

राजा ने कहा—तेरी धोती तो धोने के लिए धोबी के घर जायेगी। ए मेरी रानी ! तुम मेरा दुपट्टा-चादर पहिन लो ॥९॥

बारह वर्षों के पश्चात् जब उसका पति-तेली परदेस से लौट कर आया तब उसने पूछा कि ए माता ! मेरी तेलिन (स्त्री) कहाँ गई है ॥१०॥

उसकी माता ने उत्तर दिया—ए लड़का (पुत्र) ! तुम्हारी स्त्री [illegible] तथा गर्वीली है। वह राजा के नगर में तेल बेचने के लिए गई है ॥११॥

तेली अपनी स्त्री की खोज में निकल पड़ा। वह गली गली [illegible] बजाने लगा। इतने में उसकी बंशी की आवाज को सुनकर रानी (तेलिन) झझककर जाग पड़ी ॥१२॥

उसने राजा से कहा कि तुम मेरे तेल का दाम दो और मैंने जो इतने दिनों तक तुम्हारे साथ बैठकी की है उसका मूल्य चुकाओ ॥१३॥

राजा ने पूछा—ए रानी ! तुम अपने तेल का दाम कितने लाख लोगी ? और तुम्हारे साथ बैठकी करना (संभोग करना) का दाम कितना लाख लोगी ॥१४॥

तेलिन ने कहा—मैं तेल का दाम एक लाख और अपने साथ संभोग करने का मूल्य सौ लाख अर्थात् एक करोड़ रुपया लूँगी ॥१५॥

यह सुन कर राजा मटुका (तेल का घड़ा) पकड़ कर रोने लगा और कहने लगा कि तुमने मेरी इज्जत नष्ट कर दी ॥१५॥

तेली अपने मुँह पर रूमाल रख कर हँसने लगा और कहने लगा कि तेलिन बड़े अच्छे घर में बैठी है अर्थात् उसने बड़े राजमहल में अपना प्रवेश प्राप्त कर लिया है।

१८८. सन्दर्भ—किसी राजकुमार के द्वारा किसी स्त्री को लोभ दिखाकर फँसाना। उस सती स्त्री के द्वारा प्रस्ताव अस्वीकार।

आधी कि रतिया बेसिनि धनिआँ[1] गावइ
पाछिलि[2] रतिया ना, कोइल सवद सुनावइ ॥१॥
पाछिलि रतिया ना।

---

१ एक बार में तेल पेरने के लिए उचित मात्रा में लिया गया तिल।
२ पिछली रात।

कोइलि सबद सुनि के रनि उठि बइठी;
बढ़निआँ[1] लइके ना, बटोरिन मॉवरि घुरवा[2] ॥२॥
बढ़निआँ लइके ना।

अगनाँ बहारि साँवरि चलली सागर पनिया;
घइलवा[3] लइके ना, साँवरि चलली सागर पनिया ॥३॥
घइलवा लइके ना।

गगरी जउ बोरिन[4] साँवरि धरिन कररवा[5];
जोहइ[6] हो लागी ना, ओहि विदेसिया की रहिया ॥४॥
जोहइ हो लागी ना।

घोड़वा चढ़ा आवइ राजा कइ छोकड़वा,
केकइ धनिआ ना, भरा सिर गगरिया ॥५॥
केकइ धनिया ना।

सासु ससुर कइ भरिथ[7] गगरिआ;
विदेसी जी कइ ना; जोहत बाटी रहिआ ॥६॥
विदेसी जी कइ ना।

फेंकि देतु गेड़री[8] बहाइ देआ घयलवा;
चली हो आवा न, गोरी हमरे गोहनवा ॥७॥
चली हो आवा न।

जउ हम चली राजा तोहरे गोहनवा,
डगरिआ हमइ ना, राजा का हो खिअउबेआ ॥८॥
डगरिआ हमइ ना।

राजा काहो पिअउबेआ घरे हो अपना ना ॥९॥
डगरा खिअउबइ रानी मघइल[9] पनवा,
घरे हो अपना ना, पिआइबि सुरहिल[10] क दुधवा ॥१०॥
घरे हो अपना ना।

चार दिन पनवा खिअउबेआ बेइमनवा,
उतारि[11] देबेया ना, जइसे सिर कइ पगड़िआ ॥११॥
उतारि देबेया ना।

---

१. झाड़ू। २. कुड़ा, करकट। ३. घड़ा। ४. डुबाया। ५. किनारे पर। ६. प्रतीक्षा करती है। ७. भरती हूँ। ८. सिर पर घड़ा रखने के लिए घास, कपड़ा या पक्की मिट्टी का बना हुआ गोला आधार ९ मगहिया १० दुधारु गाय ११ तिरस्कार कर दोगे

चार दिना दुधवा पिअउबेआ बेईमनवाँ,
उतारि देबेया ना, जइसे पाँउँ कइ पनहिया[1] ॥१२॥
उतारि देबेया ना।

तेलिन (तेली की स्त्री) आधी रात मे तेल पेरने के लिए घानी लगाती है और पिछली रात में कोयल अपना मधुर शब्द सुनाती है ॥१॥

कोयल के शब्द को सुनकर के रानी अर्थात् घर की मालकिन उठी और झाड़ू लेकर घर की गन्दगी को साफ करने लगी ॥२॥

झाड़ू लगाकर के वह स्त्री गागर लेकर तालाब(सागर)से पानी भरने के लिए चल पड़ी ॥३॥

घड़े को पानी से भर करके उस स्त्री ने उसे तालाब के किनारे रख दिया और वह अपने परदेसी पति की बाट जोहने लगी ॥४॥

इतने में उसका प्रियतम—राजा का पुत्र—घोड़े पर चढ़ कर वहाँ आ पहुँचा। और पूछने लगा कि तुम किसकी पत्नी हो जो सिर पर पानी का घड़ा लेकर जा रही हो ॥५॥

इस पर उस स्त्री ने उत्तर दिया—कि मैं अपने सास ससुर के लिए पानी भर रही हूँ और अपने परदेसी पति की यहाँ बाट जोह रही हूँ ॥६॥

उस परदेसी व्यक्ति ने कहा कि तुम अपने सिर की गेंडुरी को फेंक दो, घडे के पानी को बहा दो और ए गोरी! मेरे साथ मेरे घर चलो ॥७॥

इस पर उस सती स्त्री ने उत्तर दिया कि ए राजा! यदि मै तुम्हारे घर चलूँगी तब तुम मुझे रास्ते में क्या खिलाओगे और क्या पिलाओगे? ॥८–९॥

इस पर उस परदेसी ने उत्तर दिया कि रास्ते मे मैं तुम्हे मगहिया पान खिलाऊँगा और सुरहिया गाय का दूध पिलाऊँगा ॥१०॥

सती स्त्री ने उत्तर दिया—ए बेइमान तुम मुझे केवल दो चार दिन पान खिलावोगे फिर तुम उसी प्रकार से मुझे उतार कर फेंक दोगे जैसे सिर की पगड़ी ॥११॥

ए बेइमान! तुम मुझे चार दिन दूध पिलावोगे। परन्तु इसके बाद तुम मुझे तिरस्कृत कर उसी प्रकार से फेंक दोगे अर्थात् घर से निकाल कर बाहर कर दोगे जैसे पैर का जूता।

इस गीत मे भारतीय नारी का उज्ज्वल रूप चित्रित किया गया है। इस सती नारी को धन-धान्य का लोभ आकृष्ट नहीं कर सकता।

1 जूता

१८८. सन्दर्भ—किसी सती लड़की स्त्री के चरित्र पर सं
के ससुराल वालों के द्वारा उसकी अग्नि परीक्षा लेना। ·
उसका चरित्र निष्कलंक प्रमाणित होना।

सातो भइया चलेन हो बिदेसवा हो न[1]।
राधा सतिनउ[1] लिहिनि पिछुआइ[2] हो न ॥१॥
लउटउ न सतिना मोरी बहिनी हो न।
बहिनी लेत अउबू सुरुजू[3] हरउँना[4] हो न ॥२॥
बरहे बरिसवा जउ लउटईं मानउ भइया हो न।
बहिनी लइ देतू[5] सुरुजू हरउना हो न ॥३॥
हारावा पहिरि सतिना गई हो ससुरवा हो न।
वनकई[6] ससुरू माँगइ पानी-दतुइनि हो न ॥४॥
पनिया देत वनकइ चमकइ हरउना हो न।
धना कहाँ पाइउ सुरुजु हरउना हो न ॥५॥
हमरे बनइया जो के सात बेटउना हो न।
ससुरु वइ[7] देहेन[8] सुरुजू हरउना हो न ॥६॥
कहवा सुना बहुआ हम एक्कउ[9] न मनबइ हो न।
धना तोहसे हम लेबइ किरीवा[10] हो न ॥७॥
हारावा पहिरि सतिना गईं हइँ ससुरवइ हो न।
वनकइ जेठवा माँगथि[11] पानी दतुइनि हो न ॥८॥
पनिया देत वनकइ चमकइ हरउना हो न।
भयहु काहाँ पाइउ सुरुजु हरउना हो न ॥९॥
हमरे बनइया जी के सात बेटवना[12] हो न।
जेठा वई देहेन सुरुजु हरउना हो न ॥१०
कहवा सुना बहुआ हम एक्कउ न मनवइ हो न।
बहुअरि तोहसे हम लेबइ किरिअवा हो न ॥११॥
हारावा पहिरि सतिना गईं हइँ ससुरवइ हो न।
वनकइ देवरा माँगथि पानी-दतुइनि हो न ॥१२॥

---

१. सतिना नामक बहिन। २. पीछा कर लेना। ३. सूर्य के स... ४ हार। ५ दे देती। ६ उसका। ७ उसी ने। ८ दिया है... १० शपथ अग्नि परीक्षा दिव्य ११ मांगता है १२ बेट...

पनिया देत बनकइ चमकइ हरउना हो न।
भउजी कहाँ पाइउ सुरुजू हरउना हो न ॥१३॥

हमरे बपइया जी के सान बेटउना हो न।
देवरा बईं देहेन सुरुजू हरउना हो न ॥१४॥

कहवा सुना भउजी हम एककउ न मनबइ हो न।
भउजी तोहसे हम लेबइ किरिअवा हो न ॥१५॥

हारावा पहिरि सतिना गईं हइँ ससुरवइ हो न।
बनकइ बलमू[1] माँगथि पानी-दतुइनि हो न ॥१६॥

पनिया देत बनकइ चमकइ हरउना हो न।
रानी काहाँ पाइउ सुरुजू हरउना हो न ॥१७॥

हमरे बपइया जी के सान बेटउना हो न।
राजा बइ देहेन सुरुजू हरउना हो न ॥१८॥

कहवा सुना रानी हम एककउ न मनबइ हो न।
रानी तोहसे हम लेबइ किरिअवा हो न ॥१९॥

मोरे पिछुअरवा[2] लोहरा बेटउना हो न।
भइया गढ़ि देतेआ सँकरी[3] करहिया[4] हो न ॥२०॥

मोरे पिछुअरवा बढ़ई बेटउना हो न।
भइया चारि बोझ चइला[5] चिरि देतेआ हो न ॥२१॥

मोरे पिछुअरवा तेलिया बेटउना हो न।
भइया चारि मेटा[6] तेल पेरि देतेआ हो न ॥२२॥

मोरे पिछुअरवा नउवा[7] बेटउना हो न।
मोरे नइहरे माँ खबर जनउतेआ[8] हो न ॥२३॥

आगे आगे आवइ नउवा अरु बरिआ[9] हो न।
रामा पाछावा भइया असवरवा[10] हो न ॥२४॥

एक ओरे बइठइँ मोरे ससुरे के लोगवा हो न।
रामा एक ओरिआ[11] बिरना अकेलवा हो न ॥२५॥

---

१. बालम, प्रियतम। २. पृष्ठ भाग में। ३. संकीर्ण, छोटी। ४. कड़ाही। ५. लकड़ी। ६ छोटा मटका वह छोटा पात्र जिसमें तेल अथवा जल रखा जाता है। ७ नाई। ८. सूचित कर दो, जना दो। ९. बारी-वह जाति जो गावों में पत्तल बनाने का काम करती है १० घोड़े पर सवार ११ एक ओर एक तरफ

बरइ लागी अगिनि धधकि लागे चइलवा[1] हो न।
बइठउ घूमि घूमि देथि किरिअवा हो न ॥२६॥
हारि जावू[2] बहिनी तउ देस तजि देबइ हो न।
बहिनी जीतइ तउ डँड़िया[3] फँदउबइ[4] हो न ॥२७॥
अपनी महल से भउजी जउ चितवईं हो न।
आवति बाटी जितली[5] ननदिया हो न ॥२८॥

सातो भाई विदेश जाने लगे। तब सतिना नामक उनकी बहिन उनके पीछे-पीछे जाने लगी ॥१॥

भाइयो ने कहा—सतिना बहिन। तुम लौट जावो। हम लोग तुम्हारे लिए सूर्य के समान चमकता हुआ हार लेते आवेगे ॥२॥

बारह वर्षो के बाद सातो भाई लौट कर घर आये और उन्होंने कहा कि ए बहिन अपना हार ले लो ॥३॥

उस हार को पहिन कर सतिना अपनी ससुराल गई। उसके ससुर ने उससे दतौन और पानी को माँगा ॥४॥

पानी देते समय सतिना के गले का हार चमकने लगा। उसने कहा कि ए बहू! तुमने यह हार कहाँ पाया है ॥५॥

बहू ने उत्तर दिया—मेरे पिता जी के सात पुत्र है। ए ससुर। उन्होंने ही मुझे यह सूर्य के समान चमकता हुआ हार दिया है ॥६॥

इस पर क्रोधित होकर तथा बहू के चरित्र पर सन्देह करते हुए ससुर ने कहा—मैं तुम्हारा कहना—सुनना एक भी नही मानूँगा अर्थात् अपने चरित्र के सम्बन्ध मे तुम्हारे द्वारा दी गई सफाई को मैं स्वीकार नही करूँगा। मैं तुमसे शपथ लूँगा अर्थात् तुम्हारी अग्नि परीक्षा करूँगा ॥७॥

[इसी प्रकार से इस स्त्री का देवर, पति और उसका जेठ बारी-बारी से यही प्रश्न करते हैं और इस सती साध्वी के द्वारा वही उत्तर बारम्बार दुहराया जाता है। इस पर सभी उसके सतीत्व की अग्नि परीक्षा करने की धमकी देते है ॥८—१९॥]

इस पर दुःखी होकर वह स्त्री कहती है ए मेरे मकान के पीछे रहने वाले लोहार के लडके। मेरे लिए लोहे की एक छोटी-सी कड़ाही बनाओ ॥२०॥

---

१. चीरी गई सूखी लम्बी लकड़ी जो जलाने के काम में लाई जाती है। २ हार जाओगी। ३. पालकी। ४. चढ़ा कर। ५. विजय करने वाली, जीतने वाली।

मेरे घर के पीछे रहने वाले ए बढई लड़के ! ए मेरे भाई ! तुम मेरे लिए चार बोझ लकड़ी चीर कर ले आवो ॥२१॥

मेरे भाई । तेली के बेटा ! तुम चार मटका तेल पेर कर मुझे देना ॥२२॥

ए मेरे घर के पृष्ठ भाग मे रहने वाले नाई के लड़के ! तुम मेरी अग्नि-परीक्षा की खबर मेरे मायके पहुँचा देना ॥२३॥

इस सूचना को पाकर आगे आगे नाई और बारी आता है और इनके पीछे उसका भाई घोड़े पर सवार चला आ रहा है ॥२४॥

अग्नि परीक्षा स्थान के एक ओर तो उस बहिन का भाई अकेले बैठा और दूसरी ओर ससुर के घर के लोग बैठे ॥२५॥

इतने में उस सूखी लकड़ी मे अचानक आग लग गई और वह बहिन अग्नि के चारों ओर घूम-घूमकर अपनी 'किरिया'—शपथ देने लगी ॥२६॥

भाई ने कहा—ए बहिन ! यदि तुम इस अग्नि परीक्षा में हार जावोगी तो मै लज्जा के मारे इस देश को छोडकर अन्यत्र चला जाऊँगा। परन्तु यदि तुम इस परीक्षा मे जीत गई तो तुम्हे पालकी पर बैठा कर अपने घर ले चलूँगा ॥२७॥

[बहिन उस अग्नि परीक्षा मे जीत गई।—उसका सतीत्व प्रमाणित हो गया। अत पालकी मे बैठ कर वह मायके जा रही थी। अपने महल मे बैठी हुई उसकी भावज ने उसे देखा। वह कहने लगी कि जीत करके मेरी ननद प्रसन्नता से चली आ रही है ॥२८॥

विशेष—प्राचीन काल मे स्त्रियो के सतीत्व की परीक्षा के लिए अनेक प्रथायें प्रचलित थी जिन्हे 'दिव्य' कहा जाता था। ये दिव्य बड़े ही क्रूर तथा कठोर हुआ करते थे। जैसे दहकती हुई तेल की कडाही मे हाथ डालना, घड़े मे सर्प को रखकर उसे हाथ से पकड़ना, जलती हुई आग में अपराधी को बिठा लेना, नदी के प्रवाह मे उसे फेंक देना आदि। राम के द्वारा सीता की अग्नि-परीक्षा तो प्रसिद्ध ही है। ऐसे एक दिव्य का उल्लेख इस गीत में पाया जाता है।

गाँवो मे स्त्रियो और पुरुषो के सत् चरित्र की परीक्षा के लिए कोई समान मापदण्ड नही पाया जाता। बल्कि इस संबंध मे "डबल स्टैण्डर्ड" का उपयोग आज भी किया जाता है। स्त्रियो के द्वारा किया गया तुच्छ भी कल्पित अपराध उनके लिए घातक सिद्ध होता है। इस गीत में भाई के द्वारा दिये गये गले के हार को देख कर उस स्त्री के सतीत्व की आशंका करना निश्चित ही उसके साथ भयंकर अपराध तथा अन्याय करना है

१६०. सन्दर्भ—ननद और भावज का शास्वतिक विरोध। भ
द्वारा अपनी ननद की पति से निन्दा करना।

बेरिआ[1] क बेरिआ मइ बरजेउँ[2] ननदिया हो न।
ननदी भजना[3] सुनन मति जाइउ हो न ॥१॥

चहइ[4] भउजी मारा चहिइ गरिआनउ हो न।
भउजी ढोलिआ[4] धमकि[5] जियरा ललकइ हो न ॥२॥

बरहे बरिसवा जइ मइ सइयाँ लउटइ हो न।
धना काहाँ गई बहिनी हमारी हो न ॥३॥

चहइ स्वामी मारा चहइ गरिआविहु हो न।
वइ तउ चली गईं बेड़िया[6] सिरकिआ[7] हो न ॥४॥

देहु न मोरी धना सोने के वँसुरिया[8] हो न।
धना बहिनी खबरिया हम लाइबि हो न ॥५॥

एक बन गयेन दूसर बन गयेन हो न।
रामा तीसरे माँ बेड़िआ सिरकिआ हो न ॥६॥

जउनी सिरकिआ माँ होतिउ बहिनिया हो न।
बहिनी तावइ[9] हथवा उठउतिउ[10] हो न ॥७॥

बाये हथवा बेड़िआ क सिरकिआ हो न।
भइया दहिने डोलावउँ रसवेनिआ[11] हो न ॥८॥

अइसिनि बहिनी तुरुक धरि लेतिनि हो न।
रामा जिन मोर नाँउ धरावइँ[12] हो न ॥९॥

कोई भावज कहती है कि ए ननद! बार बार मैंने तुम्हें मना किय
भजन सुनने के लिए मत जाया करो ॥१॥

ननद ने उत्तर दिया—ए भावज! चाहे मुझे गाली दो अथवा मा
ढोल बजता है तब मेरा मन भजन सुनने के लिए लालायित हो जाता है ॥२

बारह वर्षों के पश्चात् जब उसका पति परदेस से लौटकर आया
अपनी स्त्री से पूछा कि मेरी बहिन कहाँ गई है ॥३॥

---

१. बार, बार। २. मना करना, निषेध करना। ३ भजन, भक्ति
४. ढोल। ५. गजना-ढोल के बजने पर। ६. बेड़िया ? ७. सिरकी या सी
[illegible]। ८. वंशी, बाँसुरी ९. उसके, उस। १०. उठाओ, हाथ
११. बहु [illegible] या बाँस [illegible] सींक का बना हुआ जो हाथ से डुलाया ज
१२. [illegible] बदनाम करना।

उसकी पत्नी ने उत्तर दिया—ए स्वामी ! चाहे तुम मुझे मारो अथवा गाली दो। तुम्हारी बहिन किसी नीच जाति के व्यक्ति के साथ सीक के बने छप्पर में रहने के लिए चली गई है ॥४॥

इस पर भाई ने कहा--ए धनिया। मेरी सोने की बाँसुरी दो। मैं अपनी बहिन को खोजने के लिए जाऊँगा ॥५॥

भाई एक बन में गया, दूसरे बन मे गया। तीसरे बन मे उसने सीक का बना छप्पर देखा ॥६॥

भाई ने कहा—ए बहिन ! तुम किस सिरकी (छप्पर) मे हो। तुम अपना हाथ उठाओ अथवा छप्पर से हाथ निकालो जिससे मैं तुम्हें देख सकूँ ॥७॥

बहिन ने उत्तर दिया—ए भाई ! मेरे बायें हाथ बेडी (?) की सीक है और दाहिने हाथ से मैं पंखा डुला (झलना) रही हूँ ॥८॥

भाई ने कहा—ऐसी बहिन को तुरुक पकड़ ले जाय जिसने (नीच जाति के घर जाकर) मेरी इतनी बड़ी बेइज्जती की है ॥९॥

विशेष—लोक गीतो मे भाई और बहिन मे घनिष्ठ प्रेम का वर्णन पाया जाता है। कुछ गीतों मे तो भाई अपनी बहिन की इज्जत की रक्षा के लिए अपने प्राणो की भी बाजी लगा देता है। परन्तु प्रस्तुत गीत में भाई बहिन की निन्दा करता हुआ पाया जाता है। इस घटना को अपवाद रूप मे ही समझना चाहिए। ननद और भावज का पारस्परिक विरोध भी इस गीत मे परिलक्षित होता है। जो स्वाभाविक ही है।

१९१. सन्दर्भ—भावज की उक्ति देवर के प्रति।

खायेस भइ बासी[1] भात लगली पियास लाल।
तनिके देवर पानी देतेआ जिअरा जुड़ात लाल ॥१॥
कहँवइ[2] की आगर चोली कँहबइ की छीट लाल।
कहँवइ की मोहर माला[3], अँगिआ के बीच लाल ॥२॥
आगरे कइ चोली बन्द, पटने कइ छीट लाल।
भागलपुर कइ मोहरमाला अँगिया के बीच लाल ॥३॥
लगली पियास लाल, तनिके देवर पानी देते आ।
जिअरा जुड़ात लाल तनिके देवर पानी देते आ ॥४॥
पहिरेउँ मइ हरिअरि चुरिआ बंदा[4] जोरइ लाल।
सइयाँ ऊपर मइ बहियाँ फेरेउँ[5] देवरा लोभाइ लाल ॥५॥

---

१. बहुत देर का रखा हुआ। विशेषतः रात का बना हुआ। २. कहाँ। ३. सोने का बना आभूषण जिसे गले में पहनते है। ४. चोली को बाँधने के लिए कपड़े का फीता ५. आलिङ्गन किया।

तनिके देवर पानी देतेआ जिअरा जुड़ात लाल।
खायेउँ मइँ मघइल[1] पान बिरवा जोराइ लाल ॥६॥
सइयाँ ऊपर मारेयुँ पीक देवरा लोभाइ लाल।
तनिके देवर पानी देतेआ जिअरा जुड़ात लाल ॥७॥

कोई भावज अपने देवर से कह रही है कि मैंने बासी भात खाया है। अत मुझे प्यास लग गई है। ए मेरे प्यारे देवर। थोड़ा सा पानी मुझे पीने के लिए दो जिससे मेरा हृदय शान्त हो जाय ॥१॥

यह चोली कहाँ की बनी हुई है और यह छींट का कपडा कहाँ का है? यह सोने की मोहर माला कहाँ की है जो मेरी चोली के ऊपर मध्य मे सुशोभित हो रही है ॥२॥

इस पर देवर उत्तर देता है कि यह चोली आगरे की है और छीट का कपडा पटना शहर से लाया गया है। यह मोहर माला भागलपुर का बना हुआ है जो तुम्हारी चोली के बीच मे सुशोभित हो रहा है ॥३॥

मुझे प्यास लगी है। ए देवर! मुझे थोड़ा पानी पिलावो जिससे मेरे हृदय को शान्ति मिले ॥४॥

भावज कहती है—मैंने हरी-हरी (हरे रङ्ग की) चूड़ियाँ पहनी है तथा मेरी चोली मे बन्द लगे हुए है। अपने प्रियतम को जब मैं अपनी वाहो से आलिङ्गन करती हूँ तब उसे देखकर मेरा देवर आकृष्ट हो जाता है ॥५॥

ए देवर! मुझे थोड़ा पानी पिला दो जिससे मेरा हृदय शान्त हो जाय। मैंने मगहिया पान का बीडा बना कर खाया है ॥६॥

मैंने प्रियतम के ऊपर पान की पीक डाल दी जिसे देखकर देवर मेरे रूप-सौन्दर्य पर लुब्ध हो गया। ए देवर। थोड़ा पानी पिला दो जिससे मेरा हृदय शान्त हो जाय ॥७॥

१६२. सन्दर्भ—किसी दुश्चरित्र साधू के द्वारा किसी सती स्त्री को फँसाना परन्तु उसके पति के अचानक आ जाने के कारण साधू का उल्टे पाँव भाग खड़ा होना।

घमवाँ[2] घमइले[3] त इ जोगिया घमवाँ नेवारि[4] लेउ न।
जोगिया सीतल हमरा ओसरवा[5] त घमवाँ नेवारि लेउ न ॥१॥
अतनी बचनिआँ सुनइ जोगिया डेवढ़ी[6] चढ़ि बइठे हो न।
जोगिया पूछई लागे घरा कइ भेद. घरइआ[7] तोरा कहाँ गये हो न ॥२॥

---

१ मगध देश का। २. घाम, धूप। ३. दिन चढ़ जाना। ४. बिताकर, खय ५ ओसारा बैठका ६ द्वार ७ गृहस्वामी पति

सासु तउ गईं भुँजिहरवा[1], ननदि घर आपन गईं हो न।
जेकरि अहिउँ[2] मइँ अइसी धनियाँ, तउ निसरि[3] विदेश गये हो न ॥३॥

अतनी बचन सुनइ जोगिया, डेवढ़िया[4] चढ़ि बइठइ हो न।
जोगी खोले लागे काँसा पितरिआ, पहिरउ धना मोरे आगे हो न ॥४॥

काँसा[5] पितरिआ[6] पहिरइं बानिनि[7] अवर कलवारिनि[8] हो न।
जोगिया जेकरि हइं मइ अइसी धनिया, तउ पहिरब[9] सोना रूपा[10] हो न ॥५॥

अतनी बचन सुनि जोगिया डेवढ़ि चढ़ि बइठइं हो न।
जोगिया खोलइ लागे अन, धन, सोनवा, पहिरु धना मोरे आगे हो न ॥६॥

पहिरि ओढ़ि धना ठाढ़ भई भरेठवन चित गयेन हो न।
जोगिया भागउ तउ भागउ, घरइआ मोर आइ गयेन हो न ॥७॥

अहइँ बारी ओलिया[11] नहीं तोर कोलिया[12] हो न।
रानी कउने भेलस[13] धइके भागउँ तउ जिअरा बचावउँ हो न ॥८॥

हथवा माँ लेउ तेरजुआ[14] कँधवा बुचुकुइया[15] हो न।
जोगिया बनिया भेलस धइके भागउ तउ जियरा बचावउ हो न ॥९॥

देस देस मइँ फिरउ देसवा कइ पानी पिआउँ हो न।
रामा बारा[16] बरिसवा कइ तिरियवा[17] तउ बतिया छलि लइ गइ हो न ॥१०॥

कोई स्त्री कहती है कि ए जोगी ! धूप अधिक हो गई है, बड़ी तेज गर्मी पड़ है। अतः तुम मेरे बैठका की शीतल छाया मे बैठ कर गर्मी को बिताओ ॥१॥

इतनी बात सुन करके जोगी द्वार पर चढ कर बैठ गया और उस स्त्री से घर का भेद जानने के लिए जोगी उससे पूछने लगा कि तुम्हारा पति कहाँ है ॥२॥

उस स्त्री ने उत्तर दिया—मेरी सास भड़भूँजा के घर गई हैं, ननद अपनी ाल चली गई और मैं जिसकी धनिया—स्त्री—हूँ वह भी घर से निकल कर स चला गया है ॥३॥

---

१. भड़भूजा के घर, भाड़। २. हूँ। ३. निकल गया। ४. ड्योढ़ी। काँसा। ६. पीतल। ७. बनिया की स्त्री। ८. कलवार की स्त्री। ९. पहिनूंगी। चाँदी। ११. औलिया। १२. कौल। १३. वेश। १४. तराजू। १५. बाट। बारह १७ स्त्री

इतनी बात को सुन कर वह जोगी ड्योढी पर चढ़ कर बैठ गया। उसने काँसे और पीतल के गहनो को निकाल कर कहा कि ए स्त्री ! इसे मेरे सामने आकर पहिनो ॥४॥

इस पर उस स्त्री ने उत्तर दिया—काँसा और पीतल के गहनो को तो बनिया और कलवार (कलाल, शराब बनाने वाली एक जाति विशेष) की स्त्रियां पहिनती है। ए जोगी ! जिस व्यक्ति की मैं ऐसी स्त्री हूँ—वह स्त्री चाँदी और सोना का गहना पहिनती है।

इतनी बात सुन कर जोगी घर के भीतर आकर बैठ गया और वह अपनी गठरी से रुपया और सोना खोलने लगा। उसने कहा—मेरे सामने आकर तुम इन सोने के गहनो को पहिनो ॥६॥

वह स्त्री सोने और चाँदी के उन गहनो को पहिन कर खडी हो गई। इतने मे उसका पति अचानक घर आता हुआ दिखाई पडा। उसने कहा—ए जोगी ! तुम यहाँ से अतिशीघ्र भाग जावो क्योंकि मेरा पति घर आ गया है ॥७॥

जोगी ने कहा—मैं एक छोटा औलिया (फकीर) हूँ। कोई कौल-एक सम्प्रदाय विशेष के साधु—नही हूं जो वेश बदल करके यहा से अपनी जान बचाकर भाग जाऊँ ॥८॥

उस स्त्री ने सलाह दिया—ए जोगी ! तुम अपने हाथ मे तराजू ले लो और कंधे पर छोटा बाट रख लो। इस प्रकार तुम बनिया का भेष बनाकर भाग जावो। तभी तुम्हारी जान बच सकती है ॥९॥

जोगी ने कहा—मैं अनेक देशो मे घूमा करता हूँ। अनेक देश का पानी पीता हूँ। परन्तु इस बारह वर्ष (अत्यन्त छोटी) की स्त्री ने अपनी बातों के द्वारा मुझे छल दिया अर्थात् मुझे बडा धोखा दिया ॥१०॥

विशेष—किस प्रकार दुश्चरित्र तथा लम्पट व्यक्ति साधु और सन्यासी का वेश धारण कर भोली-भाली तथा सीदी-साधी स्त्रियों को फँसा कर ठगा करते हैं इसी का उल्लेख इस गीत मे हुआ है। कौल-एक विशेष सम्प्रदाय के साधु है जो विभिन्न रूप धारण कर विचरते रहते है "नानारूप धरा: कौला विचरन्ति महीतले"।

१९३. सन्दर्भ—पत्नी की एक तुच्छ बात पर पति का रुष्ट हो जाना और वेश्या से दूसरा विवाह करने की धमकी। उसकी पत्नी का मुंह तोड़ जबाब।

पाँच पेड़ निमियाँ कइ जालिमा[1] लगाइ रे ना।
रामा जुड़ि जुड़ि आवाथा[2] बयरिया[3] रे ना ॥१॥

१ जालिम नामक दुष्ट व्यक्ति २ आती है ३ वायु हवा

निमिया कटाइ जालिमा सवावे[1] पलंगिया रे ना।
रामा रेसमइ लगावे ओरदाओना[2] रे ना ॥२॥
सँकरीन[3] पलंगिया रामा दुइ सूतवइया[4] रे ना।
रामा चोली बन्दा भीजेथा पसीनवा रे ना ॥३॥
अतनी बचन सुनि जालिमा सिपहिया रे ना।
रामा घोड़े पीठि भए असवरवा रे ना ॥४॥
माया धरईं अंटुका[5] बहिन सिर पटुका[6] रे ना।
रामा धना धरईं घोड़े कइ लगमिया[7] रे ना ॥५॥
ठाढे माथ अटुका बहिन सिर पटुका रे ना।
धना समुझ सेजरिया कइ बतिया रे ना ॥६॥
कर बइ नोकरिया रानी ब्याहब[8] पतुरिया[9] रे ना।
रानी तुम्हें अस राखब नउनियाँ[10] रे ना ॥७॥
कतबइ[11] चरखवा राजा रखबइ मरदवा[12] रे ना।
राजा तुम्हे अस[13] राखब हरवहवा[14] रे ना ॥८॥

जालिम नामक किसी जालिम पति ने नीम के पाँच वृक्षो को लगाया था जिसके नीचे बडी ठंढी तथा शीतल हवा लगती थी ॥१॥

जालिम ने नीम के वृक्षों को कटवा दिया और उन्हे छील-छाल कर सुन्दर पलग बनवाने लगा और उसमें रेशम की ओरिचन लगाने लगा ॥२॥

वह पलंग बड़ा ही सकीर्ण बना था परन्तु उस पर सोने वाले दो व्यक्ति, पति और पत्नी थे। पत्नी ने कहा कि धक्का के कारण पसीना हो रहा है और मेरी चोली भीग रही है ॥३॥

इस बचन (बात) को सुन करके सिपाही जालिम (सिंह) क्रोधित हो गया और वह घोडे की पीठ पर चढ़ कर परदेस जाने के लिए तैयार हो गया ॥४॥

जालिम सिह को परदेस जाते हुए देखकर उसकी माता और बहिन ने उसके कपडो को पकड लिया और उसकी स्त्री घोड़े का लगाम पकड कर उसे जाने से रोकने लगी ॥५॥

इस पर पति ने उत्तर दिया ए धनिया! सेज पर सोते समय जो तुमने बात कही थी उसका स्मरण करो ॥६॥

---

१. छील-छालकर बनाना। २. ओरिचन, अदवानी। ३. संकीर्ण, पतली। ४. सोने वाले। ५-६. वस्त्र, कपड़ा। ७. लगाम। ८. विवाह करूँगा। ९. वेश्या। १०. नाई की स्त्री, नौकरानी। ११- कतूँगी। १२ मर्द पति। १३ हरवाह हल जोतने वाला नौकर १४ समान तरह

ए रानी ! मैं नौकरी करूँगा और वेश्या से विवाह करूँ
रानी रखूँगा ॥७॥

इस पर उस गर्वीली तथा मनस्विनी स्त्री ने उत्तर वि
खा कातूँगी और तुम्हारे जैसे मर्द को अपना हरवाह बनाक
गी ॥८॥

**१६४ सन्दर्भ—किसी मातृ भक्त पुत्र द्वारा अपन
से अपनी स्त्री का कलेजा काट कर
को समर्पित कर देना ।**

कोठवा से ओड़े[1] बेड़े बेनिया[2] डोलावई,
सासु कइ जियरा विरोग[3] रे ॥१॥
उठउँ मोरे माया करउ न दतुइनिया[4],
सीझी[5] रसोइया जुडाय[6] रे ॥२॥
तोहरी रोसइया पूता अगिया[7] लगइबइ,
आजु मोरा मूड़[8] पिराय[9] रे ॥३॥
कउनी दवइया करउँ मोरी माया,
मूड़ा नीक[10] होइ जाइ रे ॥४॥
इहइ दवइया करउ की रे पूता,
लइ आवा[11] बहुआ[12] करेज रे ॥५॥
अँगने बाटिउ की भीतरे रे धनिया,
घरहू मां परला विचार[13] रे ॥६॥
जउ मोरे नइहर होबइ बिअहवा,
बवुआ सुपारी[14] दइ जाइ रे ॥७॥
जउ तुहूँ रहिउँ धना रामा रसोइया,
नउआ[15] बिदा कइ दीन रे ॥८॥
मोरे पिछुअरवा कँहरा भइया मीतवा,
धना जोगे डड़िया फनाउ[16] रे ॥९॥
एक बन गयेउ दूसरे बन गयेउ,
तीसरे मा मिलेउ जुड़[17] छाँह रे ॥१०॥

---

१. छिप करके । २. बाँस या सींक का छोटा पंखा । ३.
पकी हुई । ६. ठंढा हो रहा है । ७. आग लगाना, नष्ट क
दर्द होता है । १०. अच्छा । ११. ले आवो । १२. बहू व
सुपारी भेजकर निमंत्रण देना १५ नाई १६ पा
शीतल

लेउ न कहरा भइया आपन बिदइया[1],
हम धनि खेलउँ पंसासारि[2] रे ॥११॥

एक बेर खेलिन दूसर बेर खेलिन,
तीसरे मां हनेउँ[3] करेज रे ॥१२॥

बायें हाथ मारइँ छुरिया कटरिया,
दाहिन हाथे काटेउ[4] करेज[5] रे ॥१३॥

अँगने बाटिउ कि भितरेन माया,
छिद लेबिउ[6] बहुआ करेज रे ॥१४॥

अपनी धना पूता नइहर पठाया,
लइआवा कुतिया करेज रे ॥१५॥

अइसेन माता तुरुक धइ लेतेन[7],
जेन मोरी जोड़ी बिगारइ[8] रे ॥१६॥

कोठिया मां बाटे पूता गोहुँआ चउरवा,
कइ देबे दोसर बियाह रे ॥१७॥

अगिया लगउबइ माया गोहुँआ चउरवा,
बजर[9] परइ दोसर बियाह रे ॥१८॥

चन्दा सुरुज वइसन[10] धनिया मइ मारेउ,
छोड़ेउ[11] ललन[12] ससुरारि[13] रे ॥१९॥

कोठे पर छिप कर सोई हुई और पंखा झलती हुई सास का शरीर नीरोग नहीं है। (संभवत वह बीमारी का बहाना बनाकर सो रही थी) ॥१॥

मातृ भक्त उसके पुत्र ने कहा कि ए मेरी माता! तुम उठो, दतौन करो। रसोई पक गई है और वह ठंढी हो रही है ॥२॥

इस पर दुष्टा माता ने कहा—ए पूता! मैं तुम्हारी रसोई में आग लगा दूँगी। आज मेरा सिर दर्द कर रहा है ॥३॥

ए माता! में कौन सी दवा करूँ जिससे तुम्हारे सिर का दर्द अच्छा हो जाय ॥४॥

---

१. बिदाई, मजूरी। २. पाशा खेलना। ३. हत्या कर दी, मार डाला। ४. काट लिया। ५. कलेजा, हृदय। ६. छेद या काट कर ले आया। ७. पकड़ लेते। ८ नष्ट कर दिया। ९ वज्र पड़ जाय- नष्ट हो जाय। १०. वैसी- समान ११ छोड़ दिया १२ सुन्दर १३ ससुराल

माता ने उत्तर दिया—ए पूता (पुत्र) तुम अपनी बहू का कलेजा काट कर ले आवो यही मेरे सिर-दर्द की दवा है ॥५॥

इस पर पति ने कहा—ए मेरी धनिया ! तुम आँगन मे हो अथवा घर के भीतर हो। बहाना बनाते हुए उसने कहा—तुम्हारे घर में विवाह होने वाला है ॥६॥

स्त्री ने कहा—यदि मेरे मायके मे विवाह होगा तो मेरा भाई सुपारी लेकर निमंत्रण देने के लिए अवश्य आयेगा ॥७॥

पति ने कहा—ए धनिया ! जब तुम रसोई घर मे थी तभी नाई निमंत्रण (न्यौता) देने के लिए आया था और मैंने उसे बिदा कर दिया ॥८॥

पति ने कहा—ए मेरे घर के पीछे रहने वाले मेरे भाई मित्र कहार तुम मेरी स्त्री को पालकी में ले चलो ॥९॥

दोनो—पति-पत्नी—एक बन मे गये, दूसरे बन में गये और तीसरे बन मे जाने पर शीतल छाया मिली ॥१०॥

ए भाई कहार ! तुम अब अपनी बिदाई अर्थात् पालकी ढोने की मजूरी ले लो। मैं अपनी धनिया के साथ यहाँ जुआ (पाशा) खेलूँगा ॥११॥

उसने पत्नी के साथ एक बार जुआ खेला, दूसरी बार जुआ खेला और तीसरी बार मे उसकी हत्या कर दी ॥१२॥

बायें हाथ से उसने पत्नी की छाती मे छूरी और कटार से आक्रमण किया और दाहिने हाथ से अपनी स्त्री का कलेजा काट लिया ॥१३॥

पुत्र ने आकर माता से कहा—ए माता ! तुम आँगन मे हो अथवा घर के भीतर हो ! अपनी बहू का काटा हुआ कलेजा लो ॥१४॥

इस पर उस दुष्टा माता ने कहा—कि ए पूता ! तुमने अपनी स्त्री को तो उसके मायके भेज दिया और कुतिया का कलेजा काट कर मेरे पास ले आये हो ॥१५॥

माता की इस घृणित बात को सुनकर पुत्र ने क्रोधित होकर कहा कि ऐसी माता को तुरुक पकड कर ले जाते तो अच्छा होता जिसने मेरी जोड़ी (पति-पत्नी की जोड़ी) को नष्ट कर दिया ॥१६॥

उस नीच माता ने इस पर कहा—कि ए पूता ! मेरे घर में बहुत सा गेहूँ और चावल भरा पड़ा है। मैं तुम्हारा दूसरा विवाह कर दूँगी ॥१७॥

पुत्र ने रोष भरा उत्तर दिया—ए माता ! तुम्हारे गेहूँ और चावल मे मैं आग लगा दूँगा और मेरे दूसरे विवाह मे वज्र पड़ जाय अर्थात् नष्ट हो जाय ॥१८॥

चन्द्रमा और सूर्य के समान सुन्दर तथा प्रकाशमान मेरी स्त्री को तुमने मरवा डाला उसकी हत्या करवा दी और इस कारण मुझे अपनी ससुराल छोड़नी पड़ी १९

विशेष—इस गीत में किसी पुत्र की उत्कृष्ट मातृ भक्ति का चित्रण किया गया है। पितृ भक्त परशुराम ने अपने पिता की आज्ञा से अपनी माता रेणुका का वध कर दिया था। यह मातृ भक्त पुत्र अपनी माता की आज्ञा से अपनी पत्नी का वध कर उसका कलेजा काट कर माता को अर्पित करता है।

इस गीत मे जिस माता का वर्णन किया गया है वह अत्यन्त क्रूर, दुष्टकर्मी और नीच है जो अपने मातृ भक्त पुत्र का विश्वास तक नही करती। गीतों मे दारुण (दरुनिया) सास का वर्णन बहुत मिलता है परन्तु ऐसी दुष्टा सास शायद ही मिले जो अपनी पुत्र बधू का बध ही करवा दे। संस्कृत मे कहा है "कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।" परन्तु यहाँ माता ही दुष्टा के रूप चित्रित की गई है।

१६५ संदर्भ—**किसी राजा की लड़की का नीच जाति के एक लड़के से प्रेम संबंध।**

मोर पिछवरवा पासी[1] बेटवना[2] हो ना।
डारे डारे मारइ कोइलिया हो ना ॥१॥
मचिअइ बइठि राजा कइ बिटिअवा हो ना।
हम चलबइ तोहरे गोहनवाँ[3] हो ना ॥२॥
छोरि देबू (हु) मोरी रानी चटकी चुनरिया हो ना।
पहिरउ न मोरी लुगरिया[5] हो ना ॥३॥
रोइ रोइ राजा धेरिया[6] कड़वा[7] उतारइ हो ना।
रानी पहिरउ न पासी कइ पइरिआ[8] हो ना ॥४॥
रोइ रोइ राजा धेरिया पहिरइ पइरिआ हो ना।
थूँकि देउ रानी मुखवा कइ बिरवा हो ना ॥५॥
रानी हॅथवा मा लेतू बाँसे कइ धोटनवा[9] हो ना।
रानी चलितू न सुअरि बहोरइ[10] हो ना ॥६॥
रोइ रोइ राजा धेरिया सुअरि बहोरइ हो ना।
छुटिगा[11] नइहरे कइ देसवा हो ना ॥७॥
चारि दिना सुअरि बहोरइ मोरि रनिया हो ना।
तोहइ लइचलबइ[12] विदेसवा हो ना ॥८॥

---

१. जाति विशेष जो ताड़ी (नीरा) चुआते तथा बेचते है। २. बेटा, लड़का। ३. गृह, घर। रंगदार, गहरे रंग वाली। ५ फटी, पुरानी, मैली साड़ी। ६. लड़की। ७ कड़ा। ८. पैर में पहिनने का गहना। ९ डंडा। १० इकट्ठा करना। ११ छूट गया १२ ले चलूंगा

मेरे घर के पीछे पासी (ज्ञाति विशेष) का लडका रहता है। वह वृक्ष की डाल पर बैठी हुई कोयल को मारता फिरता है ॥१॥

मचिया के ऊपर बैठी हुई राजा की लडकी उससे कहती है कि मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे घर चलूँगी ॥२॥

इस पर पासी का लड़का उत्तर देता है कि ए मेरी रानी ! यदि तुम मेरे साथ चलना चाहती हो तो तुम इस रंगदार और चटकार चूनरी को छोड दो और उसके स्थान पर मेरी फटी पुरानी लुगरी को पहन लो ॥३॥

राजा की लडकी रो-रो करके अपने हाथ के कडे (आभूषण) को उतार रही हैं। पासी का लड़का कहता है कि ए मेरी रानी ! अब तुम पासी की पइरी (आभूषण) को पहनो ॥४॥

राजा की लडकी रो-रो करके अपने हाथो तथा पैरो मे पइरी पहन रही है। पासी-पुत्र उससे फिर कहता है कि तुम मुँह मे जो पान खा रही हो उसे थूक दो ॥५॥

ए रानी ! अपने हाथ मे तुम बाँस का डडा ले लो और हमारे सूअरो को जाकर हाँक कर लावो ॥६॥

राजा की लडकी रो-रो करके उन सूअरों को इकट्ठा कर रही है और रो-रो कर कहती है कि अब मेरा मायका छूट गया ॥७॥

राजा की लड़की की दयनीय दशा देखकर पासी का लड़का कहता है कि ए रानी ! कुछ दिन तक तुम सूअरो को इकट्ठा करो फिर बाद में मै तुम्हे लेकर परदेस चलूंगा ॥८॥

विशेष—इस गीत में ग्रामीण कवि ने बिना विचार किये प्रेम करने का दुष्परिणाम दिखलाया है। राजा की लड़की का पासी के लडके से प्रेम करना अनुचित था जिसका फल उसे भोगना पड़ता है। इसीलिए किसी कवि ने ठीक ही कहा कि है—

"लायक ही सो कीजिए,
व्याह, वैर अरू प्रीति ॥"

पासी लोग सुअर नही पालते परन्तु इस गीत मे पासी-पुत्र द्वारा सूअर रखने का उल्लेख है।

१८६. सन्दर्भ—पति-पत्नी संवाद। स्त्री के द्वारा अपने पति का बदला चुकाना।

मोरी ननदी दुअरवा खजुरिआ[1],
बढ़ि बाढि के अकास[2] लागि ना ॥१॥

१ छोटा खजर का पेड़ २ आकाश में लग गया

कइसी लाली लाली फरथि खजुरिआ,
तउ जिआ ललचाने बलमू ॥२॥

जइसे चढ़ि जातेआ मोरे यार,
तउ चिखउते[1] आ बलमू ॥३॥

जइसे चढले लपकि देवरा मोर,
बलमुअउ चढि गये ना ॥४॥

जइसे लाली लाली खाथि खजुरिआ,
तउ डोरिइ[2] आ खींचि मारेआ बलमू ॥५॥

जइसे उतरिन आवा मोरे यार,
तउ जियरा डेराने बलमू ॥६॥

जइसे चलउ न हमरे नइहरवा,
तउ जियरा डेराने बलमू ॥७॥

जइसे माया कइ करबइ कुटउनी[3],
बपई कइ पिसउनी[4] बलमू ॥८॥

जइसे भउजी कइ सिझउब[5] रसोइया,
टिकरिआ[6] हम चोरउबइ[7] बलमू ॥९॥

जइसे बइठउ न पटवा[8] के अड़वा[9],
टिकरिआ हम बहुउबइ[10] बलमू ॥१०॥

जइसे टिकरी बझायुं कनपटिया,
रोवत बलमु घरा भागइ बलमू ॥११॥

बलमू ख्याल[11] करा खजुरिआ तरा[12] कइ बात,
जे ओहि तू कइल बलमू ॥१२॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरी ननद के द्वार पर खजूर का पेड़ है। वह बढ़कर आकाश को छू रहा है ॥१॥

उस खजूर का फल लाल-लाल है जिसे खाने के लिए मेरा मन ललच रहा है ॥२॥

यदि मेरा प्रियतम उस पेड़ पर चढ़ जाता तो उसके फलों को मुझे चखाता ॥३॥

जिस प्रकार मेरा देवर पेड़ पर चढ़ गया उसी प्रकार मेरा बालम—प्रियतम—चढ़ गया ॥४॥

---

१. खिलाता। २. डोरी। ३. कूटना। ४. पीसना। ५. रसोई बनाना। ६. मोटी लिट्टी। ७ चुराऊँगी। ८ वस्त्र। ९. पर्दा। १० फेंक दूँगी। ११ याद करो १२ नीचे

जब मै लाल-लाल खजूर का फल खा रही थी उसी समय मेरे प्रियतम ने मुझे रस्सी से खींच कर मारा ॥५॥

जब मेरा पति पेड़ से उतरने लगा तब मेरा मन डरने लगा ॥६॥

मैने प्रियतम को मायके चलने के लिए कहा परन्तु मेरा मन डरने लगा ॥७॥

उस स्त्री ने कहा कि मै अपनी माता के यहाँ अन्न कूटने का काम करूँगी और पिता की पिसौनी करूँगी ॥८॥

मैं अपनी भावज की रसोई बनाऊँगी और अपने खाने के लिए एक लिट्टी चुरा लूँगा ॥९॥

मैं पर्दा की ओट में बैठकर उस रोटी के टुकड़े को फेक दूँगी अथवा उसे जोर से फेक कर मारूँगी ॥१०॥

जब मै अपने बालम की कनपटी मे मारूँगी तब वह रोते हुए अपने घर भाग जायेगी। उस स्त्री ने कहा ए बालम! खजूर के पेड़ के नीचे तुमने जो किया था उस बात को जरा ध्यान दो ॥११-१२॥

१९७. सन्दर्भ—सासु तथा ननद के दुष्ट व्यवहार से दु:खी किसी स्त्री का खेत में गोबर फेंकना। उसके भाई के द्वारा उसके उदासीन होने का कारण पूछना।

गोबरा कइ खेपा[1] लइके निकरीं बहिनिआँ;
भइया बिरिछ[2] तरे ठाढ[3], अरे मोरे भइया ॥१॥
काहेक मोर बहिनी ऊमिलि धूमिलि[4],
काहे तोरा बदना मलीन, अरे मोरे बहिनी ॥२॥
गोबरा कइ खेपवा बहावइ मॉझ खेतवा;
लपकि धरित कम्हिआँउ,[5] अरे मोरी बहिनी ॥३॥
सासु की बोलिआ से ऊमिलि धूमिलि;
ननद बोलइ बिस बोल, अरे मोरे भइआ ॥४॥
सासु तउ अही बहिनी पाकल आमवाँ;
ननद बड़ेरी[6] कइ काग अरे मोरे बहिनी ॥५॥
पाकि के गिरि जइही पाकल अमवाँ;
उड़ि जइही बड़ेरी क काग अरे मोरी बहिनी ॥६॥
बरहे बरिस जउ आया मोरे भइया;
तुहूँ बोलेआ बिख बोल, अरे मोरे भइया ॥७॥

---

१ किसी वस्तु को एक बार ले आना या ले जाना बारी पारी २ वृक्ष ३ खड़ा ४ उदासीन ५ कमर ६ घर के छज्जे का ऊपरी भाग

चनना कइ ड़ड़िआ[1] फँदउवेआ[2] मोरे भइया;
तबउ नइहरवा न जाब[3] ॥८॥
अरे मोर भइया, तबउ नइहरवा[4] न जाब ॥९॥

कोई बहिन ! सिर पर गोबर का खेप लेकर निकली। उसका भाई किसी वृक्ष के नीचे खड़ा था ॥१॥

उस भाई ने पूछा—ए बहिन ! तुम क्यो उदासीन हो और तुम्हारा मुख मलीन क्यो है ॥२॥

भाई ने कहा—तुम गोबर के खेप को इस खेत के बीच मे फेक दो। और प्रेम से उसने अपनी बहन की कमर को पकड़ लिया ॥३॥

बहिन ने उत्तर दिया कि ए भाई ! सास के कटु बचनों से मैं उदासीन हूँ और ननद सदा विष से युक्त बचनो को बोलती रहती है ॥४॥

भाई ने कहा—कि ए बहिन ! तुम्हारी सास पके हुए आम के समान है जो कभी भी चू सकती है अर्थात् मर सकती है और ननद घर के मुड़ेरे पर बैठे हुए कौवे के समान है (जो काँव काँव करके उड़ जाता है। इसी प्रकार से तुम्हारी ननद कुछ दिनो के बाद अपने ससुराल चली जायेगी) ॥५॥

पका हुआ आम पक कर जमीन पर गिर जायेगा और बड़ेरी का काग बोलकर उड़ जायेगा ॥६॥

बहन कहती है कि ए भाई ! तुम भी विष से युक्त कठोर वाणी बोलते हो। तुम्हीं ने मुझसे कहा था कि बारह वर्ष पर अपने मायके आना ॥७॥

ए भाई तुम चन्दन की पालकी में भी बैठा कर यदि अपने घर ले चलोगे तो भी मै मायके नही जाऊँगी ॥८॥

मै निश्चित रूप से कहती हूँ कि मायके नहीं जाऊँगी ॥९॥

१९८. सन्दर्भ—अपनी बहिन के कष्टों को, ससुराल में देखकर किसी भाई का दु.खी होकर रोना। बहिन के प्रति भाई का प्रगाढ़ प्रेम।

मोर पिछुवरवा लालिन सरसोइआ[5] हो ना।
रामा चुनि चुनि बइठइ चिरइया[6] हो ना ॥१॥

भितरा से निकरी हईं भउजी पपिनियाँ हो ना।
रामा चुनती[7] चिरइआ उड़ावइ हो ना ॥२॥

---

१ पालकी। २ यदि ले चलोगे। ३ न जाऊँगी। ४ मायका। ५. सरसो। ६. चिड़ियाँ ७ चुगती हुए।

अउतइ मइ देखेउँ दुइ उजरउटी[1] हो ना।
रामा एक सँवरः एक गोरवा हो ना ॥३॥
गोरवा के हथवा सोहइ लाली छड़िअवा हो ना।
रामा सँवरे के सोहइ ढ़ाल तरुवरिआ हो ना ॥४॥
गोरा तउ अही[2] मोरी माया जी कइ पुतवा,
सँवरा ननदि जी कइ भाई हो ना ॥५॥
बइठउँ न मोरे भइया लाले दरवजवा;
तोहका रची जेवनारवा[3] हो ना ॥६॥
जेवन बइठे सार[4] बहनोइया;
भइया कइ ढरइ लागी आँसुवा हो ना ॥७॥
की मोरे भइया समझेआ बासी[5] कलेवना[6];
की रे बहुआ जी की बोलिआ हो ना ॥८॥
ना तउ समझेउ बहिनी बासी कलेवना;
नाही बहुआ जी की बोलिआ हो ना ॥९॥
चन्द्र सुरुज अइसी[7] बहिनी सकलपेउँ[8];
जरि के कोइलि होइ जाइ हो ना ॥१०।
दुइ मन पिसना दुइ मन कुटना[9] हो ना;
भइया चारि मना कइ सिझइँ रोसइआँ[10] हो ना ॥११॥
सबहि खिआयेउ सबहि पिआयेउँ,
भइआ बचि गइ पइथन[11] टिकरिआ[12] हो ना ॥१२।
ओहू मा मोरे भइया ननदी कलेवना[13];
ओहू मा गोरू[14] चरवहवा हो ना ॥१३।
भइया ओहू मा हमरा भोजनवा हो ना ॥१४।
इ दुःख बाँधो भइया गरुही[15] मोटरिआ हो ना।
भइया रहिआ, बाटि[16] जिनि खोलेया हो ना ॥१५।
इ दुःख जिनि[17] कहेआ भइया माया के अगवा हो ना।
भइया भउजी देइहीं भल उनरवा हो ना ॥१६।

---

१. गौर वर्ण, सुन्दर। २. है। ३. सुन्दर, स्वादिष्ट भोजन
चक)। ५. रात का रखा हुआ भोजन। ६. कलेवा। ७. ऐ
ंकल्प किया, दान दिया। ९. कूटना। १०. पकाना, पड़ता है
के बाद थाली में बचा हुआ आटा। १२. मोटी, रूखी,
कलेवा- अन्नपान। १४ पशु। १५ भारी गंभीर। १६ न
र्स कहना

इ दुःख जिनि कहेआ बपई के अगवा हो ना।
भइया सभवा बइठ. झँखड[1] बपई हो ना॥१७॥

इ दु.ख जिनि कहेआ बहिनी के अगवा हो ना।
इ सुनि बइ ससुरे न जइहो हो ना॥१८॥

इ दुःख कहेआ भइया अगुआ[2] के अगवा[3] हो ना।
भइया जिन मोरी किहेमि अगुअइआ हो ना॥१९॥

का करइँ अगुआ अउ का करइँ पछुआ हो ना।
बहिनी इ दु ख लिखा तोरी लकदिरिआ[4] हो ना॥२०॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरे घर के पीछे लाल सरसो पैदा होता है। चिड़िया उनको चुन चुनकर चुगती है॥१॥

इतने में घर के भीतर से पापिन भावज निकली। ननद ने कहा कि ए भावज! इन चुगती हुई चिडियो को उड़ा दो॥२॥

भावज ने कहा—मैंने गौर वर्ण वाले दो व्यक्तियो को आते हुई देखा है। उनमे एक साँवला था और दूसरा गोरा॥३॥

गोरे के हाथ मे लाल छड़ी सुशोभित हो रही थी और साँवले के हाथ मे ढाल और तलवार थी॥४॥

भावज ने कहा—गोरा तो मेरी माता (सभवत मास) का पुत्र है और साँवला मेरी ननद का भाई है॥५॥

बहन ने कहा—ए भइया! मेरे लाल अर्थात् सुन्दर दरवाजे पर बैठो मैं तुम्हारे लिए स्वादिष्ट भोजन बनाती हूँ॥६॥

भोजन करने के लिए साला और बहनोई दोनो एक साथ ही बैठे। इतने में भाई की आँखो से आँसुओ की धारा प्रवाहित होने लगी॥७॥

इस पर उसकी बहिन ने उसके रोने का कारण पूछते हुए कहा कि ए भइया! क्या तुमने इस भोजन को बासी कलेवा समझ लिया अथवा भावज के व्यङ्ग्य वाणी से दुखी होकर रो रहे हो॥८॥

इस पर भाई ने उत्तर दिया कि ए बहिन! मैं इसे न तो बासी कलेवा समझता हूँ और न बहू (तुम्हारी भावज) की कटु वाणी के ही कारण रो रहा हूँ॥९॥

मैंने चन्द्रमा और सूर्य के समान अपनी बहिन को विवाह मे सकल्प कर दिया था वह जलकर कोयल के समान काली हो गई है १०

गाँवो मे कुछ लोग विवाह मे अगुवाई का काम करते हैं। ये लोग प्रायः दुष्ट प्रकृति के होते है। ये रूपयों के लोभ से अथवा अपने अन्य किसी स्वार्थ की सिद्धि के लिए प्राय अनमेल विवाह करा दिया करते है जिससे विवाहिता कन्याओं को बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है। ये अगुवा प्राय: अनमेल या बेमेल विवाह कराने मे ही दक्ष होते हैं। ऐसे ही किसी नीच अगुवा का उल्लेख इस गीत मे किया गया है।

गाँवो मे किसी कन्या का विवाह किसी निर्धन, गरीब, लंगडे-लूले, अन्धे आर वृद्ध पति से होना उसके कर्म का फल, उसके भाग्य की अमिट निशानी मानी जाती है। मनुष्य के दूषित कर्मो का फल निरपराध कन्या के भाग्य मढ दिया जाता है। यह गीत बड़ा ही कारुणिक तथा हृदय विदारक है जिसके सामने भवभूति की यह उक्ति चरितार्थ होती है।

"अपि ग्रावा रोदति, अपि दलति वज्रस्य हृदयम्।"

१८८. सन्दर्भ—किसी दुष्टा बहिन के द्वारा अपने भाई का बध करवाना। माता के द्वारा उस बेटी का बध करवाना।

सात बहिनियाँ कइ भइया तउ बइतउ विदेसक चले।
रामा बारह बरिस पइ जउ लउटेन[1] तउ बहिनिआ के देस क चले ॥१॥
रामा बहिनी तउ उठइँ झड़ाकइ[2] तउ भइया क भेटइ चली।
रामा भइया तउ उठइँ झड़ाक से तउ हीरा मोती हाथ धरी ॥२॥
बइठा मोरे भइया लाले दरवजवा, तोइका रचेउँ जेवनार।
एक पूरी पोई[3] दूसर पूरी न, तीसरे माँ भइया कइ नीद लागी ॥३॥
बहिनी जउ उठी झडाक से, तउ ससुर लगा धाइ चली।
ससुरु एक बात हम कही; हमार तोर बात परी।
ससुरु भइया क डारउ[4] मरवाइ, तउ हीरा मोती हाथ करी ॥४॥
पतबह[5] एक बात हम कही, हमार तोर बात परी।
भइया डउब मरवाइ तउ समधिआने[6] क नात[7] टूटी ॥५॥
बहिनी जउ उठी हइँ झड़ाक से तउ जेठा लगे धाइ चली।
जेठा एक बात हम कही, हमार तोर बात[8] परी।
जेठा भइया के डारउँ मरवाइ, तउ हीरा मोती हाथ करी ॥६॥
बहुआ एक बात हम कहीं, हमार तोर बात परी।
बहुआ बिन सारे कइ कवनि ससुरारि, बहनोइ हमका के रे कही ॥७॥
बहिनी जउ उठीं हइ झड़ाक से, तउ देवरा लगे धाइ चली।
देवरा एक बात हम कहीं, हमार तोर बात परी।

---

१ लौटा २ जल्दी से। ३ बनाना। ४. मरवा डालो। ५. पतोहू समधी होने का ७ नाता संबन्ध। ८. बात पड़ गई।

देवरा भइया के डारउ मरवाइ, तउ हीरा मोती हाथ करी ।।८।।
रामा बहिनो धरइँ दुइनउ हाथ, देवर सिर काटिन चली ।।९।।
रामा गंगा, जमुन बिच रेतवा[1], वही मा दुइनउ[2] जन फेकन चली ।।१०।।
सोवति रही बनकइ[3] माया सपन एक देखिन चली।
रामा पूता अउ[4] सब हीरा मोती माटी भये ।।११।।
रामा माया जउ उठीं हइँ झड़ाक से, तउ बिटीवा के देसक[5] चली।

रामा बिटिआ जउ उठइँ झड़ाक से, तउ माया क भेटइँ चली ।।१२।।
दूरी रहिउ राँड की धिरीअवा[6], बुढ़इआ[7] मोरी माटी[8] किहिउ।

मोरा पूता अउ हीरा मोती माटी किहिउ ।।१३।।
दमदा एक बात हम कहो, हमार तोर बात परी।
दमदा धेरिआ क डारउ (डावा) मरवाइ,
तउ सरहजिआ क बीहन चली ।।१४।।
रामा माया धरइँ दुइनउ हाथ,
दमाद सिर काटिन चलइँ।
रामा गंगा जमुन बिच रेतवा,
तउ दुइनउ जन फेकिन चलइँ ।।१५।।

कोई व्यक्ति सात बहिनी का भाई था। वह जीविकोपार्जन के लिए विदेश (परदेस) चला गया। जब वह बारह वर्षों के बाद लौट कर घर आया तब बहन से मिलने के लिए उसके घर गया ।।१।।

उसकी बहिन अपने भाई के आने का समाचार सुनकर जल्दी से उठी। उसका भाई भी जल्दी से उठा और उसने अपनी बहिन के हाथों पर हीरा और मोती को रख दिया ।।२।।

बहिन ने उससे कहा—भइया! तुम लाल (सुन्दर) दरवाजे पर बैठो। मैं तुम्हारे लिए भोजन बना रही हूँ। उसने एक रोटी बनाया, दूसरी रोटी को बनाया। तीसरी रोटी बनाते समय उसका भाई सो गया ।।३।।

वह बहिन जल्दी से उठी और अपने ससुर के पास गई। उसने ससुर से कहा—मैं आप से एक गुप्त बात कहना चाहती हूँ। यदि तुम मेरे भाई की हत्या करवा दोगे तब तुम्हे बहुत सा हीरा-मोती हाथ लगेगा ।।४।।

---

१. रेत, बालू। २. दोनों आदमी। ३. उसकी। ४. और। ५. देश, गाँव को। ६ दुहिता लड़की ७ बुढ़ापा ८ मिट्टी में मिला दिया नष्ट कर दिया

ससुर ने उत्तर दिया—पतोहू ! मैं तुम से एक बात कहना चाहता हूँ। यदि मै तुम्हारे भाई को मरवा डालूंगा तो समधी होने का नाता टूट जायेगा ॥५॥

वह बहिन झट से उठी और अपने जेठ के पास गई और उससे कहने लगी कि तुम हमारे भाई को मरवा डालोगे तब तुमको प्रभूत हीरा और मोती मिलेगा ॥६॥

इस पर उसके जेठ ने उत्तर दिया कि ए भवहि ! (बहुआ) मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ। यदि मै तुम्हारे भाई को मरवा डालूंगा तब मुझे बहनोई कौन कहेगा ! बिना साले के ससुराल व्यर्थ है ॥७॥

वह स्त्री जल्दी से उठी और अपने देवर के पास दौड़ करके गई। उसने कहा—ए देवर ! यदि तुम मेरे भाई को जान से मरवा डालोगे तब तुम्हारे हाथ बहुत सा हीरा और मोती लगेगा ॥८॥

संभवत उस स्त्री का देवर इस नीच कार्य के लिए तैयार हो गया। बहिन ने भाई के दोनो हाथों को पकड़ लिया और देवर ने उसके भाई का सिर काट दिया। गगा और जमुना के बीच रेत पड़ा था। वही पर दोनो उस शव को फेकने के लिए चले ॥९-१०॥

उसकी पुत्री की माता अपने घर मे सो रही थी। उसने एक सपना देखा कि मेरा पुत्र और उसके द्वारा कमाया गया सारा हीरा और मोती मिट्टी मे मिल गया अर्थात् नष्ट हो गया ॥११॥

जब माता जल्दी से उठी तब वह अपनी लडकी के देश को चल पड़ी और जब पुत्री जल्दी से उठी तब वह अपनी माता से भेंट करने के लिए चल पडी ॥१२॥

माता ने अपनी पुत्री से कहा—ए विधवा माता की पुत्री ! तुम दूर रहो। तुमने मेरी वृद्धावस्था को मिट्टी में मिला दिया। मेरा पुत्र और सर्वस्व धन नष्ट हो गया ॥१३॥

सास ने अपने दामाद से कहा कि मैं तुमसे एक गोपनीय बात कहना चाहती हूँ। ए दामाद ! तुम मेरी बेटी की हत्या कर दो। तभी सरहज से विवाह करना ॥१४॥

माता ने अपनी पुत्री का दोनो हाथ पकड़ लिया और उसका दामाद अपनी स्त्री का सिर काटने के लिए चला। गंगा और जमुना के बीच रेत पड़ गया था। वही पर दोनों उसको फेकने के लिए चल पड़े ॥१५॥

अवधी लोक गीतो तथा अन्य प्रदेशो के लोक गीतो मे भाई और बहिन मे परस्पर अत्यन्त घनिष्ठ प्रेम का वर्णन पाया जाता है। परन्तु इस गीत मे बहिन के द्वारा अपने भाई की हत्या करवाने का उल्लेख है। इस घटना को अपवाद स्वरूप ही चाहिए क्योकि ऐसे निकृष्ट कर्म का उल्लेख संभवत भारतीय लोक साहित्य में कही नही है

२००. **सन्दर्भ—किसी सास के द्वारा अपनी पतोहू का बह स्वरूप पुत्र के द्वारा माता की निन्दा।**

हरा[1] जोति आवहि कुदरिया[2] गोड़ि आवइँ न।
माया जीरा[4] अइसी धनियाँ कहाँ रे गईं न ॥१॥

तोहरिन धना पूता गरभ[5] गुमानिन[6] न।
रँड़वा कइ धेरिआ पानी क गइ न ॥२॥

देखि तउ आवा माया उहइ पनिघटवा, पनिघटवा न।
लजुरी[7] अउ गगरी हलर[8] करइ न ॥३॥

हरा जोति आवहि कुदरिया गोडि आवइँ न।
माया जीरा अइसी धनिया, कहाँ रे गईं न ॥४॥

तोहरी धना पूता गरव गुमानिन गुमानिन न।
रँड़वा कइ धेरिया पीसइ गईं न ॥५॥

देखि तउ आवा उहइ पिसनउरा[9], पिसनउरा न।
माया किलिया[10] बेंदुलिया हलरा करइ न ॥६॥

हरा जोति आवहि कुदरिया गोड़ि आवइ न।
माया जीरा अइसी धनिया कहाँ रे गईं न ॥७॥

तोहरी धना पूता गरव गुमानिन गुमानिन न।
रँड़वा कइ धेरिया वइ तउ रोटी बेलइ[11] गइ न ॥८॥

देखि आवा माया उहइ रोमइआँ,
पिढ़वा[12] बेलनवा[13] हलर करइ न ॥९॥

हरा जोति आवहि कुदरिया गोड़ि आवइँ न।
माया जीरा अइसी धनियाँ कहाँ रे गईं न ॥१०॥

तोहरी धनियाँ पूता गरव गुमानिन गुमानिन न।
रँड़वा कइ धेरिया नइहर गइ न ॥११॥

देखि तउ आवा माया उहै ससुररिया न।
माया सारी अउ सरहजिया[14] धाइ आईं न ॥१२॥

---

१. हल। २. कुदाली। ३. गोड़ना, कुदाली से खेत खोदना। ४. मान पतली, कोमलाङ्गी। ५. गंभीर। ६. घमंडी। ७. रस्सी। ८. हिल मट्टा पीसने का स्थान। १० बाँस की कील ११ बेलना पकाना १२ ३ बेलना १४ सरहज स्त्री की छोटी बहिन

हरा जोति आवहि कुदरिया गोड़ि आवइँ न ।
माया जीरा अइसी धनियाँ कहाँ रे गई न ॥१३॥

तोहरी धनियाँ पूता गरव गुमानिन गुमानिन न ।
रँडवा कइ धेरिया निरावइ[1] गई न ॥१४॥

मेड़वा[2] की अरिआ[3] एक परी ठठरिआ[4] रे न ।
स्वामी दइ[5] देतेया अगिया, लकड़िया रे न ॥१५॥

केहि तोहइ मारा केहि उदवासा[6] न ।
केहि तोहरी ठठरी बहाइ गये न ॥१६॥

माया तोहरी मारिन, वहिनि उदवासिन न ।
भइया तोरा ठठरी वहाइ गये न ॥१७॥

अइसी माया आजु मरि जातिन न ।
जेन मोरी जोड़िया[7] बिगाड़िनि न ॥१८॥

अइसेन भइया कइ कटतेउ मुड़वा ।
जेन[8] मोरी जोड़िया बिगाड़िनि न ॥१९॥

कोई पुरुष हल जोत करके और कुदाली से खेत को गोड (खोद) करके घर आया और उसने आते ही अपनी माता से पूछा कि ए माँ ! जीरा के समान पतली मेरी धनिया अर्थात् स्त्री कहाँ गई है ॥१॥

माता ने जबाब दिया—ए पुत्र ! तुम्हारी स्त्री बहुत घमंडी—गर्वीली—है वह विधवा माँ की पुत्री, पानी भरने के लिए कुँए पर गई है ॥२॥

पुत्र ने कहा—ए माँ ! मैं पनघट पर देख आया हूँ। वहाँ कुँए में लगी रस्सी हिल रही है ॥३॥

माँ ! मैं हल जोतकर आ गया। और कुदाल से खेत गोडकर आ गया। तुम बताओ जीरे के समान मेरी पतली स्त्री कहाँ गई है ? ॥४॥

माता ने पुन वही बात कही—ए पुत्र ! तुम्हारी स्त्री बड़ी गर्वीली है। वह राँड की लड़की अन्न पीसने के लिए गई है ॥५॥

पुत्र ने कहा—माँ ! मैं अन्न पीसने के स्थान पर भी देख आया। वहाँ जाँत को कील और बेट (मूठ) हिल रही थी ॥६॥

पुत्र ने फिर पूछा कि माँ ! मेरी जीरा के समान स्त्री कहाँ गई है, इसे बतलाओ ॥७॥

---

१. निराने के लिए। २. मेड़, दो खेतों के बीच मे पानी रोकने के लिए बनाया गया छोटा सा बाँध। ३. आरी, किनारा। ४. ठठरी, कंकाल। ५. दे देते। ६ उद्वासित किया घर से निकाल दिया ७ स्त्री-पुरुष का जोड़ा ८ जिसने।

माता ने पुनः वही उत्तर दिया—तुम्हारी स्त्री बड़ी गर्वीली हैं। राँड़ की वह बेटी। रोटी बेलने के लिए गई है ॥८॥

पुत्र ने कहा—माँ ! मैं रसोई घर भी देख आया। वहाँ पीढा और बेलना खाली पड़ा हुआ है ॥९॥

पुत्र ने फिर पूछा कि माँ ! मेरी जीरा जैसे पतली पत्नी कहाँ गई है ॥१०॥

माता ने कहा—तुम्हारी स्त्री बड़ी गर्वीली है। राँड़ की वह बेटी अपने मायके गई है ॥११॥

पुत्र ने कहा—माँ ! मैं उसको ससुराल मे भी देख आया। मेरी साली और सरहज दौडकर मेरे पास आई ॥१२॥

पुत्र ने पुन. पूछा—जीरा के समान मेरी पतरी धनिया कहाँ गई है ॥१३॥

दुष्टा माता ने फिर बहाना बनाते हुए कहा कि ए पुत्र ! तुम्हारी स्त्री बडी गर्वीली है। राँड़ की वह पुत्री खेत को निराने के लिए गई है ॥१४॥

जब वह दुःखिया पति खेत की ओर गया तब खेत की मेड़ के किनारे एक ठठरी पडी हुई थी। उस ठठरी ने कहा—ए स्वामी लकड़ियों को इकट्ठा कर तुम मेरा दाह-संस्कार कर दो ॥१५॥

इस पर पति ने उससे पूछा कि किसने तुम को मारा और किसने तुमको उद्वासित किया तथा किसने तुम्हारी ठठरी को यहाँ लाकर बहा दिया ॥१६॥

इस पर उस ठठरी ने कहा—तुम्हारी माता ने मुझे मारा, बहिन ने उद्वासित कर दिया और तुम्हारे भाई ने मेरी ठठरी बहा दी ॥१७॥

इस पर क्रोधित होकर उस व्यक्ति ने कहा कि ऐसी माँ ! भगवान् करे मर जाय जिसने मेरी जोड़ी को बिगाड दिया अर्थात् मेरी पत्नी की हत्या कर मेरी जोडी को नष्ट कर दिया ॥१८॥

वह क्रोधित होकर फिर कहता है—मै ऐसे भाई का सिर काट लेता जिसने मेरी जोड़ी को बिगाड दिया ॥१९॥

विशेष—इस गीत मे किसी दुष्टा तथा कठोर कर्मा सास का बड़ा ही सजीव चित्रण किया गया है। पुत्र के द्वारा बार-बार यह पूछने पर कि मेरी स्त्री कहाँ गई है यह दुष्टा माता कभी स्पष्ट उत्तर नही देती और अन्त तक अपने पुत्र को भ्रम मे डाले रहती है। अन्त में यह सास अपने पुत्र-वधू की हत्या कर अपने क्रूर तथा निर्मम कर्मों पर पक्की मुहर लगा देती है।

इन्हीं क्रूर तथा निर्मम कुकर्मों के कारण लोक गीतों में सास को "दरुनिया" (दारुण तथा दुष्टा) की उपाधि से विभूषित किया गया है। भोजपुरी मे भी ऐसे बहुत से लोकगीत मिलते हैं जिनमें सास कर्कशा स्त्री के रूप मे चित्रित की गई है

संस्कृत साहित्य में भी सास एक कुटिल, दुष्ट तथा दारुण जीव के रूप में ही अंकित की गई है। कोई पुत्र-वधू अपने कष्टों का वर्णन करती हुई कहती है कि.—

स्वश्रूः पश्यति नैव, पश्यति यदि भ्रूभङ्गवक्रेक्षणा।
मर्मच्छेद पटुः·········· · ·· ब्रूते ननान्दा वयः॥
अन्यासा मयि किं ब्रवीमि चरित, स्मृत्वा मनो वेपते।
कान्तः स्निग्ध दृशा विलोकयति मा एतावदाग मखि॥

२०१. सन्दर्भ—किसी वीर पुरुष का रण-क्षेत्र में लड़ते हुए मर जाना। उसकी स्त्री को आजीवन कष्ट।

कँहवईं[1] उपजी पुरइन[2], कहवइ खाड़े[3] रइआ;
क उधव भवन के बाप, गरुहे[4] वइ राजा तिलोइ[5] ॥१॥
तलवइं[5] ज उपजइ पुरइनि, माया कोखी जनमे खाड़े रइआ;
क उधव भवन के बाप, गरुहे वइ राजा तिलोई ॥२॥
माया जउ पोइहिं पूरी बहिनि जउ अउटीहिं[6] दूध।
खाइ न लेहु खाँडे रइआ, ऊधव भवन के बाप ॥३॥
पहिलइ कवर उठावईं खाड़े रइआ, निकरइ माछी[7] अरुबार[8]।
ऊधव भवन के वाप, गरुहे वइ राजा तिलोई ॥४॥
दूसर कवर[9] उठावइँ खाँड़े रइआ, अहिरा लावइ पुकार[10]।
ऊधव भवन के बाप, गरुहे वइ राजा तिलोई ॥५॥
छिकतइ[11] घोड़वाग लादेन खाँड़े रइआ;
छिकतइ भये असवार।
छिकतइ पइठे रइनि[12] मां,
होइगे गीध मसान[13] ॥६॥
अनमन[14] आवइ वन कइ घोडिआ;
अनमन गवना के लोग।
आरे मचकत आवइ खाड़े रइआ,
गरुहे तइ राजा तिलोई ॥७॥

---

१. कहाँ। २. पुरैन। ३. खाण्डेराव—नाम विशेष। ४. बड़ा, गम्भीर। ५. अवध की एक तालुक्केदारी। ६. गर्म करना। ७. मक्षिका। ८. बाल। ९. कौर, ग्रास। १० आवाज। ११ छींक करते ही। १२ रण-युद्ध। १३- श्मशान। १४- अन्य-मनस्क उदासीन।

माया तउ रोवइँ वन कइ तीस दिना;
बहिनी तिथि तेउहार।[1]
धनियाँ जउ रोवइँ जनम जुग;
जेकइ ढ़रिगा[2] गुमान[3] ॥८॥

कहाँ पुरइन उपजी हुई हैं और खाण्डेराव नामक वीर कहाँ है और गंभीर तथा श्रेष्ठ राजा तिलोई कहाँ है ॥१॥

ताल मे पुरइन उत्पन्न होती है, खाण्डेराव अपनी माता के गर्भ से पैदा होता है। तिलोई का राजा बड़ा और श्रेष्ठ है ॥२॥

माता पूड़ी बना रही है और बहिन दूध गर्म कर रही है। माता कहती है कि ए खाण्डेराव! तुम भोजन कर लो ॥३॥

खाण्डेराव ने खाने के लिए जब पहिला कौर उठाया तब उसमे मक्खी और बाल निकल गया। तिलोई का राजा बहुत बड़ा है ॥४॥

भोजन करने के लिए जब खाण्डेराव ने दूसरा कवर उठाया तब अहीर ने गोहार लगाई अर्थात् उसने सहायता के लिए प्रार्थना की ॥५॥

छींक होते ही खाण्डेराव ने घोड़े पर जीन को लादा और घोड़े पर सवार हो गया। छींक होते ही वह लड़ाई के मैदान में जा पहुँचा और उसने शत्रुसेना को नष्ट भ्रष्ट करके उस युद्ध-क्षेत्र को श्मशान के रूप मे परिणत कर दिया और गिद्ध वहाँ घूमने लगे ॥६॥

बन से घोड़ा उदासीन होकर लौटा और गवना के लोग भी दु:खित होकर आ रहे हैं। खाण्डेराव प्रसन्न होकर मचकता हुआ आ रहा है। तिलोई का राजा श्रेष्ठ है ॥७॥

उसकी माता तीस दिनो तक अर्थात् महीने भर तक रोती है और उसकी बहिन तिथि और त्यौहार के दिन रोती है। उसकी स्त्री जन्म जन्म तक, युगो तक रोती है क्योंकि उसका सौभाग्य रूपी गर्व नष्ट हो गया ॥८॥

विशेष—इस गीत में सामन्ती युग का चित्रण किया गया है जब वीर लोग युद्ध क्षेत्र में जाकर अपने शौर्य की परीक्षा किया करते थे तथा अपने पराक्रम को प्रदर्शित करते थे।

---

१. त्यौहार। २. गिर गया, नष्ट हो गया। ३. घमंड. सौभाग्य रूपी गर्व

२०२. सन्दर्भ—दो सौतों का आपस में लड़ना-झगड़ना तथा फलस्वरूप पति का दुःखी होकर पश्चात्ताप करना। अन्त में अपने सतीत्व के प्रताप से विवाहिता स्त्री का सकुशल नदी पार कर जाना तथा रक्षिता का उसमें डूब जाना।

ऊँची कुइयाँ कइ नेइली[1] जगतिआ[2] हो ना।
ओपर पनिया भरइ एक बराम्हनि[3] हो ना॥१॥

घोडवा चढल आवइ एक रजपूतवा हो ना।
रानी बूँद एक पनिया पिआवहु हो ना॥२॥

कइसे के पनिया पिआवहु राजा के पुतवा हो ना।
अब मोरी जाति अहइ जोलहिनिआँ[4] हो ना॥३॥

जउ तोहरी जतिआ होती जोलहिनिआ हो ना।
तउ दुइनउ काने बरिआ[5] झलकती हो ना॥४॥

पनियाँ पिआवत झलकी बतिसिआ[6] हो ना।
राजा जतिआ जउ पायेन बम्हनिआँ हो ना॥५॥

छोड़उ धना लुगरी पहिरउ धना चुनरी हो ना।
अब हमरे गोहने[7] चली चलउ हो ना॥६॥

एक बन गयेन दूसर बन गयेन हो ना।
अब तीसरे माँ राजा कइ महलिआ हो ना॥७॥

अपनी महलिया से रनियाँ निहारइ हो ना।
राजा सवनिया[8] लिआये आवइ[9] हो ना॥८॥

दूसर दूसर जिनि करउ रनियाँ हो ना।
रानी गोबरा काढ़न[10] दूसरि आवइ हो ना॥९॥

बिहुई[11] अउ उढ़री[12] करइ झोंटा-झोंटी हो ना।
रामा राजा ड़ेहरी बइठ के झँखई[13] हो ना॥१०॥

रामा कउनीक[14] मारउँ केका गरिआवउँ हो ना।
अउ केका करउँ घर टिकइतिनि[15] हो ना॥११॥

---

१. नीची। २. कुँये के चारों ओर बना हुआ चबूतरा जिस पर चढ़कर लोग कुंये से पानी भरते हैं। ३. ब्राह्मणी। ४. जुलाहे की स्त्री। ५. बाली। ६. बत्तीसी, बत्तीस दाँतों की पंक्ति। ७. गृह, घर। ८. सौत। ९. आता है। १०. फेंकने के लिए। ११. विवाहिता स्त्री। १२. रक्षिता, रखेलिन। १३. पछताता है। १४. किसको १५ टिकइतिनि प्रधान स्त्री

वोही क मारौ वोहनि क गरिआउँ हो ना।
रामा उढरी क करउँ घर टिकइतिनि हो ना ॥१२॥
सिंकिअइ[1] चिरि चिरि नइआ बनावइ हो ना।
एक नइआ चढइँ राजा रानी हो ना ॥१३॥
वोही कइ नइआ उतरि गइ परवा हो ना।
अब उढ़री बुढ़इ[2] मझधारवा[3] हो ना ॥१४॥
वोही कइ धरम मनउतेआ[4] रजऊ[5] हो ना।
अब हमहूँ उतरि जाइनि परवा[6] हो ना ॥१५॥

ऊँची कुंइयाँ की नीची जगत है। उसके ऊपर चढकर ब्राह्मण की कोई स्त्री पानी भर रही थी ॥१॥

किसी राजा का लड़का (राजपुत्र) घोड़ा पर चढ़ कर चला आ रहा है। उसने ब्राह्मणी से कहा कि ए रानी ! मुझे एक बूँद पानी पिलाओ ॥२॥

उस स्त्री ने कहा—ए राजा के पुत्र ! मैं तुम्हे पानी कैसे पिलाऊँ ? मेरी जाति जुलाहे (मुसलमान) की है ॥३॥

इस पर राजकुमार ने उत्तर दिया कि यदि तुम्हारी जाति जुलाहा की होती तो तुम्हारे कानो में बाली (कान का एक आभूषण) झलकती होती ॥४॥

पानी पिलाते समय उस स्त्री की बत्तीसी (दन्त पंक्ति) सुशोभित होने लगी। राजकुमार ने पता लगा लिया कि ब्राह्मण जाति की स्त्री है ॥५॥

राजकुमार ने कहा कि ए धनिया। अपनी लुगरी (गन्दी तथा फटी पुरानी साडी) को छोड दो और चुनरी पहिन लो। अब तुम मेरे घर चलो ॥६॥

वह स्त्री एक बन मे गई। दूसरे बन मे भी गई। तीसरे बन मे राजा का महल था ॥७॥

अपने महल से उसकी रानी झाँक रही थी। उसने कहा कि मालूम होता है कि मेरा पति मेरी सौत को ला रहा है ॥८॥

उसने अपनी स्त्री से कहा कि ए रानी दूसरी दूसरी (सौत) मत करो। यह तुम्हारी सौत गोबर पाथने के लिए आयी है ॥९॥

बिहुई (विवाहिता स्त्री) और उढ़री (रखैल स्त्री) दोनो आपस मे झगडा करती हुई झोंटा-झोंटी (सिर के बालो को खीच खीच कर लडना) करने लगीं। वह इस गृह कलह को देखकर द्वार पर बैठ कर दु.ख तथा पश्चात्ताप करने लगा ॥१०॥

---

१. सींक को। २. डूब गई। ३. मध्य धारा। ४. मनाता है। ५. राजा पति ६ पार।

वह दु:खी होकर सोचने लगा कि मै किसको मारूँ और किसको गाली दूं ? और किसको अपनी पटरानी (प्रधान स्त्री) बनाऊँ ॥११॥

मैं अपनी व्याहिता स्त्री को ही मारूँगा और उसी को गाली दूंगा और उढरी को ही अपने घर की पटरानी बनाऊँगा ॥१२॥

सीक को चीर चीर कर नाव बनाई गई और उस नाव पर राजा और रानी दोनो सवार होकर चले ॥१३॥

उन दोनो की नाव तो पार लग गई परन्तु उढ़री मझधार मे डूबने लगी ॥१४॥

उढरी ने कहा कि ए मेरे राजा ! अब उसके धर्म को मनावो जिससे मेरी नाव भी पार लग जाय ॥१५॥

विशेष—इस गीत मे बहु विवाह का उल्लेख पाया जाता है। दोनो सौतो का झोटा पकड़ कर आपस में लड़ने का भयंकर दृश्य प्रस्तुत किया गया है। वास्तव मे सौत आपस मे एक दूसरे को फूटी नजर से भी नही देखना चाहती। यह कहावत प्रसिद्ध है कि "चून (आटे) की सौत भी अच्छी नही लगती"। फिर यदि सौत कोई साकार स्त्री हो तो फिर क्या कहना है ? सौतिया डाह बहुत बुरी चीज होती है। एक भोजपुरी गीत मे कोई स्त्री कहती है कि मैं अपनी सौत की छाती पर पत्थर कुटवा कर सड़क बनवाऊँगी और उसी पर रोज चहल कदमी करूँगी।

'सवती के छतिया पर सड़क रे कूटइबों रोज आइबि चलि जाब'

लोक गीतो मे ऐसे अनेक गीत उपलब्ध होते हैं जिनमे सौतों के कारण गृह कलह का बड़ा ही बीभत्स दृश्य चित्रित किया गया है।

२०३. सन्दर्भ—भाई द्वारा बहिन से खेलवाड़ करना जिसमें बहिन की साड़ी का फटना। माता द्वारा पुत्र के इस कार्य पर रोष प्रकट करना।

मोरे पिछुअरवा पाकी गुलरिआ हो ना।
गोपी[1] तोरइँ राधा खाइहिं हो ना ॥१॥

पहिली डरिया[2] नवाइन गोपीचन्द भइया हो ना।
राधा कइ फटि गइ चुनरिआ हो ना ॥२॥

चुनरी कइ बदली पितम्बर देबइ हो ना।
बहिनी माया आगे अगिया[3] जिनि लगाया हो ना ॥३॥

---

१. गोपीचन्द, फल। २. डाल। ३. आग लगाना—किसी बात को झूठमूठ बढ़ाकर इस तरह से कहना जिससे झगड़ा मच जाय

अगिया लगावउँ भइया तोहरे पितम्बर हो ना।
भइया माया आगे अगिया लगइबइ हो ना ॥४॥

गगरी जउ बोरेन धरेन धिरहुचिआ[1] हो ना।
राधा माया आगे लइया[2] लगावइँ हो ना ॥५॥

मुँगिया दरिके दलिया बनाये हो ना।
झीन[3] सरि चउरे कइ भतवा[4] हो ना ॥६॥

जेवइँ बइठें गोपी गोवरधन हो ना।
राधा माया आगे लइया लगाबइँ हो ना ॥७॥

माया हमरी चुनरिया भइया फारेन हो ना।
अगिया लगावउँ बेटा तोहरी जवनियाँ हो ना ॥८॥

बेटा बहिनी से किहेआ जउ खिअलिआ[5] हो ना।
माया निसरि[6] जोगिया होइ जाबइ हो ना ॥९॥

देसइ देसइ[7] बेटा भिखिआ जउ माँगेया हो ना।
बेटा बहिनी दुआरे जिनि जाया हो ना ॥१०॥

देसइ देसइ माया भिखिआ जउ मँगबइ हो ना।
माया बहिनी दुआरे धुनिआ[8] लउबइ[9] हो ना ॥११॥

कोई बहिन कहती है कि मेरे घर के पीछे पकी हुई गूलर का पेड़ है। उसे गोपी (नाम विशेष) तोड रहा है और राधा उसे खा रही है ॥१॥

गोपी चन्द नामक उसके भाई ने उस पेड की पहिली डाल को झुकाया जिससे उसकी बहिन राधा की चूनरी (साड़ी) फट गई ॥२॥

इस पर भाई ने कहा कि ए बहिन! मैं इस चूनरी के बदले में तुम्हें पीताम्बर (पीला रेशमी वस्त्र) दूँगा। तुम माता के पास जाकर झूठ मूठ झगड़ा मत लगा देना ॥३॥

बहिन ने क्रोधित होकर कहा—ए भाई! तुम्हारे पीताम्बर में मैं आग लगा दूँगी। मै माता के सामने जाकर अवश्य आग लगाऊँगी ॥४॥

जब ऊँचे स्थान पर माता ने कूँये से पानी भर कर रखा, उसी समय राधा ने अपनी माता से लाई लगाया अर्थात् अपने भाई के अपराध को बढा चढा कर कहा ॥५॥

---

१. ऊँचे स्थान पर। २. झगडा लगाना। ३. पतला तथा स्वादिष्ट चावल। ४. भात। ५. खिलवाड़, क्रीड़ा। ६ निकल करके। ७. देश देश में। ८. मोटा लकड़ी का कुन्दा जिसे साधु लोग सदा जलाते रहते हैं। ९ लगाऊँगी।

बहिन ने मूँग को दल करके दाल बनाया और पतले तथा स्वादिष्ट चावल का भात बनाया ॥६॥

जब गोपीचन्द भोजन करने के लिए बैठा तब राधा (बहिन) ने माता के सामने भाई के अपराध को कहा ॥७॥

माता ! मेरी चूनरी को भाई ने फाड दिया है। इस पर अत्यन्त क्रोधित होकर माता ने कहा कि ए बेटा ! तुम्हारी जवानी में आग लग जाय क्योंकि तुमने अपनी बहिन के साथ खेलवाड किया है।

इस पर दुःखी होकर भाई ने कहा कि ए माता ! मैं घर से निकल करके जोगी हो जाऊँगा ॥८-९॥

इस पर माता ने कहा कि ए बेटा ! भिन्न-भिन्न देशों में भीख माँगना। परन्तु अपनी बहिन के द्वार पर मत जाना ॥१०॥

पुत्र ने उत्तर दिया—माता मै भिन्न-भिन्न देशों मे जाकर भीख मागूँगा परन्तु अपनी बहिन के घर पर धूनी लगाऊँगा ॥११॥

विशेष—लोकगीतो मे भाई और बहिन के अकृत्रिम, स्वाभाविक और घनिष्ट प्रेम का वर्णन पाया जाता है। परन्तु इस गीत में भाई के द्वारा गलती से बहिन की साड़ी के फटने का उल्लेख हुआ है। माता के द्वारा भर्त्सना किये जाने पर भाई घर-द्वार छोड़ कर जोगी वन जाता है। विभिन्न स्थानो पर भिक्षा माँगने पर भी वह अपनी बहिन के द्वार पर ही धूनी रमाता है। इस प्रकार वह अपनी बहिन के प्रति अपने प्रगाढ़ प्रेम को प्रदर्शित करता है।

२०४. सन्दर्भ—किसी दुष्ट भाई का अपनी बहिन से ही विवाह करने का आग्रह। माता के द्वारा उस पुत्र की भर्त्सना।

सात विरन[1] रूना बहिनी हो ना।
रूना चली हुइँ सागर पनियाँ हो ना ॥१॥
गगरी जउ बोरिन धरी जउ कररवा[2] हो ना।
जोहइँ लागी गगरी उठवइआ[3] हो ना ॥२॥
घोड़वा चढ़ल आवइ राउर भइया हो ना।
बहिनी हम तोर गगरी उठउबइ हो ना ॥३॥
गगरी उठावत वनकइ छुटिगा[4] अँचरवा हो ना।
भइया कइ परिगा[5] नजरिआ हो ना ॥४॥

---

१. बीर, भाई। २. करार, किनारा। ३. उठाने वाला। ४. छूट गया, नीचे गिर गया। ५. पड़ गया।

अब गोड़[1] मूड़ तानेन चदरिया हो ना।
बइठी जगावइँ वनकइँ[2] माया बढ़इतिनि[3] हो ना ॥५॥
उठा बेटा करा दतुइनियाँ[4] हो ना।
माया सिर मोर बहुतइ धमाकइ[5] हो ना ॥६॥
बइठी जगावइँ वनकइ भउजी बढ़इतिनि हो ना।
उठा देवरा सीझा जेवनरवा हो ना ॥७॥
सीझा[6] जेंवना न जेंवउँ[7] मोरी भउजी हो ना।
बहिनी संग फिरबइ[8] भँवरिआ[9] हो ना ॥८॥
जरइ देवरा तोरा अकिल, गिअनवाँ[10] हो ना।
बहिनी संग फिरिबेआ भँवरिआ हो ना ॥९॥
भीतर बाटिउ कि बाहिर सासू हो ना।
सासू रूना कइ आये अनवइआ[11] हो ना ॥१०॥
खाँउ[12] बहुआ तोर भइया, भतीजवा हो ना।
मोरी बेटी बारी[13] लड़िकवा हो ना ॥११॥
भीतर बाटिउँ कि बाहिर सासू बढ़इतिनि हो ना।
सासू रूना कइ आये डोलवा हो ना ॥१२॥
ऊँचवइ चढ़ि के भउजी निहारइँ हो ना।
ननदी कइ डोला[14] फिरि आये हो ना ॥१३॥
भीतर बाटिउ कि बाहरे सासू बढ़इतिनि हो ना।
सासू रूना कइ डोला फिरि आये हो ना ॥१४॥
सासू परिछउँ न आपन नतिअवा[15] हो ना।
खाँउ बहू तोर भइआ भतिजवा हो ना ॥१५॥
मोरी बेटी बइठी समुरवा हो ना ॥१६॥

रूना सात भाइयों मे अकेली बहिन थी। वह पानी भरने के लिए किस
ाई ॥१॥

रूना ने तालाब में से गगरी को भरकर उसको ऊँचे तट पर रख f
को उसके सिर पर उठाने के लिए किसी व्यक्ति की प्रतीक्षा करने ल

---

१. पैर। २. उनकी। ३. श्रेष्ठ। ४. दतौन। ५. गर्म होना, ज्व
रा हुआ। ७. भोजन न करूँगा। ८. फिरूँगा। ९. भाँवर, स
बुद्धि। ११. ले जाने वाले। १२. खा डालूँ, नष्ट कर दूँ। १
े १४ पालकी १५ नाती, पौत्र

घोड़ा पर चढ़ कर उसका भाई कहीं से आया और कहा कि बहिन ! मैं तुम्हारे घड़े को उठा दूँगा ॥३॥

जब रूना घड़े को उठा रही थी उसी समय उसका आँचल खिसक गया और उसके भाई की नजर उस पर पड़ गयी ॥४॥

घर जाकर उसका भाई सिर से पैर तक चादर ओढकर सो गया । उसकी श्रेष्ठ माता उसे रुष्ट जानकर बैठकर उसे जगाने लगी ॥५॥

माता ने कहा—ए बेटा ! तुम उठो और दँतुवन करो । तुम्हारा सिर गर्म मालूम पडता है अर्थात् तुम्हे बुखार आ गया है ॥६॥

उसकी भावज उसे जगाती हुई कहती है कि ए देवर ! जेवनार (सुन्दर तथा स्वादिष्ट भोजन) बन कर तैयार है । (तुम उठो और भोजन करो) ॥७॥

इस पर देवर उत्तर देता है कि ए भावज ! मै भोजन नहीं करूँगा । मैं अपनी बहिन के साथ भाँवर (सप्तपदी) फेरना चाहता हूं अर्थात् उससे विवाह करने की मेरी इच्छा है ॥८॥

इस पर क्रोधित होकर भावज ने कहा कि ए देवर ! तुम्हारी बुद्धि और ज्ञान (विचार) में आग लग जाय अर्थात् नष्ट हो जाय । तुम अपनी बहिन के साथ भाँवर फेरना (विवाह करना) चाहते हो ॥९॥

इस पर उस स्त्री (भावज) ने कहा कि ए सास ! तुम घर के भीतर हो अथवा बाहर हो । ए सास ! तुम्हारी पुत्री रूना को ले जाने वाले लोग आये हुए है ॥१०॥

इस पर क्रोधित होकर सास ने कहा ए बहू ! मैं तुम्हारे भाई और भतीजे को खा डालूंगी अर्थात् उन्हें नष्ट कर दूंगी । मेरी बेटी अभी बहुत कम आयु की छोटी लडकी है ॥११॥

बहू ने कहा—ए सास ! तुम घर के भीतर हो अथवा बाहर हो । रूना को ले जाने के लिए डोली अर्थात् पालकी आ गई है ॥१२॥

भावज ऊँची अटारी पर चढ़कर देख रही है और कहती है कि ननद को ले जाने के लिए पालकी फिर लौट कर आ गई है ॥१३॥

भावज ने पुन. कहा—ए सास ! तुम घर के भीतर हो अथवा बाहर हो । रूना की पालकी फिर लौट कर चली आई ॥१४॥

बहू ने कहा कि ए सास ! अपने दौहित्र (पुत्री का लड़का) को परिछो अर्थात् उसका स्वागत करो । इस पर क्रोधित होकर उसकी सास ने कहा कि ए बहू ! मैं तुम्हारे भाई और भतीजे को खा डालूंगी । मेरी बेटी तो अपनी ससुराल में बैठी हुई है ॥१५-१६॥

विशेष—इस गीत में किसी भाई का अपनी बहिन से विवाह करने के अनुचित प्रस्ताव का उल्लेख पाया जाता है। लोक-गीतों में कहीं भी इस प्रकार की घृणित तथा अशोभनीय बात का वर्णन उपलब्ध नहीं होता। गाँवों में बहुत से लोग संबंध में भाई, चाचा और ताऊ आदि लगते हैं। किम्बहुना, मामा के लड़के भी भाई लगते है। मेरी समझ मे उपर्युक्त गीत में वर्णित भाई ऐसा ही कोई संबंधी या रिश्तेदारी में भाई लगता होगा अपना सगा या सहोदर भाई नहीं होगा। क्योंकि सहोदर भाई का अपनी सगी बहिन से विवाह की कल्पना भी दूर की बात समझनी चाहिए। अतः इस गीत के उल्लेख को काल्पनिक ही समझना चाहिए क्योंकि लोक और वेद दोनो के द्वारा उक्त कर्म निन्दित तथा घृणित होने के कारण संभव की परिधि से परे है।

२०५. सन्दर्भ—किसी बहू के द्वारा अपनी सास से किसी हाथी वाले की निन्दा करना।

भोर भयेल भिनसरवा[1] मैं पानी भरइ निसरेयों[2] ना।
सासु हथिनी चढल हाथीवलवा, हमइ देखे बिहसइ ना ॥१॥
कइसे अहइ उनकइ हथिनी, कइसे हउद[4] लागे ना।
बउहरि[5] कवने बरन हाथीवलवा, तुहइ देखे बिहँसइ ना ॥२॥
काली अहइ उनकइ[7] हथिनी, तउ लाली हउद लागी ना।
सासु सँवरे बरन हाथीवलवा, हमइ देखे विहसइ ना ॥३॥
हथिनी तउ अहइ ससुर जी कइ, हउद जेठ जी कइ ना।
बउहरि सँवरे बरन कन्ता (न्था) तोरा, तुहइ देखे
विहसइ ना ॥४॥

कोई स्त्री अपनी सास से कहती है कि जब प्रातःकाल हुआ तब मैं पानी भरने के लिए घर से बाहर निकली। ए सास! हाथी पर चढा हुआ हाथी वाला (हाथी का मालिक) हमको देखकर विहँसने लगा ॥१॥

सास ने पूछा कि—उसकी हथिनी कैसी है और उस पर हौदा कैसा लगा हुआ है? ए बहू। वह हाथी वाला किस रंग का था जो तुम्हें देखकर विहँसता है ॥२॥

बहू ने उत्तर दिया—उसकी हथिनी काली है और उस पर लाल हौदा लगा हुआ है। ए सास! वह हाथी वाला साँवले रंग का है जो हम को देखकर विहँसता है ॥३॥

सास ने कहा—हथिनी तुम्हारे ससुर की है और हौदा तुम्हारे जेठ का है और साँवले रंग का तुम्हारा पति है जो तुम्हें देखकर विहँसता है ॥४॥

---

१. प्रातःकाल। २. निकली। ३. हाथी का मालिक। ४. हौदा। ५. बहू। ६. हँसता है। ७. उनकी।

२०६. सन्दर्भ—कोई पुत्री अपने माता-पिता से गंगा में स्नान करने के लिए प्रार्थना करती है। माता-पिता द्वारा निषेध-आज्ञा।

खिरकिन के पिछअरवा[1] रे बपई[2] काहे कलावलि[3] होय रे।
अब रे सँवलिया कारे कलावलि होय रे ॥१॥

माघ पूस कइ कलकी[4] रे बेटी ! लोगा नहउने[5] का जाइ रे।
अब रे सँवलिया लोगा नहउने का जाइ रे ॥२॥

सभवा बइठ मोर बपई बढ़उते[6], कहतिउ नहउने का जाब रे।
अब रे सँवलिया कहतिउ नहउने का जाव रे ॥३॥

अँगनइ कुअना खँदउवइ[7] बेटी वयना,
खिरकिउ के बैठिउ नहाय रे ॥४॥

घर कइ कउन नहा ओन रे बपई,
पापउ कटित[8] न होय रे ॥५॥
अब रे साँवलिथा पापउ कटित न होय रे।

खिरकिउ के पछअरवा रे माया,
कारे कलावलि होय रे ॥६॥ आरे०

मचिया बइठ मोर माया बढइतिन[9],
कहतिउ[10] नहउने का जाइ रे ॥७॥ आरे०

अँगनइ कुअना खँदउवइ बेटी वयना !
खिड़किउ के बइठि नहाइ रे ॥८॥ आरे०

घर कइ कउन नहावन रे माया,
पापउ कटित न होय रे ॥९॥ आरे०

खिरकिन के पिछअरवा रे भइया,
कारे कलावलि होय रे ॥१०॥ आरे०

माघ पूस कइ कलकी रे बहिनी,
लोगा नहाउन का जाय रे ॥११॥ आरे०

---

१. पिछुवाड़ा, पृष्ठ भाग में, पीछे। २. बाप, पिता। ३. कोलाहल, हुल्ला-गुल्ला। ४. कार्तिक मास, यहाँ मेला। ५. नहाने के लिए। ६. वरिष्ठ, श्रेष्ठ। ७. खुदाऊँगी। ८. नष्ट होना, कटना। ९. वरिष्ठा, श्रेष्ठा। १०. यदि कहती तो, आज्ञा देती तो।

पंसा[1] खेलत मोर भइया बढ़इते,
कहतिउ नहउने का जात्र रे। आरे०

अँगनइ कुंअना खँदउवइ बहिनी बयना,
खिरकिउ के बइठि नहाइ रे ॥१२॥ आरे०

खिरकिन के पिछअरवा रे भउजी,
कारे कलावलि होय रे ॥१३॥ आरे०

माघ पूस कइ कतिकी रे ननदी,
लोगा नहउने का जाइ रे ॥१४॥ आरे०

मचिया बइठल मोर भउजी बढ़इतिन,
कहतिउ नहउले का जाब रे ॥१५॥ आरे०

अँगनइ कुअना खँदउबइ ननदी बयना,
खिरकिउ के बइठि नहाइ रे ॥१६॥ आरे०

सब तउ बाँधइ सेतुवा[2] पिसान[3] रे,
बयना तउ बाँधइ अररा पिसान रे ॥१७॥ आरे०

सब तउ पहिरइ लहँगा चुनरिया,
बयना दखिनवा कइ चीर रे ॥१८॥ आरे०

सब तउ जइहै डइयाँ अउ भुइयाँ,
बयना का छत्तीस कहार रे ॥१९॥ आरे०

सब तउ नहावै इरवा अउ तिरवा[4],
बयना नहाय मझधार रे ॥२०॥ आरे०

सब तउ नहाइ घरा चला आवइँ,
बयना परी बंदीखान[5] रे ॥२१॥ आरे०

दौड़ि के खबरा जनावा[6] लहुरी ननदी,
बयना परी बदीखान रे ॥२२॥ आरे०

मोटी मोटी जँघिया पर झुन्ना[7] पिछउरी[8],
हम से दौड़ि न जाय रे ॥२३॥ आरे०

इतनी बचन सुन वे दुरजन भइया,
धाइ घोड़सरिया[9] का जाइ रे ॥२४॥ आरे०

---

१. पाशा, जुआ। २. सत्तू। ३. आटा। ४. तीर, किनारा। ५. जेलखाना। ६. जनादो, खबर बता दो। ७. झूलदार। ८ चादर। ९. घोड़शाल घोड़ों के रहने का स्थान।

लुउटइ न लउटइ ओ दुरजन भइया,
तुरकू[1] अहै मतवाल रे ॥२५॥ आरे०
इतनी वचन सुन वे दुरजन भइया
घोड़वा लियावइ[2] लउटाइ[3] रे ॥२६॥ आर०
आरे साँवलिया घोड़वा लियावइ लउटाइ रे ।

कोई पुत्री अपने पिता से कहती है कि ए पिताजी ! मेरी खिडकी (मकान की खिडकी) के पिछले भाग मे क्या हो हल्ला—कोलाहल मच रहा है। ए मेरे प्रियतम ! (साँवलिया) क्यो हल्ला हो रहा है ॥१॥

इस पर पिता उत्तर देता है कि ए बेटी ! माघ-पूस का यह मेला लग रहा है। लोग गंगा स्नान करने के लिए जा रहे है ॥२॥

वह पुत्री पूछती है कि—सभा मे बैठे हुए ए मेरे श्रेष्ठ पिता ! यदि आपकी आज्ञा होती तो मैं भी स्नान करने के लिए जाती ॥३॥

पिता ने उत्तर दिया—ए बेटी ! मै आँगन मे ही तुम्हारे लिये कुँआ खोदवाऊँगा। तुम अपनी खिड़की पर बैठ कर आनन्द से स्नान करना ॥४॥

पुत्री ने कहा—ए पिता जी ! घर में कौन सा स्नान हो सकता है अर्थात् घर मे नहाने से क्या लाभ ? क्योकि घर मे स्नान करने से मनुष्य का पाप नष्ट नही होता ॥५॥

फिर वह लड़की अपनी माता से कहती है कि माँ ! खिडकी के पीछे क्या कोलाहल हो रहा है ॥६॥

मचिया पर बैठी हुई ए मेरी श्रेष्ठ माता। यदि तुम आज्ञा देती तो मै स्नान करने के लिए चली जाती ॥७॥

माता उत्तर देती है—बेटी मैं आँगन मे ही तुम्हारे लिए कुँआ खोदवाऊँगी। तुम खिड़की पर बैठ कर स्नान करना ॥८॥

इस पर पुत्री उत्तर देती है कि ए माता ! घर में स्नान करना भी कोई स्नान है। इससे पाप नष्ट नही होता है ॥९॥

[इसी प्रकार से वह लड़की अपने भाई, भावज, से स्नान करने के लिए आज्ञा माँगती है। परन्तु सभी उसे घर मे कुँआ खोदवा कर वही स्नान करने की सलाह देते हैं। परन्तु सब को वह यही उत्तर देती है कि घर में स्नान करने से पाप नष्ट नहीं होता।]

॥ १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६ ॥

अन्त में बैना नामक उस पुत्री को स्नान के लिए आज्ञा मिल जाती है। सब

---

१ तुर्क, मुसलमान २ ले आया ३ लौटा करके

स्त्रियों ने सत्तू और आटा अपने खाने के लिए बाँधा परन्तु बैना ने महीन और अच्छा आटा लिया ।।१७।।

सबने लँहगा और चूनरी पहिना परन्तु बैना ने दक्षिण देश की चीर अर्थात् साडी को धारण किया ।।१८।।

सभी स्त्रियाँ स्नान करने के लिए पैदल चली परन्तु बैना उस पालकी पर बैठ कर चली जिसे छत्तीस कँहार ढो रहे थे ।।१६।।

सब लोग गगा के इनारे-किनारे नहा रहे थे परन्तु बैना मध्यधारा (स्वच्छ जल) मे स्नान कर रही थी ।।२०।।

सभी स्त्रियाँ स्नान करके घर वापस लौट आई । परन्तु बैना जेलखाने मे पड गई अर्थात् उसे किसी ने पकडकर बन्दी गृह मे डाल दिया ।।२१।।

उसने कहा—ए मेरी छोटी ननद ! तुम जल्दी जाकर यह खबर सब लोगो को बतला दो कि बैना जेलखाने में पड़ी हुई है ।।२२।।

ननद ने कहा—मेरी जाँघें बडी मोटी है और उस पर मैने झूलदार चादर ओढ रखा है । ऐसी दशा मे मै दौडकर नहो जा सकती ।।२३-२४।।

जब दुर्जन नामक भाई ने यह सुना कि मेरी बहिन जेलखाने मे पडी है तो वह तुरन्त ही घुड़साल मे गया ।।२४।।

बहिन ने कहा—तुरुक बहुत मतवाले हैं तुम लौट जावो । इतना बचन सुनकर उस भाई ने अपनी बहिन का उद्धार कर घोड़े को लौटा लिया ।।२६।।

विशेष—इस गीत मे उस सामन्ती युग का चित्रण किया गया है जब देश मे अशान्ति का साम्राज्य था । स्त्रियों की जान तथा उनकी इज्जत सदा खतरे मे रहती थी । अपनी माँ-बहिन की रक्षा के लिए इस देश के सपूत अपने प्राणों की भी बाजी लगा देते थे । यह गीत अनेक दृष्टियो से बहुत महत्वपूर्ण है ।

२०७. सन्दर्भ—किसी व्यक्ति का अपने छोटे भाई की स्त्री (भवहि) से प्रेम संबंध स्थापित करना । पति के द्वारा पत्नी का परित्याग ।

पियवा का जात बेर[1] ना लागइ, कि जेठ[2] खोलइ ना ।
मोरी चँदना[3] केवरिया कि जेठ खोलइ ना ।।१।।
का तुहू खोलइ जेठ चंदना केवरिया, कि देसा देसा ना ।
तोरी होइहे बदनमिया[4] कि देसा देसा ना ।।२।।

---

१. देर । २. पति का ज्येष्ठ भ्राता । ३. चन्दन की लकड़ी का बना हुआ फाटक या किवाड़ ४. बदनामी, निन्दा ।

देखवा कइ बोलिया भलेउ सहिलेबइ[1], कि गढ़ाई[2] देबइ ना।
तोरे गले कइ तिलरिया[3] गढाई देबइ ना ॥३॥
बारहे बरिसवा जउ उनकइ पियवा, लउटे वहिन लइके ना।
वे तउ गेड़ुआ[4] जुड़ पनिया, वहिन लइके ना ॥४॥
धन लइके निसरी है तेलवा फुलेलवा, मीजन लागी ना।
वे तउ सामी जी कइ जँघिया, मीजन लागी ना ॥५॥
जँघिया मीजत ओनकइ[5] पियवा जउ[6] पूछइ, कहाँ रे पाइउ ना।
धन गले कइ तिलरिया, कहाँ रे पाइउ ना ॥६॥
चाहइ स्वामी मारा चाहइ गरिआवा[7] कि जेठ दीना ना।
मोरे गले कइ तिलरिया, कि जेठ दीना ना ॥७॥
काहे[8] का मरबइ काहे का गरिअउबइ कि गुजर करउ ना।
ओही जेठ के गोहनवा[9] गुजर करउ ना ॥८॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरे प्रियतम के परदेस जाते देर नही लगी कि मेरा जेठ (मेरे पति के जेठा भाई) आकर के मेरे चन्दन के दरवाजे को खोलवाने लगा ॥१॥

इस पर भावहि ने कहा कि ए जेठ ! मेरा चन्दन का दरवाजा क्यों खोलवा रहे हो। अपनी भवहि के साथ बुरा कर्म करने के कारण देश-देश मे तुम्हारी बदनामी होगी ॥२॥

जेठ ने उत्तर दिया कि मै देश-देश की बदनामी को अच्छी तरह से सह लूंगा। यदि तुम मेरे साथ सभोग करोगी तो मै तुम्हारे गले का हार बनवा दूंगा ॥३॥

उस स्त्री का पति बारह वर्षों के बाद परदेश से लौटा। उसकी स्त्री उसके पीने के लिए लोटे मे ठण्डा पानी लेकर पहुँची ॥४॥

इसके पश्चात् वह स्त्री तेल और फुलेल लेकर निकली और अपने पति के पैरों को मीसने लगी ॥५॥

जब वह उसका पैर मीस रही थी तब उसके पति ने पूछा कि ए धनिया ! यह गले का हार तुमने कहाँ पाया ? अर्थात् इस हार को तुम्हें किसने दिया ॥६॥

उस सती, साध्वी स्त्री ने कहा कि ए स्वामी ! तुम मुझे मारो अथवा गाली दो। इस गले के हार को मेरे जेठ ने दिया है ॥७॥

इस पर उसके पति ने उत्तर दिया—ए धनिया ! मे तुम्हे किस लिए गाली

---

१. सहन कर लूंगा। २. गढ़ाना, बनवा देना। ३. गले का हार। ४. बड़ा लोटा। ५ उसका। ६ जब। ७ गाली दो ८ किसलिए, क्यों। ९ गृह घर।

दूंगा और क्या मारूंगा। तुम अपने जेठ के घर चली जावो और वहीं पर अपनी जिन्दगी गुजर करना ॥८॥

विशेष—अवध प्रदेश के लोग जीविकोपार्जन के लिए प्राय. बम्बई चले जाते है और वहाँ जाकर वे दूध का प्रायः व्यापार करते हैं। वे 'भइया लोग' के नाम से वहाँ प्रसिद्ध है। एक बार बम्बई जाने पर वे पाँच-सात वर्ष तक लौट कर घर आते ही नही। ऐसे ही किसी परदेशी पति का वर्णन इस गीत मे किया गया है। जो बारह वर्षो के पश्चात् घर लौट कर आता है। जिस प्रकार से भोजपुरी प्रदेश के "पूरबी बनिजिया" के लिए पूर्व देश की ओर—कलकत्ता और बर्मा (रंगून) जाते है उसी प्रकार से अवध प्रदेश के लोगो की प्रवृत्ति बम्बई जाने की ओर है। बम्बई के अन्धेरी और जोगेश्वरी आदि मुहल्ले इन 'भइया लोगो से भरे पड़े है जहाँ इनकी संख्या लाखो में पायी जाती है।

इस गीत में किसी भवहि का अपने जेठ से प्रणय-संबंध पाया जाता है जिसे अपवाद रूप में ही समझना चाहिए। साधारणतया बहुएँ अपने जेठ के सामने नहीं आतीं और न उनसे लज्जा के कारण बातें ही कर सकती है। ऐसी दशा मे उनके प्रणय-संबंध की कथा कल्पना के परे की बाते है।

प्राय: पति अपनी स्त्री के चरित्र के संबंध मे बड़े सशंकित तथा ईर्ष्यालु होते है। वे अपनी स्त्री का पर-पुरुष से प्रणय की बात को कदापि सहन नहीं कर सकते। वे अपनी स्त्री अथवा उसके प्रेमी का अन्त करने के लिए तैयार हो जाते है। परन्तु इस गीत में वर्णित पति बड़ा ही सहिष्णु पाया जाता है।

२०८. सन्दर्भ—किसी पुरुष का पनघट पर पानी भरने वाली किसी स्त्री से छेड़खानी करना।

काहेन[1] की कठकुइयाँ[2] काहेन लागी डोरिया।
काहेन लागे डोरिअहु ना।
हेइ हो कउने बरन[3] पनिहारिन,
तउ झुकवन[4] पानी भरइ हो ना ॥१॥
माटिन की कठकुँइयाँ रेसम लागी डोरिया,
रेसम लागी डोरिया हो ना।
हेइ हो मुँदरिन[5] बरन पनिहारिन,
तउ झुकवन पानी भरइ ना ॥२॥

---

१. किस वस्तु की। २. छोटी कुंइयाँ। ३. वर्ण, रंग। ४. झुक करके। ५. अँगूठी, यहाँ सोने का रंग।

घोड़वा चढ़ल रजपूतवा ललरी[1] बहुत करइ,
ललरी बहुत करइ हो ना।
रानी बूँदा एक पनिआ पिआउतिउँ[2],
तउ जियरा जुड़तहि[3] हो ना ॥३॥
पानी के पिअइया[4] तू पनिया पिअउ,
अरे नयन[5] देबे हो ना।
हेइ हो जेका मै बारी बिआही[6],
तेउ निसग्ग बिदेस गये हो ना ॥४॥
कँहवइ[7] अहइ तोरा कुटना, कहवइ अहइ पिसना,
कँहवइ पिसनरवहु हो ना।
हेइ हो कँहवइ अँहइ सोउनरवा,[8]
हुँवा[9] पर हम आउबइ ना ॥५॥
अगवइ[10] आवइ कुटनरवा, मझिल[11] पिसनरवहु[12] हो ना।
हेइ हो रंगीमहल सोउनरवा, हुँवा पर हम रहबइ ना ॥६॥
मोरा बपई के मोरहू[13] पहरुआ[14],
सात दियना[15] नित बरइ[16] हो ना।
हेइ हो तेहू पै कुकुरिया रखवारिन,
हुँवा पर कइसे आउबइ हो ना ॥७॥
मरवई[17] सोराहू हो पहरुआ,
बुझउबइ[18] सातहु दियना ना।
हेइ हो ताजी कुकुरिया देबइ कउरा[19],
हुँवा पर हम अउबइ हो ना ॥८॥

किस वस्तु की छोटी कुँइयाँ बनी हुई है ? इसमें किस वस्तु की डोरी लगी हुई है। इस कुँये पर पानी भरने वाली पनिहारिन का वर्ण या रग कैसा है जो झुक कर के पानी भर रही है ॥१॥

मिट्टी की बनी हुई यह छोटी सी कुँइयाँ है और उसमे रेशम की डोर लगी हुई

---

१. लीला, मजाक, विनोद। २. पिलाती। ३. शान्त, ठंढा, संतुष्ट। ४. पीने वाला, प्यासा। ५. दृष्टि दान देना। ६. विवाहिता। ७. कहाँ। ८. सोने का स्थान, शयनागार। ९. वहाँ। १०. आगे, आगे। ११. मध्य में। १२. पीसने वाला। १३. सोलह। १४. पहरा देने वाले (गार्ड) १५. दीपक। १६. जलता है। १७. मार डालूँगा। १८. बुझा दूँगा। १९, कौर, भोजन।

है । इस पनिहारिन का रग सोने की अँगूठी के समान चमकता हुआ गौर वर्ण है । वह झुककर के पानी भर रही है ॥२॥

घोडे पर चढ़ा हुआ कोई राजकुमार वहाँ आया और उस पनिहारिन से मजाक करने लगा । उसने कहा कि ए रानी ! मुझे एक बूंद पानी पिलावो जिससे मेरा हृदय ठंढा तथा शान्त हो जाय ॥३॥

स्त्री ने कहा—ए पानी के प्यासे राजकुमार ! तुम पानी पीओ । परन्तु मैं तुम्हे अपना दृष्टि दान नही दूँगी । मैं जिसकी विवाहिता स्त्री हूँ । वह घर से निकल कर परदेस चला गया है ॥४॥

इस पर राजकुमार ने उत्तर दिया कि तुम्हारा कुटना कहाँ है, तुम्हारा पिसना कहाँ है और पीसने वाला कहाँ है ? और तुम्हारा शयनागार कहाँ है । वही पर मैं जाऊँगा ॥५॥

इस पर उस स्त्री ने उत्तर दिया कि कूटने वाला आगे आ रहा है । पीसने वाला मध्य मे आ रहा है । और मेरा शयनागार रग महल (रनिवास) में है । वही पर मै रहती हूँ ॥६॥

उस स्त्री ने पुनः कहा—मेरे पिता के पास सोलह पहरेदार हैं जो सदा पहरा देते रहते हैं । और साल दीपक सदा जलते रहते हैं । इसके ऊपर भी महल की रक्षा के लिए कुतिया (एलशेशियन डॉग ?) रखी गई है । वहाँ पर तुम कैसे आ सकते हो ? ॥७॥

इस पर राजकुमार ने उत्तर दिया—मैं सोलहो पहरेदारो को मार डालूंगा और सातो दीपकों को बुझा दूंगा । और उस तेज कुतिया को (विष से मिश्रित) भोजन दे दूंगा जिससे वह मर जायेगी । इस प्रकार मैं तुम्हारे महल में चला आऊँगा ॥८॥

विशेष—यह गीत उस सामन्तशाही युग का प्रतीक है जब राजा, महाराजाओ की कुदृष्टि से किसी भी रूपवती स्त्री के सतीत्व की रक्षा कठिन थी । ऐसे ही एक राजकुमार का वर्णन इस गीत मे हुआ है जो किसी सुन्दरी पनिहारिन के रूप सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाता है और उससे अपना प्रणय सबंध स्थापित करना चाहता है । भारत के राजपूती इतिहास में ऐसी घटनायें अनहोनी नहीं है । ग्वालियर के सुप्रसिद्ध राजा मानसिंह तोमर ने मृगनैनी नामक एक गूजरी कन्या पर इसी प्रकार मोहित होकर उसे अपनी महरानी बना लिया था ।

२०६ सन्दर्भ—ननद तथा भावज का शाश्वतिक विरोध। भावज का अपने पति से ननदें को किसी प्रकार से ससुराल भेज देने का आग्रह। भाई का बहिन के प्रति अगाध प्रेम।

भोर भयल भिनसरवा, तउ साता[1] घरी दिन चढ़उ[2] ना।
भइया हमरे कलेवना की भूख, कलेवना[3] हमके देवउ हो ना ॥१॥
तूही मोरी बहिनी से बहिनी तूही ठकुराइन हो ना।
बहिनी तोरी भउजी गज ओबरि,[4]
कलेउना ओनसे माँगि लेतिउ ना[5] ॥२॥
तूहीं मोरे भइया से भइया तू ही मोरे नायक हो ना।
भइया जवन भउजी मुखहूँ न बोलई;
कलेउना कइसे देवइ हो ना ॥३॥
भीतरा से निसरी है भउजी,
तउ भइया से मत[6] करइ हो ना।
स्वामी परुआ[7] का रचतेउ दुइजिआ,[8]
तउ ननदी बिदा करतेउ हो ना ॥४॥
गहना तउ ओनकइ[9] गढ़न[10] गए,
चुनरी रंगन गई हो ना।
धना चोलिया तउ ओनकइ सिअन गई;
कइसे बिदा करवइ हो ना ॥५॥
गहना तउ आपन देबइ, चुनरी रँगाइ देबइ ना।
स्वामी चोलिया तउ देबइ फुल[11] झरिआ;
तउ ननदा बिदा करि देबइ हो ना ॥६॥
आजु एकादसिया भिआन[12] दुआदसिया[13];
धना तेरसिउ[14] का रचवइ दुइजियाँ,
बहिनी बिदा करबइ हो ना ॥७॥
पुरब से डोरुवा[15] पछिम गये भइया रोवन लागे ना।
रामा कोखिया[16] माँ जनमे दुइउ जने,
आज से अकेले हो गयेउ हो ना ॥८॥

---

१. सात घड़ी, २. दिन चढ़ गया। ३. कलेवा, नाश्ता, जलपान। ४. अन्धकार पूर्ण छोटा घर। ५. माँग लेती। ६. मंत्रणा या सलाह करना। ७. परिवा, प्रतिपद। ८. दूज, द्वितीया। ९. उसका। १०. गढ़ने या बनाने के लिए। ११. फूल-पत्ती से युक्त। १२. विहान सवेरा। १३. द्वादशी। १४. त्रयोदशी। १५ डोली, पालकी। १६ पेट उदर गर्भ।

आयेन भइया डेहरिया[1] चढ़ि वइठइ हो ना ।
रामा तरर[2] तरर चुँवई आँसू, रुमलिया से पोछइ हो ना ॥९॥

देउ ना देउ धना बाँमे कइ छड़िया हो ना ।
हम जावइ बहिनियाँ के देसवा हो ना ॥१०॥

सावन नदिया उमड़ लागी, भदई फफक[3] लागी ना ।
स्वामी चारि महीनवा घर रहिके,
तउ बहिनी के देसवा जाया हो ना ॥११॥

सावन नदिया उतर जावइ, भदइ, पँवर[4] जावइ ना ।
धना बँधवइ कमरिआ[5] कइ गाँती;[6]
बहिनिआ के जावइ[7] हो ना ॥१२॥

एक बन गये दूसर बन गये रामा तीसर बनवा ना ।
पहुँचे बहिनी के देसवा, तीसर बनवा हो ना ॥१३॥

कोई बहिन कहती है कि—प्रात काल हो गया । अब सात घड़ी दिन भी चढ़ आया । ए भइया ! मुझे कलेवा के लिए भूख लगी हुई है । अत: मुझे कलेवा दो ॥१॥

भाई ने कहा—ए बहिन ! तुम्हो मेरी असली बहिन हो । तुम्ही मेरे घर का ठकुराइन अर्थात् मालकिन हो । ए बहिन ! तुम्हारी भावज ! अन्धकार पूर्ण कमरे मे रूष्ट होकर सो रही है । उससे तुम जाकर कलेवा माँग लो ॥२॥

इस पर बहिन ने उत्तर दिया कि ए भाई ! तुम्ही मेरे भाई हो । तुम्हीं मेरे नायक हो । ए भाई ! जो भावज मुख से भी नही बोलती है, वह भला कलेवा मुझे कैसे दे सकती है ॥३॥

इतने मे भीतर से भावज निकली और अपने पति से मत्रणा करने लगी । उसने कहा कि ए स्वामी ! तुम प्रतिपद् के बाद द्वितीया को ननद को ससुराल विदा कर दो ॥४॥

इस पर भाई ने जवाब दिया—उसका गहना गढाने के लिए गया हुआ है । उसकी चुनरी रँगने के लिए दी गई है । ए धनिया ! उसकी चोली सीने के लिए गई है । मैं उसे कैसे बिदा कर दूँ ॥५॥

भावज उत्तर देती है कि—मैं उसे अपना गहना दे दूँगी । चूनरी उसकी रँगा ।

---

१. देहली, द्वार । २. लगातार धारा रूप में । ३. अत्यधिक सीमा से बाहर हो जाना । ४. पैर या तैर जाना । ५. कम्बल ६. जाड़े से रक्षा के लिए बच्चों के गले में बाँधा जाने वाला तथा पैरों तक लटकता हुआ वस्त्र । ७ जाऊँगा ।

दूँगी । उसे मैं अपनी फूल पत्ती काढ़ी गई चोली दे दूँगी । ए पति ! तुम ननद को शीघ्र बिदा कर दो ॥६॥

पति ने कहा—आज एकादशी है और कल सवेरे द्वादशी है । ए धनिया ! मैं त्रयोदशी के पश्चात् द्वितीया को ही अपनी बहिन को विदा कर दूँगा ॥७॥

द्वितीया के दिन बहिन अपनी ससुराल जाने लगी । उसकी पालकी—पूर्व दिशा से पश्चिम को चली गई । बहिन की विदाई के कारण भाई रोने लगा । उसने कहा कि माता की कोख से दो व्यक्ति उत्पन्न हुए—एक भाई और दूसरी बहिन । परन्तु बहिन के चले जाने से आज मै अकेला हो गया ॥८॥

उसने अपनी स्त्री से कहा—ए धनिया ! मेरी बाँस की छडी दो । मै अपनी बहिन के देश को जाऊँगा ॥९॥

स्त्री ने कहा—सावन के महीने मे नदी उमड़ने लगती है और भादो में वह फफकने लगती है अर्थात् अपनी सीमा का अतिक्रमण कर चारों ओर फैल जाती है ए स्वामी ! तुम चार महीना घर पर रह करके अपनी बहिन के यहाँ जाना ॥१०-११॥

इस पर भाई ने उत्तर दिया—सावन मे नदी को पार कर दूँगा और भादों मे उसको तैर कर दूसरे पार चला जाऊँगा । ए धनिया ! मै कम्बल की गाँती बाँध कर बहिन के पास जाऊंगा ॥१२॥

भाई एक बन में गया । दूसरे बन मे गया और तीसरे बन मे जाकर अपनी बहिन के घर (देश) पहुँच गया ॥१३॥

विशेष—इस गीत मे ननद—भावज के शास्वतिक विरोध तथा भाई-बहन के घनिष्ठ प्रेम का वर्णन किया गया है ।

२१०. सन्दर्भ—किसी राजा के लडके का लाची नामक स्त्री पर मोहित हो जाना और कुटनी के द्वारा उसे तालाब पर नहाने के लिए बुलवाना ।

छवइ महीनवा कइ लाची कइ उमिरिया हो ना ।
लाची झझरिउ[1] लेयथी[2] बयरिआ[3] हो ना ॥१॥
घोडवा चढी एक आया राज[4] पुतवर हो ना ।
रामा लचिअउ पइ परिगइ नजरिआ हो ना ॥२॥
अर्जुरी[5] भइ रुपिया तुहैं देवइ दूती हो ना ।
दूती लचिअउ का सगरे[6] लिअउतिउ हो ना ॥३॥
सभवा बइठ मोरा बपइ बढइते हो ना ।
बपई कहतेउँ नहइने का आवइ हो ना ॥४॥

१. झझरी, खिड़की । २. ले रही थी । ३. बयार, हवा । ४. राजा का लड़का । ५. अञ्जुली ६ तालाब

वोही मगरवा बेटी राजा हरमजदवा[1] हो ना।
बेटी गइलिउ तिरिअवा[2] नाहीं आवे हो ना ॥५॥

मचिया बइरू मोरी माया बढइनिन[3] हो ना।
माया कहतिउ नहउने का जावइ हो ना ॥६॥

ओही सगरवा बेटी राजा हरमजदवा हो ना।
बेटी गइलिउ[4] तिरियवा नाही आवइ हो ना ॥७॥

लाची नामक कोई सुन्दरी युवती स्त्री अपने महल के झरोखे पर बैठकर हवा खा रही थी ॥१॥

इतने मे घोड़े पर चढा हुआ कोई राजा का लड़का वहाँ आ पहुँचा और उसकी नजर लाची के अलौकिक सौन्दर्य पर पड गई ॥२॥

उसने लाची पर मोहित होकर किसी दूती अर्थात् कुटनी से कहा कि मै तुम्हे अञ्जुली भर रुपया दूँगा। तुम किसी बहाने से लाची को गाँव के बाहर तालाब पर नहाने के लिए ले आवो ॥३॥

दूती ने लाची के सामने यह प्रस्ताव रखा। तब लाची पिता से कहती है कि सभा में बैठे हुए ए मेरे श्रेष्ठ पिता जी! मुझे तालाब मे स्नान करने की आज्ञा दीजिये ॥४॥

इस पर पिता उत्तर देता है कि ए बेटी! उस सागर (तालाब) के पास राजा का हरामजादा लडका चक्कर लगाता रहता है। जो स्त्री वहाँ नहाने के लिए जाती है ए बेटी! वह लौटकर नही आती ॥५॥

पुत्री तब अपनी माता से प्रार्थना करती है कि मचिया पर बैठी हुई ए मेरी श्रेष्ठ माता! मुझे तालाब मे नहाने जाने के लिए आज्ञा दो ॥६॥

इस पर माता उत्तर देती है कि ए बेटी! उस तालाब के पास राजा का हरामजादा लड़का चक्कर लगाता रहता है। ए मेरी बेटी! जो स्त्री उस तालाब मे स्नान करने के लिए जाती है वह फिर लौट कर नही आती। अत तुम्हारा तालाब पर स्नान करने के लिए जाना उचित नहो है ॥७॥

विशेष—प्राचीन काल में राजा, महाराजा और जमीदार कितना अत्याचार करते थे इसका उल्लेख इस गीत में पाया जाता है। राजाओ के लिए दूसरो की बहू तथा बेटियो की कोई इज्जत नहीं थी। इस प्रकार के वर्णन अनेक अन्य गीतों मे भी पाये जाते हैं। लाची का नाम इसी प्रसग मे एक भोजपुरी लोक-गीत में भी पाया जाता है। बहुत संभव है कि यह लाची कोई वास्तविक स्त्री हो जिसके अलौकिक रूप सौन्दर्य को देखकर राजा लोग मोहित हो जाते होगे।

---

१ दुष्ट लड़का। २ तिरिया स्त्री ३ श्रेष्ठ ४ गई हुई

२११. सन्दर्भ—ससुराल जाने वाली कोई स्त्री गवना का दिन निश्चित करने वाले ब्राह्मण तथा नाई को कोस रही है।

कउन मासे फूलइ बेलरी[1] चमेलरी[2],
कउन मासवा लागइ अमवा टिकोरवा[3] ॥१॥
कवन मासवा।

अगहन मास फूलइ बेलरी चमेलरी;
चइत माँसवा आमवा लागथा टिकोरवा ॥२॥
चइत मासवा।

कउने के मास मोरा भइले बिअहवा;
अरे कउने मासवा, पापी माँगाथा[4] गवनवा ॥३॥
अरे कउने मासवा।

फागुन मास मोर भये हैं विअहवा;
अरे अगहन मासवा, पापी माँगा था गवनवा ॥४॥
अरे अगहन मासवा।

कउना पापी मोरा सुदिना विचारेउ;
अरे कउन पापिया मोरा लगना[5] धरावइ ॥५॥
अरे कवन पापिया।

बभनइ पपिया अरे सुदिना विचारइ;
अरे नउआ[6] पपिया मोरा लगना धरावइ ॥६॥
अरे नउआ पपिया।

कउनइ पपिया मोर डोलिया[7] सजावइ;
अरे कउना पपिया डोली डाला था ओहरवा[8] ॥७॥
अरे कवन पपिया।

जेठवा[9] पपिया मोर डोलिया सजावइ;
अरे देवरा पपिया[10] डोली डाला था ओहरवा ॥८॥
अरे देवरा पपिया।

कोई स्त्री कहती है कि किस मास मे बेला और चमेली का फूल फूलता है और किस मास में आम के पेड़ में टिकोरा (छोटा फल) लगता है ॥१॥

---

१. बेला। २. चमेली। ३. आम का छोटा, कच्चा फल। ४. माँगता है। ५. लगन, विदाई का दिन। ६. नाई। ७. पालकी। ८. पर्दा जिससे पालकी ढक दी जाती है। ९. पति का बड़ा भाई। १०. पापी, दुष्ट।

अगहन के महीने मे बेला और चमेली का फूल फूलता है और चैत के महीने मे आम में टिकोरा लगता है ॥२॥

फिर वह स्त्री पूछती है कि किस मास मे मेरा विवाह हुआ और किस मास में पापी (पति ?) मेरा गवना माँग रहा है अर्थात् मेरा गवना कराना चाहता है ॥३॥

फागुन के महीने मे मेरा विवाह हुआ और अगहन के महीने मे पापी गवना माँग रहा है ॥४॥

किस पापी (ब्राह्मण) ने मेरे गवने का सुदिन बिचारा था अर्थात् निश्चित किया था और किस पापी ने मेरा लग्न (विदाई का दिन) रखा था ॥५॥

उस पापी ब्राह्मण ने मेरे गवने का सुदिन विचारा था और पापी नाई ने मेरे जाने का दिन निश्चित किया था ॥६॥

किस पापी ने मेरी पालकी को सजाया था और किस पापी ने उस पालकी पर परदा डाला था ॥७॥

मेरे पति के जेठे पापी भाई ने मेरी डोली को सजाया था और पापी देवर ने उस पर ओहार (पर्दा) लगाया था ॥८॥

२१२. सन्दर्भ—किसी बहिन के द्वारा भाई से अपनी ससुराल के दुखों का वर्णन।

चुक चुक[1] चलनी कइ गोहुँआ हो ना।
अब भोर भइया ठाढ़ दुअरवा हो ना ॥१॥
हस तउ चुकव[2] रानी अपनी कि जुनिआ[3] हो ना।
जाइके भेटेउँ बीरन भइया हो ना ॥२॥
भेटिउँ जब खड़ी भइउँ हो ना।
सासू कहाँ बाटइ झीन[4] चउरवा हो ना ॥३॥
कोठिला[5] पइ बाटइ[6] बहू कोदई[7] क कनवा[8] हो ना।
उहइ[9] सरे[10] उर्दे[11] कइ दलिआ हो ना ॥४॥
जेवइँ बइठे हइँ सार[12] बहनोइआ हो ना।
सरवा कइ ढुरइ लागी अँसुइआ हो ना ॥५॥

१. धीरे धीरे २. आना ? ३. जून, बेला, समय। ४. पतला, महीन ५. मिट्टी या ईंटे से निर्मित अन्न रखने का स्थान ६. है ७. कोदो। ८. टुकड़ा। ९. उसी के १०. साथ ११. उड़द १२. साला।

की सुधि लागी भइया माया कइ कलेवना हो ना।
की सुधि भउजी की सेजरिआ[1] हो ना ॥६॥
नाही सुधि आई बहिनी माया कइ कलेवना हो ना।
नाही सुधि भउजी सेजरिआ हो ना ॥७॥
सुधि नउ आई, बहिनी तोहरी सुरतिआ हो ना।
जरि मरि भइयु[2] कोइलिआ हो ना ॥८॥
मन दस कुटना मन दस पिसना हो ना।
मन दस कइ रोज सिझइ रोसइआँ हो ना ॥९॥
सब क खिआवउँ सब क पिआवउँ हो ना।
भइया बचि गइ पइथन टिकरिआ हो ना ॥१०॥
वही[3] माँ ननदी कइ कलेवना हो ना।
वही मा हमार जेवनरवा हो ना ॥११॥
इ दु:ख बाँधेआ भइया गरभी गठरिआ हो ना।
भइया रहिआ बाट जिनि खोलेआ हो ना ॥१२॥
इ दु:ख जिनि कहेआ बाबा के अगवा हो ना।
सभवा बइठ बाबा झँखइ हो ना ॥१३॥
इ दुख भइआ जिनि कहेआ माया के अगवा हो ना।
मचिआ बइठि माया रोइहीं हो ना ॥१४॥
इ दुख जिनि कहेआ भइया भउजी के अगवा हो ना।
रामा रोसइआँ भउजी मेहना देइही हो ना ॥१५॥
इ दुख कहेआ भइया अगुआ के अगवा हो ना।
जे मोरी किहिसि अगुअइआ हो ना ॥१६॥

विशेष—इसी आशय का एक गीत कुछ थोड़े बहुत अन्तर के साथ पहिले आ चुका है। इन दोनो गीतों का आशय प्राय: एक ही है। परन्तु इस गीत का (वर्णन) कुछ भिन्न होने के कारण इसे भी यहाँ देना उचित समझा जाता है।

२१३. सन्दर्भ—किसी स्त्री के पति के द्वारा उसके उपपति की हत्या।

हथवा कि लीन्ही लइके निकरी बइँ राधा हो ना।
अब कृस्न कइ परि गइ निगहिआ[4] हो ना ॥१॥
कृस्न धाइ दूतिन लग गवइँ हो ना।
सोनवा कइ टिकिवा[5] मइँ तोहइँ[6] देबइ दूतिन हो ना ॥२॥

---

१. सूझ्या। २. हो गई। ३. उसी में से। ४. निगाह, नजर। ५. मंग टीका पहिनने का विशेष आभूषण। ६ तुमको।

मोर राधा से करतिउ मिलनवा[1] हो
आँखि तोर फुटली अंधिया बुन लागे हो ना।
कृस्न नाहीं चीन्हेआ सगि भइ हुइआ हो
हथवा मा लिहिन कंडी[2] गोइठिआ[3] हो ना।
अगिआ ओढरवा दूतिनि गइ हो
राधा चलतु न गंगा असननवा रे
कें का मइ देउँ सखि कोरा कइ होरिलवा[4] हो ना।
के भोरी तकइ[5] गोसइआँ हो
सासु क देउ बहू कोरा कइ होरिलवा हो ना।
अरे ननदी के राम गोसइआं हो
चला चली गंगा असननवा हो ना।
सासू क सउँपेन[6] कोरा कइ होरिलवा हो
अरे ननदा का राम गोसइआ हो ना।
राधा चलि दिहीं गंगा असननवा[7] हो
जउने घाटे राधा मुड़वा मीजइं हो ना।
अउ हिरिकी[8] के करइं रामा दतुइनिआं हो
हुटि जाउ हुटि जाउ राजा के पुतवा हो ना।
तोहरे ऊपरँ परइ मोरि छिटिकिआ[9] हो
तोहरे लेखे राधा भारी छिटिकिआ हो ना।
मोरे लेखे अतर[10] गुलाबवा हो
बाये हाथे लिहीं राधा झझरा गेड़ुअवा हो ना।
दाहिने मां दाबेनि[11] आपनि धोतिया हो
अब राधा चलि दिहीं अपनी महलिआ हो
भइया तोर खाउँ कि भतीजवा हो ना।
दूतिनि जेहि मो से किहीं छल[12] बलिआ हो
राधा दइ लिहीं बजरा[13] केवरिआ[14] हो
आधी कि रतिया हो पहिला पहरवा[15] हो ना।
कृस्न खुट खुट करइ राधा के महलिआ हो
दूरि होते कुकुरा बिलरिआ हो ना।
दूरि होते गवना के लोगवा हो

---

१. मिलाप, भेंट। २ सूखा गोबर। ३. उपला। ४
५. देखेगा। ६. सौंप दिया। ७. स्नान। ८. जिद्द करके, आग्रह
१०. इत्र। ११. दबा लिहा, ले लिया। १२. छल, छद्म। १३. मज
१५. प्रहर।

सोवति अहँ राजा की सेजरिआ हो ना ॥२१॥
सोवत अहा कि जागत लछुमन के भइया हो ना।
भइया चला चली बन के अहेरिया[1] हो ना ॥२२॥
एक बन गयेन, दूसर बन, तीसरे कदम कइ छँहिआ हो ना।
ऊँचवइ मारेन खलवइ ढकेलिन हो ना ॥२३॥
कदम के पेड़वा छपटायन हो ना ॥२४॥
बोरेन कृस्न आपनि तरवरिआ हो ना।
कृस्न धाइ राधा लगवा जाइ हो ना ॥२५॥
कहवइँ मारेया दादा कहवइँ ढकेल्या हो ना।
दादा कउने बिरिछि[2] तर छोड़या हो ना ॥२६॥
ऊँचवइ मारा खलवा ढकेला हो ना।
अब कदम के छाहें छपटावा[3] हो ना ॥२७॥
राधा छोड़ि दिहीं सुरमी[4] चुनरिया हो ना।
अब पहिरेन आपन पितम्बर हो ना ॥२८॥
राधा कइ लिहीं आपन सोरहउ सिंगरवा हो ना।
राधा सासु क सौपेन आपन होरिलवा हो ना ॥२९॥
राधा चलि दिही बन की अहेरिया हो ना।
राधा एक बन गई, दूसर बन, तीसरे कदम कइ छहियाँ[5] हो ना ॥३०॥
झारेन पोंछेन राधा जंघा बइठाइनि हो ना ॥३१॥
जउ मँइ होतिउँ सत[6] कइ राधा रनिअवाँ हो ना।
अब लइके सती होइ जाइति हो ना ॥३२॥
बन[7] के अँचरे से उठी[8] अगिनिया हो ना।
राधा लइके सती होइ जाइ हो ना ॥३३॥
ड़ेहरी[9] बइठ कृस्न रोवइँ, मुँड़वा[10] कूँचइ हो ना।
राधा के करनवा मारा दाहिन बहियाँ हो ना ॥३४॥

इसका अर्थ सरल तथा स्पष्ट है।

विशेष—इस गीत मे किसी पति के अपनी स्त्री के उपपति की हत्या करने [का उल्ल]ेख पाया जाता है। लोक गीतों में पत्नी का एकनिष्ठ, ऐकान्तिक प्रेम प्रसिद्ध [है, जिस]के सतीत्व में किसी प्रकार की आँच नही लग सकती। अत. ऐसे वृत्तान्त [अपवाद]रूप ही समझने चाहिए।

---

1. शिकार। 2. वृक्ष। 3. छटपटा है। 4. लाल। 5. छाया। 6. सती [का]। 7. उसके। 8. निकली प्रकट हो गई। 9. देहली, दरवाजा, बैठक [10. मू]ड़, सिर।

२१४ सन्दर्भ—किसी भाई का अपनी बहिन के ससुराल जाना। बहिन के द्वारा ससुराल के कष्टों का निवेदन। परन्तु इन कष्टों को माता-पिता तथा भावज के सामने न कहने का विशेष आग्रह।

ताल किनारे महल मोर सुन्दर,
तेहि बीच पुरइन हाल[1] रे।
तेहि चढ़ि जइहै नइहरवा की बिटिया,
मोरा नइहरवा नियरे[2] की दूरि रे ॥१॥
आवत देखेउँ सासु दुइ असवरवा[3],
एक रे साँवर एक गोर रे।
हमरे तो आए सासु भइया रे पहुँनवाँ,
कारे[4] भोजन कहाँ देउँ रे ॥२॥
भोजना के देउ बहू अँकड़ी[5] कोदइया[6],
अवरू मुनमुनिया[7] के दाल रे।
बजर परै सासु अकडी कोदइया,
अवरू मुनमुनिया के दाल रे ॥३॥
हमरे तो आए सासु भइया पहुनवाँ,
कारे घुटूँ[8] कहाँ देउँ रे।
घुटने का देउ बहुआ फूटही मेलियवा[10],
अवरू गड़हिया के पानी रे ॥४॥
अगिया लगावउँ सासु फूटही मेलियवा,
बजर परे गड़ही का पानी रे।
घुटने के देबइ सासु झझरा[11] गेडुअवा[12],
अवरू गंगा जल पानी रे ॥५॥
हमरे तो आए सासु भइया रे पहुनवाँ,
कारे कूँचन[13] हम देउँ रे।
कूँचन के देउ बहुआ पीपरे[14] के पतिया,
अवरू चिरइया के लेड़[15] रे ॥६॥

---

१. हिलना या हिलकोर मारना। २. पास, नजदीक। ३. घोड़े का सवार। ४. क्या। ५. कंकड़ों से भरी हुई। ६ कोदों, एक कदन्न। ७. निकृष्ट मूँग ८. पीला। ९. पीने के लिए। १०. माल्हौ, काठ का छोटा बर्तन। ११ बड़ा। १२. लोटा। १३. कूँचने अर्थात् चबाने के लिए। १४. पीपल। १५. विष्ठा।

अगिया लगावउँ सासु पीपरे की पतिया,
बजर परे चिरइ के लेड़ रे।
कूँचे के देबइ सासु मगही[1] के पनवा,
अवरू लवँग इलायची के ढ़ेर रे॥७॥

हमरे तो आए सासु भइया रे पहुनवाँ,
कारे सोवन कहाँ देउँ रे।
सोवन का देउ बहुआ टूटही झिंगिया[2],
अवरू चुवनी[3] चउपारि[4] रे॥८॥
अगिया लगावउँ सासु टूटही झिंगिया,
बजर परे चुवनी चउपारि रे।
सोवन का देबइ सासु रतुली[5] पलगिया,
अवरू चनन छिरकि[6] चउपारि रे॥९॥
बइठ न ए भइया रतुली पलगिया,
कहेउ नइहरवा के हाल रे।
तोहरे नइहरवा बहिनी छेम[7] कुसलिया,
तोहरे कुसल पूछे आए रे॥१०॥
सासु तो हइ ए भइया बुढिया डोकरिया[8],
आजु मरै कि तो काल्ह रे।
ननदी तो ए भइया बन की कोइलिया,
आजु उड़ै कि तो काल्हु[9] रे॥११॥
जेठानी तो ए भइया कारी बदरिया,
छिन बरसे छिन[10] घाम रे।
देवरानी तो ए भइया कोने की बिलरिया[11],
छिन निकरे छिन आड़[12] रे॥१२॥
मूड़ देखो भइया, मूड़ देखो भइया,
जइसे कुकुरिया के पूँछ रे।
पीठ देखो भइया, पीठ देखो भइया,
जइसे धोबिया से पाट[13] रे॥१३॥

मगहिया पान जो खाने में बड़ा स्वादिष्ट होता है। २. टूटी खाटी। [illegible]री। ४. चौपाल, छप्पर का बना बैठका। ५. लाल। ६. छिड़क कर, सुगन्धित कर। ७. क्षेम, कुशल। ८. क्रूरकर्मा। ९. कल। १०. क्षण भर [illegible] बिल्ली। १२. पर्दा, छिप जाना। १३. काठ या पाषाण का वह खण्ड [illegible]टक कर धोबी कपड़ों को धोता है।

कपड़ा देखो भइया, कपड़ा देखो भइया,
जइसे सवनवा कइ[1] बादरि[2] रे।
नौ मन कूटना रे नौ मन पीसना रे,
नौ मन पकावै रसोई रे ।।१४।।
पिछली टिकरिया भइया हमरा भोजनवा,
ओहू माँ कुकुरा बिलारि रे।
ई दुःख मति कहेउ भइया बाबा के अगवा,
सभवा बइठल मुरझाइ[3] रे ।।१५।।
ई दुःख मति कहेउ भइया माई के अगवा[4],
छतिया फारि मरि जाइ रे।
ई दुःख जिनि कहेउ भउजी के अगवा,
ओरी बइठि ठट्ठा[5] मारे रे ।।१६।।
ई दुःख बाँधेउ[6] भइया गरूई गठरिया,
जहवाँ खोलेउ तहाँ रोवउ[7] रे ।।१७।।

इस गीत का अर्थ सरल और स्पष्ट है।

विशेष—इस गीत में प्रथम तो बहिन का भाई के प्रति अकृत्रिम तथा स्वाभाविक प्रेम चित्रित किया गया है। बहिन जब भाई के आगमन का समाचार सुनती है तब वह स्वागत सत्कार के लिए व्याकुल हो जाती है। सास के द्वारा भाई के खाने के लिए बुरा अन्न देने पर वह क्रोधित होकर उन्हे फेक देती है और भाई को सुन्दर तथा स्वादिष्ट भोजन बनाकर देती है।

दूसरी बात है—ससुराल मे दिये गये अनेक असह्य कष्टो का भाई से निवेदन। जब भाई बार बार उसका समाचार पूछता है तभी वह उन कष्टो को बतलाती है, अन्यथा नही।

तीसरी उल्लेखनीय वस्तु है—माता-पिता के सामने इन कष्टों को न कहने का भाई से आग्रह। वह जानती है कि इन कष्टो को सुनकर मेरे माता-पिता को हार्दिक कष्ट होगा। अतः अपने दुःखो की गठरी माता-पिता के सामने न खोलने के लिए भाई से प्रार्थना करती है।

ससुराल मे कुछ अभागिनी लडकियो का जीवन कितना कष्टमय और नारकीय होता है यह गीत इसका उदाहरण है। इसी आशय का एक गीत पहिले भी लिखा जा चुका है। इन गीतो मे बार-बार इस विषय का उल्लेख होना बहुओ के दुःखद जीवन का सूचक है।

---

१. का या की। २. बदली अर्थात् काली, गन्दी। ३. मूर्छित हो जाना, सूख जाना। ४. आगे, सामने। ५. हँसी करना या खिल्ली उड़ाना। ६. बाँध लेना, मन में सोच कर रख लेना ७. रोना या दुःख करना।

२१५. सन्दर्भ—भाई के द्वारा अपनी बहिन को गले का हार देना। ससुराल जाने पर उस स्त्री के सास, ससुर, पति और देवर के द्वारा उसके चरित्र पर सन्देह करना। फलस्वरूप उसकी अग्नि परीक्षा करना जिसमें उस स्त्री का सतीत्व प्रमाणित हो जाना। सती बहिन को भाई के द्वारा अपने घर ले जाना।

हमरे बबैया[1] जी के सात बेटउना रे ना।
रामा सातउ[2] के चन्दा बहिनियाँ रे ना ॥१॥
रामा सातउ भइया चले परदेसवा रे ना।
रामा चन्दा बहिनी लागी गोहनवा[3] रे ना ॥२॥
फिरि जाउ फिरि जाउ चन्दा बहिनिया रे ना।
बहिनी तुम्हइ देबइ चन्दा हरौना[4] रे ना ॥३॥
बरहे[5] बरिसवा पइ लउटे सातउ भइया रे ना।
रामा ठाढ़ भये चन्दा के गोहनवा रे ना ॥४॥
भीतर बाटिउँ की बहरे वहिनियाँ रे ना।
रामा थाम लेनिउँ चन्दा हरौना रे ना ॥५॥
मोरे पिछवरवा पंडित भइया मितवा रे ना।
भइया चन्दा के सोधउ[6] गवनवा रे न ॥६॥
आजु एकदसिया बिहान दुवादसिया रे ना।
रामा तेरसी का बनथे[7] गवनवा रे ना ॥७॥
पहिले पहल चन्दा आइ हइ गवनवा रे ना।
रामा उनकइ ससुर माँगे पनिया रे ना ॥८॥
पनिया उड़ेरत झलकै चन्दा हरौना रे ना।
चन्दा कहाँ पाइउ[8] सुन्नर हरौना रे ना ॥९॥
हमरे बपइया जी के सात बेटउना रे ना।
बाबा ओइ दीहे[9] चन्दा हरौना रे ना ॥१०॥
पहिले पहल चन्दा आइ है गवनवा रे ना।
उनकइ जेठवा माँगे जुड पनिया रे ना ॥११॥
पनिया उड़ेरत झलकै चन्दा हरौना रे ना।
चन्दा कहाँ पाइउ सुन्नर हरौना रे ना ॥१२॥

१. बाप, पिता। २ सात ३. पुकारना, या पीछे लगना। ४. हार। ५. बारह। ६. शोधना, गौने की तिथि का निर्णय करना। ७. बनत है, सुदिन है। ८. पाई हो, प्राप्त किया है ९ दिया है

जो मोरा सामी होबइ मोरे जिउ का बसिया[1] रे ना।
रामा आगि होइ जाउ जुड़[2] पनिया रे ना ॥२७॥
जो चन्दा डारिन करहिया मा हाथवा रे ना।
रामा तेल होइ गगा जुड़ पनिया रे ना ॥२८॥
मुँहवा रूमलिया देइके रोवैं उनके समिया[3] रे ना।
रामा मोरा सती मोका[4] छोड़ जइहै रे ना ॥२९॥
अतनी बात देखि भइया बड़इता रे ना।
रामा बहिनी जोगे डड़िया फनावै रे ना ॥३०॥
एक बन गइले दूसर बन गइले रे ना।
रामा तीसरे माँ मिली बन तपसिन[5] रे ना ॥३१॥
बहियाँ पकरि समुझावइ[6] बन तपसिन रे ना।
ओहि सामी कर धरो न गोहनवा[7] रे ना ॥३२॥

इस गीत का अर्थ सरल और स्पष्ट है ;

विशेष---इस गीत में कोई भाई प्रेम-वश अपनी बहिन को गले का हार अर्पित करता है। जब वह ससुराल जाती है तब ससुराल के सभी लोग उसके हार को देख कर उसके चरित्र पर सन्देह करते हैं। उस स्त्री के द्वारा हजारों सफाई देने पर भी वे उसे स्वीकार नहीं करते। अन्त में उसकी अग्नि परीक्षा की जाती है जिसमे उस सती स्त्री की जीत होती है। उसका सतीत्व प्रमाणित हो जाता है। इस पर प्रसन्न होकर उसका भाई उसे अपने घर ले जाता है।

इसी आशय का एक गीत पहिले लिखा जा चुका है। इन दोनों गीतों का कथानक प्राय. एक ही है। प्रस्तुत गीत में कुछ पाठ-भेद (Version) अवश्य पाया जाता है। इसी दृष्टि से यहाँ इस गीत को दिया जा रहा है।

२१६. सन्दर्भ---किसी पुरुष के द्वारा अपनी विवाहिता स्त्री का परित्याग कर रखैल के साथ रहना। अपने भाई की सहायता से प्रथम पत्नी के द्वारा अपने पति को पकड़ कर अपने पिता के घर ले आना।

सभवा बइठ मोरे बपई बढइते हो न।
बापा हम बेटी बारी कि व्याही हो न ॥१॥
तोहरा बिअहवा बेटी नन्हवइ[8] मइँ कीन्हेयु[9],
तोर वर पटने क राजवा हो न ॥२॥

---

१. हृदय में निवास करने वाला, प्रेमी। २ ठंडा, शीतल। ३. स्वामी, पति। ४. मुझको। ५. तपस्विनी (स्त्री)। ६. समझाती है। ७. शरण। ८. बचपन मे। ९. किया था।

मचिआ बइठि मोरी माया बढ़इतिनि हो न।
माया हम बेटी बारी[1] कि ब्याही[2] हो न ॥३॥
तोहरा बिअहवा बेटी नन्हवइ मइँ कीन्हेयु हो न।
बेटी तोर वर पटने क राजवा हो न ॥४॥
पंसा खेलत मोर भइया बढ़इते हो न।
भइया हम बहिनी बारी कि ब्याही हो न ॥५॥
तोहरा बिअहवा बहिनी नन्हवइ मइँ कीन्हेयु हो न।
बहिनी तोर बर पटने क राजवा हो न ॥६॥
रामा रोसइआ मोरी भउजी बढइतिनि[3] हो न।
भउजी हम ननदी बारी कि ब्याही हो न ॥७॥
तोहरा बिअहवा ननदी नन्हवइ मइ कीन्हेयु हो न।
ननदी तोर वर पटने के राजवा हो न ॥८॥
गुड़िया खेलत मोरी बहिनी बढ़इतिनि हो न।
बहिनी हम बहिनी बारी कि ब्याही हो न ॥९॥
तोहरा बिअहवा बहिनी मइँ नन्हवइ कीन्हेयु हो न।
बहिनी तोर बर पटने क राजवा हो न ॥१०॥
सभवा बइठ मोरे बापवा बढ़इते हो न।
बपई अपनी हथिनियाँ हमका[4] देतेआ[5] हो न ॥११॥
हमरी हथिनिआ बेटी तोरी बलिहरिआ[6] हो न।
बेटी पटने लड़इआ जिनि जाइउ हो न ॥१२॥
मचिया बइठी मोरी माया बढइतिनि हो न।
माया अपना महफवा[7] हमइँ देतू हो न ॥१३॥
हमरा महफवा बेटी तोरी बलिहरिआ हो न।
बेटी पटने लड़इआ जिनि जाइउ हो न ॥१४॥
पंसा खेलत मोरा भइया बढइना हो न।
भइया अपना सिपहिया हमका देतेआ हो न ॥१५॥
हमरा सिपहिया बहिनी तोर बलिहरिया हो न।
बहिनी पटने लडइया जिनि जाइउ हो न ॥१६॥
रामा रोसइआँ मोरी भउजी बढ़इतिनि हो न।
भउजी आपन गहनवाँ हमइ देतू हो न ॥१७॥

---

१. बालिका, अविवाहिता। २. विवाहिता। ३. श्रेष्ठा। ४५
६. बलिहारी बलिदान। ७ पालकी।

हमरा गहनवाँ ननदी तोरी वलिहरिया हो न।
ननदी पटने लडइया जिनि जाइउ हो न ॥१८॥
गुडिया खेलत मोर बहिनी बढ़इतिनि हो न।
वहिनी अपनी चुनरिआ हमइँ देनेउँ हो न ॥१९॥
हमरी चुनरिया वहिनी तोर वलिहरिया हो न।
वहिनी पटने लड़इया जिनि जाइउ हो न ॥२०॥
आगे आगे चलइ मोरे भइया कइ सिपहिया हो न।
रामा पाछावा फउद[1] मेंड़रानी[2] हो न ॥२१॥
अपनी महल जउ चढी उढरी[3] जउ चितवइ हो न।
रामा केकरी फउद मेड़रानी हो न ॥२२॥
चुप रहु उढरी, चुप रहु उढरी हो न।
अरे ब्याही कइ फउद मेड़रानी हो न ॥२३॥
उतरउ न मोरे भइया के सिपहिया हो न।
भइया रजवउ[4] कइ मुसुकी[5] चढावहु[6] हो न ॥२४॥
चितवहु न मोरे भइया के सिपहिया हो न।
भइया रजवा क बेढि लइआवहु हो न ॥२५॥
एक वन आइल, दूसर बन आइल हो न।
रामा तीसरे मे पहँचइ महलिया हो न ॥२६॥
सभवा बइठ मोरे बपवा बढइते हो न।
बापा तोहका लयावा हरवहवा[7] हो न ॥२७॥
तोहरे लेखे बेटी तोर हरवहवा हो न।
मोरे लेखे मोर सिरतजवा[8] हो न ॥२८॥
मचिया बइठी मोरी माया बढइतिनि हो न।
माया तोहका लयावा चरवहवा हो न ॥२९॥
तोहरे लेखे बेटी तोर चरवहवा[9] हो न।
मोरे लेखे मोर सिरतजवा हो न ॥३०॥
पंसा खेलत मोर भइया बढइते हो न।
भइया तोहका लयावा[10] कहरवा हो न ॥३१॥
तोहरे लेखें[11] बहिनी तोर कहरवा हो न।
बहिनी मोरे लेखें मोर बहनोइया हो न ॥३२॥

---

१. फौज, सेना। २. मँडराना, उमड़ पड़ना। ३. रखैल। ४. राजा, पति। ५-६. दोनों हाथों को पकड कर पीठ के पीछे बाँध देना। ७. हरवाह। ८. सिरताज, श्रेष्ठ। ९ गायों को चराने वाला। १० ले आया हूँ। ११ तुम्हारे लिए।

रामा रोसइयाँ बइठी मोरी भउजी हो न।
भउजी तोहका लयावा रोटी पोउना[1] हो ना ॥३३॥
तोहरे लेखे ननदी तोर रोटी पोउना हो न।
ननदी मोरे लेखे मोर ननदोइआ हो न ॥३४॥
गुडिया खेलत मोरी बहिनी हो न।
बहिनी तोहका लयावा चूल्हा पोतना[2] हो न ॥३५॥
तोरे लेखे बहिनी तोर चूल्हा पोतना हो न।
बहिनी मोरे लेखे मोर बहनोइया हो न ॥३६॥

इस गीत का अर्थ सरल और स्पष्ट है। गीत का भाव निम्नांकित है।

किसी दुष्ट पुरुष ने किसी बालिका से लडकपन मे ही विवाह कर उसका परित्याग कर दिया है और स्वयं वह पटना में किसी रखैल के साथ रहता है। वह छोटी विवाहिता लड़की जिसे अपने विवाह का ज्ञान तक नही है बारी-बारी से अपने माता, पिता, भाई, भावज, बहिन से पूछती है कि मैं अभी कुँवारी हूँ अथवा विवाहिता हूँ। उसके माता-पिता सभी उसे धोखा देते हुए कहते है कि ए बेटी! तुम्हारा विवाह मैंने बचपन मे ही कर दिया था। तुम्हारा पति पटना मे राजा है। जब पति का बहुत दिनों तक पता नही चलता तब वह परेशान होकर अपने भाई की सहायता से उसकी सेना को लेकर पटना पहुँचती है जहाँ उसका पति किसी रखैल के साथ आनन्द कर रहा था। वह अपने पति को कैद कर लेने के लिए सेना को आदेश देती है और उसे बन्दी बनाकर अपने पिता के पास लाती है। वह अपने पिता, माता, भाई और भावज सबसे बारी-बारी से कहती है कि मै आप लोगो के लिए हरवाह चरवाह, रसोइया और नौकर के रूप मे इसे लाई हूँ। परन्तु सभी लोग इस कुकर्मी दुश्चरित्र व्यक्ति को आदर प्रदान करते है।

विशेष—ईस गीत मे बाल विवाह का उल्लेख पाया जाता है। कन्या इतनी छोटी है कि उसे यही पता नही है कि मेरा विवाह अभी हुआ है या नही है। वह दूसरों से पूछ कर इस विषय का पता लगाती है। दूसरी उल्लेखनीय बात बहु-विवाह प्रथा है। समाज में पुरुषो पर किसी प्रकार का नियंत्रण न होने के कारण वे प्राय दो-तीन स्त्रियो से विवाह कर लेते अथवा अकारण प्रथम पत्नी का परित्याग कर किसी रखैल को रख लेते हैं। लोक गीतों में वर्णित इस प्रथा का आज भी कोई अभाव नही है। तीसरी विशेष बात प्रथम पत्नी के द्वारा अपने पति को कैद कर अपने मायके लाना और पिता-माता के सामने उस कुकर्मी पति की बेइज्जती करना है। यह एक विशिष्ट घटना है जो अन्यत्र नही पायी जाती। ऐसी साहसी मनस्वी तथा तेजस्वी पत्नी की जितनी भी प्रशंसा की जाय उतनी थोड़ी है।

---

१ रोटी पोने वाला रसोइया २ चूल्हा को पोतने वाला कहार नौकर

२१७. सन्दर्भ – किसी पुरुष के द्वारा अपनी माता के आदेश अपनी पत्नी का बध करके उसका कलेजा माता को अर्पित करना। फूफू (बुआ) के द्वारा अपने भानजे का पालन-पोषण करना।

कच्चिनि सिकिआ क मोरी सीक सिकोलिआ हो ना।
सिकिआ मउनिआ केन मउरा हो ना ॥१॥
खाउँ न बहुअरि तोर भइया भतीजवा हो ना।
बहुअरि सिकिआँ मउनिया केन मउरा हो ना ॥२॥
काहे क गरि आइउ सासु भइया भतीजवा हो ना।
चउरइ डावत मिकहुली मउरि गई हो ना ॥३॥
अतना सुनेनि सासु बढइतिनि हो ना।
वइतउ जिरवा बटोरि ढेरी लावइ हो ना ॥४॥
वइतउ धुँइहर मुलगावइ गज ओवरि हो ना ॥५॥
पंसा खेलत बेल तरा विरछि तरा हो ना।
भोजा तोहरे घरा माँ अगिया लागि बाटि हो ना ॥६॥
पमा बहावइ बेल विरिछ तरा हो ना।
वइतउ दउडि के आँवइ गज ओवरि हो ना ॥७॥
गोडवा से टोवइ लागेन मुड़वउ टोवइ हो ना।
माया तोहरे कवन भये ओनान हो ना ॥८॥
हमरे बेदनया पूता राम जानइ हो ना।
पूता हमरे करेजवा बहुतइ पीर उठइ हो ना ॥९॥
पूता बहुआ कइ करेजवा मोरि ओकत हो ना।
रामा रोसइआँ मोरी धना वाडी हो ना ॥१०॥
धना तोहरे नइहरवा कुछु होन बाटइ हो ना ॥११॥
जउ हमरे नइहरवा कुछु होत बाटइ हो ना।
संइयाँ नउआ सुपारी लइके अउनइ हो ना ॥१२॥
तू तउ मोरी धना बाटिउ राम रोसइआँ हो ना।
नउआ विदइआ दइके विदा कीहेउँ हो ना ॥१३॥
हँकरा न नगरा कइ मोनार बेटवना हो ना।
मोरी धना जोगे गहना लयावहु हो ना ॥१४॥
हँकरा न नगरा कइ चुरिहार बेटवना हो ना।
मोरी धना जोगे चुरिआ लयावहु हो ना १५

हँकरा न नगरा कइ रंगरेज बेटवना हो ना।
मोरी धनी जोगे चुनरी लयावहु हो ना ॥१६॥
हँकरा न नगरा कइ दरजी बेटवना हो ना।
मोरी धना जोगे चोलिआ लयावहु हो ना ॥१७॥
हँकरा न नगरा कइ कहाँर बेटवना हो ना।
मोरी धना जोगे डड़िया फँदावहु हो ना ॥१८॥
काहु देखि कहरा डड़िआ ठमकाया हो ना।
काहु देखि घोड़ा हिहिआने हो ना ॥१९॥
छहरा देखि के धना डड़िया ठमकायेन हो ना।
रामा दूबि देखि घोड़ा हिहियाने हो ना ॥२०॥
लेहु न कहरा अपनी बिदइआ हो ना।
कहरा बिदा होइके जाउ अपना घरवा हो ना ॥२१॥
कहरा हम धना खेलब पंसा मरिआ हो ना ॥२२॥
खेलत खेलत धना मुरझाइ गई हो ना।
वइतउ भोजा कि जंघिआ पइ सोइ गइ हो ना ॥२३॥
फँड़वा से छोरइ भोजा छूरि कटरिआ हो ना।
वइतउ हनि केन मारइ बहू के करेजवा हो ना ॥२४॥
एक छूरी मारइ दूसर छूरी मारइ हो ना
तीसरे मां निकरे सुन्दर बालक हो ना ॥२५॥
रामा तिसरेन मां बहु कइ करेजवा हो ना।
बाये हाँथे लेइँ वइतउ बहूकइ करेजवा हो ना ॥२६॥
रामा दाये हाथे लेहेन सुन्दर बालकवा हो ना।
गलिआ कि गलिआ वइतउ घूमइँ लागे हो ना ॥२७॥
वह पुकारइ लागे हो ना।
रामा केइ लेइँ सुन्दर बालकवा हो ना ॥२८॥
अपनी महल चढ़ि फूफू पुकारइ हो ना।
हम लेबइ सुन्दर एक बालकवा हो ना ॥२९॥
अँगने अहा कि भितरे हो ना।
माया छिदिलेनू बहू कइ करेजवा हो ना ॥३०॥
अपनी बहुअवा पूता नइहर पठया हो ना।
पूता हमका लिआया कुकुरी कइ करेजवा हो ना ॥३१।
रामा अइसे माया पर चाकी परइ हो ना।
रामा जिन मोरी जोड़िया बिगाड़ा हो ना ॥३२।

बरिस कइ भय वहतउ हो ना।
लागे आपन माइ औ बापवा हो ना ॥३३॥
माया पूता मरि गये हो ना।
जोगिया होइके निकरि गये हो ना ॥३४॥
मोरी फूफू सोने कइ छड़ियवा हो ना।
जावइ माई अउ बापवा हो ना ॥३५॥
बन गयेन दूसर बनवा हो ना।
मां माया कइ हंड़ावलि हो ना ॥३६॥
बटोरि बटोरि वइतउ कूनी लावइ हो ना ॥३७॥
छड़ी मारइ दूसर छड़िया हो ना।
तीसरे उठि बइठइँ बनकइ माया हो ना ॥३८॥
बन गयेन दूसर बनवा हो ना।
मां बपवा जोगियवा हो ना ॥३९॥
न नगरा क नउआ बेटवना हो ना।
बपनउ क बरवा बनउते हो ना ॥४०॥
न नगरा क चमार बेटवना हो ना।
बाप जोगे जुतवा लयावहु हो ना ॥४१॥
न नगरा क बजाज बेटवना हो ना।
जोगे धोतिआ अउ सफवा लयावहु हो ना ॥४२॥
न नगरा कइ सईस बेटवना हो ना।
बापा जोगे घोड़वा लयावहु हो ना ॥४३॥
न नगरा कइ सोनार बेटवना हो ना।
माया जोगे गहना लयावहु हो ना ॥४४॥
न नगरा कइ चुरिहार बेटवना हो ना।
माया जोगे चुरिआ लयावहु हो ना ॥४५॥
न नगरा कइ रंगरेज बेटवना हो ना।
माया जोगे चुनरी लयावहु हो ना ॥४६॥
न नगरा कइ दरजी बेटवना हो ना।
माया जोगे चोलिया लयावहु हो ना ॥४७॥
न नगरा कइ दरवेस बेटवना हो ना।
माया जोगे टिकुली लयावहु हो ना ॥४८॥
न नगरा कइ कहार बेटवना हो ना।
माया जोगे डड़िया फँदावहु हो ना ॥४९॥

एक बन गयेन दूसर बन गयेन हो ना।
रामा तीसरे मा बनकइ महलिया हो ना ॥५०॥
अंगने बाटिउ कि बाहर आजी हो ना।
रामा परिछि लेतू बेटवा पतोहिया हो ना ॥५१॥
आँखी फूटी दिदवा फूटइ हो ना।
नाती कइसे परिछउँ बेटवा पतोहिया हो ना ॥५२॥
अपनी महल से बनकइ फूफू बोलइ हो ना।
नाही जानेउ पूता सपूता होबेआ हो ना ॥५३॥
नाहीं मारि डारिति दइके जहरवा हो ना ॥५४॥

———:o:———

अर्थ सरल और स्पष्ट है।

[खण्ड : पाँच]

देवी देवताओं-संबंधी-गीत

- राम
- कृष्ण (श्याम)
- विविध

राम

भजन

२१८. संदर्भ—भक्त की भावना तथा राम नाम का प्रताप।

तजि देवइँ[1] सब काम राम का नाम सुमिरि के ।। टेक
अरे पेड़वा अयोध्या माँ उपजइँ, डार गई बद्रीनाथ,
राम का नाम सुमिरि के ।।१।। टेक
अरे फुलवा अयोध्या माँ फूलइँ, फल लागे बद्रीनाथ,
राम का नाम सुमिरि के ।।२।। टेक
अरे रोये कोखिया[2] नाहीं मिलतइँ, अरे पूता[3] नाहीं मिलइँ उधार,
राम का नाम सुमिरि के ।।३।।
तजि देवइँ सब काम राम का नाम सुमिरि के ।

कोई भक्त कहता है कि मैं राम का नाम स्मरण करते हुए संसार के सभी हो छोड़ दूँगा। भगवान् के नाम की इतनी बड़ी महिमा है कि राम-रूपी वृक्ष ा में उत्पन्न होता है परन्तु उसकी डाल (विस्तार) बद्रीनाथ तक होता है ।।१।। फूल तो अयोध्या में फूलता है परन्तु उसका फल बद्रीनाथ में लगता है ।।२।। (भगवान् की कृपा के बिना) रोने से पुत्र की प्राप्ति नहीं होती और न लड़का ही मिलता है ।।३।।

२१९. सन्दर्भ—किसी भक्त के हृदय की भावना।

आजा मोरे राम की सुधि आई।टेक
आगे आगे राम चलतु है, पीछे लछुमन भाई हो।
तेकरे[4] पीछे मातु जानकी; चित्रकूट का जाइ हो ।।१ टेक
राम बिना मोरी सूनी अजोधिया; लछुमन बिन चौपारी[5]।
सीता बिना मोरी सूनी रोसइया; के जेउनार[6] रचाई हो ।।२।।
रामा आये मोरी भरिगई अजोधिया;
लछुमन आये चौपारी हो।

---

१. छोड़ दूँगा। २. कोख=(सं०) कुक्षि अर्थात्, पुत्र। ३. पुत्र, लड़का। के। ५. चौपाल। ६. भोजन, भोज।

सीता आई मोरी भरि गई रोसइयाँ;
बई जेउनार रचाई हो ।।३।।
आज मोरे राम की सुधि आई।

कोई भक्त कहता है कि आज मुझे राम-नाम की सुधि आई है। आगे-आगे रामचन्द्र जी चलते है और उनके पीछे उनके भाई लक्ष्मण जी जाते है तथा उनके पीछे माता जानकी चलती है। इस प्रकार ये लोग चित्रकूट के पास पहुँच जाते है ।।१।।

कौशल्या जी राम के वन-गमन पर विलाप करती हुई कहती है कि राम के बिना मेरी अयोध्या सूनी हो गई है, लक्ष्मण के बिना चौपाल सूनी है। सीता के बिना मेरा रसोई-घर सूना दिखाई पड़ रहा है। अब मेरे लिए भोजन कौन बनायेगा ।।२।।

राम के वनवास से लौटकर आने पर मेरी अयोध्या परिपूर्ण दिखाई पड़ती है, लक्ष्मण के आने पर चौपाल भरी हुई मालूम पड़ती है। सीता के आने से मेरे रसोई घर में चहल-पहल दिखाई पड़ती है। अब वे ही मेरे लिए रसोई बनायेगी ।।३।।

२२०. सन्दर्भ—भगवान के प्रति किसी भक्त की भावना।

दुनियाँ आनन्द भइ राम जी कै आवना। टेक
जमुना के ईर[1] तीर गऊ कै चरावना;
सिर पै मुकुट, गरे मा माला, बंशी बजावना ।।१।। टेक

काशी मा कन्त जूझै[2] लंका पति रावना;
पाताल बिच बालक रोवै, बावन[3] रूप धारना ।।२।। टेक

फूलन की सेज, फूलन कर आहारना[4];
फूल फूल सोहही सबै के मन भावना ।।३।। टेक
दुनिया अनन्द भई राम जी कै आवना।

भगवान् की कृपा से संसार आनन्दमय हो रहा है। कृष्णावतार के रूप में वे जमुना के किनारे गायों को चराते है। वे सिर पर मोर का मुकुट धारण करते है, गले में बैजयन्ती माला पहिनते है और वंशी बजाते हैं ।।१।।

रामावतार के रूप में वे लंकापति रावण से युद्ध कर उसका बध करते हैं। वामनावतार में वे बलि को छल कर उसे पाताल में भेज देते है जहाँ उसे अनेक कष्ट प्राप्त होते है ।।२।।

भगवान् फूलों की सेज पर सोते है और फल खाते है अर्थात् फल-फूल से भगवान् प्रसन्न होते हैं और वे सब भक्तों के हृदय को अच्छे लगते हैं ।।३।।

---

१. तीर के जोड़-तोड़ का तुकान्त शब्द। २. लड़ना। ३. वामनावतार। ४. आहार, भोजन।

२२१. सन्दर्भ—किसी भक्त के हृदय की भावना।

हमरे तउ रामइ राम धन, खेती। टेक
पहिले पहिल हम खेती जउ कीना;
गंगा जमुनवा की रेती ॥१॥ टेक
मन कर बैला सुरति[1] हरवहवा[2];
जब मन चाहे तब हम जोती ॥२॥ टेक
रामा नाम एक बीज परत है;
उपजत हीरा[3] मोती ॥३॥ टेक
हमरे तउ रामइ राम धन, खेती।

कोई भक्त कहता है कि राम का नाम ही मेरा धन है और वही मेरी खेती है। सबसे पहिले मैंने गंगा और जमुना की रेती पर खेती की अर्थात् इन नदियों के किनारे निवास कर मैंने भगवान् का भजन करना प्रारम्भ किया ॥१॥

इस खेती को करने के लिए मन ही तो बैल है, भगवान् का स्मरण हरवाहा (खेत जोतने वाला) है और जब मेरा मन चाहता है। तब मैं इस खेत को जोतता हूँ ॥२॥

इस खेती मे राम के नाम का बीज डाला जाता है और इस बीज से हीरा तथा मोती उत्पन्न होता है ॥३॥

इस गीत का भाव यह है कि मन को लगाकर भगवान् के नाम का स्मरण करना चाहिए। राम का नाम लेने से सुन्दर फल (धन, धान्य आदि) की प्राप्ति होती है। भक्तों का यही धन है, यही उनका सर्वस्व है।

२२२. सन्दर्भ—राम के विवाह के अवसर पर उन्हें दहेज देने का वर्णन।

सब धन दीन्हा लुटाई राम का। टेक।
बागा भी दीन्हा बगइचा भी दीन्हा;
निबुल दीन जनवासे[4] राम का ॥१॥ टेक
तारा भी दीन्हा ईनारा भी दीन्हा;
घटवा दीन जनवासे राम का ॥२॥ टेक
महला भी दीन्हा दुमहला भी दीन्हा;
खिरकिउ दीन जनवासे राम का ॥३॥ टेक
सेजा भी दीन्हा सुपेती भी दीन्हा;
तकिअउ दीन जनवासे राम का ॥४॥ टेक
सब धन दीन्हा लुटाई राम का।

---

१. स्मरण। २. हल चलाने वाला। ३. धन, धान्य। ४. बारात के ठहरने का स्थान।

कोई कहता है कि जनक ने राम के विवाह के अवसर पर उन्हें अपना सब धन लुटाकर दे दिया। उन्हें बाग भी दिया, वाटिका भी दिया और जनवासे के समय उन्हें नीबू भी दिया ॥१॥

जनक ने उन्हें कुँआ भी दिया और उसका घाट (जल भरने के लिए स्थान) भी बनवा दिया ॥२॥

उन्होंने महल भी दिया और दो मञ्जिला मकान भी दिया और जनवासे के अवसर पर उसमें खिड़की भी लगवा दिया ॥३॥

जनक ने राम को शय्या भी दी और उस पर बिछाने के लिए बिस्तर भी दिया। जनवासे के समय उन्होंने सेज पर लगाने के लिए तकिया भी दी ॥४॥

२२३. सन्दर्भ—मालिन के भाग्य की प्रशंसा।

धन्य धन्य मालिन तोरी भाग;
राम फुलवरिया[1] मा आये। टेक
काहेन[2] के तोरे अम्बा अउ खम्भा;
काहेन माड़व[3] छवाये ॥१॥ टेक
काहेन के तोरे अलसा अउ कलसा[4],
काहेन चौक पुराये[5] ॥२॥ टेक
सोने कय मोर अम्बा अउ खम्भा,
रूपे[6] कय माड़व छवाये ॥३॥ टेक
हीरा कय मोरे अलसा अउ कलसा,
मोतिन चौक पुराये ॥४॥ टेक
धन्य धन्य मालिन तोरी भाग;
राम फुलवरिया माँ आये।

कोई स्त्री कहती है कि ए मालिन! तुम्हारा भाग्य धन्य है कि आज रामचन्द्र तुम्हारी फुलवाड़ी में आये। किस चीज का तुमने खम्भा बनाया है और किस चीज से तुमने मण्डप छवाया है ॥१॥

किस वस्तु का तुमने कलश रखा है और किससे तुमने चौक बनाया है? ॥२॥

इस पर मालिन उत्तर देती है कि सोने का मैंने खम्भा बनाया है और चाँदी से मण्डप छवाया है। मेरा कलश हीरे का बना हुआ है और मोतियों से मैंने चौक बनाया है ॥३-४॥

ए मालिन! तेरा भाग्य धन्य है कि रामचन्द्र तेरी फुलवाड़ी में आज आये हुए हैं।

---

१. वाटिका, घर। २. किस वस्तु की। ३. मण्डप। ४. कलश। ५. सोपना। ६. चाँदी।

२२४. सन्दर्भ—राम और सीता के विवाह का वर्णन।

मन मोहन तीनिउ लोक गय धुनि के बजाये।
केकर सजत बरात केहि दल उमड़ै;
केकर ब्याहन जाय रे जनक जी के द्वारे ॥१॥ टेक
राम कइ सजत[1] बरात लछन दल उमड़ै;
सीता को ब्याहन[2] जाय रे जनक जी के द्वारे ॥२॥ टेक
केकर चढ़त चढाव केहिन गुन गाए।
केकर भाग[3] देखाय रे जनक जी के द्वारे ॥३॥ टेक
सीता कइ चढ़त चढाव[4] सखियन गुन[5] गाए,
राम कइ भाग देखाय रे जनक जी के द्वारे ॥४॥ टेक

कोई भक्त कहता है कि मन को मोहित करने वाले राम का विवाह बाजा तीनों लोक में बज रहा है। किसकी बारात सजाई जा रही है, कौन दल बना कर चल रहा है और किसको ब्याहने के लिए लोग जनक जी के द्वार पर जा रहे है ॥१॥

आज राम की बारात सजाई जा रही है, लक्ष्मण जी बारातियों का दल लेकर तैयार है और सीता को ब्याहने के लिए लोग जनक के द्वार पर जा रहे हैं ॥२॥

किसका चढावा (आभूषण, वस्त्र आदि) चढ़ रहा है, कौन गीत गा रही हैं और जनक के द्वार पर किसका सौभाग्य दिखाई पड़ रहा है ॥३॥

विवाह के अवसर पर सीता जी का चढावा चढ़ रहा है और इस समय सखियाँ विवाह के गीत गा रही हैं। आज जनक के द्वार पर राम का भाग्य दिखलाई पड़ रहा है ॥४॥

२२५. सन्दर्भ—राम के वन-गमन का वर्णन।

बन का निकरिगे दोनों भाई। टेक
आगे आगे राम चलत हैं,
पीछे लछमन भाई ॥१॥ टेक
तेकरे[6] पीछे मातु जानकी;
सोभा बरनि न जाई ॥२॥ टेक
आँगन रोवैं माया[7] कउसल्या;
दुआरे[8] भारत भाई ॥३॥ टेक
राजा दसरथ प्रान तजत हैं;
केकइ रानि पछताई ॥४॥ टेक

---

१. सुसज्जित हो रही है। २. विवाह करने के लिए। ३. भाग्य। ४. चढ़ावा, आभूषण, वस्त्र आदि। ५. गीत। ६. उसके। ७. माता। ८. द्वार पर।

भूख लगे भोजन कहाँ पइहे;
प्यास लगे कहाँ पानी ॥५॥ टेक
नींद लगे डासन[1] कहाँ पइहै,
कुस[2] कास[3] गड़ि जाई ॥६॥ टेक
बन का निकरिगे दोनों भाई ।

कोई भक्त कहता है कि दोनों भाई—राम और लक्ष्मण-वन को चले गये। आगे आगे तो राम चलते हैं और पीछे लक्ष्मण जी जाते है ॥१॥

उनके पीछे सीता जी जा रही है। इनकी शोभा का वर्णन नही किया जा सकता ॥२॥

राम-जानकी के वन चले जाने पर माता कौशल्या आँगन मे रो रही है और प्रिय भाई भरत द्वार पर रो रहे है। राजा दशरथ अपने प्राणो का त्याग कर रहे है और रानी कैकेयी अपने किये गये कर्मो पर पछता रही है ॥३-४॥

भूख लगने पर राम को भोजन कहाँ मिलेगा और प्यास लगने पर पानी कहाँ मिलेगा ? नीद लगने पर बिछौना कहाँ मिलेगा ? बिना बिस्तर के सोने पर कुश और काँस गढ जायेगा ॥५-६॥

२२६. सन्दर्भ—वन में साथ चलने के लिए सीता की रामचन्द्र से प्रार्थना।

रघुवर चलब तोहरे संग मां,
अब न अवधपुर रहबै। टेक
जब सिरि रघुबर रथ पर चढ़िहइ,
हम पैदर[4] चलि जाबै ॥१॥ टेक
रघुबर जउ बन फल खइहै;
तउ हम फकली[5] बिन[6] खाबै ॥२॥ टेक
जउ रघुबर पूजा करिहैं;
हम चउकन[7] देय लेबै ॥३॥ टेक
फूल नेवारी के सेज लगायेउँ;
हम भुइयन[8] ढुर[9] जाबै ॥४॥ टेक
रघुबर चलब तोहरे संग मा;
अब ना अवध माँ रहबै ॥५॥ टेक

---

१. बिछौना। २. कुश। ३. काँस जिसका छिलका बड़ा तेज होता है। ४. पैदल। ५. पाकड़ वृक्ष का फल। ६. चुन-चुन कर। ७. गोबर, मिट्टी से लीपा गया, पूजा के लिए स्वच्छ स्थान। ८. जमीन पर। ९. सो जाऊँगी।

सीता जी रामचन्द्र जी से निवेदन करती हुई कहती है कि ए रघुकुल ! मैं तुम्हारे साथ ही जंगल में चलूँगी। अब अयोध्या में न रहूँगी। जब राम रथ पर चढ़ कर बन को चलेंगे तब मैं पैदल ही चल पड़ूँगी ॥१॥

जब रामचन्द्र वन में कन्द, मूल, फल खायेंगे तब मैं पाकड़ के फल को बीन-बीन कर खाऊँगी जो बिना प्रयास ही जंगल में अधिकता से मिलता है ॥२॥

जब राम पूजा करेंगे तब मैं उनके पूजा करने के स्थान को गोबर से लीप कर चौका लगाऊँगी ॥३॥

राम के लिए मैं नेवारी के फूलों से सुसज्जित करके उनके सोने के लिए सेज तैयार करूँगी परन्तु मैं जमीन पर ही सो जाऊँगी ॥४॥

ए राम ! मैं तुम्हारे साथ ही बन को चलूँगी अब मैं अयोध्या में नहीं रहूँगी ॥५॥

२२७. सन्दर्भ—विपत्ति के दिनों में कोई किसी का साथी नहीं होता।

केहु ना विपतिया माँ साथी बिगड़े दिनवा।
पहिली विपति राजा रावन पे परिगा।
सोने के लंका होइगा[1] माटी,[2] बिगड़े दिनवा॥
ए दूसरी विपति राम-लछुमन पे परिगा।
प्यासन मरइ दोइनउ भाइ, बिगड़े दिनवा॥
ए तीसरी बिपति रामा सरवन[3] पे परिगा।
बान लगइ मां छाती, बिगड़े दिनवा[4]॥
ए चउथी बिपति सारी दुनिया पे परिगा।
हाय बजर[5] भइ छाती, बिगड़े दिनवा॥
केहु ना बिपतिया माँ साथी, बिगड़े दिनवा।

कोई भक्त कह रहा है कि विपत्ति के दिनों में कोई भी व्यक्ति किसी का साथी नहीं होता। पहिली विपत्ति राजा रावण पर पड़ी थी जिससे सोने की बनी हुई लंका जल कर राख बन गई ॥१॥

दूसरी विपत्ति राजा रामचन्द्र और लक्ष्मण पर पड़ी थी जिससे बनवास के दिनों में दोनों प्यास से मर रहे थे ॥२॥

तीसरी विपत्ति श्रवण कुमार के ऊपर पड़ी थी। क्योंकि बिना किसी अपराध के राजा दशरथ ने उसकी छाती में बाण मारा था जिससे उसकी मृत्यु हो गई ॥३॥

चौथी विपत्ति समस्त संसार पर पड़ गई है। सभी लोगों का हृदय वज्र के समान कठोर बन गया जिससे दूसरों के दुःख का कुछ अनुभव ही नहीं होता ॥४॥

वास्तव में विपत्ति के दिनों में कोई किसी का साथी नहीं होता।

---

१ हो गई। २ मिट्टी ३ श्रवण कुमार ४ बुरे दिन आने पर ५ वज्र

२२८. सन्दर्भ—राम के बन जाते समय दशरथ तथा कौशिल्या के द्वारा विलाप ।

रामा निसरि[1] बन जइहइ, जिअब हम कइसे । टेक
मचिया बइठ ओनकइ[2] माया जउ झखइ ।
मोरा दूध बरबादी,[3] जिअब हम कइसे ॥१॥
सभवा बइठ ओनकइ बपइ जउ झंखइ ।
मोरा कोरा[4] भये अब सूना, जिअब हम कइसे ॥२॥
पंसा खेलत ओनकइ भइया जउ झंखइ ।
मोरी बाँह[5] आजु टूटी, जिअब हम कइसे ॥३॥
अपनी सेज धइ ओनकइ धनिया जउ झखइ ।
मोरी जनम बरबादी, जिअब हम कइसे ॥४॥

कौशल्या जी कहती है कि यदि राम बन को चले जायेगें तो मैं कैसे रहूँगी । मचिया पर बैठी हुई वे विलाप करती हैं कि राम के बन चले जाने पर मेरा दूध बेकार हो जायेगा अर्थात् तब मैं किसको दूध पिलाऊँगी ॥१॥

राज-दरबार मे बैठे हुए उनके पिता दशरथ दु खित होकर कहते है कि राम के बन चले जाने पर मेरी गोद सूनी पड गई है । अब मैं कैसे जीऊँगा ? ॥२॥

जुआ खेलते हुए राम के भाई लक्ष्मण दुःखी होकर कहते हैं कि राम के बनवास के कारण मेरी बाँह आज टूट गई अर्थात् आज मेरी शक्ति नष्ट हो गई । अब मैं कैसे जीवित रह सकता हूँ ॥३॥

अपनी सेज को पकड कर उनकी स्त्री—सीताजी—दु.खित हो रही है और कहती है कि राम के बन चले जाने पर मेरा जीवन बर्बाद अर्थात् नष्ट हो जायेगा । अत. मेरा जीवन धारण करना कठिन है ॥४॥

२२९. सन्दर्भ—बनवास से राम के लौटने पर अयोध्या में प्रसन्नता ।

राम आये अजोधा अनन[6] भई नगरी । टेक
राजा दशरथ के चारि बेटउना[7] ।
चारिउ खेलाथी[8] अंगनवा; अनन भई नगरी ॥१॥
राजा दशरथ के चारि नतीयवा ।
चारिउ खेलाथी अगनवा, अनन भई नगरी ॥२॥
राजा दशरथ के चारी बिटियवा ।
चारिउ खेलाथी गुड़ीवा, अनन भई नगरी ॥३॥

---

१. निकलकर । २ उनकी । ३. व्यर्थ, बेकार । ४. गोदी । ५. बाहु-बल अर्थात् शक्ति । ६. आनन्दित । ७. बेटा, पुत्र । ३. खेलती है । ४. नाती, पौत्र ५ पुत्र-बधू को ।

राजा दशरथ के चारी पतुहिया
चारिउ सिझिली रसोइया, अनन भई नगरी ॥४॥
राम आये अजोधा, अनन भइ नगरी।

रामचन्द्र जी चौदह वर्ष के बनवास के पश्चात् अयोध्या लौट कर आये। उनके आने से अयोध्या नगरी आनन्दित हो गई। राजा दशरथ के चार लड़के हैं। ये चारों आज आंगन मे खेल रहे है ॥१॥

राजा दशरथ के चार पौत्र है। ये चारो आंगन में खेल रहे हैं। अयोध्या नगरी आनन्दित हो गई है ॥२॥

राजा दशरथ की चार लड़कियां हैं। ये चारों गुड़िया खेल रही है। अयोध्या नगरी आनन्दित हो गई है ॥३॥

राजा दशरथ की चार पुत्रबधूये है। ये चारो रसोई घर में भोजन बना रही हैं। आज अयोध्या नगरी राम के बन से लौटने के कारण आनन्दित हो गई है ॥४॥

[दशरथ की एक ही लड़की थी जिसका नाम शान्ता था परन्तु इस गीत मे चार लड़कियो के होने की बात लिखी है जो गलत है।]

२३०. सन्दर्भ—किसी स्त्री का अपने पति के साथ परदेस जाने का विशेष आग्रह।

मइया मधुवन[1] जाबइ अपने राम के संग माँ। टेक

जउ तू बेटी मधुवन जाबू।
जेउना[2] कहा से पउबइ[3] ॥१॥
अपने राम के संग माँ।

मइया भूखन मरबइ, भूखन मरबइ।
मइया मधुवन जाइबि हो ॥२॥
अपने राम के संग माँ।

जउ तू बेटी मधुवन जाब्या।
गेडुआ कहाँ से पउब्या हो ॥३॥
अपने राम के संग माँ।

मइया प्यासन मरबइ प्यासन मरबइ।
मइया मधुवन जाइबि हो ॥४॥
अपने राम के संग मा।

जउ तू बेटी मधुवन जाबू।
सेजिया कहाँ से पउबा[4] हो ॥५॥
अपने राम[5] के संग माँ।

मइया नीदन मरबइ, नीदन मरबइ।
मइया मधुवन जाबइ हो ॥६॥
अपने राम के संग माँ।

---

१. वृन्दावन। २. भोजन। ३. पाओगी। ४. पाओगी। ५. प्रियतम, पति।

कोई स्त्री कहती है कि ए माता (सास)! मैं अपने पति के साथ वृन्दावन (सुन्दर नगर) को जाऊँगी। तब सास उत्तर देती है कि ए बेटी! यदि तू मधुवन जावोगी तब भोजन कहाँ से पावोगी ॥१॥

बहू उत्तर देती हुई कहती है कि ए माता! मैं भूखों मरूँगी, मैं भूखों मरूँगी परन्तु अपने प्रियतम के साथ परदेस अवश्य जाऊँगी ॥२॥

सास कहती है कि ए बेटी यदि तुम परदेस जावोगी तब पीने के लिए पानी कहाँ से पावोगी ॥३॥

बहू कहती है कि ए माता! मैं प्यास से मर जाऊँगी, परन्तु अपने प्रियतम के साथ परदेस अवश्य जाऊँगी ॥४॥

सास फिर उसे समझाती हुई कहती है कि बेटी! यदि तुम परदेस जावोगी तब सोने के लिए पलंग कहाँ से पावोगी ॥५॥

इस पर बहू उत्तर देती है कि ए माता सोने की सुविधा न होने के कारण मैं नींद न लगने से भले ही मर जाऊँ परन्तु अपने प्रियतम के साथ परदेश अवश्य जाऊँगी ॥६॥

विशेष—इस गीत मे किसी स्त्री का अपने प्रियतम के साथ परदेस जाने की उत्कट इच्छा दिखाई पड़ती है। वह अनेक कष्टो को सहन करते हुए भी अपने पति का साथ नहीं छोड़ना चाहती। इस गीत मे मधुवन शब्द आया हुआ है जिसका अर्थ वृन्दावन है। भोजपुरी लोक-गीतो मे भी इसका अनेक स्थलो पर प्रयोग पाया जाता है जैसे—"आरे मधुबनवा गइले ना,

आरे ओही कूबरी का सगवा।"

परन्तु यहाँ मधुवन का प्रयोग किसी साधारण सुन्दर नगर के लिए हुआ है, किसी नगर-विशेष के अर्थ में नहीं।

२३१. सन्दर्भ—किसी भक्त स्त्री के हृदय की भावना।

रामइ राम हमारे मन बसिगा[१]। टेक
सोने की थरिया मइ जेंवना बनायो।
जेवइँ का राम लछमन जेवइँ सालिगराम[२] ॥१॥
हमारे मन बसिगा।
झझरेन गेडुआ गंगा-जल पानी।
घूँटइ[३] का राम लछुमन घूँटइ सालिगराम ॥२॥
हमारे मन बसिगा।
लाची लँवग रसबीरा जोरायो रे।
कूँचइ का राम लछुमन कूँचइ सालिगराम ॥३॥
हमरे मन बसिगा।

---

१. बस गये, हृदय में रम गये। २. शालिग्राम। ३. घूँटना, पीना।

फूला नेवारी के सेजिया[1] लगायो रे
सूत का राम लछुमन सूतइ सालिगराम ॥४॥
हमारे मन बसिगा।

कोई भक्त स्त्री कहती है कि हमारे हृदय में रामचन्द्र जी बस गये हैं अर्थात् मैं केवल उन्ही की भक्ति करती हूँ। सोने की थाली में मैंने भोजन बना कर परोसा था। राम और लक्ष्मण उसे भोजन करने वाले थे परन्तु शालिगराम (विष्णु) उसे खा गये ॥१॥

मैंने बड़े लोटे में उन लोगों के पीने के लिए गंगा जल रखा था। इलायची और लवंग लगा कर पान का बीड़ा तैयार किया था। उसे राम और लक्ष्मण को पीना और खाना चाहिए था परन्तु शालिग्राम उसे खा पी गये ॥२-३॥

मैंने नेवारी के फूलों से सेज को सजाया था। उस पर राम और लक्ष्मण को सोना चाहिए था परन्तु शालिग्राम सो गये ॥४॥

२३२. सन्दर्भ—भाग्य की प्रबलता का वर्णन।

हम जानीं हमही पर भीजी[2]। टेक
चाँदा सुरुज दुनियाँ कय[3] मालिक,
गहन[4] लगे उनहू पर बीती ॥१॥
राम लखन दुनऊवे भाई,
बन गये उन्हऊ पर बीती ॥२॥
गढ़ लंका का गरभी[5] रावणा,
बान लगे उन्हऊ पर बीती ॥३॥
साता समुन्दर राघव[6] मछरी,
जल के सूखे उन्हऊ पर बीती ॥४॥
हम जानीं हमही पर भीजी।

[भक्त कहता है कि भाग्य के कारण असमय में सभी को कष्ट उठाना पड़ता है] मैं समझता हूँ कि हमी को कष्ट भोगना पड़ रहा है। परन्तु ऐसी बात नहीं है। चन्द्रमा और सूर्य संसार के स्वामी है। परन्तु जब ग्रहण लगता है तब उन्हे भी कष्ट उठाना पड़ता है ॥१॥

राम और लक्ष्मण दोनो भाई राजा के लड़के थे। परन्तु वनवास हो जाने पर सीता-हरण तथा मेघनाद के द्वारा लक्ष्मण को शक्ति लगने पर दोनों को कष्ट उठाना पड़ा ॥२॥

---

१. सेज, पलंग। २. भीगना अर्थात् कष्ट उठाना। ३ का। ४. ग्रहण। ५ घमंडी। ६. एक विशेष प्रकार की मछली।

लंका का राजा रावण बड़ा घमंडी था परन्तु राम के द्वारा बाण लगने पर
ण गवाने पड़े ॥३॥

अगाध समुद्र में राघव मछली रहा करती है। परन्तु जल के सूख जाने पर
ो दुःख उठाना पड़ता है ॥४॥

२३३. सन्दर्भ—धोबी के अपवाद के कारण लक्ष्मण के द्वारा जंगल में छोड़ने के लिए ले जाई जाती हुई सीता की उनसे प्रार्थना।

धीरे चलब हमारे हो लछुमन। टेक
एक तउ सीता अंग कइ पातर,
दूसरे पाँव[१] के भारी हो लछुमन ॥१॥
एक तउ महुँअव[२] (महुँअव) सुकवा[३] उवत[४],
दूजे बढनिया[५] छोटी हो लछुमन ॥२॥
एक तउ कान्धा[६] बहुतय सुन्दर,
दूजे[७] साथ सग भाई हो लछुमन ॥३॥
धीरे चलब हमारे हो लछुमन।

सीता जी लक्ष्मण जी से कहती हैं कि ए मेरे लक्ष्मण ! जरा धीरे-धीरे चलो।
ो मै शरीर से पतली हूँ दूसरे इस समय गर्भवती हूँ। [इसलिए मुझे चलने में
कष्ट हो रहा है]॥१॥

एक तो शीतकालीन वर्षा का समय है। दूसरे शुक्रतारा दिखाई पड़ता है अर्थात्
रात्रि है। अत. ए लक्ष्मण ! तुम धीरे-धीरे चलो ॥२॥

एक तो मेरे पति-राम-बहुत सुन्दर है जिनकी स्मृति मुझे कष्ट दे रही है।
साथ में उनके भाई लक्ष्मण है। अतएव ए लक्ष्मण ! तुम धीरे धीरे चलो ॥३॥

२३४. सन्दर्भ—किसी अनुभवी स्त्री का राम को भजने का उपदेश।

राम का भजिल्या[८] नाही पछिताब्या[९]।
भाइ के बाप के राज माँ रे।
सखिया संग खेलिल्या, नाही पछिताब्या ॥१॥
सासु ससुर के राज मां रे,
तीरथ कुछ कइल्या नाही पछिताब्या ॥२॥
जेठ जेठानी के राज मां रे,
दान कुछ कइल्या नाही पछिताब्या ॥३॥

---

१. गर्भवती। २. महुवट=शीत कालीन वर्षा। ३. शुक्रतारा। ४. उगता है।
६. कृष्ण (राम)। ७. दूसरा। ८. भजने से। ९. पश्चात्ताप नहीं करना
।

राम को भजने से मनुष्य का पछताना नहीं पड़ता भाई और बाप के राज में सखियों के साथ खेल लो, आनन्द और सुख का उपयोग कर लो। फिर पछताना नहीं पड़ेगा ॥१॥

सास और ससुर के राज में कुछ तीर्थ यात्रा कर लो। फिर पछताना नहीं पड़ेगा ॥२॥

जेठ और जेठानी के राज में दान तथा पुण्य कुछ कर लो। फिर पछताना नहीं पड़ेगा ॥३॥

२३५. सन्दर्भ—बन न जाने के लिए कौशिल्या का सीता को उपदेश।

सुख पइहउ रे जानकी घरही रहया। टेक
खाड़ा[1] चिरउँजी जानकी मन न भावे रे।
सूखी भउरिया[2] कइसे के खाब्या रे ॥१॥
महला दुमहला जानकी मनही न भावे रे।
टूटी मड़इया[3] कइसे रहब्या रे ॥२॥
गंगा कइ पानी जानकी मनही न भावे रे।
झरना कइ पानी कइसे भावइ रे ॥३॥
लँवगा इलायची जानकी मनही न भावइ रे।
रूसवा[4] की पतिया कइसे भावइ रे ॥४॥

कौशिल्या जी सीता को उपदेश देती हुई कह रही है कि ए जानकी ! तुम बन मे न जाकर घर पर ही रहो। तभी तुम्हें सुख मिलेगा।

ए जानकी ! तुम्हे चीनी और चिरौजी अच्छी नहीं लगती है फिर सूखी हुई आटे की लिट्टी कैसे खाओगी ॥१॥

तुम्हे एक मंजिल के तथा दो मंजिल के भी मकान अच्छे नहीं लगते फिर टूटे छप्पर में तुम कैसे रहोगी ॥२॥

पीने के लिए तुम्हे गंगाजल भी अच्छा नहीं लगता फिर पहाड़ी झरनों का पानी तुम्हें कैसे स्वादिष्ट लगेगा ॥३॥

तुम्हें लवँग और इलायची भी अच्छी नहीं लगती। ऐसी दशा में रूस (वृक्ष विशेष) का पत्ता खाने में तुम्हे कैसे अच्छा लगेगा ॥४॥

२३६. सन्दर्भ—किसी भक्त की उक्ति भगवान् राम के प्रति।

देखा आजु राम कवन रंग आये। टेक
सात घरी दिन लरिका बनि आये।
तिरिया[5] कमन[6] लिही[7] खेलत आये ॥१॥

---

१. खाड़, शक्कर। २. आटे की बनी गोल-मोल बाटी जिसके भीतर सत्तू भरा रहता है। ३. छप्पर। ४. वृक्ष विशेष। ५. तीर। ६. कमान, धनुष। ७ लेकर।

सात घरी दिन छयला[1] बनि आये।
हाथे छड़ी मुँह पोंछत आये ॥२॥
साँझ भये बुँदवा[2] बनि आये।
हाथ लिहे पोथी मुख बाँचत आये ॥३॥

आज मै देखता हूँ कि राम कौन सा रंग लाते है। सात घड़ी दिन जाने पर वह लड़का बन कर आये। वे अपने हाथो मे तीर और धनुष लिये हुए है ॥१॥

सात घड़ी दिन जाने पर वह छैला बन कर आये। उनके हाथ में छड़ी थी और वे अपना मुँह पोछ रहे थे ॥२॥

सान्ध्या समय वे बुँदवा बनकर आये। उनके हाथो में पोथी थी और उसे वे पढ रहे थे ॥३॥

२३७ सन्दर्भ—सती स्त्री का अपने पति के प्रति प्रगाढ़ प्रेम।

मइया मधुवन जाबइ अपने राम के संग माँ। टेक
मधुवन जाबू बेटी जेवना कहाँ पउबू।
मइया भूखन मरबइ अपने राम के संग माँ ॥१॥
मधुवन जाबू बेटी गेड़ुवा कहाँ पउबइ।
मइया प्यासन मरबइ अपने राम के संग माँ ॥२॥
मधुवन जाबू बेटी सेजिया कहाँ पउबइ।
मइया धरती माँ सोबइ अपने राम के संग माँ ॥३॥

ए माता! मै अपने पति (राम) के साथ मे मधुवन जाऊँगी। इस पर माता पूछती है कि ए बेटी! यदि मधुवन जावोगी तो भोजन कहाँ से पावोगी। बेटी उत्तर देती है कि मैं अपने पति के साथ भूखों मर जाऊँगी ॥१॥

माता—पुत्री! यदि तुम मधुवन जावोगी तब लोटे का जल कहाँ पावोगी? पुत्री—ए माता! यदि जल नही मिलेगा तो मैं अपने पति के संग में प्यासी ही मर जाऊँगी ॥२॥

माता—यदि तुम मधुवन जावोगी तुम्हे चारपाई कहाँ से मिलेगी। पुत्री—ए माता! मै अपने राम के साथ धरती पर ही सो जाऊँगी ॥३॥

इस गीत में किसी सती स्त्री का अपने पति के प्रति प्रगाढ़ प्रेम दिखलाई पड़ता है।

२३८. सन्दर्भ—भक्त की भावना।

लइ चला हो जहाँ राम हमारा। टेक
काहे की ईंट काहे को गारा।
काहेन की दुइनउ खिरकी मोहारा ॥१॥

---

1. छैला। २. बुँदवा (=विद्यार्थी?)

सोने की ईट रूपन लागे गारा
चन्दन के दुइनउ खिरकी म।हारा ॥२॥
गलि गइ ईंट छूटि गये गारा।
गिरि गये दुइनउ खिरकी मोहारा ॥३॥

कोई भक्त कहता है कि जहां मेरे राम हैं वही मुझे ले चलो। किस चीज की ईट है और गारा किसका बना हुआ है। दोनो खिड़की किस वस्तु की बनी हैं ॥१॥

सोने की ईट है और उसमे चाँदी का गारा है। उसमें लगी हुई दोनों खिड़कियाँ चन्दन की बनी हुई है ॥२॥

काल क्रम से ईट गल गई गारा भी छूट गया और उसमें लगी हुई दोनो खिडकियाँ गिर कर नष्ट हो गई ॥३॥

इस गीत में रहस्यवाद की झाँकी देखने को मिलती है। यहाँ पर ईंट और गारा शरीर के लिए और खिड़कियों का प्रयोग इन्द्रियो के लिए किया गया है।

कृष्ण (श्याम)

२३६. **सन्दर्भ—भगवान् के प्रति किसी भक्त की उक्ति।**

तुम्हे ढूढ़त स्याम गुजर गई रतिया। टेक
गोकुल ढूढ़ेउ बिरिदावन[1] ढूढ़ेउँ।
मथुरा मा जात झपक[2] आई रतिया ॥१॥
परयाग[3] मा ढूढ़ेउ अजोधा मा ढूढ़ेउँ।
कासी मा जाइके लगायो गल फँसिया ॥२॥
मक्का मा ढूढ़ेउ मदीना मा ढूढ़ेउँ।
मसजिद मा जाइके रगर[4] डारेउँ नकिया ॥३॥
तुम्हें ढूढ़त स्याम गुजरि गई रतिया।

कोई भक्त कहता है कि हे भगवान्! आपको ढूढ़ते ढूँढ़ते सारी रात बीत गई। मैने तुम्हे गोकुल मे ढूंढा, वृन्दावन मे खोजा और मैं जब मथुरा मे जाकर तुम्हें खोज रहा था तब रात हो गई ॥१॥

मैने तुम्हे प्रयाग में खोजा, अयोध्या में खोजा और काशी में जाकर तुम्हें प्रसन्न करने के लिए गले मे फाँसी भी लगाई अर्थात् काशी में करवट भी लिया ॥२॥

मैंने तुम्हें मक्का में खोजा, मदीना मे खोजा और मसजिद मे जाकर नमाज पढ़ते समय अपनी नाक भी रगड़ी परन्तु तुम कही भी नही मिले ॥३॥

---

१. वृन्दावन। २. हो गई। ३. प्रयाग। ४. रगड़ डाला।

इस गीत मे काशी मे करवट (करपत्र अर्थात् आरा से अपने शरीर को चिरवाना) लेने की प्राचीन प्रथा का उल्लेख किया गया है जिसका वर्णन मीरा तथा सूरदास ने भी किया है।

२४०. सन्दर्भ—मोहिनी स्त्री का रूप धारण किये हुए श्री कृष्ण का वर्णन।

मोहन[1] रूप बने हरि बाना। टेक
बाजूबंद[2] अंग पर सोहै,
चाल चलै जैसे गज मस्ताना ॥१॥ टेक
हाथ मां मेंहदी, पाव महावरि[3],
माथे मां बेंदी[4] जड़ाना ॥२॥ टेक
मुख भर पान, नयन भर सुरमा,
लय दरपन कान्हा मुसकाना ॥३॥ टेक
हँस के पूछइ माया जसोदा;
काहे पूता भया जनाना ॥४॥ टेक
गोकुल मां एक गूजर छलि गइ;
उन्हउ छलन हम जाबै बाना ॥५॥ टेक
जाय के पहुँचे मोहन बरसाना;
गलियन फिरै भुलाना ॥६॥ टेक
मांझ सभा मां गूजर बैठी;
उन्हउ[5] मां कान्धा मिलि बतलाना ॥७॥
मोहन रूप धरे हरि बाना।

कोई गोपी कहती है कि श्री कृष्ण ने मोहिनी का वेश धारण किया है। उनके हाथ में बाजूबंद सुशोभित हो रहा है और वे मस्ताना—मदमस्त हाथी के समान धीरे धीरे चलते हैं ॥१॥

उनके हाथ में मेंहदी और पाँव में महावर लगी हुई है और माथे-ललाट में उन्होंने बिन्दी अर्थात् टिकुली लगा रखी है ॥२॥

वे मुख मे पान खा रहे है, आँखों मे उन्होने सुरमा लगा रखा है और शीशे में अपनी आकृति देखकर वे मुसकराते हैं ॥३॥

उनकी इस वेश—भूषा को देखकर उनकी माता यशोदा उनसे पूछती है कि ए बेटा! तुमने स्त्री का वेश क्यों धारण किया है ॥४॥

---

१. मोहिनी स्त्री का रूप। २. हाथ में पहिनने का एक गहना। ३. पाँव में लगाने का एक रंग, जावक। ४. टिकुली। ५. उनके।

इस पर कृष्ण जी उत्तर देते हैं कि ए माता ! गोकुल की एक ग्वालिन मुझे छल कर चली गई है। आज मैं उसे छलने के लिए, स्त्री का वेश बनाकर, बरसाना जा रहा हूँ जिससे वह मुझे पहिचान न सके ॥५॥

श्री कृष्ण जी बरसाना तो पहुँच गये परन्तु वहाँ की गलियो में उस ग्वालिन (गोपी) का घर भूल गये और इधर-उधर घूमने लगे ॥६॥

लोगों के बीच मे यह गूजरी बैठी हुई थी। उनके बीच में कृष्ण ने उसे पहिचान लिया ॥७॥

विशेष—हिन्दी के अनेक कवियो ने कृष्ण के द्वारा स्त्री रूप धारण कर गोपियो के पास जाने का उल्लेख किया है। बाबू हरिश्चन्द्र ने अपनी चन्द्रावली नाटिका में श्री कृष्ण का मनिहारिन (चूड़ी पहिनाने वाली स्त्री) का रूप धारण कर राधा को चूड़ी पहिनाने का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। अत: इस गीत मे कृष्ण के द्वारा स्त्री का रूप धारण करना इसी परम्परा के अनुरूप है।

२४१. सन्दर्भ—कृष्ण की उक्ति किसी अन्य ग्वाले के प्रति।

अब न चरउबइ[1] मधुवन तोरी गउआ।
ओही मधुवन कइ दूबा[2] सुखानी[3]।
काउ चरइँ मोरी नउलख[4] गउआ ॥१॥ टेक
ओही मधुवन कइ ताला[5] सुखाने।
काउ पिअइँ मोरी नउलख गउआ ॥२॥ टेक
ओहि मधुबन कइ साँकरि[6] गलिया,
कउनी[7] की जइहैं मोरी नउलख गउआ ॥३॥ टेक
अब न चरउबइ मधुबन तोरी गउआ।

कृष्ण जी कहते हैं कि मै अब वृन्दावन में गायें चराने के लिए नहीं जाऊँगा। उस नगर में घास अब बिल्कुल सूख गई है। अब मेरी नव लाख गाये वहाँ क्या चरेगीं ॥१॥

उस वृन्दावन मे सब तालाब भी सूख गये हैं। मेरी नव लाख गाये अब क्या पीयेगी ॥२॥

उस वृन्दावन की गलियाँ बहुत पतली हैं। मेरी नव लाख गायें उन गलियों में होकर अब कैसे जायेंगी ॥३॥

---

१. चराऊँगा। २ दूब, घास। ३. सूख गई है। ४. नौ लाख अर्थात् बहुत ज्यादा, अत्यधिक। ५. तालाब। ६. पतली, तंग।

२४२. सन्दर्भ—कृष्ण के प्रति गोपियो का यशोदा को उपालम्भ।

रोकँइ गली मुरली वाला मोहन। टेक।
जाति रहिउँ जमुना जल भरने,
बन[1] कइ सुरतिया हमसे छलँई ॥१॥ मुरली०
रोकइ गली मुरली वाला मोहन।
ए सिर घड़ा घड़ा पर झाड़ुल,
घुँघुटेन कइ पट खोलइ ॥२॥ मुरली०
रोकइ गली मुरली वाला मोहन।
सातो सखी उरहन[2] लइ आवइँ,
माया[3] (माता ?) जसोदा मारइँ छड़ी ॥३॥ मुरली०
रोकइ गली मुरली वाला मोहन।
सूरदास स्याम बलि जाऊँ,
हरि के चरनवा पइ[4] ध्यान धरी ॥४॥ मुरली०
रोकइ गली मुरली वाला मोहन।

गोपियाँ कहती हैं कि मुरली बजाने वाले श्रीकृष्ण गली मे हमारा रास्ता रोकते। एक दिन हम यमुना मे जल भरने के लिए जा रही थी कि कृष्ण ने हम लोगो से [illegible]ा किया ॥१॥

हमारे सिर पर घड़ा था और घड़े के ऊपर झाड़ुल था। कृष्ण जी हम लोगो [illegible] घूँघट के पट को खोल रहे थे ॥२॥

सात सखियाँ (गोपियाँ) यशोदा के पास यह उलाहना लेकर पहुँची। यह सुनकर यशोदा ने कृष्ण को छड़ी से मारना प्रारम्भ कर दिया ॥३॥

सूरदास जी कहते हैं कि भगवान् कृष्ण के चरणों का ध्यान करते हुए मै उन [illegible]र बलि जाऊँगा अर्थात् अपने को निछावर कर दूँगा ॥४॥

२४३. सन्दर्भ—किसी भक्त गोपी का कृष्ण को उलाहना देना।

तू तो नन्दलाल सदा के मन कपटी। टेक
तब तो कह्या[5] नैय्या परवा लगउबय[6],
अब कस नैय्या भँवर बीच अरझी[7] ॥१॥ तू तो०
तब तो कह्या हम गगरी भराउब[8],
अब कस[9] गगरी जमुन घट पटकी ॥२॥ तू तो०

---

१. उनकी। २. ओरहन-उलाहना। ३. माता। ४. पर। ५ कहा था [illegible] पार [illegible] । ७ अटक गई। ८ [illegible] ९ कस

तब तो कह्या हम ब्याहा न करबय,
अब कस झुलनी[1] जुलुफ[2] बीच अरझी ॥३॥
तू तो नन्दलाल सदा के मन कपटी ।

कोई भक्त गोपी भगवान कृष्ण को उलाहना देती हुई कहती है कि हे नन्दलाल ! नन्द के पुत्र कृष्ण ! तुम सदा से कपटी रहे हो ।

तुमने तो मुझ से वादा किया था । कि तुम मेरी संसार रूपी नौका को पार लगा दोगे परन्तु अब मेरी नाव मझधार मे भँवरों के बीच मे क्यो अँटक गई है ॥१॥

तुमने तो कहा था कि मैं तुम्हारे जल से भरे घड़े को उठाकर सिर पर चढा दूँगा परन्तु अब तुमने—मेरे घड़े को जमुना के घाट पर क्यों पटक दिया ॥२॥

तुमने तो पहिले कहा था कि मै विवाह नही करूँगा परन्तु अब मेरी झुलनी तुम्हारे लम्बे तथा घुँघराले बालों में क्यो उलझ गई है अर्थात् तुम मेरा चुम्बन तथा आलिंगन करने के लिए क्यों आते हो ॥३॥

२४४. सन्दर्भ—किसी गोपी की उक्ति कृष्ण के प्रति ।

स्याम सुरतिया[3] काहे बिसराया । टेक ।
आधी उमिरिया[4] मोरी मटिया औ धुरिया ।
आधी उमिरिया मां दाया विपतिया ॥१॥
दिन नाही चैन रात नाही निदिया,
सूनी हइ सेज अकारथ[5] हइ रतिया ॥२॥
अपुने तो जाइ गोकुला मा बइठे ।
रोवत नैन मसोरत[6] छतिया ॥३॥
स्याम सुरतिया काहे बिसराया ।

कोई गोपी कहती है कि कृष्ण ने मुझे क्यों भुला दिया । मेरा आधा जीवन मिट्टी और धूल में बीत गया अर्थात् दुःखो मे ही मेरा आधा जीवन व्यतीत हो गया । और शेष जीवन मे मुझे विपत्तियों का सामना करना पड़ा ॥१॥

मुझे दिन में न तो चैन मिलता है और न रात मे नींद ही आती है। प्रियतम कृष्ण के बिना आज मेरी सेज सूनी है प्रिय-समागम के अभाव मे रात्रि मेरे लिए व्यर्थ हो रही है ॥२॥

कृष्ण स्वय तो गोकुल में जाकर बैठ गये है । उनके वियोग में मेरी आँखो से आँसुओं की झड़ी लगी हुई है और मेरे हृदय मे दुःख हो रहा है ॥३॥

---

१ नाक का एक गहना । २ जुल्फ, लम्बे काले बाल । ३-स्मरण । ४ आयु ५ व्यर्थ बेकार । ६ निर्दयता पूर्वक ऐंठ देना दबा देना

२४५. सन्दर्भ—किसी गोपी की उक्ति कृष्ण के प्रति।

कहाँ गये राधेस्याम दरस बिना तलफइ[1] नयनवा। टेक
जब से गये मोरी सुधियो न लीनी।
भूले भाव रे भजनवा ॥१॥
दरस बिना तलफइ नयनवा।
अपुना[2] तउ जाय के द्वारिका बइठे।
हमका तउ होइगे सपनवा ॥२॥
दरस बिना तलफइ नयनवा।
सोवति[3] रेहेयुँ सपना एक देखेउ।
झझक के ठाढ़ी अँगनवा ॥३॥
दरस बिना तलफइ नयनवा।

कोई गोपी कहती है कि कृष्ण जी कहाँ चले गये। उनके दर्शन के अभाव मे आँखें व्याकुल हो रही हैं।

जब से श्री कृष्ण मथुरा से द्वारिका चले गये तब से उन्होंने मेरी सुधि-बुधि रही ली। उनके वियोग मे मैं भाव-भजन करना भी भूल गई हूँ ॥१॥

वे (श्रीकृष्ण) स्वयं तो यहाँ (मथुरा) से द्वारिका जाकर बैठ गये। मेरे लिए उनका दर्शन भी स्वप्न के समान हो गया है ॥२॥

मैं जब सो रही थी तब मैंने एक स्वप्न देखा कि कृष्ण जी अचानक मेरे आँगन ाकर खड़े हैं ॥३॥

२४६. सन्दर्भ—सन्ध्या के समय जंगल से कृष्ण के न लौटने पर यशोदा की व्याकुलता।

साँझ भई घर आये न कन्हइया। टेक
घर रोवैं बछरू[4] बहोर[5] रोवै गइया;
व्याकुल भइ है जसोमत मइया ॥१॥ टेक
कि भोरा[6] की गउआ हिराने[7];
कि लड़िकन संग किहिन लड़इया ॥२॥ टेक
नही तोरे कांधा की गइया हिराने;
नही लड़िकन संग किये है लड़इया ॥३॥ टेक
रोज रोज कान्धा दहिया खात रहे;
उन्है कान्धा कइ काढ़ै कसरिया[8] ॥४॥ टेक

---

१. व्याकुल होना- कष्ट पाना। २- आप- स्वयम। ३ सो रही थी। छड़ा ५ बाहर ६ भूल गया ७ खो गई ८ कसर, बदला।

एक पुत्र केहुअइ के न होवै;
बाहर जात तड़पि मरै मइया ॥५॥ टेक
साँझ भइ घरे आये न कन्धइया।

कोई गोपी कहती है कि सन्ध्या हो गई परन्तु श्रीकृष्ण जंगल से गायों को चराकर अभी तक घर नहीं लौटे। उनके वियोग में घर में बछडा तथा घर के बाहर गाये रो रही हैं। उनकी माता यशोदा अत्यन्त व्याकुल हो गई है ॥१॥

यशोदा जी कहती है कि क्या कृष्ण रास्ता भूल गये अथवा जगल मे गायें खो गई हैं। अथवा उन्होंने अपने साथी ग्वाल-वालो से झगड़ा कर लिया है ॥२॥

इस पर कोई गोपी उत्तर देती है कि न तो कृष्ण की गायें ही खोई है और न उन्होंने किसी से लड़ाई ही की है ॥३॥

प्रतिदिन कृष्ण किसी गोपी की दही खा जाते थे। ऐसा मालूम होता है कि आज सब दिन की कसर उसने निकाली है ॥४॥

इस पर यशोदा कहती हैं कि एकलौता पुत्र किसी को भी न हो। क्योंकि उसके बाहर चले जाने पर उसकी माता तड़प कर मर जाती है ॥५॥

२४७. सन्दर्भ—अपने प्रियतम के प्रति किसी प्रेमिका की उक्ति।

बन बँसिया बजावइ, बन बँसिया बजावइ हो। टेक
मोहन रसिया[२]।
सोने की थरिया मा जेवना बनायो रे,
बन जेंवना जेवइँ, बन जेवना जेवइँ हो ॥१॥
बालम रसिया०।
झझरेन गेड़ुवा[३] गंगा जल पानी रे,
वन गेड़ुआ घूँट उवइ, वन गेड़ुआ घूटउवइ रे ॥२॥
बालम रसियां०
लाची, लवँग, रस बीरा जोरायो[४] रे,
वन बिरवा कुचउवइ, बन बिरवा कुचउवइ रे ॥३॥
बालम रसिया०
फूला नेवारी के सेजा[५] लगायो रे,
बन सेजिया सुतउवइ वन सेजिया सुतउवइ रे ॥४॥
बालम रसिया०
बन बॅसिया बजावइ हो मोहन रसिया।

---

१ श्रीकृष्ण। २ रसिक प्रियतम। ३ झोंटी दार लोटा। ४. बनाया, लगाया_ ५ सेज, शय्या

कोई प्रेमिका कहती है कि मेरा रसिक प्रियतम श्रीकृष्ण बन में बंशी बजाता है। मैंने सोने की थाली मे उसके लिए भोजन परोसा है परन्तु वह वन में भोजन करता है ॥१॥

मैंने कृष्ण के पीने के लिए लोटे मे भर कर गंगा-जल रखा था परन्तु वह जगल में पानी पीता है ॥२॥

मैंने लाची और लँवग लगाकर पान का बीड़ा उसके लिए तैयार किया था परन्तु वह वन में ही पान खाता है ॥३॥

मैंने नेवारी के फूलों से उसके सोने के लिए सेज सुसज्जित किया था। परन्तु वह घर मे न सोकर जंगल में ही घास-पात पर सोता है।

२४८. सन्दर्भ—रुक्मिणी की उक्ति विष्णु भगवान् के प्रति।

उठउँ सिरिनाथ करउँ ना दतुइनिया। टेक
केथवा[1] कइ लोटा डोरी के था दतुइनिया।
कँहवा से जल भरि लाए रुकमिनिया ॥१॥
सोनवा कइ लोटवा केंचा[2] दतुइनिया।
जमुना से जल भरि लाइ रुकमिनिया ॥२॥

रुक्मिणी कहती है कि ए भगवान्! अब आप उठिये और दतुवन कीजिए। इस पर भवगान् पूछते है कि किस वस्तु का बना हुआ लोटा है, डोरी किसकी है तथा किस वृक्ष की दतुवन है। ए रुक्मिणी! तुम कहाँ से जल भरकर लाई हो? ॥१॥

इस पर रुक्मिणी उत्तर देती है कि लोटा सोने का बना हुआ है। केंचा वृक्ष की दतुवन है तथा मैं जमुना मे से जल भर कर लाई हूँ।

विविध

२४९. सन्दर्भ—माता और पिता के बिना बेटी का अनादर।

भूले फिरै भँवरा बाग नाही पावै। टेक
बिनु रे बाप कै बेटी ना कहावै,
के तो बर हेरै के तो व्याह करावै ॥१॥
विनु माया[3] के बेटी न कहावै,
के तो दु:ख पूछै के तो हिरदय लगावै ॥२॥
बिनु रे बिरन[4] बहिनी ना कहावै,
के तो डोला फेरै के तो देस देखावै ॥३॥
भूले फिरै भँवरा बाग नाही पावै।

१ किस वस्तु की २ वृक्ष विशेष ३ माता ४ भाई

भौराँ भटकता हुआ घूमता फिर रहा है परन्तु उसे बाग नही मिलता। बेटी को कितना भी अच्छा पति मिल जाय और उसका विवाह कितने भी ऊँचे घर में हो जाय परन्तु पिता के बिना उसकी इज्जत नही होती। बेटी के ससुराल के दुखो को कोई कितना भी सहृदयता पूर्वक पूछे और उससे प्रेम करे परन्तु माता के बिना उसे मातृत्व प्रेम नहीं प्राप्त हो सकता ॥२॥

कोई भले ही किसी लड़की को ससुराल से डोला पर चढ़ाकर मायके लाया करे और उसे अनेक देश दिखलावे परन्तु बिना भाई के उसे सच्चा प्रेम नही प्राप्त हो सकता।

भाव यह है कि माता और पिता का प्रेम अपनी पुत्री के प्रति तथा भाई का प्रेम अपनी बहिन के प्रति अकृत्रिम और स्वाभाविक होता है।

२५०. सन्दर्भ—माता-पिता के स्वाभाविक प्रेम का वर्णन।

भूले फिरे भँवरा[1] बाग[2] नाही पावै। टेक
बिनु रे बाप कै बेटी न कहावै,
के[3] तो बर हेरै के तो ब्याह करावै ॥१॥
बिनु माया कै बेटी न कहावै,
के तो दुख पूँछइ के तो हिरदय लगावै ॥२॥
बिनु रे बिरन[4] कै बहिन न कहावै,
के तो डोला[5] फेरै के तो देस देखावै ॥३॥

मन रूपी भँवरा भूला भूला फिर रहा है परन्तु उद्देश्य रूपी वाटिका में अनेक प्रयत्न करने पर भी स्थान प्राप्त नही कर पाता।

कोई लड़की अपने पति को कितना भी प्यार करे और अन्त मे उससे अपना विवाह कर ले परन्तु बिना पिता के उसे अपनी पुत्री कौन कहेगा ॥१॥

कोई कितना भी लडकी के कष्टों को पूछे और उसे अपने हृदय मे लगावे परन्तु माता के बिना उसे प्यार से पुत्री कौन कहेगा ॥२॥

किसी स्त्री को कोई कितना भी पालकी पर चढ़ावे और उसे अनेक देशो को दिखाता फिरे परन्तु बिना भाई के उसे बहिन कौन कहेगा ? ॥३॥

भाव यह है कि पिता-माता और भाई का जो प्रेम अपनी पुत्री तथा बहिन के प्रति होता है वह स्वाभाविक, सहज तथा दिव्य होता है। उसकी तुलना कोई नही कर सकता।

---

१. मन रूपी भ्रमर। २. उद्देश्य रूपी वाटिका ३. कितना भी। ४. भाई।
५ पालकी पर चढ़ाकर मायके ले जाना

२५१. सन्दर्भ—आत्मा के द्वारा परमात्मा की खोज।

सन्तकि (संकट की) बेटी हमार कइसे बीतइ।
सोने की थरिया माँ जेवना बनायो दइया।
हाथ लीहे जेवना मै बन बन घुमेयु दइया ॥१॥
केहू ना बतावइ मोरे हरिका रहनवा दइया।
हाथ माँ सन्सा लीहे लट छितराये दइया ॥२॥
अब ही तो तोर हरि रथ पर ठाढ़े दइया।
झझरेन गेड़आ गंगा जल पानी दइया ॥३॥
हाथ लीहे गेड़आ मैं बन बन घूमेव दइया।
अब ही तो तोर हरि रथ पर ढाढ़े दइया ॥४॥
लाची लवँग का बीरा जोरायो दइया।
हाथ लीहे बिरवा मै बन बन घूमेउ दइया ॥५॥
केहू ना बतावे मोरे हरि का रहनवा दइया।

कोई भक्त कहता है कि ए भगवान ! यह संकट का समय कैसे बी सोने की थाली मे मैने भोजन बनाया था। मैं भोजन की थाली को हाथ में बन बन घूमती रही।

परन्तु किसी ने भी-मेरी प्रियतम का निवास स्थान नहीं बतलाया। मै बालो को बिखेरे हुए इधर-उधर घूमती रही ॥२॥

तब किसी ने मुझे बतलाया कि वे रथ पर चढ़कर अभी यही खड़े थे। मैं जल लेकर उन्हे खोजती रही ॥३-४॥

मैने इलायची और लवंग को लगाकर पान को तैयार किया था। उस को लेकर मैं उन्हें बन-बन ढूँढती रही। परन्तु किसी ने उनका निवास स्थान बतलाया ॥५॥

२५२. सन्दर्भ—किसी विधवा का प्रलाप।

काचिन चुरिया मोरा राम बिगाड़े। टेक।
सभा बइठ मोर बपई जउ झँखय।
अब मोरो बेटी का होथी खराबी ॥१॥
काहे के बपई झँखि झँखि मरिव्या,
खेलि कूदि बपइ उमर गवाउबइ ॥२॥
पंसा खेलत मोरा भइया जउ झँखय।
अब मोरी बहिनी का होथी खराबी ॥३॥
काहे के मोर भइया झँखि झँखि मरब्या।
खेलि कूदि भइया उमर गँवाउबइ ४

मचिया बइठ मोर माया जउ झँखय ।
काहे मोरी माया झँखि झँखि मरिबू ॥५॥
खेलि कूदि माया उमर गवांउबइ ।

कोई बाल-विधवा लड़की कहती है कि भगवान ने मेरी कच्ची चूड़ी को नष्ट कर दिया अर्थात् विधवा होने के कारण मुझे अपनी चूड़ी फोड़नी पड़ी । सभा मे बैठे हुए मेरे पिताजी विलाप करते हुए कहते हैं कि अब मेरी पुत्री अभागिन हो गई ॥१॥

पुत्री कहती है कि मेरे पिताजी ! आप इतना दु ख क्यों कर रहे हैं ? मैं खेल-कूद में अपना शेष जीवन बिता दूँगी ॥२॥

जुआ खेलता हुआ मेरा भाई दुःख करता हुआ कहता है कि अब मेरी बहिन विधवा हो गई ॥३॥

बहिन कहती है––ए मेरे भइया तुम इतना शोक क्यों कर रहे हो मैं खेल-कूद करके अपनी जिन्दगी गवाँ दूँगी ॥४॥

मचिया पर बैठी रोती हुई माता से पुत्री कहती है कि माँ रोवो मत । मैं खेल खेल में अपने दुर्भर जीवन को बिता दूँगी ।

हिन्दू बाल-विधवा की अकथ कहानी है । उनके समान अभागा संसार मे कोई दूसरा नहीं है ।

२५३. सन्दर्भ––कलयुगी मूर्ख ब्राह्मणों पर व्यंग्य उक्ति ।

जे जानइ न वेद पुरान कस महाराज[1] बने ।
राजा से बड़ महराजा क नउना[2];
सब का नाहीं सोहाई ।

पढ़इँ संकलप[3] कौन कहइ;
जब गोतइ[4] न सकइ बताइ ॥१॥

जात के पूछे बाभन बतावइँ;
गोतइ कस्यपवा[5] नाम ।

ऊँट चरावइँ, एक्का हाँकइ;
करइँ रोट पोइया[6] काम ॥२॥

तीतिल, भेड़ा, बुलबुल पालइँ;
पानी[7] पाँड़े कहाइ ।

बेटी बेंचवा क करइँ अगुवइया;
ए मड़रीक[8] कहाइँ ।

---

१. ब्राह्मण । २. नाम । ३. संकल्प । ४. गोत्र । ५. काश्यप । ६. रोटी पकाना । ७ पानी, पिलाने का पेशा ८ मण्डलीक अमुक

झूँठइ हलफ[1] कँचहरिया में लेवइँ;
माथे मे तिलक लगाइ ।
गौतम कपिल के नवना डुबाये,
अपुनऊँ डुबर[2] नाइ ।
'राधे मोहन' अस बाभन देस मे;
नहकस[3] बाभन[4] कहाइ ।।३।।

कोई व्यक्ति ब्राह्मणो पर व्यङ्गय करता हुआ कहता है कि जो आदमी वेदो और पुराणों का नाम तक नही जानता, जिसने इन ग्रन्थो का बिल्कुल अध्ययन नही किया है वह 'महाराज' कैसे कहला सकता है। राजा से बडा महाराजा (ब्राह्मण) का नाम है क्योंकि इनके नाम के पहिले 'महा' (बडा) शब्द लगा हुआ है परन्तु यह सबको अच्छा नही लगता ।

जो ब्राह्मण अपने गोत्र को भी ठीक-ठीक नही बतला सकता वह भला पूजा का संकल्प शुद्ध कैसे पढ सकता है ।।।१।।

पूछने पर वे अपनी जाति ब्राह्मण बतलाते हैं और गोत्र का नाम काश्यप कहते है। ये ब्राह्मण ऊँट चराते है, इक्का हाकते है और रोटी बनाने का काम करते हैं ।।२।।

ये तित्तिर, भेंड़ा और बुलबुल को पालते हैं और पानी पिलाने का पेशा करने के कारण "पानी-पाडें" कहलाते है। ये मण्डलीक—मण्डल के अगुआ—कहलाते हुए भी बेटी बेचने के काम में अगुवाई करते है ।।३।।

कचहरी में जाकर ये झूठी शपथ खाते हैं। माथे में तिलक लगाते है। ये प्राचीन ऋषि गौतम तथा कपिल के वशज होने के कारण उनके नाम को कलंकित करते हैं और अपना भी नाश करते हैं ।।४।।

राधे मोहन कवि कहता है कि ऐसे ब्राह्मण इस देश में व्यर्थ ही ब्राह्मण कहलाते हैं ।।५।।

भजन

२५४ सन्दर्भ—राम-नाम का महत्व और लौकिक चतुरता की निःसारता ।

राम नाम मुख बोल ए भाई । टेक
राम नाम मुख बोल ए भाई, छोड़ अब जग चतुराई ।।१।।
जग-चतुराई[5] बहुत दुःख पउबइ[6], गदहा सरीखे जम्हुआई[7] ।।२।।
राम नाम०

---

१ शपथ २ डुबाना नष्ट करना ३ ४ ५ सांसारिक चतुरता ६ पावोगे । ७

मारि काटि जब बोझा, बन्हबइ, ले नरकन में डुबाई ॥३॥
राम नाम०
राम नाम मे बहुत सुख होइबइ, गुरु मरीखे जम्हुआई ॥४॥
राम नाम०
माला फेरत तुम्हें लेइ जइबइ[1]; ले पँलगे बइठाई[2] ॥५॥
राम नाम मुख बोल ए भाई ।

कोई स्वयं अपने को समझाता हुआ कहता है हे भाई । ससार की चतुरता को छोडकर अपने मुँह से राम का नाम लो ॥१॥

लौकिक चतुरता के कारण बड़ा दुःख उठाना पडता है तथा मृत्यु के समय यमराज गदहे के रूप मे आता है ॥२॥

वह (पापी) मनुष्य को बाँधकर नरक मे ले जाकर ढकेल देता है और वहाँ पडा हुआ वह दुःख भोगता है ॥३॥

राम का नाम लेने से बड़ा सुख मिलता है और यमराज गुरु के समान है ॥४॥

वह पुण्यात्मा मनुष्य को माला फेरते समय अर्थात् पूजा करते समय बड़े आराम से पलग में बैठा कर स्वर्ग को ले जाता है ॥५॥

---

1 ले आयेगा 2 बैठा करके

परिशिष्ट—१

अवधी लोक-साहित्य-संबंधी पठनीय सामग्री

(१) म० पं० राहुल साकृत्यायन तथा डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय ।	हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास भाग १६ (ना० प्र० सभा) वाराणसी
(२) डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय	लोक साहित्य की भूमिका ।
(३) डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय	अवधी लोक-गीत ।
(४) डॉ० त्रिलोकी नारायण दीक्षित	अवधी और उसका साहित्य ।
(५) डॉ० इन्दु प्रकाश पाण्डेय	अवधी लोक-गीत और परम्परा ।
(६) डॉ० सरोजिनी रोहतगी	अवधी लोक साहित्य ।
(७) डॉ० इन्दु प्रकाश पाण्डेय	अवधी लोक कथायें ।
(८) सत्यव्रत अवस्थी	विहाग रागिनी
(९) पं० राम नरेश त्रिपाठी	कविता कौमुदी भाग ५ (ग्राम गीत)
(१०) प० राम नरेश त्रिपाठी	हमारा ग्राम साहित्य भाग १-३ ।

अवधी के स्वीकृत शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित)

(११) डॉ० गौरीशकर मिश्र (आगरा वि० वि०)	अवधी पहेलियों का सांस्कृतिक अध्ययन ।
(१२) डॉ० छोटेलाल द्विवेदी (आगरा वि० वि०)	अवधी लोकोक्तियों का सास्कृतिक अध्ययन ।
(१३) डॉ० चक्रपाणि पाण्डेय (आगरा वि० वि०)	अवधी लोक-गीतो का सास्कृतिक अध्ययन ।
(१४) डॉ० किरन मराली (लखनऊ विश्वविद्यालय)	अवधी और भोजपुरी लोकगीतो में राम-कथा ।
(१५) डॉ० विद्या विन्दु सिंह (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)	फैजाबाद जनपद के लोकगीतो का समीक्षात्मक अध्ययन ।

गीत की प्रथम पंक्ति	गीत का प्रकार
काली काली चुनरी सबुजिबूंटी ना०	कजरी
कासी विसेसेर कहाँ०	कोहूरऊ
काहेन की कठकुंइयाँ०	निरवाही
काहे से छावउ बड़ घर०	विरहा
के गुलाबी रग छोड़ा०	सावन
के तउ खनावा भइया०	नकटा
के बइरी बंसी बजावा रे०	कजरी
केहि संग खेलउँ०	सावन
कोठवा से ओड़े बेड़े०	निरवाही
खायेस भइ बासी भात०	निरवाही
खिरकिन के पिछअरवा रे०	निरवाही
गवना लिआया पिया०	कजरी
गले माँ तिल काला०	कजरी
गुलेबन्द बनवाई देआ०	कजरी
गुरु मेट ना गाई बिरहवा०	विरहा
गोदना गोदइ चले बनवारी०	विरहा
गोबरा कइ खेपा लइके०	निरवाही
गंगा अहइ बड़ी गुदावरी०	विरहा
घमवाँ घमइले तइ जोगिया	निरवाही
घूमइ निकरी बजरिया रे०	कजरी
घोड़वा बगल करउ मोसाफिर०	कजरी
चमेली बने छाइ रहे राजा०	नकटा
चलहु न सखिया सलेहरि०	झूमर
चला तोरी आइ चम्पा की०	नकटा
चला देखि आई राम०	कजरी
चले जाउ का चितवत०	झूमर
चूरिन खूंट हमरे०	विवाह
चिठिआ लिखि भेजा राजा०	विवाह

गीत की प्रथम पंक्ति	गीत का प्रकार
नैना लगाय चला गया आधी रतिया०	नकटा
पतरी अँगुरिया रानी सीता कइ०	विवाह
पाँचइ पान कइ विरवा०	सोहर
पाँच पेड़ निमिया कइ०	निरवाही
पाती आइ गइ गँवन की०	कजरी
पियवा का जात वेर०	निरवाही
पुरुबइ चढी बदरिया०	सावन
पुरुब के देसवा से०	कजरी
फिर से बोलो तुम्हारी बोल०	झूमर
फुलवन की फुलवारी रे०	नकटा
फूलवा फूलि रहे बागन मां०	कजरी
बइठा मोरे राम०	सावन
बगिअइ आउतेया रे सावलिया०	कजरी
बछिया नाही रे बनई०	नकटा
बदरिया तु तँउ मोरे०	सावन
बदरिया बरसइ स्याम०	कजरी
बम्बइया मां बम्बा देवी०	चमरऊ
बरजो जसोमति अपने लाल का०	नकटा
बलम परदेस मोरे०	कजरी
बाजत आवय ककरैली०	विवाह
बेरिया क बेरिया मइ०	निरवाही
बेला फुलइ आधी रात०	झूमर
बोलइ रथ मुनिया पितरिया०	झूमर
बँसवा कटावइ चलेन राजा०	विवाह
भीतरा से निकरी ननद०	कजरी
भोर भयेल भिनसरवा०	निरवाही
भोर भयेल भिनसरवा०	निरवाही
मइ अँउरवाली बालम मोर०	झूमर

ख–गीतों की अनुक्रमणिका

गीत की प्रथम पंक्ति	गीत का प्रकार
अब न चरउबइ मधुवन०	देवता संबंधी गीत
अरे पेडवा अयोध्या मा फुलई	देवता०
आज मोरे राम की सुधि आई०	देवता०
कन्चिनि सिकिया क मोरी सीक०	निरवाही
काचिन चुरिया मोरा राम०	विविध
केहु ना विपतिया के साथी०	देवता०
जे जानइ ना वेद पुरान०	विविध
ताल किनारे महल मोरे सुन्दर०	निरवाही
तुम्हें ढूढत स्याम गुजर०	देवता०
तू तो नन्दलाल सदा के मन०	देवता०
दुनिया आनन्द भइ रामजी के०	देवता०
धन्य धन्य मालिन तोरी बाग०	देवता०
धीरे चलब हमारे हो लछुमन०	देवता०
बन का निकरिगे दोनो०	देवता०
बन वंसिया बजावइ०	देवता०
भूले फिरे भँवरा बाग नाहीं०	विविध
मइया मधुवन जाबइ०	देवता०
मइया मधुवन जाबइ अपने०	देवता०
मन मोहन तीनिउ लोक०	देवता०
मोहन रूप बने हरि०	देवता०
रघुबर चलब तोहरे संगमां	देवता०
राम सिये अयोधा अनन०	देवता०